CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७.१

महाकवि

म. म. लोचन झा

कृत

रागतरङ्गिणी

सम्पादक

श्रीसुधाकरझा शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दरभङ्गा ग्रन्थमाला :—तृतीय पुष्प

कविवर-लोचन
कृत
राग-तरङ्गिणी

डा० श्री सुधाकर झा शास्त्री, एम. ए. पी. एच, डी. (लन्दन)
यूनिर्भसिटी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
पटना विश्वविद्यालय
द्वारा
सम्पादित

1917
PATNA UNIVERSITY LIBRARY
D ....
....

पटना विश्वविद्यालय मैथिली-विकास-कोष
द्वारा
प्रकाशित
शाके १८८६

PATNA UNIVERSITY LIBRARY
No ....
D ....
1917

दरभंगा प्रेस कम्पनी (प्रा०) लि०
द्वारा
मुद्रित

मूल्य :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पटना विश्वविद्यालय मैथिली-विकास-कोषक प्रवर्तक

मिथिलेश

महाराजाधिराज डा० सर कामेश्वर सिंह, के. सी. आइ. ई.; डी. लिट.; एल. एल. डी.

दरभंगा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

विद्यापतिक परवर्त्ती कवि लोकनिमे म. म. पं० लोचन झाक नाम प्रमुख अछि। ई एक बहुमुखी-प्रतिभावान् व्यक्ति छलाह। 'रागतरङ्गिणी' एकर साक्षी अछि। हिनकामे विलक्षण कवित्वशक्ति छलैन्हि एवं तकर हिनका स्वाभिमानो छलैन्हि। इएह कारण अछि जे अपन ग्रन्थ रागतरङ्गिणीमे विभिन्न रागक उदाहरण प्रसङ्ग अधिकांशतः जतए ओ विद्यापतिक पदक उद्धरण देलैन्हि अछि तकरा नीचामे 'इति विद्यापतेः' लिखि लगले पुनः 'मम तु' कहि अपन कविताकेँ प्रस्तुत कए देने छथि। एहिसँ लोचनक अभिप्राय इएह छलैन्हि जे पाठक ई बूझथु जे हमहूँ विद्यापतिक पदसँ कोनो न्यून कोटिक कविता-रचना नहि करैत छी। लोचन अपन मातृभाषाक गौरवकेँ बुझनिहार छलाह से एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे ई रागतरङ्गिणी मे विभिन्न रागक उदारणक हेतु अपने भाषाक प्राचीन एवं समसामयिक कवि लोकनिक रचनाकेँ चुनलन्हि, कोनो आन भाषाक कविक रचनाकेँ नहि जे ओ स्वतन्त्र रूपें कए सकैत छलाह। लोचन एक आदर्श संगीतज्ञाता छलाह जे रागतरङ्गिणीक एक एक पृष्ठसँ स्पष्ट होइत अछि। बिनु संगीत शास्त्रक पूर्ण ज्ञानहिँ ई रागतरङ्गिणीक सदृश ग्रन्थक रचना कथमपि नहि कए सकैत छलाह। लोचन युगस्रष्टा छलाह। अपन युगमे सर्वप्रथम ओएह एहि सत्यकेँ चिन्हलैन्हि जे जँ एखन मिथिलाक संगीत पर एक शृङ्खलित एवं प्रामाणिक पोथी नहि लिखि देल जाएत तँ मिथिलाक–संगीत-परम्परा जे एखन लुप्तप्राय भए रहल अछि, लुप्त हएबाक सङ्गहि अपन स्वर्ण युगक गरिमाकेँ संगहिँ लेने चलि जाएत। लोचन एक सफल गवेषक छलाह। मैथिली साहित्यक विभिन्न विस्मृत कविक रचनाकेँ ताकि अपन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रन्थमे ओहि सभकेँ विभिन्न रागक उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करब हुनक एही गवेषणात्मक प्रतिभाक परिचायक थीक। हुनकामे संग्रह करबाक अद्‌भुतत्त्वमता छलैन्हि जकर फलस्वरूप ओ विभिन्न राग एवं रागिणीक संकलन कए ओकरा सभकेँ श्रृंखलाबद्ध कए सकलाह। एहि समक संग संग ओ एक उदार हृदयक मानव छलाह। लोचन अपन एही सिद्धान्तक कारणेँ हिन्दू एवं मुसलमानमे भेद नहि मानि फिरदौसी रागक प्रचार कएलन्हि।

अन्यान्ये कविक सदृश लोचन झाक समय सेहो कतहु निश्चित रूपेँ नहि लिखल रहबाक कारणेँ अद्यावधि विवादक वस्तु बनल अछि तथापि हुनक स्वहस्तलिखित 'नैषधीय चरित'मे उल्लिखित '१६०३ शाके' तथा कविवर चन्दा झा द्वारा उपलब्ध 'रागतरङ्गिणी'मे उल्लिखित १६२४ शाके'—ई दू टा प्रामाणिक लेख भेटैछ। एकर अतिरिक्त लोचन प्रस्तुत ग्रन्थ रागतरङ्गिणीमे जे राजा महिनाथ ठाकुर एवं राजा नरपति ठाकुरक उल्लेख कएने छथि ताहू सँ हुनक जीवनक किछु 'स्थूल' समय ज्ञात होइत अछि। 'स्थूल' शब्दक प्रयोग हम एहि हेतु कयल अछि जे एहि दू राजाक राज्यकालक विषयमे विभिन्न इतिहासकार लोकनिमे वैमत्य अछि। एक व्यक्ति (नवटोल निवासी बाबू यदुनन्दन झा) अपन दरभंगा राज्यक इतिहासमे लिखने छथि जे राजा महिनाथ ठाकुर सन् १०८० सँ ११०१ साल पर्यन्त एवं राजा नरपति ठाकुर ११०२ सँ १११२ साल पर्यन्त राज्य कएलन्हि। म० म० पं० मुकुन्द झा बख्सी द्वारा प्रणीत 'मिथिला भाषामय इतिहास'क अनुसार एहि दूहू गोटेक राज्यकाल १०७८ सँ ११२० साल धरि छलैन्हि। एक अन्य पञ्जीकारक लेखक अनुसार राजा नरपति ठाकुर सन् ११०८ साल धरि राज्य कएल। मोटामोटी १६६९ सँ १७११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ई० धरि एहि दूहू गोटेक राज्यक समय भेल। आब नैषधीय चरितक उक्त तालपत्र पर लिखित '१६०३ शाके' एवं रागतरङ्गिणीमे उल्लिखित '१६२४ शाके'क अनुसार १६६१ सँ १७१२ ई० होइत अछि। एहि रूपेँ उक्त दूहू राजाक राज्यकालक अनुमित समय सँ एकरा सामञ्जस्य भए जाइछ किन्तु लोचन प्रस्तुत रागतरङ्गिणीमे लिखैत छथि—"वीरः श्री महिनाथ भूप तिलकः शास्तेऽधुना मैथिलान्" एकरा अनुसारेँ राजा महिनाथ ठाकुरहिक शासन-कालमे एकर लिखब प्रारम्भ भेल। तखन—

वेदावाहुरसक्ष्माभिर्लंचिते शाकवत्सरे ।
बुधे भाद्रतृतीयायां जातमेतत्तु पुस्तकम् ॥

एहि उपलब्ध लेखक हिसाबेँ ई समय राजा नरपति ठाकुरहुक (जनिक शासनकाल ११ वर्षक छल) राज्यक समाप्तिक समय होइछ। एहि सँ की ई मानि लेल जाय जे कविकेँ एहि पुस्तककेँ पूर्ण करबामे १५–२० वर्ष लगलैन्हि ? यद्यपि एहन मौलिक एवं गवेषणापूर्ण ग्रन्थक हेतु ई बहुत अधिक समय नहि थीक तथापि लोक कोनो ग्रन्थ लिखबा सँ पूर्व ओकर-सामग्री–संग्रह कए यथा सम्भव शीघ्रे लिपिबद्ध करैत अछि। तखन संग्रह लेखनमे थोड़ समय लगैत छैक। तेँ कविवर चन्दा झा अपन संगृहीत 'मिथिला देशक इतिहास' (जे दरभंगा राज पुस्तकालयमे स्थित अछि) मे लिखने छथि जे—"शाके १६०७,' ई० एक रागतरङ्गिणीक अन्तमे लिखल भेटल।" ई समय ठीक बुझि पड़ैत अछि कारण शाके १६०३ मे जे नैषधीय चरितक तालपत्रक लेख लोचन समाप्त कएल तकर किछु दिन बादे रागतरङ्गिणी रचना दिस प्रवृत्त भेला पर ई ग्रन्थ लिखब प्रारम्भ कएल जे राजा महिनाथ ठाकुरक शासनकाल मे समाप्तो भेल। प्रकृत रागतरङ्गिणीमे केवल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकठाम नरपति ठाकुरकेँ 'नरेश' कहल गेल अछि जेना 'देश देशाख' रागक उदाहरणमे अपन कविता जे देने छथि तकर अन्तमे—

उरवशी-बस हे, रसरागनिवेशे।
ई रसगिन्दक हे, नरपति नरेशे ॥

से तँ राजाक छोट भाय वा किछु पृथक् कएल राज्यभागक शासक होएबहुक कारणेँ भए सकैछ। राजा महिनाथ ठाकुरक तँ तीन चारि गीतमे चर्चा कएने छथि तेँ एकर अधिक भाग वा पूर्ण ग्रन्थे राजा महिनाथ ठाकुरहिक राज्यकाल मे बनल—ई मानबाक थीक। एहि तरहक गवेषणा ओ उत्तरदायित्वपूर्ण ग्रन्थ लिखवा सँ पूर्व ओ अवश्य प्रौढ़ भए गेल होएताह ई अन्दाज लगाएब सहज थीक तेँ शाके १६म शताब्दीक तृतीय चतुर्थांशक अन्त हिनक जन्मक समय होएबाक चाही तथा पूर्वोक्त वेदबाहु······'पुस्तकम्' बला लेखक अनुसारेँ तावत् धरि अर्थात् १६२४ शाके धरि लोचन लिखब आदिमे कार्यक्षम छलाह जे त्वरित एहि पुस्तकक प्रतिलिपि कएलन्हि। पूर्व समयमे मुद्रण-कलाक विना ग्रन्थकर्त्ता केँ ग्रन्थक प्रचार तथा सुरक्षाक हेतु दस बीस प्रति लिखब वा लिखाएब आवश्यक रहैत होएतन्हि ताहूमे विशेष सावधान लोक अपनहि हाथेँ प्रतिलिपियो सभ करब उचित बुझैत होएताह कारण आन ओतेक सतर्कताक संग प्रतिलिपि करत वा नहि ताहिमे सन्देह। अशुद्ध प्रतिलिपिक कारणेँ ग्रन्थकर्त्तहु पर दोष आएब सम्भव तैँ किछु प्रति अपनहु हाथे कएनहि होएताह जाहिमे इहो एक प्रति छल जाहिमे उक्त श्लोक कविवर चन्दा झा केँ भेटलन्हि तथा जाहिमे १६०७ लिखल छल से दोसर प्रति छल। एहि दूहू समयक मेल बैसि जाइत अछि तथा १६२४ शाके एवं सन् १७१२ ई० धरि संगीताचार्य लोचन सक्षम छलाह, इहो सिद्ध होइत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अछि। अन्ततः हुनक दीर्घजीवित्वो प्रमाणित होइछ। एहि प्रकारेँ "लक्ष्मण सेनक राज्यकाल हिनक समय थीक" ई निश्चये भ्रान्त धारणा अछि किएक तँ तावत् धरि कवि कोकिल विद्यापति ठाकुरक जन्म नहि भेल छल जनिक पदक उदाहरण प्रकृत ग्रन्थमे देल गेल अछि।

महाकवि विद्यापति ठाकुर एवं महाकवि गोविन्ददास झाक सदृशे म० म० लोचन झाक जन्म स्थानक विषयमे सेहो पूर्वमे किछु बङ्गाली विद्वान् लोकनिक ई मान्यता छलन्हि जे लोचन बङ्गाल निवासी छलाह। सर्वप्रथम आचार्य क्षितिमोहन सेन अपन लेख Lochan Pandit's Ragtarangini' मे लोचनक जन्म स्थानक विषय पर विशद रूपेँ विचार कए एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे लोचन लक्ष्मण सेनक राज्यकालमे राजाश्रित कवि छलाह एवं प्रायः बल्लालसेनक राज्यारोहण कालमे लोचन ई पोथी हुनका समर्पण कएने रहथिन्ह। दोसर बङ्गाली विद्वानक ई मान्यता छलैन्हि जे लोचन कविक जन्म वर्दमान जिलाक कोग्राम नामक ग्राममे भेल छलैन्हि। ई श्री नरहरि भक्त पंडितक शिष्य छलाह। चैतन्य महा-प्रभु सँ प्रभावित भए ई 'चैतन्य-मङ्गल' नामक महाकाव्य रचना कएने छलाह। ई बङ्गाली विद्वान्, लोचन द्वारा रचित सात ग्रन्थ—दुर्लभसार, वस्तुतत्त्वसार, आनन्द-लतिका, प्रार्थना, चैतन्यविलास, देशनिरूपण एवं रागलहरीक उल्लेख कएने छथि। पुनः वैष्णव पद-लहरीक अनुसार लोचन कवि मानभूमि जिला निवासी छलाह। हिनक माताक नाम सदानन्दी एवं पिताक नाम कमलाकर छलैन्हि। किन्तु मिथिलाक इतिहास, पंजी, साहि-त्यक इतिहास एवं डा० सुभद्र झाक लेख "Time and Domicile of Lochana" आदि द्वारा बङ्गाली विद्वान् लोकनिक उपर्युक्त भ्रमक निवा-रण भए जाइत अछि। वस्तुतः लोचन झा मिथिला निवासी छलाह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिनक लिखल 'नैषधीयचरित'क अन्तमे स्वहस्तलिखित प्रमाण—"उद्यान (रैयाम ?)[1] ग्राम वास्तव्य एकलाङ्गलवंशीयः श्रीलोचन शर्मा शाके १६०३" हमरा सभकेँ उपलब्ध अछि। पुनः चन्दा झा द्वारा प्राप्त लोचनक स्वहस्त-लिखित 'रागतरङ्गिणी'मे ई श्लोक भेटैत अछि—

वेदबाहुरसक्ष्माभिर्लक्षिते शाके वत्सरे।
बुधे भाद्रतृतीयायां जातमेतत्तु पुस्तकम् ॥
उद्यान नगरान्तस्य त्वरितस्य विलेखने।
देवाल्लब्धप्रतीकस्य कृतिर्लोचनशर्मणः ॥

एहि प्रमाण सभसँ हिनक मैथिल होएब सुव्यक्त सिद्ध अछि। एकरा अति-रिक्त मिथिलाक पञ्जी पुस्तक सेहो हिनक वंशावली सँ हिनक मैथिलत्वकेँ सिद्ध करैत अछि। पञ्जीकार रघुनन्दन झाक अनुसारेँ म० म० लोचन झा एकहरे कन्हौली मूलक श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह। हिनक वंशावली निम्न-रूपेँ उपलब्ध अछि:—

---

१. दरभंगा सँ मुद्रित रागतरङ्गिणीक अन्तमे जे नैषधक ताड़पत्रक फोटो देल गेल अछि ताहिमे 'रैयाम' ई पढ़बामे अबैछ तखन उद्यानक उल्लेखक मूल की से अन्वेषणीय। संभव थीक हुनक वंशज सम्प्रति उजानमे होथि तेँ किछु अक्षर साम्य सँ रैयाम केँ उजान पढ़ि लेल गेल हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मूलग्राम—एकहरे कन्हौली

वैद्यनाथ झा
|
परमानन्द झा
|
म० म० बाबू झा
|
म० म० लोचन झा
|
बाछु प्रसिद्ध रत्नपति झा, सनाथ झा
|
झिङ्गुर प्रसिद्ध तीर्थदत्त झा, भाङा प्र० तारादत्त झा
|
भवदत्त झा   मुसली झा
|
दामोदर झा   मनोहर झा
|
मनमोहन झा   गुदरी झा
|
मुक्तिदत्त झा,   चक्रदत्त झा
| |
वैद्यनाथ झा, काशीनाथ झा, लक्ष्मीनाथ झा
भैरव झा   तेजनाथ झा

एहि प्रकारेँ ई प्रमाणित होइछ जे म० म० लोचनक वंशज सम्प्रतियो दरभंगा जिलाक उजान ग्राममे बसैत छथि। एहि सँ अतिरिक्त एहि रागतरङ्गिणीमे मिथिलाक पूर्ववर्त्ती कवि लोकनिक एवं समसामयिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपन आश्रयदाता राजा लोकनिक चर्चा सेहो लोचन कएने छथि। अपन रचनाक भनितामे अपन आश्रयदाताक प्रसन्नतार्थ हुनक गुणगान सेहो कएने छथि—ईहो हिनक परिचयमे पुष्ट प्रमाण थिक। एकरा संग-संग विद्यापति सँ प्रारम्भ कए अपन समय धरि मिथिलाक प्रसिद्ध कवि लोकनिक रचनाकेँ विभिन्न रागक उदाहरण स्वरूप उपयोग कएने छथि तथा मिथिला मात्रमे प्रचलित देशी राग सभक वर्णन लोचन एहिमे कएने छथि। यदि ई बङ्गाली रहितथि तँ मिथिलाक गीत आदिक विषयमे—"देश्यामपि स्वदेशीयत्वात्प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया श्रीविद्यापतिकविनिबद्धास्तास्ता मैथिलगीतगतयः प्रदर्श्यन्ते" एहि प्रकारेँ नहि कहितथि। एतए ई कहि देब आवश्यक जे उद्धृत अंश मे 'स्वदेशीयत्वात्'क स्थानमे मुद्रित पुस्तकमे 'सुदेशीयत्त्वान्' पढ़ल गेल अछि जे स्पष्टे पढ़बाक दोष थीक किऐक तँ 'सुदेशीयत्त्व'क कोनो उपयुक्त अर्थ बुझबामे नहि अबैछ। मिथिलाक्षरमे 'सु' तथा 'स्व' मे केवल एक नीचाक विन्दु मात्रक भेद होइत अछि जे लेखक सँ छुटियो जा सकैछ एवं पाठकहु केँ दृष्टिपथ सँ निकलि जा सकैछ। यदि ई बङ्गाली कवि रहितथि तँ अपन रचनामे बङ्गालक किछुओ रूपक दिग्दर्शन अवश्य करओने रहितथि जेना मिथिलाक करओलन्हि अछि। एक बङ्गाली कवि अन्य प्रान्तकेँ 'स्वदेश' कहत—ई असंभव अछि।

पूर्वमे जतेक बङ्गाली विद्वानक लोचनक जाति एवं जन्मस्थान सम्बन्धी मतक उल्लेख कएलहुँ अछि तकर प्रामाणिक तर्क ओ लोकनि एकदमे नहि दए सकलाह अछि। यदि हुनका लोकनिक कथनमे सत्यता होइन्हि तँ ओ कोनो आने लोचन कविक विषयमे भए सकैत अछि। सङ्गहि हुनका सभक समयो भिन्न भए सकैत अछि। स्थानभेदेँ नामक सादृश्य कथमपि असंभव नहि अछि। अतः प्रकृत 'रागतरङ्गिणी'क रचयिता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म० म० लोचन शर्मा (झा) मिथिला भूमिक सुपुत्र एकहरे कन्हौली मूलक श्रोत्रिय ब्राह्मण एवं रैयाम वा उजान गाम वासी छलाह। ई गाम दरभंगा जिलाक लोहना रोड रेलवे स्टेशनक क्रमशः उत्तर एवं दक्षिण में अछि। संगहिँ ई मैथिलनरेश खण्डवलाकुल कमल दिनेश राजा महिनाथ ठाकुर एवं राजा नरपति ठाकुरक आश्रित छलाह नहि कि राजा लक्ष्मण सेनक।

प्रकृतग्रन्थ रागतरङ्गिणीक रचना सत्रहम ईशवीय शतकक सप्तम दशकमे खण्डवलाकुलक राजा महिनाथ ठाकुरक शासनकालमे हुनक छोट भाय (पश्चात् राजा) नरपति ठाकुरक आदेशसँ म० म० पं० लोचन झा द्वारा भेल अछि। एहि ग्रन्थ में तीन भाषाक प्रयोग भेल अछि—संस्कृत व्रजभाषा एवं मैथिली। लोचन द्वारा प्रयुक्त 'देशीय' शब्द निश्चये मैथिली थीक। रागतरङ्गिणीक भाषाक रूपकेँ अत्यन्त प्रामाणिक बुझल जाइत अछि। ई अन्यान्यों कवि लोकनिक पदक पाठ शुद्ध करबामे अत्यन्त सहायक सिद्ध भेल अछि। एहि आधार पर जँ एकरा एक आकरग्रन्थ कहल जाय तँ कोनो अत्युक्ति नहि होएत।

एहि ग्रन्थक नामे ई स्पष्ट कए रहल अछि जे ई संगीते विषयक ग्रन्थ थीक। एहि ग्रन्थक प्रणयन द्वारा जनसाधारणक हेतु बोधगम्य भाषामे भारतीय विशेषतः मिथिलाक राग रागिणीक वर्णन करब लोचनक अभीष्ट छलन्हि। ओ अपन एहि उद्देश्यक पूर्त्यर्थ भारतीय एवं मिथिलाक संगीत पद्धतिकेँ आधार मानि राग रागिणीक सुन्दर विवेचना प्रस्तुत कएलन्हि अछि। लोचन सर्वप्रथम तँ राग रागिणीक वैज्ञानिक विभाजन कएल अछि पुनः ओहि सभक स्वरूप एवं लक्षण, उदाहरणक संग देल अछि जे संगीत शास्त्रक हेतु निश्चये पथ-प्रदर्शकक कार्य करैत अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अध्ययनक सुविधाक दृष्टि सँ लोचन एहि ग्रन्थ केँ नामानुरूपेँ पाँच तरङ्गमे विभाजित कएने छथि। प्रथमतरङ्गमे छवो रागक रूप वर्णन एवं दोसरमे तीसो रागिणीक मूर्ति निरूपण अछि। तेसरमे मिथिलाक गीत-गत्यनुरुद्ध रागरागिणीक वर्णन एवं नादक निरूपण तथा गीत छन्द एवं ताल पर उदाहरणयुक्त विचार तथा चारिममे मिथिला प्रचलित देशीय संकीर्ण राग सभक सुन्दर सोदाहरण व्याख्या अछि। पाँचम तरङ्गमे रागसंस्थानादि अछि जाहिमे स्वर प्रकरण, वीणामे स्वरसंस्थानक निरूपण, श्रुतिविभाग, राग-गानक विभिन्न समय तथा नायिकाक भेद इत्यादि विषयक समावेश सेहो प्रासङ्गिक रूपेँ कएने छथि।

राग तरङ्गिणी वस्तुतः मिथिलाक संगीत साहित्य पर एक अद्वितीय पुस्तक अछि। लोचन वस्तुतः एहि ग्रन्थक प्रणयन कए मिथिलासँ लुप्त होइत संगीत परम्पराक संरक्षण कएलन्हि अछि। कारण तकर ई जे मिथिलाक मध्ययुग ललितकलाक दृष्टि सँ स्वर्णयुग छल। ओहि समयमे खासकँ कर्णाटवंशीय प्रथम राजा नान्यदेव द्वारा रोपल संगीतक गाछ शत-शाखयुक्त भए अपन महिमा सौरभ सँ दिग्दिगन्तकेँ आप्यायित कए रहल छल। मिथिलामे संगीतक प्रचार प्रसार एतेक व्यापक रूपेँ भए उठल जे एकर प्रभाव अपन देश कोशक सीमाकेँ टपि अन्यान्यो प्रान्तमे पड़ए लागल। आसामक अङ्कीया नाटकमे संगीतकेँ स्थान एही कारणेँ भेटल छलैक। ओहि समयमे मिथिलामे जतबा कवि लोकनि कविता रचना करैत छलाह, सभ ओहिमे विशिष्ट सँ विशिष्ट रागक निवेश करबाक प्रयास करैत छलाह। रागरागिणीक बाढ़ि आबि गेल छल। किछु तँ ओहिमेसँ अवश्ये पुरान छल किन्तु विशेष नवीन आविष्कृत सएह छल। एहि समयमे एक एहन मनीषीक प्रयोजन छलैक जे एहि छिड़िआएल राग रागिणी केँ एकत्र कए लिपिबद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कए सकए जाहि सँ संगीत क्षेत्रमे ओ एक पथ प्रदर्शकक रूप लए सकए। लोचन समयक ओहि आवश्यकताकेँ बुझलन्हि तँहि हिनक महानता निर्विवाद अछि। ई सभ राग रागिणीकेँ ओकर परिभाषा एवं भेदोपभेदक सङ्ग एक ठाम निहित कएलन्हि। एहि सँ मात्र मैथिलेक उपकार नहि भेल किन्तु भारतीय संगीत साहित्य सेहो गौरवान्वित भेल। वस्तुतः हुनक ई ग्रन्थ भारतीय संगीत शास्त्रक सरितामे एहि प्रकारक तरङ्ग उत्पन्न कएलक जे विभिन्न प्रान्तक संगीतज्ञ लोकनिक ध्यान आन्दोलित भए उठल। एही कारणेँ संगीतशास्त्रक प्रख्यात विद्वान् स्व० विष्णु नारायण भातखण्डे महोदय एहि ग्रन्थ केँ मध्यकालीन भारतीय संगीत शास्त्रक प्रामाणिक पुस्तक मानि अपन ग्रन्थमे एकर भूरि-भूरि प्रशंसा कएल अछि।

एकरा अतिरिक्त रागतरङ्गिणी मैथिली गीति परम्पराक इतिहासमे एक अपूर्व योगदान देलक अछि। ओहि प्रसंगमे ई मैथिली साहित्यक कवि लोकनिक एक क्रमबद्ध सूची प्रस्तुत करैत अछि। वस्तुतः मध्यकालमे महाकवि विद्यापतिक पदावलीक अनुकरण अनुव्रजन पर कतोक कवि मैथिलीमे गीत रचना करए लगलाह किन्तु तत्काल हुनका लोकनिक रचना महाकविक रचनारूपी चन्द्रमा लग उडुगण सदृश सिद्ध भेल। एही कारणेँ हुनका लोकनि केँ केओ उत्साहित नहि कएलक आ सोर उत्साहक अभावमे ओ लोकनि रचना करब एकदमे छोड़ि देलन्हि। मुदा अपना क्षेत्रमे जँ चन्द्रमाक महत्त्व छैन्ह तँ अपना क्षेत्रमे ताराक सेहो कम नहि। लोचन एहि सत्य केँ बुझलन्हि आ फलस्वरूप यथासाध्य प्रयत्न कए मैथिली साहित्यक उपेक्षित एवं विस्मृत कवि-लोकनिक रचनाक संकलन कएने छथि।

रागतरङ्गिणी एकरा संग-संग एक पैघ बहिः साक्ष्य सेहो अछि किएक तँ एहि ग्रन्थक द्वारा इतिहासकार लोकनि केँ तत्कालीन कवि समक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय निर्द्धारण करवामे अत्यन्त सुविधा होइत छैन्हि। ई इतिहासोक इतिहास थीक।

प्रस्तुत ग्रन्थ—रागतरङ्गिणीक अद्यावधि तीन संस्करण प्रकाशित भए चुकल अछि—प्रथम १९१० ई० मे बम्बई सँ श्री बी० एस० सुखथंकर द्वारा; दोसर १९१८ ई० मे पूना सँ पं० दत्तात्रेय केशव जोशीक द्वारा एवं तेसर १९३४ ई० मे दरभंगा राज प्रेस सँ पं० बलदेव मिश्र द्वारा। एहिमे प्रथम दूनू संस्करणमे मैथिली रचना भाग नहिए जकाँ उद्धृत अछि तथा ओहि सँ नामोल्लेखक अतिरिक्त किछु ज्ञातव्य विषयक ज्ञानो नहिएँ जकाँ होइत अछि। बम्बइ संस्करणक बहुत किछु अंश प्रि० क्षितिमोहन सेनक लेख पर आधारित अछि। एहि संस्करणमे लेखकक नाम लोचन पण्डित अछि तथा निम्नलिखित श्लोक रागतरङ्गिणीक Colophan कए लिखल गेल अछि :—

भुजबसुदशमितशाके श्रीमद्बल्लालसेनराज्यादौ।
वर्षैकषष्टिभोगैर्मुनयस्त्वासन् विशाखायाम्॥

वस्तुतः ई श्लोक बल्लाल सेन सँ लिखाओल गेल 'अद्भुत सागर' नामक ग्रन्थक थीक से म० म० पं० परमेश्वर झा अपन मिथिला तत्त्व विमर्शमे स्पष्ट रूप सँ उल्लेख कएने छथि। तखन एहि श्लोककेँ – लोचनक ग्रन्थमे जोड़ब कहाँधरि युक्तिसङ्गत होएत? दरभंगाक संस्करणमे ई श्लोक उपलब्ध नहि प्रत्युत एहि संस्करणमे मिथिलाक राजा लोकनिक एवं हुनक आश्रित पैघ-पैघ कवि लोकनिक उल्लेख भेटैछ। एतेक धरि जे लोचन म० म० राजा महिनाथ ठाकुर एवं हुनक भाय नरपति ठाकुर पर्यन्तक नाम सँ गीत रचना कएने छथि। लोचन राजा नरपति ठाकुरक (जे स्वयं संगीतक प्रेमी एवं जिज्ञासु छलाह) प्रसन्नताक हेतु रागतरङ्गिणीक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रचना कएने छलाह सेहो एहि संस्करण सँ ज्ञात होइछ। रागक उदाहरण स्वरूप जे गीत सभ लोचन उद्धृत कएने छथि से सभ शुद्ध मैथिलीमे मिथिलामे प्रचलित गीत सभ अछि। बम्बइक संस्करणमे ई सभ विषय नहि पाओल जाइछ एवं ओहिमे लोचनक परिचय एवं जन्म–स्थानादिक विषयमे सेहो कोनो प्रामाणिक उल्लेख नहि भेटैछ। दरभंगाक संस्करणमें पञ्जी पुस्तकक आधार पर हुनक अद्यावधिक वंश परम्परा एवं हुनक स्वहस्त-लिखित पुस्तकक आधार पर स्थानादिक निश्चय कएल गेल अछि। मिथिलाक संस्कृतिमे पञ्जी-व्यवस्था एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। लोचनक परिचय एखन धरि प्रत्येक विशिष्ट पंञ्जीकार लोकनिक पोथीमे पाओल जाइछ। एहि प्रबल प्रमाणक विरुद्ध आन कोन बात मानल जा सकैत अछि।

बम्बइक संस्करणमे दरभंगाक संस्करण सँ बहुत अंशमे भेद रहितहुँ किछु अंशमे समानता सेहो अछि। दूनूमे संगीत वर्णनक क्रम समाने अछि, दूनू भूमिकामे किछु साम्य अछि। यथा :—

"देश्यामपि सु (स्व) देशीयत्वात् प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषायां श्रीविद्यापतिकविनिबिद्धास्तास्ता मैथिलगीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।" इत्यादि पंक्ति दूनू संस्करणमे उपलब्ध होइछ। तखन दूनूमे जे भेद प्रतीत होइछ से समय, स्थान तथा लिपिकक दोषेँ हो से संभावित अछि। अतः ओहि दूनू संस्करण सँ दरभंगाक संस्करण पूर्ण प्रामाणिक तथा बहुतो भ्रमक निवारणमे समर्थ अछि।

सम्प्रति जखन पटना विश्वविद्यालयक दरभंगा राज द्वारा संस्थापित मैथिली विकास योजना (Maithili Development Scheme) सँ राग-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तरङ्गिणीक शुद्ध संस्करण प्रकाशित करबाक निश्चय भेल तखन आशा छल जे पूर्ण अन्वेषण सँ शुद्ध आदर्श प्रति भेटत तथा ओहि आधार पर एकर परिशुद्ध संस्करण विज्ञ समाजक समक्ष प्रस्तुत कएल जा सकत। किन्तु बहुतो प्रयास कएला पर दोसर प्रामाणिक प्रति नहिं भेटि सकल। केवल एक अत्यन्त नवीन प्रति राज दरभंगा पुस्तकालय सँ प्राप्त भेल जे पं० मिश्रक द्वारा उपलब्ध प्रति सँ भिन्न छल तथा दोषमे ओहू सँ चढ़ल-बढ़ल। हँ, एतेक अवश्य भेल जे पूर्व प्रतिक त्रुटिक अंशक किछु पूर्ति एहि सँ भए सकल तथा त्रुटि (ग्रन्थक खण्डित अंश) बहुतो रास रहि गेल। मैथिली पद्य (गीत) सभक विशेषतः कवि कोकिल विद्यापति ठाकुरक गीत सभक पाठ अन्य पाठ सभक द्वारा एहि संस्करणमे पूर्व संस्करण सँ विशेष रूपें परिशुद्ध कएल गेल अछि। पूर्व संस्करणमे अन्यो जे पदच्छेद दोष, मुद्रण दोष आदि छल तकर यथासाध्य निराकरणक प्रयास कएल गेल अछि। एहिमे कतवा दूर धरि सफलता भए सकल से तँ विज्ञ पाठके निर्द्धारित करताह।

श्रीसुधाकरझा, शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवश्यक शुद्धिपत्र।

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
२४	४	लागति	लाजति
२५	१०	धूरि धूसरम लीन मन	धूरिधूसर मलीन मन
२६	१३	भातिन्न-भाति	भातिन-भाति
२७	७	विहीं-सब्बों	विहीन-सब्बों
२६	६	मे ह की	मेहकी
२६	१७	उपकब्ध	उपलब्ध
३७	१२	पञ्जमी	पञ्चमी
३८	१७	शवालो	शैवालो
४०	४	भाजन	भाजत
४६	४	निष्यन्दि	निष्यन्दि
५४	६	नाद;	नादः
५८	७	श्रीम०	श्रीम०
६६	१५	छत्र०	छन्द०
७२	१०	रितु तहँ	रितु रतिपति तहँ
९२	३	पञ्जमे	पञ्चमे
१०१	१०	धन	घन
१०६	१३	चतुस्ककम्	चतुष्ककम्
११०	१	हे राएल	हेराएल
१२०	५	रोअएन्ब द धारा	रोअए द बधारा
१२५	१३	पञ्ज०	पञ्च
१२८	९	सम्भोगसावरीगता	सम्भोगासावरीगतता
१३७	८	कुपिदेव	कुपितेव
१३८	५	धनछा	धनछी
१४८	१	मनुरिपु	मधुरिपु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१६८	२	एहि सँ आगू मोरङ्गीकोडारक लक्षण उदाहरण रहबाक चाही से तरङ्गक अन्तमे पृ० २०० पंक्ति ५ सँ देल अछि।	
१७३	१६	दूघक	दूधक
१७४	११	तनुचारे	तनुचीरे
१९९	१३	श्री गोरा	श्रीरागो
२००	८	निर्मितिभंवेत	निर्मितिर्भवेत्
२२८	३	अहरहमति	अहरहरति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषयानुक्रमणी ।

विषय	पृ०
प्रथम तरङ्ग ।	
मङ्गलाचरण	१
स्वाश्रयराजवंशवर्णन	१
ग्रन्थभूमिका	२
पुरुषरागनाम	३
भैरवरागस्वरूप	४
कौशिकरागस्वरूप	५
हिन्दोलरागस्वरूप	६
दीपकरागस्वरूप	७
श्रीरागरागस्वरूप	९
मेघरागस्वरूप	१०
द्वितीय तरङ्ग ।	
भैरवरागिणी ५	१२
बङ्गालीवर्णन	१२
मधुमाधवीवर्णन	०४
वराड़ीवर्णन	१५
सैन्धवीवर्णन	१६
भैरवीवर्णन	१७
कौशिकरागिणी ५	१९
टोडीवर्णन	१९
खम्भावतीवर्णन	२०
गौरीवर्णन	२२
ककुभावर्णन	२३
गुणकरीवर्णन	२५
हिन्दोलरागिणी ५	२६
वेलावलीवर्णन	२६
देशाखवर्णन	२७
रामकरीवर्णन	२९
ललितावर्णन	३०
पटमञ्जरीवर्णन	३१
दीपकरागिणी ५	३२
केदारावर्णन	३२
कानरावर्णन	३३
देशीवर्णन	३५
कामोदवर्णन	३६
विहागरावर्णन	३७
श्रीरागरागिणी ५	३९
वसन्तावर्णन	३९
मालवीवर्णन	४१
मालश्रीवर्णन	४२
धनाश्रीवर्णन	४३
आसावरीवर्णन	४५
मेघरागरागिणी ५	४६
मलारीवर्णन	४६
देशकारीवर्णन	४८
भूपालीवर्णन	४९
टङ्कावर्णन	५०
दक्षिणगुर्जरीवर्णन	५२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृ०	विषय	पृ०
तृतीय तरङ्ग ।		प्रीतिकरी रामकरी	८०
नाद निरूपण	५४	ललिता	८४
नादमयस्वरमूर्छनाधीनरागोत्पत्तिकथन	५५	*केदारा ७*	८५
गीतनिरूपण तथा ओकर भेद	५५	शुद्धा केदारा	८५
गीतक पुनः दू भेद–मार्ग तथा देशीय	५६	केदार केदारा	८७
मिथिला गीतोत्पत्ति निरूपण	५७	विहागरा केदारा	८८
भैरवी आदि मिथिलामे केवल ३६		मलारी केदारा	९०
रागमध्य १५ राग प्रसिद्ध	५८	पहड़िया केदारा	९२
भैरवीक उदाहरण	५९	कामोद केदारा	९३
वराड़ीक ६ भेद	६०	मालव केदारा	९४
छन्द विषयक नियम	६०	*कामोद २*	९५
गणप्रस्तार	६०	मङ्गलकामोद	९६
गणदेवता	६०	देव कामोद	९७
रागसामान्यलक्षण	६१	*श्रीराग*	९८
वराड़ी राघवी	६२	वसन्त (श्रीराग रागिणी)	१००
वराड़ी पहड़िया	६४	*मालव ११*	१०३
बराड़ी देशी	६७	वितत मालव	१०३
वराड़ी माधवी	६९	देश मालव	१०४
वराड़ी भठियाली	७१	श्रीमालव	१०५
वराड़ी नेपाली	७३	धनछी मालव	१०६
कौशिक	७४	वियोगि मालव	१०८
देशाख २	७६	बृहद्वियोगि मालव	१०९
जयदेव देशाख	७६	पहड़िया मालव	१११
देश देशाख	७६	विजयपुरी मालव	११३
रामकरी ४	७८	जोगिआ मालव	११५
जयदेवी रामकरी	७८	सारङ्गी मालव	११६
शुद्धा रामकरी	७८	प्रियतमा मालव	११८
देशी रामकरी	७९	*आसावरी १२*	११९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृ०	विषय	पृ०
वितता आसावरी	११६	देशी सारङ्गी	१५२
देशी आसावरी	१२१	अभिरामा सारङ्गी	१५३
सिंघली आसावरी	१२२	शोभना सारङ्गी	१५४
जोगिआ आसावरी	१२४	अनूपा सारङ्गी	१५५
सिन्धुला आसावरी	१२५	*सूहव ६*	१५६
भोगिनी आसावरी	१२६	देशाख सूहव	१५६
संभोगिनी आसावरी	१२८	शुद्ध सूहव	१५८
दण्डका आसावरी	१२९	काम सूहव	१५९
सरसा आसावरी	१३०	करुणा सूहव	१६०
द्राविणी आसावरी	१३२	सुन्दर सूहव	१६२
अभिरामा आसावरी	१३२	वितत सूहव	१६३
मनोहरा आसावरी	१३४	*कोडार ५*	१६४
मलारी २	१३४	स्मर संदीपन कोडार	१६४
शुद्धा मलारी	१३४	वियोगी कोडार	१६६
पहड़िया मलारी	१३५	मोरङ्गिया कोडार	२००
भूपाली	१३६	दण्डक कोडार	१६८
गुर्जरी	१३७	शुद्ध कोडार	१६८
चतुर्थ तरङ्ग ।		(कामोद केदार कोडार)	१७०
संकीर्ण राग	१३८	*धनछी ७*	१७०
विभासी लक्षणोदाहरण	१३८	मङ्गली धनछी	१७०
अहिरानी ३ (भीमपलासी)	१४१	पहड़िया धनछी	१७२
रम्या भीमपलासी	१४३	पञ्चमस्वरा धनछी	१७३
धन्या भीमपलासी	१४४	श्रीविमिश्रा धनछी	१७४
वितता भीमपलासी	१४६	योगिआ धनछी	१७५
गोपीवल्लभ	१४७	शाम्भवी धनछी	१७७
लक्षण दोष निवारण	१४९	शोभना धनछी	१७८
सारङ्गी ५	१५०	*गौड मालव २*	१७९
शुद्धा सारङ्गी	१५०	गौडीय गौड मालव	१८०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय	पृ०	विषय	पृ०
मैथिल गौड मालव	१८०	कामोद नाट	१९६
राजविजय ७	१८१	उत्तम नाट	१९७
देवराज विजय	१८१	रागलक्षण परिष्कार, तथा रागसंकलन	१९९
आलान विमिश्रराज विजय	१८३	**पञ्चम तरङ्ग।**	
देशराज विजय	१८३	स्वरसंज्ञा	२०३
कानरामिश्रराज विजय	१८४	स्वरश्रुतिविभाग	२०४
मङ्गलराज विजय	१८५	स्वरसंस्थितिनिरूपण	२०५
मनमोदराज विजय	१८६	स्वरजातिनिरूपण	२०९
भठियालराज विजय	१८८	तत्तत्संस्थितिगेय रागान्तर	२०६
नाट ५	१८९	सकल देश साधारण रागसङ्कर	२१३
शुद्ध नाट	१८९	राग सभक गानक काल	२२१
मलारी नाट	१९१	नायकनिरूपण	२२३
शङ्कुक नाट	१९४	नायिकानिरूपण	२२४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ ॐ नमस्तस्यै ॥

अथ राग-तरङ्गिणी ।

चिरतरकृतयोग-योगिवृन्दैर्विपुलहृदि स्थिरचेतसा विमृग्यः ।
शमयतु दुरितानि भावकानां, सुखसदनः[1] कदनोऽसतां मुरारिः ॥१॥

नारदप्रमुखैः सिद्धैर्गीयमानः समन्ततः ।
रागरङ्गः प्रसन्नोऽस्तु शङ्करः किङ्करे मयि ॥२॥

यावच्छास्त्रविशारदेन शुचिना[2] निःशेषमध्यापित-
स्तर्काम्भोरुहकाननैकभगवान्[3] भानुर्धराधीश्वरः ।
सामन्तप्रकरोत्तमाङ्गपटलीनीराजिताङ्घ्रिद्वयी,[4]
साक्षादत्र महेश एव सुमहानासीन्महेशः कृती ॥३॥

सूनुस्तस्य सुधासमुद्रलहरीसूक्तिः कलानायको,
विख्यातः कवितालताहृदिगतो हारो नरोत्तंसकः ।
आसीच्छासितदुर्जनः प्रमुदितो नित्यं प्रसन्नेश्वरः,
सत्यार्थेन शुभङ्करः कृतिमतां नाम्ना धराधीश्वरः ॥४॥

एतस्यापि सुताः[5] सुताश्च बहवो बह्व्यः कनीयान् पुनः,
शीलौदार्यवशीकृताखिलजनो जीवातु[6]रेकः क्षितौ ।

---

१. 'सुखसदनं' उचित । २. शुचिपति उपाध्याय महाराज महेश ठाकुरक गुरु ?
३. ''भगवद्भानुः' एहि तरहें समस्त पाठ उचित । ४. ''द्वयः' होएब उचित ।
५. यद्यपि एहि तरहक स्थितिमे एक शेष करब उचित तथापि स्पष्टताक हेतु पृथक् पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्गक निर्देश कएल । ६. 'जीवातु' शब्द जीवनौषधवाची प्रसिद्ध अछि एहिठाम चिरजीवि-अर्थमे प्रयुक्त कएल गेल बूझि' पड़ैत अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामश्यामतराभिरामसुमहद्धा[१]मैकचित्तोऽभव-
च्छ्रीमत्सुन्दर[२]भूपुरन्दरधराविख्यातकीर्तिः सुतः ॥५॥

तस्योल्लासिकलाकुलेन मुदितो नित्योन्नतः सन्नतः
सूनुः सज्जनरञ्जनः प्रतिपलं दुःशीलहृद्गञ्जनः ।
शोभाभिः कुसुमायुधस्य सुमह[३]द्धिक्कारकारी[४]तरां
वीरः श्रीमहिनाथभूपतिलकः शास्तेऽधुना मैथिलान् ॥६॥

तस्यानुजोऽपि निजवैरिदलोद्भटानां,
न्यक्कारकारिधनुरायतपुङ्खकाण्डः ।
चन्द्राननो नरपति[५]र्ध्वनिगानसिन्धु-
राविर्बभूव गुणिराजगणैकबन्धुः ॥७॥

यो जागर्ति महीतले निरुपमः सर्वासु पुंसां कला-
स्वासन्नेषु च कल्पपादपवदानन्दाय यो नित्यशः ।
तस्य श्रीनृपसुन्दरात्मजमहीनाथानुजस्याज्ञया,
विप्रः कोऽपि सुवंशजो नरपतेः कीर्त्तिं तनोति प्रियाम् ॥८॥

किञ्चित्समाहृत्य कुतश्चिदन्यत्
स्वयं च सम्पाद्य पदप्रबन्धम् ।
वितन्यते लोचननामधेय-
द्विजेन सा रागतरङ्गिणीयम् ॥९॥

---

१. 'सुमहाधामैक॰' एहि तरहें पाठ उचित। २. 'सुन्दर' तथा 'भूपुरन्दर' दूनू पदकेँ प्रधानरूपें प्रतीतिक हेतु समाससँ बाहर राखब उचित। ३. 'सुमहाधिक्कार॰' एहि रूपक पाठ उचित। ४. एहि ठाम 'तरप्' प्रत्यय उचित नहि, यदि से हो तँ 'कारी' ई दीर्घ नहि होएब उचित। ५. ॰'द्धुनि' मु॰ पु॰।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुणिगणविनिगूढान् मूढलोकेऽपि गम्यान्,
कु[1]लयितुमिह रागान् सर्वतः कर्णरम्यान् ।
विपुलगुणजनानां सङ्गतो सम्प्रयुक्ते
मतिमिह हि निबन्धे सज्जनाः सन्नयन्तु ॥१०॥

इह खलु निखिलशास्त्रैकगरिष्ठश्रीमद्भरतादिमुनि-प्रयुक्तसङ्गीतशास्त्रोक्तानि रागाणां षोडशसहस्राणि । तथा चाभियुक्ताः—

गोपीभिर्गीतमारब्धमेकैकं कृष्णसन्निधौ ।
तेन जातानि रागाणां सहस्राणि तु षोडश ॥

रागेष्वेतेषु षट्त्रिंशद्रागा जगति विश्रुताः ।
कालक्रमेण तत्रापि ह्रास एव तु दृश्यते ॥

केचिद्वदन्ति ते सर्वे रागाः सन्तीति निश्चितम् ।
मेरोरुत्तरतः पूर्वे पश्चिमे दक्षिणे तथा ।
समुद्रकण्ठे ये देशास्तत्रामीषां प्रचारणा ॥

अथात्र पुंरागाः ।

भैरवः कोशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा ।
श्रीरागो मेघरागश्च षडेते हनुमन्मताः ॥

(दोहा)

[2]आदिराग भैरव भनिअ, पुनि कओसिक हिन्दोल ।
दीपक अओ श्रीराग शुभ, मेघराग बहु-मोल ॥

---

१. 'कलयितु°' (रा० पु० द० ले०) । २. ई दोहा आगू, दूनू लक्षणक बीचमे मुद्रित पुस्तकमे अछि; प्रकरणशुद्धिक हेतु एहि ठाम राखब उचित बुझाएल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथैतेषां मूर्त्ति-लक्षणम् ।

इदं च सकल-लोक-साधारण-झटित्युद्बोधहेतु-मध्यदेशभाषामाश्रित्यापि लिख्यते ।

तत्र प्रथमं भैरवः—

जटाजूटतटगङ्ग, वसन सित, अङ्ग भुअङ्गम,
बरद करदछतदेव बरदवाहन चढि जङ्गम ।
आसन गजवरखाल धवलशशि भाल विराजइ,
तीनि नयन चित चजेन जपत भावक दुख भाजइ ॥

करकलित शूल नृकपाल अरु, रागराज अति मधुर रव ।
भैरव हर दुइ नाहि जग, जेहि गावत सब समजे सब ॥

(छप्पय)

शिरहँ अङ्ग अङ्गहिँ भुअङ्ग भूषन शशि भालहँ ।
विषम-नयन चित उदित चजेन आसन गजखालह ॥

नरकपाल धर धवलरूप कर शूल सुलच्छन ।
हरसरुप सबरागभूप सित वसन विलच्छन ॥

जग सकलरागरागिनीभवन[1], आदिराग जेहि कहत सब ।
सबसमयगेयगुन अति निपुन, भैरव सुनि सुख देत भव[2] ॥

---

१. 'भुवन' (रा० पु० द० ले०) । २. 'भब' (सु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च ।

ललाटे शीतांशुः किल जटिलमूर्ध्नि त्रिपथगा,
विभूषा भौजङ्गी वपुषि सितकान्तिर्विजयते ।
सदा यस्य श्वेतं वसनमशनीयं च विजया,
जयत्येवंभूतः सततमतिपूतश्च भसितैः ॥

अपि च,

त्रिनेत्रस्तच्चैकं वहति किल भाले तु दहनं,
परे घूर्णत्तारे करतलकपाली च शिवदः ।
त्रिशूली दान्तेयाजिनमधिगतः सर्वजगतां
समाराध्यो रागो जगति कथितो भैरव इति ॥१॥

अथ द्वितीयः कौशिकः ।

पीतवसन सितदस[1]न हेमसमरूप मनोहर,
वीरसिरोमयमाल गरे गहि होत भयङ्कर ।
करतलकलितकरालकालकरवाल कृता[2]दर,
वीर वीरकृतसेव वीर-सङ्गो करत युद्धवर ॥

अतिललितगान विबुधाधिपतिसदसि वीनप्रवीन जन ।
गावत बजाए जेहि सकल सुर, सो कौशिकनामा रागरमन ॥

---

१. 'सितहसन' (रा० पु० द० ले०) 'सितदमन' (मु० पु०) । २. 'कृतोदर' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

मानो सुवर्णतनुवर्ण वैरिखण्डनविधिपण्डित,
वीरपुरुष रणधीर दन्त उज्जल करें मण्डित ।
बहुलवीरपरिवार कलित–करवाल सङ्ग[1] चर,
वीरविषजे संचरत वीर–सजो करत युद्धवर ॥

वीरा[2]तिवीर बहुरसिकजनकण्ठमाल कवि नवि लहत ।
सङ्गीतसार सुविचारि उर, एआा–सजो कवि कओसिक कहत ॥

पद्यं च

कृत्वा मुण्डालिमालामुरसि धवलिमोत्कृष्टदन्तः समन्ता-
द्वीरः संसेव्यमानः समरभुवि करन्यस्तशत्रैः प्रवीरैः ।
शस्त्रास्त्रत्यागदक्षः प्रतिसुभटदलैर्युध्यमानः किलायं
हेम्ना[3] तुल्याङ्गकान्तिर्जगति कविवरैर्वर्णितः कौशिकाख्यः ॥२॥

अथ (तृतीया) हिन्दोलः

रूपगर्वयुत खर्व पर्वहिमधामसमानन,
गन्धर्वाधिक–सर्वकलाविद्याकुलकानन ।
नटवर कलित सुवेश विमल पारावतसुन्दर,
कुण्डल ललितकपोल लोल हिन्दोल पुरन्दर ॥

करे पकरि नारि, उर आनि, मुख निरखि मुसुकाय पुनि ।
रास करत लघु लोल-गति, सो कह्यो वीर हनुमन्त मुनि ॥

---

१. 'सङ्गवर' । २. 'धीरातिधीर' (रा० पु० द० ले०) । ३. समस्त तुल्य शब्दक सङ्ग 'हेम्ना' के सम्बन्ध कठिन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

खर्व रूपगुनगर्व गहत सर्वाधिक सुन्दर,
तन कपोतसमवरन करन कुण्डल कामुक वर।
नवल नितम्बिनि अङ्क अङ्क भरि निरखि निरखि मुख,
थोर थोर हिन्दोल चलत हाँ करत केलि-सुख॥

सब राग राग राजत रमन, गावत जेहि गन्धर्व जन।
लघुलोलगमन बहुमोलमह, कह हिन्दोल जेहि जतिअजन॥

पद्यं च।

खर्वो गन्धर्व-गर्वः सुगुणगुणजितप्रायसर्वः कपोतैः,
तुल्यः सर्वाङ्गदीप्त्या दिवि च दिविषदां गीतिगोष्ठीगरिष्ठः।
अङ्कानीतोत्तमाङ्गीमु[1]खमहह समुद्वीक्ष्य कुर्वन् स रासं
श्रीमान् हिन्दोलरागः स्मितकुसुमरुचिर्मन्दमन्दं प्रयाति॥३॥

अथ (चतुर्थो) दीपकः।

कुन्दधवल अभिराम धाम परजङ्क सुशोभन,
सुति तामे नकताए दिआ गहि मौन महाधन।
रमनि हुती जेहि ठओर तहाँ पलिकामें समागम,
रतिपति-आतुर चतुर चारुगतिगीतिमहातम॥

दीप रुचिर जसु मुकुटमणि, अन्धकार परिहार तहँ,
लाजमन्ति तिअ ता-सओ, कवि दीपक हनुमन्त कह॥

---

१. 'सुख°' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

धवलधाम अभिराम बाम जामिनि तहँ जागति,
पओढ़ि परम परजङ्क निन्द नअेनन नहि लागति।
दिआ दए नकताए पिआ कछु बोलत नाहिन,
[1]रतिपति-आतुर अति चतुर नाह आयो तेही छन ॥

पिअमौलि रतन रुचि दीपदुति, [2]अन्धकार परिहार किअ,
तब लाजमन्ति रागिनि रहिअ, एआ-सओ कवि दीपक कहिअ ॥

पद्यं च।

क्षिप्रं निर्वाप्य दीपान् वचनमपि चिरं सन्नियम्यो[3]परिष्टात्,
सौधे पर्यङ्कसुप्तप्रणयप[4]रवशप्रेयसी तामसीषु।
तत्रोपेतस्य यस्यासम[5]त्रिशिखशरस्वान्तवेधाकुलश्चित्,
चूडारत्नप्रदीपात् सपदि समभवद्व्रीडिता[6] दीपकः सः ॥४॥

---

१. 'वति'। २. 'अन्धकार' छूटल। ३. '°पविष्ठा'। ४. 'वर'। ५. 'विशिषसर'।
६. '°व्रीडितो'। (मु० पु०)

मन्तव्य —दीपकरागक ध्यान सबसँ ई ज्ञात होइ'छ जे चूड़ारत्नक प्रकाशसँ हुनक प्रेयसी लज्जित भेलीह किन्तु सङ्गीतदर्पणोक्त दीपक रागक ध्यानसँ रागहिक लज्जित होएब अबै'छ। जेना।—

बालारतार्थं प्रविलीनदीपे गृहेऽन्धकारे सुभगं प्रवृत्तः।
तस्याः शिरोभूषणरत्नदीपैर्लज्जां दधौ दीपकरागराजः॥

यदि 'तस्याः' पदकेँ 'लज्जां' पदक सङ्ग सम्बन्धक विवक्षा करी तँ दूनू लक्षणक सामञ्जस्य तथा एहना स्थितिमे नायिकाक लज्जित होएबाक लोक-प्रसिद्ध औचित्यक रक्षा भए सकैछ। कारण, ताहि स्थितिमे नायिकाक लज्जाक पोषण कएलैन्ह एहि तरहक अर्थ भए जाइत छैक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ (पञ्चमः) श्रीरागः ।

तुरए-कन्ध पर हत्थ सत्थ वृषभादिक सुरगन,
[1]रुहिर-अरुन तन-तेज रङ्गमूरति रिङ्गत रन ।
दर्पमन्त रिपुदर्पद[2]मन कन्दर्पदमनदुति,
वसन सोन धर धीर वीर पल्लव सोहत श्रुति ॥

सिरिराग रागभूपतिरमण, नृपतिरूप जगविदित अति ।
सङ्गीतसार सुविचारि उर, जेहि भनन्त हनुमन्त जति ॥

२

[3]रुहिररङ्ग सब अङ्ग जङ्ग रिङ्गत जिमि पारथ,
वसन सोन जगमगत सतत सङ्गी सुर सारथ ।
तुरएकन्ध कर वाम कामकमनीय—कलेवर,
पल्लव कलित वतंस हंसगामी गुनसागर ॥

नादनगरहर वीनधन, मगन होत जेहि जगत जत ।
रागरमन सिरिराग जग, नृपतिरूप हनुमन्त मत ॥

पद्यं च ।

[4]रक्तारक्तानुरक्तः स्वदलनदलनः सङ्गरे रङ्गमूर्तिः,
कामी कामोपमेयः कनकमयपरिस्फीतवासाः सुवेशः ।

---

१. 'एहिर' (मु० पु०) । २. 'दलन' (रा० पु० द० ले०) . ३. 'एहिरङ्ग' (मु० पु०) ।
४. 'रक्तारक्तः सदर्पो रिपुदलदलनः' (रा० पु० द० ले०) 'रक्तारक्तानुरक्तस्स-दलनदलनः' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाजिस्कन्धैकहस्तः प्रमथपतिपतिप्रीतदेवैः (?) परीतः,
श्रीमान् श्रीरागराजो जयति किसलयैर्भूषिताभूष्यकर्णः ॥५॥

अथ (षष्ठो) मेघरागः ।

नीलविमल दल कमल देह दीपति अति सुन्दर,
वसन पीत जगमीत सीतकर शुभ्र हृदजे धर ।
चातक चए करि विनय प्यासत्रासित जेहि जाचत[1],
मन्द हास मधुमधुरवाम–वनमध्य विराजत ॥

वरवीर तरुन रनविषयमहँ, लहत चहल जेहि सकल जन ।
सबरागरमन तिहुभुवनजन, मोहत सुनि धुनि मेघरव[2] ॥

२

नीलकमलदलविमलनील नीलिमगुनसागर,
हास कुसुमरुचिरुचिर चारुनारीवरनागर ।
पीतवसन रनमगन जीविजीवनधनदानी,
नारि नगर चहुओर कबहु कामिनि वन मानी ॥

चातक चाहत चोंच–भरि नीर, जासों करि काकु कत ।
नादनगर मनमोद[3] घन, चन्द हृदय हनुमन्त मत ॥

मन्तव्य—एहि पद्यमे प्रथम चरणक पाठ लेख पुस्तकक उपयुक्त बुझि पड़ल । किन्तु अपन आधार मुद्रित पुस्तकक पाठमे थोड़बे परिवर्त्तन–जे कि लेखकक दोषोसँ विकृत भए जएबाक संभावनामूलक भए सकैछ–कए देलासँ प्रकृत पाठ प्राप्त भेल जाहिसँ दूनू पाठक अर्थ अनुकूल भए गेल ।

१. 'जारत' (मु० पु०) । २. 'मेघस्वन (रा० पु० द० ले०) । ३. 'मनमाद' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च ।

असितकमलकान्तिः पीतवासाः स्मितास्यः,
समदयुवतियूथान्तर्गतश्चन्द्रहल्कः ।
वितरति किल लोके जीवनं यः स्वभावात्,
स जयति समुपास्यश्चातकैर्मेघरागः ॥६॥

इति श्रीरागतरङ्गिण्यां पुंरागवर्णनं नाम प्रथमस्तरङ्गः ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्वितीयस्तरङ्गः ।

[1]वङ्गाली मधुमाधवो वराडी भैरवी तथा ।
सिन्धुरेतास्तु पञ्च स्युर्भैरवस्य वरस्त्रियः ॥

(दोहा)

वङ्गाली मधुमाधवी, श्रओर वराड़ी भानि ।
सुघर भैरवी सैन्धवी, भैरश्रोके तिश्र जानि ॥

तत्र प्रथमा वङ्गाली यथा :—

(कवित्त)

तरुन-तरनि श्रएसो तनुके वरन जाके,
तापर विभूति श्रति उज्जल विराजई ।
सघर अथारी[2] वाजे वगलमें धरे वीर,
तैसे वाजे करमें त्रिशूल वर छाजई ॥
डिढ़[3] करि बाँध जटाजूट पट पाटरीके,
जाके तप तेजहीतेँ त्रिविध ताप भाजई ।

---

१. श्लोक तथा दोहा विपरीत क्रमसं मुद्रित पुस्तकमे श्रछि, किन्तु श्रागू चलि पुनः एहि क्रमसँ राखल श्रछि । तेँ समान क्रम रखबाक कारण पहिने श्लोक तखन दोहा देल गेल । 'संगीत दर्पण' तथा 'भात खण्डे'क लक्ष्यसङ्गीत संग्रहक परिशिष्टमे हनुमन्मतानुसार भैरवभार्या सबमे मधुमाधवीक स्थानमे 'मध्यमादिः' पाठ श्रछि । एहि पाठभेदक कारण की से विचारणीय ।
२. 'अधारो' । ३. 'दिढ़' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जग में प्रमोद होत सीचत सुधाके स्रोत,
भैरवकी भारजा बङ्गाली जब बाजई ॥

२

कुण्डल करन रविमण्डलवरन तन,
तामे नित लेपित विभूति सित छार हए ।
वामे कर कीलित त्रिशूल करमूल तल[1],
लम्बित अधारी वरनारी शिरदार हए ॥
जटाजूट राजए कुच कूट[2]से विराजए,
एहि बीच बाजा बाजै तब आनन्द अपार हए ।
सोहत सुघाट पटपाटके विराग रति,
रागिनी बङ्गाली भाम भैरओ भरतार है ॥

पद्यं च ।

मार्त्तण्डद्युतिदीप्तिपूतभसितालेपालिपट्टाम्बरैः,
पातिव्रत्यविरागपिङ्गलजटाजूटैः स्फुरन्तीतराम् ।
स्फूर्जद्धूर्जटिवल्लभा वरतनुः सेयं बङ्गाली मिल-
द्वेष्टुर्निष्ठुरखण्डने पटुतरं यस्यास्त्रिशूलं करे ॥१॥

---

१. 'भल' (रा० पु० द० ले०) । २. 'कुट' (मु० पु०) ।

मन्तव्य—बङ्गालीक दूनू लक्षणमे 'अथारी' तथा 'अधारी' शब्दक प्रयोग एके अर्थ में आएल अछि जे प्रायः 'आसन' थिक । कोन शब्द ठीक थिक से निश्चित नहि अतः जेना पाठ छल सैह राखल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीया मधुमाधवी, यथा :—

(सवैया)

कञ्चन सी तन की छवि छाजति,
तापर कुङ्कुम खञोरि करी हए ।
लोचनकञ्ज विशाल बनें
लखि लालनकी सुघरी उघरी हए ॥

कामकलोलते लोल भए,
हँसि कए करि चुम्बन अङ्क भरी हए ।
एआसञो कहए मधुमाधओ[1] सबए,
जग भैरवमे तन आध धरी हए ॥

(कवित्त)

कुन्दनकनकरसरूप तन तामें घन,
केसरि रगरि भरि किओ अङ्ग राग हए ।
नीरजरुचिर दृग देखि रसवस होए,
कय [2]चूँबी भरि अङ्क एतओ भैरव के भाग हए ॥
अएसी मधुमाधवी रसीली जिन सुनी नाहि,
अएसे जन जीवन जनम ही को धाग हए ॥

पद्यं च

सन्दीप्तस्वर्णवर्णा वपुषि परितरुद्धृष्टकाश्मीररागा-
मालोक्यापन्नकामः सपदि निजपुमान् भैरवो यां चुचुम्ब ।

---

१. 'मधुमाधवी' (रा० पु० द० ले०)। २. 'चूवी' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदाय क्रोडमध्ये रुचिरतररवामोदमासादयन्ती,
मध्वादिर्माधवीयं समदगजगतिर्गीयते गीतमुख्यैः ॥२॥

तृतीया वराडी, यथा :—

(सवैया)

सुख देति सुखासनमों[1] पतिको,
वर चओर डोलाए डोलाए सुकेसी ।
पङ्कजसे[2] कर कङ्कन राजत,
रूप तिआकि दिआ-दुति जएसी ॥

स्त्रओननिमें कलपद्रुमके दल,
फूल धरै तन दामिनि तएसी ।
भैरवकी वरनी वह नारि,
वरारि विचारि विचारि कआएसी ॥

(कवित्त)

कलधौतकङ्कन कलित करतामरस,
चामर करति पति रागसिरदारसओ ।
लतिकासी कासीपतिपतिका सहासी गीत-
गतिका विराजए वरनारी उरहारसओ ॥

रागिनि वराड़ी सुरपादपसुमन स्त्रओन,
भूषन बनाए बनी सोरह सिंगारसओ ।

---

१. 'सुखासनसों' (रा० पु० द० ले०) । २. 'पङ्कजमें' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दामिनीसी कामिनी कलामें कामभामिनीसी,
जामिनीमें देत सुख भैरव भरतारसनो ॥

पद्यं च ।

सुरतरुसुमनोभिः पल्लवैरेतदीयैः,
श्रवणकृतविभूषा भैरवं स्वासनस्थम् ।
सुपतिमनुनयन्ती चामरान्दोलनैर्या
तडिदिव कथितेयं दीपदीप्तिर्वराडी ॥३॥

चतुर्थी सिन्धुः यथा :—

(सवैया)

करपङ्कज[1]सों धरे तीष त्रिशूल,
सदा शिवके पगु [2]पाग पगी हए ।
अम्बर लाल विराजत [3]बालहि,
[4]माल बंधूकमयी हि' लगी हए ॥
कोप प्रचण्ड उदण्ड भुजा,
रविमण्डलसी [5]जाकि जोति जगी हए ।
सिन्धु सबएगुनसिन्धु कही
कवि वीररसा सब रङ्ग-रङ्गी हए ॥

१. "°सौं धरै'। २. 'पाश'। ३. 'बाल'। ४. 'हिमाल'। ५. जग (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कवित्त)

कोप परचण्ड रविमण्डलविजित जोति,
जामें भुज भीषन सुमेरु सम छाती हए।
तीषन त्रिशूल करवारिज विराजए जेहि,
शम्भुपग–पागी जग जागी तिरि जातीं (?) हए॥

[1]लोहित वसन लाल माल मधुरीकी उर,
वीररसमाती नितरङ्ग–ततिराती हए।
सिन्धु गुनसिन्धु बन्धु बन्धुर बजाए जब,
गावत प्रवीन तब किन्नर सँघाती हए॥

पद्यं च।

कोपाबद्धोग्रवेषभ्रुकुटिसहचरारक्तनेत्राम्बुजात-
प्राप्तश्रीमत्प्रकाशप्रखरदिनकरप्रायकायप्रदीप्तिः।
हस्ते यस्यास्त्रिशूलं भुजगभुजयुगासक्तरक्ताम्बरश्रीः
सिन्धुर्वन्धूकमालाकलितकुचरुचि[2]र्भैरवस्यैव सेयम्॥४॥

पञ्चमी भैरवी यथा :—

(कवित्त)

रमनीय राजत अचलके शिखर पर,
पीठ वरफटिकरचित रुचि भाओ सओ।

---

१. लोहितर' (मु० पु०) । २. 'भैरवस्यापि' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकचकमलदल लए कए कर–अम्बुजमें
पूजए पारवती पतिजीको चित-चाश्रो सञो ॥

मञ्जुलमजीरा कर लञे पीत वरन हए,
[1]करनलश्रो नञेन वर्णन न जाति हार सञो ।
इहए भाग भैरवी रसीली जगसुखदाई
भैरवको भारजा सुनी हए कविराश्रो सञो ॥

२

[2]पीरी कर जोरि भरि नीरज रुचिरपात,
लए लए मन-भाश्रोन मनाइवेको भाश्रो सञो ।
रजताचल[3]माथी मनिमन्दिर फटिक पीठ,
तामें त्रिपुरारिपद पूजए चित–चाश्रोसञो ॥

[[4]जोरी करवारिज विराजत मंजीरा भंजु,
खंजरीटनैनी बनी श्रंग हाश्रो भाश्रो सञो ।]
भैरवसे भरतार जासञो वस श्रएसी वाम,
भैरवीकी कीरति सुनी हए कविराश्रो सञो ॥

पद्यं च ।

रम्ये राजतमेदिनीधरवरे शृङ्गे मणेर्मन्दिरे,
स्फीतस्फाटिकवेदिकोपरि कराम्भोजे निधाया[5]म्बुजे ।

१. 'करन नयन वरनि न जात हार सौं' । २. 'प्यारी' । ३. माथें (रा० पु० द० ले०) ।
४. [ ] कोष्ठान्तर्गत पद मुद्रित पुस्तकमें नहि छल, रा० पु० द० क लेख पुस्तकसँ उद्धृत भेल अछि । ५. '°म्बुजम्' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकण्ठस्य पदद्वयं [1]वरतनूः सम्पूज्य मञ्जीरक-
द्वन्द्वं पाणिसरोजयोः कृतवती तन्नादमातन्वती[2] ॥५॥

इति भैरवरागिण्यः कथिताः ।

अथ कौशिकरागिण्यः ।

टोडी खम्भावती गौरी ककुभा गुणकर्यपि ।
एतास्तु पञ्च रागिण्यः कौशिकस्य वरस्त्रियः ॥

(दोहा)

टोडी ओ खम्भावती, गओरी गुनकी [3]थारि ।
ककुभ गुनकरी कवि कही, कओशिक तीअ [4]विचारि ॥

तत्र प्रथमा टोडी यथा :—

(सवैआ)

चन्दकी[5] मन्द करी तनकी छवि, [6]तासें पुरेनिओ लिअ ओड़ी ।
केसरिकेँ[7] घनसार मिलाए, मिलाए विलेपन कए तन थोड़ी ॥
काननमें करि तान घनो, सुख देति कुरङ्गनको करि कोड़ी ।
रागिनि वीन धरै विलखए, सबसोँ सरसए सो [8]कहै कवि टोडी ॥

---

१. 'वरतनुः' (रा० पु० द० ले०)। २. एहि पद्यमे लक्ष्य रागिणीक नाम नहि आएल। ३. 'वारि'। ४. 'वरनारि'। ५. 'को'। ६. 'त्रासें तुसारनि ओलिअ आढी'। ७. में। ८. 'कही' ।(रा० पु० द० ले०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कवित्त)

विपिन—समीप करि तान परिवादिनीसञो,
छक्यो वनचर वन—वनतें कढाओ हए ।
अङ्कुर देखाए कर कोमल कञोल ही के,
तातें मृगछञोना आनि अङ्कमें बढाओ हए ॥

इन्दीवर दाम [1]राम साम—से शरीर तामें
कुङ्कुम मिलाए चारुचन्दन चढाओ हए ।
चौंसठि कला लए कामिनी कौशिक मनाइवे को,
मानो [2]मृगनञिनी मनमथे पढ़ायो हए ॥

पद्यं च ।

मलयजपरिमृष्टोत्कृष्टकाश्मीररागात् ,
पिहितसिततनुश्रीः कानने कञ्जदामा ।
करकमलविलुब्धक्रोड़सम्बद्धवीणा-
[3]रणितहृतकुरङ्गीशावका कापि टोडी ॥१॥

द्वितीया खम्भावती, यथा :—

(कवित्त)

कुन्द-दुति-सुन्दर-शरीर सितवास मुख—
हास कलकोकिलकलापतुलनाद हए ।

१. 'वामसोमसे' (रा० पु० द० ले०)। २. 'दृगनञिनी' (मु० पु०)। ३. 'रणित कृत°' (रा० पु० र० ले०) 'रणितहृत्' (मु० पु०) एहि तरहक दू पाठ उपलब्ध छल. किन्तु दूनूके असम्बद्ध जानि प्रस्तुत पाठक कल्पना कएल ।
विशेष—द्वितीय लक्षण (कवित्त) मे लक्ष्यरागिणीक नाम नहि आएल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चोंप चित किन्नरसमान करि तान जेहि,
गावत बजाए नट नाही अवसाद है ॥

भरत कहत नट नारायण—नारी जेहि,
नाहीं हनुमन्त, एआतें जामें वाद हए ।
सेवित विरञ्चि कत गीतमें विराजए नित,
'लोचन' रसीली-पति होना [२]परसाद हए ॥

(सवैया)

कोकिलके तुल नाद प्रियंवद,
सुन्दरता हद हए सुखदाई ।
जान प्रवीन रसीलि हँसए,
वस होत सबए लखि जाकि लोनाई ॥

जाहि कहए कवि जू [३]खमभावति,
भावति हए नटको सुठि भाई ।
कौशिककी कुलवाल कही इह,
जानहु जान सुजान जनाई ॥

पद्यं च ।

सुसितवसनहासोत्कृष्टदेहादिदीप्तिः,[४]
कलकलितननादैः कोकिला बालतुल्या (?) ।

---

१. 'चोप' (रा० पु० द० ले०) । २. 'परमाद' (मु० पु०) । ३. 'हथ भारति' (मु० पु० तथा रा० पु० द० ले०) । ४. 'देहाति' (रा० पु० द० ले०) ।

विशेष :—कवित्त वा सवैया, कोनोंमे लक्ष्य-रागिणीक नाम नहि छल; कारण, उपलब्ध दूनू पुस्तकमें सवैयाक तृतीय पंक्तिमें 'हथ भारति' एहने पाठ भेटल जे कि अर्थ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नटननटमनोज्ञा कौशिकस्यैव वामा,
समुदितगुणयोगा कापि खम्भावतीयम् ॥२॥

तृतीया गौरी, यथा :—

(कवित्त)

दूषणविहीन नवपल्लव रसाल ही के,
कानमें कमलनजिनी कियो हए बनाए कए ।
सजलजलदश्याम सोहत शरीर धीर,
बोलत वचन पिक कूजित जनाए कए ॥

रागिनि लिखी हए मत [1]मत्तके (?) विवेक,
कहि कोहलें पुरातन सङ्गीतमें गनाए कए ।
गौरी वरवाम किल कौशिक कियो हए वश,
'लोचन' सुमति मानो मन्मथ मनाए कए ॥

(सवैया)

सुन्दर स्रजोनमें रम्य रसालके,
पल्लव लाल मए[2] (?) पिकवानी ।

विहीन बुझाएल, अतः ओहि स्थानमे 'खमभावति' पाठक कल्पना कएल । मिथिलाक्षरमे 'र' 'व' मे भ्रम प्रसिद्धे अछि, 'म' तथा 'थ' सेहो लेखकक प्रमादसँ भ्रान्त भए सकैछ, एतेक होइत 'ख' क जगहमें 'ह' केँ मानि लेब नीक बुझल ।

१. उपलब्ध दूनू प्रतिमे एहिना पाठ देखि, राखल अछि । किन्तु अर्थ ठीक नहि जानि सन्दिग्धक चिह्न देल । नीचा सबैयामे 'सत-मीत' ई दू पद एहने आएल अछि । प्रायः एहू ठाम ओएह पाठ छल हो से संभव । २. 'लसै' (रा० पु० द० ले०) ई पाठ संगत बुझाइछ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्यामशरीर सुधानिधि-से मुख,
वारि कए बात कहै मधुसानी ॥

जानि पुरातनके [1]सत-मीत
सँगीतनमें कवि कोहले भानी ।
होत सुने जन [2]चओन घने मन,
[3]गोरि ए कओशिककी [4]पटरानी ॥

पद्यं च ।

संगीते कविहोहलेन[5] कथिता कर्णावतंसोकृत-
श्रीमत्सत्सहकारपल्लवदला लावण्यकल्लोलिनी ।
गौरी कौशिककामिनी कलरवैः केकेव कादम्बिनी-
कान्तिः कापि मनोरमा मृगदृशामेषैव लेख्या पुरः ॥३॥

चतुर्थी ककुभा, यथा :—

(सबैया)

[6]अङ्गन अङ्ग रचओ विधिसओ रति-
मण्डन–मण्डित वाम विराजित ।
सोम [7]सुमाल सुशोभित आनन,
चम्पकदामन की छवि छाजति ॥

---

१. 'मत' । २. 'चव्वेन' । ३. 'गौरि' (रा० पु० द० ले०) । ४. 'के' (मु० पु०) ।
५. 'कोविदेन' (रा० पु० द० ले०) । . 'अङ्गअनङ्ग' । ७. 'समान' । (रा० पु० द० ले०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भीषन तीख कटाछ छटा वरिसए,
सरिसए पतिसओ रति छाजति ।
दानवती ककुभा कहिअए जग,
जाहि सुने सब रागिनि लागति ॥

(कवित्त)

कौशिक कमलनेनकी[1] रतीसी रति-
रीतिकी ततोसी कुचकोरक तनाई हए ।
चम्पकपुहुपदाम वामहिमधासमुख,[2]
तीषन कटाछ पति प्रीति कए मनाई है ॥

कामी कमनीय–अङ्ग–अङ्गमें अनङ्ग–सुख,
भूषणकलामे किल (किन ?) [3]कामकी वजार हए ।
दीन–जनदानि नित साजत सुरत ही को
कामिनि ककुभ कवि कोविदे जनाई हए ॥

पद्यं च ।

रम्या रम्यविभूषणैर्वरतनुः काम्या कलाकौशलैः
श्यामश्रीः कबरीषु चम्पकचलद्दामाभिरामद्युतिः ।
दात्री दीनजनेषु पीनकुचयोः शैलोपमेया परं
सज्जा कौशिकसङ्गमाय ककुभा नेत्राञ्चलं मुञ्चति ॥४॥

---

१. नेन मैनकी (रा० पु० द० ले०)। २. 'वाम' (मु० पु०)। ३. 'काम की वनाई है' (रा० पु० द० ले०) ई पाठ उचित तथा क्रमबद्ध बुजाइछ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमो गुणकरी, यथा :—

(सवैया)

सालस नजेनन लाल वियोगते दृष्टि दया तन दुःख भरी हए ।
आनन कजोल नमाजे रहए एसू सुन्दरि की [1]नख ओरि करी हए ॥
छूटि लुरए कबरी प्रियसंगमको घनज्वाल विशाल जरी हए ।
नेह तअओ (?) करुणाङ्कश देह गुनङ्करिको करतार करी हए ॥

(कवित्त)

कामिनि मुरझि मुरझाए [2]मारै मेटति हए,
[3]हितू अरु नाहि नित पीतम सुदूर हए ।
बाउरी की नाजी धूरिधूसरम लीन मन–
भाओनवियोगदशा वाम तन झूर हए ॥
चौदिश उवन्ध चारुचामरचिकुरलट,
छूट्यो दुरवार निशि–वासर विसूर हए ।
'लोचन' सिनेह[4]रसकिङ्करि गुनङ्करिमे,
करुनाविहीन विधि कौशिक–से[5] कूर हए ॥

पद्यं च ।

धूलीभिः परिलिप्तकायलतिका कीर्णा कचानां चयैः,
खेदात्सालसलोचना वरतनुर्नम्राननं बिभ्रती ।

---

१. 'तन खोरि' २. 'मरि' (रा. पु. द. ले) ३. मुद्रित पुस्तकमे पूर्वपङ्क्तिमे 'भेटतिह' पढ़ि एहिं पङ्क्तिकेँ- 'एहि तू अरुनाहि' इत्यादि रूपे पढ़ल गेल अछि. किन्तु वस्तुस्थिति निर्दिष्ट प्रकारहिक अछि । ४. 'वस' ५. 'के' (रा, पु. द. ले.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तन्वी स्नेहसरोवरे निपतिता कान्तस्य मूर्त्तिं हृदि,
ध्यायन्ती किल कौशिकस्य विरहान्मध्ये चिरं रोदिति[१]॥

([२]इति कौशिकरागिण्यः कथिताः ।)

अथ हिन्दोलस्य (रागिण्यः) ।

वेलावली च देशाखो रामकयुत्तरा ललित् ।
पटमञ्जरीच पञ्चैता हिन्दोलस्य वरस्त्रियः ॥

(दोहा)

वेलाओल देशाख अरु रामकरी सुविशाल ।
ललिता ओ पटमञ्जरी हए हिन्दोल की +वाल ॥

तत्र प्रथमा वेलावली, यथा :—

(सवैया)

नील-सरोरुह-सी तनकी छवि, छाजति हए जेहि छएल छबीली ।
भूषन भातिन-भाति बनावति, हए नख-सओ सिखलओ जो रसीली ॥
दए अभिसारके मन्त्र सुकन्तको, कामके तन्तको जान रसीली ।
इष्ट [३]मनम्मथको सुमिरए, [४]हनुमन्ते वेलाओल कए कहि कीली ॥

१. एहि पद्यमे लक्ष्यरागिणीक नाम नहि आएल २. ई पङ्क्ति आदर्शपुस्तकमे नहि अछि। किन्तु पूर्वमे 'इति भैरव-रागिण्यः कथिताः' आएल अछि, अतः ग्रन्थक शैलीक एकरूपताक हेतु ई देब उचित ।

+ छन्दके अनुरोधसँ एहिठाम 'बाल' शब्दक प्रयोग 'बालावस्थाप्रतीत्री'क अर्थमे भेल। ३, 'मनोरथ' ४. 'हनुमन्त' (रा० पु० द० ले०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कवित्त)

सङ्गम-सँकेत तन्त्र मन्त्र कही[1] वालम को,
वनितारतन दिन पूछत सखीन सर्वो ।
भूषण बनाए सुखसाधन शरीर करि,
अञ्जन करति किल लोचन सुमीन-सवो ॥
नीलदलकमलविमलदलदुतिदेहतेहि,
—मच्यो हए सिनेह नित मन्मथ-विही-सवों ॥
इष्ट निज देवता मदनहीको चिन्तति हए,
सत्वर न जात एआतें शाप देति दीनन-सवो ॥

पद्यं च

श्रीमन्नीलसरोजसुन्दरतनुः सङ्केतदोच्चां प्रिये
दत्त्वा मण्डनमातनोति वपुषः स्वीयेष्टदेवं [2]स्मरम्
ध्यायन्ती प्रियसङ्गमाय [3]दयितामेतां नु तामुत्तमां
हिन्दोलस्य हनूमता [4]निगदितां वेलावलीं निर्दिशेत् ॥१॥

द्वितीया देशाखनाम्नी, यथा :—

(कवित्त)

सूर-वीर सेवकसमूह सदा सेवए जाहि,
राजए रोमहरख बिशाल बाहुदण्ड हए ।

---

१. कहिं (रा० पु० द० ले०) २. 'स्मरन्' ३. 'दयितानेतान्नुतामुत्तमां'
४. निगदता (मु० पु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रोसरस भरी [1]रहए भृकुटीतरङ्ग लसए,
जाकी वीरभाव सब ठओरमें अखण्ड हए ॥
ऊँचतन ऊँचे मन [2]प्राकृत प्रचण्ड [3]पुलिनि,
निखिल निखाद तदा नाद कलचण्ड हए ॥
जाके रूप सुनेतेँ अबलऊ सबल होत
रागिनि हिन्दोलकी देसाख वरि [4]चण्ड हए ॥

२

ऊँचे तन तामें दुति कुन्दन कनक सम,
[5]सेवि सुरवीररन बाहु जमदण्ड हए ।
समर प्रवीन तुल तालके मचाए जेहि,
उन्नत उदण्ड रोममण्डल घमण्ड हए ॥
लोहित नअन रोसरसके सरूप, सुर–
वृन्दमें [6]निखाद-रति रागिनि प्रचण्ड हए ॥
'लोचन' देसाख जग तीन ति-प्रतापतति
रागिनि हिन्दोल वनितामे वरि [7]चण्ड हए ॥

पद्यं च ।

प्रांशुः सन्नद्धबाहुः प्रतिसुभटरणद्वन्द्वयुद्धाय चञ्च-
द्रोमाञ्चा धोरवीरैः समरभुवि सदा सेविता ताम्रचक्षुः ।
सन्तप्तस्वर्णवर्णा वपुषि वरतनुः काप्यपर्णेव [8]मल्लै-
स्तुल्या हिन्दोलभर्तुः पदकमलरतिः सातु देशाखनाम्नी ॥२॥

---

१. 'हए' २. 'प्रकृति' ३. 'पुनि' (रा० पु० द० ले०) ४. 'वण्ड' (मु० पु०) ५. 'सेवित' ६. 'निषाद' (रा० पु० द० ले०) ७. 'वण्ड' ८. विमल्लैः' (मु० पु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीया रामकरी, यथा :—

(कवित्त)

भूषण रुचिर सञ्चिततपस्याफल फली हए,
कमलनअिनी हेमरुचि देह की ।
सुन्दर विविधगुनमन्दिर शरीर तेहि
राजत निचोल समता हर जेहि[1]मे ह की ॥
पवन चलाए जब अम्बर चलत तब,
गोरी दुति होति जएसी दामिनी की रेह की ।
मानिनि [2]मनाइवेको बालम परत पगु,
ललना न माने बलिहारी उन नेहकी ॥

(सबैया)

नीरद से नव नील निचोल लसए तन दामिनि-सी दमकए ।
कलकोकिल-सी कमनीय कलध्वनि अओ छवि भूषनकी चमकए ॥
प्रीतमहीके समीप रहए, न सहए [3]कटुता न नते, तमकए ।
चित होत हुलास सुने जनमें, जब एआ छवि रामकरी जमकए ॥

---

१. 'नेह' २. मनाइको (मु० पु०) ३. 'कटुताननते तम कए' (मु० पु०) 'कटुभाननते' (रा० पु० द० ले०) एहि तरहे उपलब्ध दूनू पुस्तकक पाठ सन्दिग्ध जानि मुद्रित पुस्तकहिक पाठ कें प्रस्तुतरूपे राखब उचित बुझाएल ।

मन्तव्य :—उपलब्ध दूनू पुस्तकमे सँ कोनोमे 'रामकरी'क लक्षण पद्य (संस्कृतमें) उपलब्ध नहि अछि । सङ्गीतदर्पणमे दामोदर पण्डित रामकरीक लक्षण एहि-रूपे देने छथि, जे ऊपरक लक्षण सवसँ बहुत अंशमे मिलैत अछि । जेना :—

हेमप्रभाभासुरभूषणा च नीलं निचोलं वपुषा वहन्ती ।
कान्ते समीपे कमनीयकण्ठा मानोन्नता रामकरी मतेयम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1](चतुर्थी ललिता, यथा :--)

(कवित्त)

सपत-पलाश-फूले फूल तन तामरस,
लोचन अलस रस-भीने असमान हए।
जाके गृह तेजि अतिप्रीतम हिन्दोल अति-
प्रातहि जे होत-जात कातर मलान हए॥

[2]× + + ×
× × × ×

एआ सओ हनुमन्त कवि ललिता कह्यो हए,
अतिललिता विलासी-पिअ देति जिअ-दान हए॥

(सवैया)

फूलधरै त्रिषमच्छदके अतिज्वाल अओ गानगुमान गहें हए।
लालसे लोल विशाल विलोचन, आलसमन्त सनेह सने हए।
आ छवि जात प्रभातमें जा पति जा-सुधतें सुख लाख लहें हए।
ता-सओ हिन्दोलनकी वनिता ललिता ललिता हनुमन्त कह्यो हए।

पद्यं च।

प्रफुल्लसप्तच्छन्दपुष्पगुच्छैः,
[3]सच्छयकायः सुविलासिवेशः।
यस्याः पतिः प्रातरपैति गेहा-
द्विनिद्रचक्षुर्ल्ललिता तु सैव ॥४॥

---

१. ई पङ्क्ति मुद्रित पुस्तमे नहि अछि, प्रकरणशुद्धिक हेतु निविष्ट कएल।
२. एक चरणक त्रुटि अछि जे कोनो पुस्तकमे उपलब्ध नहि।
३ 'स्वच्छाय' (मु० पु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमो पटमञ्जरी, यथा :–

(कवित्त)

चकितचकित चहुओर चितवति पति,
नाहिन देखत अति थकित [1]सरीर हए ।
सखी कमला-सी कत करति प्रबोध तउ,
दामिनी-समान कुलकामिनि न धीर हए ॥
सबए निखारि वर-भूषन विनोदी कन्त,
गुथी उर माल बाल [2]सुषन समीर हए ।
प्रीतम हिन्दोल परि दीन तन छार भरे,
रागिनि [3]विषिन्नमन केहूँ कए न थीर हए ॥

(सवैया)

बालवियोगिनि दीपतिमन्त, बिसीरनदेह [4]सनेहें सने हए ।
[5]कामके भार ह्वै सीन भए अति, फूलके माल गलेमें बने हए ॥
प्रानसमान विधान धरें, सखिया समधान करे जो घने हए ।
छार भरे तन ठओर नही, एआ पटमञ्जरि भाओ भने हए ॥

पद्यं च ।

[6]हिन्दोलात्पटमञ्जरी विरहिता तप्ताऽतनु[7]ज्वालतः
कृत्वा सा हृदि वल्लभेन [8]रचितां मालामथो रोदिति ।
आश्वस्ता शतशः श्रिया करुणया सख्या तथापि प्रिय-
स्नेहाम्भोधिविलीनदीनमनसा तं सर्वतः पश्यति ॥२॥

(इति हिन्दोलरागिण्यः कथिताः ।)

---

१. 'शरीर' २. 'सुख न' ३. 'विखिन्न' ४. 'सनेह' ५. 'कामके सारते सील भए' (रा० पु० द० ले०) ६. 'हिन्डोला' (मु० पु०) ७. तनुर्ज्वालतः । (रा० पु० द० ले०) ८. 'रचिता वालामथो' (मु० पु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ दीपकरागिण्यः।

केदारा कानरा चैव देशीकामोदके तथा।
विहागरा इति ख्याता दीपकस्यैव वल्लभाः॥

(दोहा)

केदारा अओ कानरा, देशी ओ कामोद।
वनी विहागर रागिनी, दीपककी मनमोद॥

तत्र प्रथमा केदारा, यथा :—

(सवैया)

[1]शिर सोहत जाके जटाजूट सुन्दर, चन्द्रकला विलसन्तु उदारा।
[2]नादमयी उपरै ना धरें [3]अब, ध्याननिमें लगि लोचनतारा॥
सोगहरे जोगपट्ट धरे जो दुनी परदीपति दीपक-दारा।
ता-सओ कहे कवि-जूह विचारि विचारि त्रियोगिनि[4] राजकेदारा।

(कवित्त)

[5]गैरि-सुरङ्ग वर अम्बर-जुगल [6]शिर,
जटिल-ललाट कला राजए हिमधामकी।
जोगिनि पिनाकीध्यानधारणानिरति एआतें
लोचन नलिनतारा मूँदी कुलवामकी॥
भीषन भुअङ्ग भए-भाजन सरीर तेहि,
लपटए दिसाति कत हाटक उपामकी।
दीपककी दारा जग रागिनी केदारा नीक,
फीकी अओर रागिनी जगत केहि काम की॥

---

१. 'सिर' २. 'पागमयी' ३. 'हर' (रा० पु० द० ले०) ४. 'वाज' (मु० पु०)
५. 'गैरिक' ६ 'सिर' (रा० पु० द० ले०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च ।

जटाः शिरसि योगिनी शशिकलां कपाले विभ्रुग्,
विषोल्वणभुजङ्गमान् वपुषि सन्ततो बिभ्रती ।
सुगैरिकविलोहिते विमलवाससी दीपकाद्
गता बत [1]विहागरा रहसि शङ्करं ध्यायति ॥१॥

द्वितीया कानरा, यथा :—

(सबैया)

दच्छिन पानि कृपान धरे कर
बामे विराजत दान्तिक दन्ता ।
किन्नर चारण जच्छ अश्रो रच्छ
विलच्छण अस्तुति कएक कहन्ता ॥
जानत जाहि न को जगमें जन
जीव समान करी जेहि कन्ता ।
बूझि विचारि कही मुनिवृन्दनि
[2]कानर कानन के रसमन्ता ॥

---

१. एहि केदाराक ध्यानमे 'विहागरा'क उल्लेख चिन्तनीय थिक । सङ्गीतदर्पणहुक केदाराक ध्यान एहि ध्यानसँ मिलैत अछि :—

"जटा दधाना सितचन्द्रमौलिः, नागोत्तरीया धृतयोगपट्टा ।
गङ्गाधरध्याननिमग्नचित्ता, केदारिका दीपकरागिणीयम् ॥"

२. 'कावर' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कवित्त)

बाजे गजदन्त कर दाहिने कृपान करि,
कामिनि निरन्तर रहति वनबीच हए ।
जामिनि जमकि जब बाजामें बजति तब,
१रसनके भहि वहि जात नहि कीच हए ॥
जाकी कलकीरति करत सुरलोक, सोक-
नेकु न रहत तिन्न नाद हीतें नीच हए ।
दीपक रसीली रसभीनी बनी कानरा ए
भावति न जाहि सो तश्रो मानुषो न चीच हए ॥

पद्यं च ।

करे वामे स्तम्बेरमदशनशुभ्रासिमपरे,
वहन्ती सङ्गीते कथितगतिरङ्गीकृत-२रतिः ।
पतिर्यस्याः सेयं विपिननिरता दीपकजनी,
जनानां जीवातुः कविनिगदिता कानर इति ॥२॥

---

१. 'रसनके रेतसों भवहि जात नहि कीच हए' २. गतिः (रा० पु० द० ले०)।
विशेष—ऊपरक दूनू लक्षणसँ ग्रन्थकर्ताक ई तात्पर्य ज्ञात होइ'छ जे "वाम हाथमे गजदन्त; दहिन हाथमे कृपाण छैन्हि", किन्तु ई आशय पद्यसँ नहि ज्ञात होइ'छ । यदि "करे वामे स्तम्बेरमदशनमुग्रासिमपरे" एहि तरहे प्रथम चरण राखल जाए तँ प्रस्तुत आशय आबि जाईत । संभव थिक ओही तरहक पाठ क्रमशः भ्रान्त होईत एहि स्थितिमे आएल हो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीया देशी, यथा :—

(कवित्त)

[1]सोअतुं जगावए नित प्रीतम पकरि आपु,
कामकी पुजारी वर नारी निसि ज़ागई।
कन्त को नचाए रति सङ्गर मचाए कत
तीषनखरेख दन्तघात करि दागई॥
पहिरे सुरङ्ग वर अम्बर [2]हरीत सारी,
नारी [3]किनोहि न नयन मन लागई।
दीपककलितरति [4]देसी भरी भाव ही ते,
रागिनि सुनत दुख देह [5]तेजि भागई॥

(सवैया)

[6]गोरि सो अङ्ग अनङ्ग भरी रति आतुर,
सोअत कन्त जगावए।
सोछ दुकूल सुआ के-सो पोछ,
तिआ पहिरे जो तिआमन भावए।
जानत जाहि सबए जगमे,
रस-पूरन तूरन भाव बुझावए।
[7]देसिय दीपककी दयिता जेहि,
जेहि सदा सुरवृन्दइ गावए॥

---

१. 'सोवत'। २. 'हरित'। ३. 'किनहिं'। ४. 'देशी'। ५. 'तजि'। ६. 'गौरि'।
७. 'देशीय' (रा० पु० द० ले०)।
विशेष :—मुद्रित पुस्तकमे सवैयाक द्वितीय चरण एहि प्रकारे मुद्रित अछि :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च ।

उन्निद्रा मदनज्वरेण रमते निद्रागतं कैतवा-
दुत्थाप्य प्रमदातुरा स्मरपराधीनं च कृत्वा पतिम् ।
गौरी भावविभङ्गुराङ्गलतिका कौराच्छपत्त्रद्युति-
स्वच्छाडम्बरमम्बरं विदधतो देशी तु वेशाधिका ॥ ३ ॥

चतुर्थी कामोदनाम्नी; यथा :—

(सबैया)

झामर भीन मलीन सरीरमें,
सोहत लाल पटम्बर-सारी ।
कोकिलके छल नाद किजे कत,
रोअति काननमें वरनारी ॥

भीति दसओ दिस देखति हए,
नहि देखति वालम वाम बिहारी ।
पीर परी सिर पीटति हए सो,
कामोद कही कवि दीपक प्यारी ॥

२

[1]पहिरे वर अम्बर पीत पटम्बर,
अओजे वएरि करे बिपरी ।

"सोछ दुकूल सुआ केसा पोछति
आपर्हरेंजो तिआमन भावए"

किन्तु कविके पदच्छेद सों प्रस्तुत पाठ, उपयुक्त बुझाएल ।

१. 'पहिरै' । (रा० पु० ह० ले०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल कोकिल-से कमनीय कलध्वनि,
रोअति हए वनमाह खरी।
भए भीति दसओ दिस देखति हए,
पिअकी सुधि आउति जाति जरी।
जग जाहि सुने मन मोहत हए,
सो कामोद [1]कहा हनुमन्त हरी॥

पद्यं च।

नादैः सा कलकण्ठिकेव दधती पीताम्बरं सुन्दरी,
भीता दिक्षु विदिक्षु दत्तनयना नाथं तु नो पश्यति।
तिष्ठन्ती [2]बत कानने वनचरीवान्तः कृतान्तोपम-
श्रीमत्कान्तवियोगशोकखचिता हा सुस्वरं रोदिति॥४॥

पञ्चमी विहागरा, यथा :—

(सवैया)

आनन चन्द-सो मन्द गहे गति,
हए अति सूरतिकी अधिकाई।

---

१. 'कही'। २. 'वर' (रा० पु० द० ले०)।

विशेष :— प्रथमतः 'लाल पटम्बर'क चर्चा, द्वितीय लक्षणमें 'पीत पटम्बर' तथा तृतीय 'पद्य'मे सेहो 'पीताम्बर' एहि तरहे एके वस्तुक लक्षणमे भेद होएब उचित नहि। पद्यमे लक्ष्यरागिणीक नामक उल्लेखो नहिं, इहो त्रुटि बुझाइ'छ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाल पटम्बर, बाल बडे–ते बड़ेइ,
बड़े कुच चाह उचाई ॥
नवेन बने वनितासिरदार,
बने विधि-सवो विधिना ने बनाई ।
नारद, [२]तुम्बरु सारद आदि कए,
वीन बजाए विहागर गाई ॥

(कवित्त)

चामर चिकुर, हिमधाम मुख, भौंह,
लोचन सो मीन, नासा केतु-अनुरूप हए ।
दन्त दाना दालिमके, विद्रुम अधर, कर–
कोकनद, कुच कुम्भ, अन्धकूप हए ॥
वेदीकी–सी त्रिकसानु, सुन्दर नितम्ब, जङ्घा-
थम्भ, पद पल्लव, नख किंसुक उडूप हए ।
पाटम्बर लाल जेहि गवोन गजराजके–से
विहागर [३]रानी अएसो दीपक–सो भूप हए ॥

पद्यं च ।

शवालोपमलम्बमानकबरोभारा मुखेन्दुद्युतिः,
दृग्भ्यां खञ्जनगञ्जिनी गजगतिः शैलाग्रतुङ्गस्तनी ।

---

१. 'अधिकाइ' एहि तरहे एतए, तथा आनो उचाइ, बनाइ, गाइ, ह्रस्वे मुद्रित पुस्तकमे अछैछ पाछू वा आगुओ एहन स्थलमें छन्दक अनुरोधें दीर्घ कए देव उचित बुझल ।
२. 'तुम्बर' । ३. 'वानी' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रक्ता पट्टपटाद्विहागर इति ख्याता महीमण्डले
श्रीमद्दीपकपूर्वपुण्यरुचिरा मूर्तिर्जगन्मोहिनी ॥

(इति दीपकरागिण्यः कथिताः ।)

अथ श्रीरागरागिण्यः ।

वसन्ता मालवा चैव मालस्री च धनासिरी ।
आसावरी च पञ्चैताः श्रीरागस्य वरस्त्रियः ॥

(दोहा)

ऋतुपति मालश्रो मालस्री, धन्य धनास्री जान ।
आसावरी भरी रसन, श्रीके पाँचश्रो प्रान ॥

तत्र प्रथमा वसन्ता, यथा :—

(सवैया)

मोरके पच्छ सो[1] बाँधे विलच्छन,
जासिर सोछ[2] सो बाल विराजत ।
लाल रसालन के अवतंस,
[3]प्रसंस तिआनतअंस में [5]छाजत ॥

---

१. 'से' । २. 'सोच्छ' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'प्रसंसित आनत अंस°' 'एहि तरहक पाठ उचित होइत । ४. 'अंश' । ५. 'गावत' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नील–सरोजसमानसरूप,
विलास हुलास सवए जेहि गाजत ।
रागिनि राजवसन्त कही इह,
जाहि सुनें तनतें दुख भाजन ॥

२

चामर चारुसिरोरुहमाँह लसए,
शिखिपिच्छ हुलासमयी हए ।
स्रवोननमें रम्म रसालके पल्लव,
तातें विलासिनिवेस भई हए ॥
नीलसरोरुह–सी छवि छाजति,
गाजति हए बरवएसें नई हए ।
'लोचने' अएसि वसन्त कही,
सिरिराग-सोहागिनि दैव्र दई हए ॥

पद्यं च ।

चूतप्रसूतनव पल्लव कर्णपूर–
संशोभिता विमलनीलसरोजदीप्तिः ।
बर्हप्रवेशवरचामरचारुकेश–
वेशा विलासपरिहासरसा वसन्ता ॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीया मालवरागिणी, यथाः—

(सवैया)

कुण्डलमण्डित हए श्रुतिमण्डल,
कीरतनूरुह–से तनु सुन्दर।
आनन कञोल विलासिनिचुम्बित,
नञोल नितम्बिनि से [1]मद-मन्दर ॥

लाए गले मनिमाल विशाल,
प्रदोषसमञे वसि वासके अन्दर।
गाञोत जाञोत वीन बजाञोत,
राजत मालव रागपुरन्दर ॥

२

गण्ड घमण्ड किञे नव कुण्डल–
मण्डल मण्डित हए अनुपामा।
तोतन–सी तनु–कान्ति लसए,
लखि होत महामुनि ह्वै मन वामा ॥

साँझ [2]समञो वसि वास-विनन्दि[3] में,
[4]रास करै पतिसञो [5]रतिधामा।
जोवनभार गुमानभरी सिरि–
रागनितम्बिनि मालवनामा ॥

---

१. 'मदमन्थर' पाठ नीक होइत। २. 'समय'। ३. 'विलन्दि' (रा० पु० द० ले०)।
४. 'वास'। ५. 'वति' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च ।

कान्तिः कीरतनूरुहप्रतिमतां धत्ते समुल्लासकृल्-
लावण्यं मणिमालया श्रुतितटी यस्यास्तु ताटङ्किनी ।
सायं तत्परिहासवेश्म रुचिरं गत्वा नताङ्गी मुहुः
श्रीरागेण विनोदमेति मनसः सेयं मता मालवा ॥२॥

तृतीया मालश्रीः यथाः—

(सवैया)

वएठि[1] वनी सहकार महातरु–
छाँह लिजे वरवाम विराजए ।
सूध–सुधारस–सी विहुसी,
मुखपङ्कजमें दशनच्छद छाजए ॥
दून मना मनहीमें गनए,
करवारिजपत्र पवित्र तें [2]लाजए ।
मालसिरी सिरिरागवधू,
सुर [3]बाजत ही जियतें दुख भाजए ॥

२

लालसरोरुहनाल[4] धरे कर,
रम्भ रसाल वएठि कए छाहन ।

१'वएठी' । २. 'राजए' (रा० पु० द० ले०) । ३ 'राजतही' । ४. 'वाल' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पङ्कज-पत्र [1]गनए मनही-मन,
दूवर देह लता चित चाह न ॥

आनन चन्द-सो मन्द लसए,
विहुसो नव अमृतके मद [2]चाहन ।
पओन तनथे मत-संमत कए,
उर मालसिरी वरनी कविनाहन ॥

पद्यं च ।

सस्मेरानत[3]वक्त्रचन्द्ररुचिरोरस्कुम्भयुग्मानमत्-
तन्वङ्गी हृदयेन हन्त गणयत्यम्भोजपत्रावलीम् ।
गौराङ्गी सहकारसारसघनच्छायानिषण्णा[4] परं
श्रीरागेण विनोदमेति मनसः सेयं मता मालश्री ॥३॥

चतुर्थी धनाश्रीः, यथाः—

(सवैया)

जौवन ही तन दूवदलद्युति,
दूवरि हए अति तउ ([5]अति) दीपति ।
कएसे सकए सहि ओ [6]ए विरहज्जर,
तातें लिखए पट प्यारे की सूरति ॥

---

१. 'गतए' (मु० पु० 'लए' (रा० पु० द० ले०) । २. 'वाहन' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'नन' । ४. 'निखण्डा' (मु० पु०) । ५. एहि ठाम दू मात्राक त्रुटि प्रतीत होइ'छ तें 'अति' देव आवश्यक । ६. ई एकार अनावश्यक तथा मात्रा बढ़ावए वला प्रतीत होइ'छ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छीन कपोल धरैं कपिलच्छवि,
नञेन के नीर छपी कुच मूरति ।
रागिनि रागिनिमें अति गएय,
हए धन्य धनासिरि बएठि विसूरति ॥

२

भीन-पटम्बर-लीन मनोहर,
दूबर-देहलता झलकए ।
कपिलच्छवि छीन कपोल लिञे उर,
लोचन नीर-नरी छलकए ॥

दूबसिरी-सि धनासिरिस्री बिलखए,
विरहज्जरतें दलकए ।
सिरिरागवियोगिनि जोगिनि-सी,
जेहि देखतही हिअरा हलकए ॥

पद्यं च ।

सजलधरणिदूर्वादीप्तिरुद्वेगमूर्त्तिः,
करकलितशलाका कान्तमूर्तिं लिखन्ती ।
बत ! कपिलकपोला सावसन्ना धनास्त्री-
विरहदहनदूना वाष्पधारां जहाति ॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमी आसावरी, यथाः—

(सवैया)

मलयाचलके वरश्रृङ्गनिमें,
रङ्ग-[1]रिङ्गन भाँतिन[2]-भाँति करए।
तन मोरके पिच्छ परिच्छद कए,
गजमोतिमहार हिऐमें धरए॥

हरिचन्दन तेँ फनिराए लगाए,
किऐ कर कङ्कन-रूप हरए।
सुरसारि सङ्गीत विचारि असावरि,
अएसी कही जग प्रीति करए॥

२

रङ्ग-रङ्गी मलयाचलश्रृङ्गमें,
सएल करए कति भाँति [3]बनाई।
चन्दनतेँ फनिआनि महामनि,
कङ्कन कए तनु-माँह तनाई॥

माल गले गजमोतिनके,
शिखिपिच्छ लिऐ कविजू है जनाई।
वीन-प्रवीन बजावत हए,
जग अएसि असावरि मान मनाई॥

---

१. 'रङ्गन'। २. 'भातिन-भाति'। ३. 'बनाई' एवं 'तनाइ' 'जनाई' तथा 'मनाइ' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च ।

विषधरकरभूषा सञ्चरन्ती सुतुङ्गे
मलयशिरसि पिच्छैलर्ङ्किता दीप्तमूर्त्तिः ।
सुललितबहुमूलस्थूलमातङ्गमुक्ता-
विमलहृदयहाराऽऽसावरीयं विभाति ॥५॥

(इति श्रीरागरागिण्यः कथिताः ।)

अथ मेघरागरागिण्यः ।

मल्लारी देशिका चैव भूपालीटङ्कके तथा ।
दक्षिणा गुर्जरो चैव वारिदस्य वरस्त्रियः ॥

(दोहा)

मल्लारी अरु देशिका भूपाली गुनधाम ।
टङ्क ओ दक्षिणगुर्जरी वारिदके वरवाम ॥

तत्र प्रथमा मल्लारी यथा :—

(सवैया)

[1]जौवनभारभरी दुवरी,
सुमरे पतिको मिस गीतनके ।

१. ई सवैया मुद्रित पुस्तकमे उपलब्ध नहि रा० पु० द० ले० सँ उद्धृत कएल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अति प्रिय नाद घन प्रियसे,
शुभरूप अनूप बने तन के ॥

मलिनाइ लिये कर वीन किये,
करुनस्वर गावति है मन के ।
चित चैन नहीं मन-प्यारे यहीं,
सो मलारि कही महिला घनके ॥

२

आनि बनी जब जोवनतैं,
तब कामिनि के ढिग नाहि पिआ ।
तेहि कारणते मनहीं-मन खीन[1]
मलीम भजी मतिहीन तिआ ॥

वीन लिजे कर राग किजे,
करुनस्वर गाउति जोति दिआ ।
नव नीरद की वरनारि मलारि,
विलोकत ही दलिजात हिआ ॥

पद्यं च ।

प्रथमवयसि तादृक् प्रेम्णि पत्युर्वियोगात्,
मामलिनवसनवेशा पाण्डुगण्डाननश्रीः ।

---

१. 'खीनि' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्मरति विधृतवीणा कामिनी कान्तमारात्,
सकरुणमतिदीप्तिर्गीतिसत्कैतवेन[१] ॥१॥

द्वितीया देशकारी; यथाः—

(सवैया)

पीन पयोधर वञेन सुधाकर,
कुङ्कुमके छवि देह धरे हुए।
अञ्जन-अङ्ग बनी तरुनी,
दृग-वारिज-से वर वेस करे हुए॥
केलिकला-अति प्रीतिमती,
पतिके नितही-नित चित्त हरे हुए।
बूझि विचारि कही देशकारि ए,
मेघ-प्रिया सब राग परे हुए॥

२

कुङ्कुमकी दुति दीपित देह-
लता नितही-नित कन्त-रता हुए।
नञेन बने वर वारिज-से,
जेहि चन्द्रमुखी नवकुन्दरदा[२] हुए॥
वेस बनी गिरिराज उरोज,
लसए रति-सी रति-रीति तहाँ हुए।

१. एहि पद्यमे लक्ष्य रागिणीक नाम नहि आएल। २. 'दता' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वारिदकी दयिता देशकारि ए,
अएसि कही हनुमन्त–मता हए ॥

पद्यं च ।

कान्ता कुङ्कुमलेपतः स्मितसुधानिष्पन्दिचन्द्रानना,
सत्प्रत्यङ्गविभूषणाम्बरवलन्नेत्रारविन्दद्युतिः ।
शैलप्रायपयोधरा रतिकलाचातुर्यधैर्यादिभिः,
श्रीमत्कान्तघनस्य मानसगता सेयं तु देशी मता ॥२॥

तृतीया भूपाली, यथाः–

(सवैया)

गोरे–सो अङ्ग सुधानिधि–सो मुख,
तुङ्ग उरोज धराधरतें ।
करे कुङ्कुमके तनुमें अनुलेपन,
पीर परी विरहज्जरतें ॥

हरध्यान–रता ममता–[1]वस ताहि,
मनोहरता विरता [2]घरतें ।
वरनी वनिता वरवारिद की ए,
भूपालि भले सुर–सागरतें ॥

---

१. 'रस' । २. 'धरते' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

कन्तवियोग–वेत्राधिते धाधि,
वरए जेहि शम्भु समाधि लगी हए ।
'लोचन' सात्रोनके मनभाग्रोन,
वारिदके पग पाग पगी हए ॥

ग्रानन सोम–समान सुशोभित,
केसर अङ्गमे रङ्ग–रङ्गी हए ।
कुञ्जर चालि [1]भुपालि कही,
जेहि गोर पयोधर जोति जगी हए ॥

पद्यं च ।

काश्मीरारुणकान्तिकायलतिका लावण्यकल्लोलिनी,
पर्वेन्दुप्रतिमानना हरिणदृक् शैलाधिराजस्तनी ।
गौराङ्ग्याः किल वारिदस्य विरहात् खेदं वदामः कियत्,
कुत्रापि प्रियसङ्गमाय गिरिजाकान्तं हृदि ध्यायति[2] ॥३॥

चतुर्थी टङ्कनाम्नो, यथा :—

(सवैया)

नलिनीदलकी अतिशीतल सेजमें,
सोग्रत वाम वियोगिनि ता लखि ।

१. 'भुग्रालि' (रा० पु० द० ले०) । २. पद्यमे लक्ष्यरागिणीक नाम–निर्देश नहि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काकु सुनी बहुतए सुनि कए अति-
व्याकुलचित्त [1]ओए चित्र भए जखि ॥
सोनके रङ्ग-सि अङ्ग-सिरी उह पाए,
कहू तँ अओ अङ्क लई कखि ।
एआ-सओ कहे कवि कोविद टङ्क,
मयङ्कमुखी-सन बात कही सखि ॥

२

पूरनचन्दमुखी विदुषी तन-
सोनसिरी-सि सिरी छटकए ।
नलिनीदलसीतलसेजें सुती,
कत रोवति वालमकी रट कए ॥
वारिद-वाम वियोगिनि ता लखि,
आए गए तबही झट कए ।
भरि अङ्क विलोकि कए टङ्क तिरी,
फिरि नाह लई हिअरातट कए ॥

पद्यं च ।

रमणघनवियोगात् कुत्रचित्पद्मिमनीनां
दलविरचिततल्पे सुन्दरी रोदिति स्म ।
पतिरपि किल दैवादागतोऽस्यास्तदानो-
महह विमलमङ्कं वल्लभामानिनाय[2] ॥४॥

१. 'तै' (रा० पु० द० ले०)। २. रागिणीक नाम नहि देल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमी दक्षिणगुर्जरी, यथा :—

(सवैया)

धाम किये मलयाचलमें,
तन श्याम सुशोभित वार बनें हुए ।
पल्लव की सुखसेज बिछाए,
अछाइ सअ—वेलिके तम्बु [1]तनी हुए ॥

वीन धरे लघु राग बजए,
बहु तान स्नुतिस्वन—भेद भनें हुए ।
दच्छिन—गुज्जरि उज्जल वेस,
सङ्गीतनमे जाके गान गने हुए ॥

२

प्रीति दुखी हिमधाममुखी,
मलयाचलधाममें वास विराजित ।
वीन लिये कर राग किये वर,
तान—तरङ्गको कामिनि साजति ॥

वेलि विलच्छन [2]तम्बुरिओ,
तहाँ पल्लवसेज [3]सुती नित [4]जागति ।
दच्छिनगुज्जरि अएसि कही,
कविओ[5] तनरूप सुने रति लाजति ॥

---

१. 'तने' । २. 'तम्बुतनी तहँ' । ३. 'सोई' (रा० पु० द० ले०) । ४. 'गाजति' (मु० पु०) । ५. कवि 'जातन' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्यं च।

यस्याः श्रीमलयाचले [1]विचकिलैरावासवेश्मारुण-
श्रीमत्पल्लवतल्पभाग् वितनुते वीणाधुरीणा ध्वनिम्।
सद्वेशा घनकामिनी [2]कुचरुचिः सङ्गीतसंख्यावतां
मूर्धन्या किल किन्नरीव भुवने सेयं मता गुर्जरी ॥५॥

(इति मेघरागरागिण्यः कथिताः)

इति श्रीलोचनशर्मविरचितायां रागतरङ्गिण्यां
रागिणीमूर्त्तिनिरूपणं नाम द्वितीयस्तरङ्गः।

१. 'विचकितै'। २. 'करकचिः' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथैतेषामुत्पत्तिनिदानं नादो निरूप्यते।

तत्राभियुक्ता :—

"नाभेरूर्ध्वं हृदिस्थानान्मारुतः प्राणसंज्ञकः।
नदति ब्रह्मरन्ध्रान्ते, तेन नादः प्रकीर्त्तितः॥

आकाशाग्निमरुज्जातो, नाभेरूर्ध्वं समुच्चरन्।
मुखेऽ[1]तिव्यक्तिमायाति, यः स नादः [2]समीरितः॥

स च प्राणिभवोऽप्राणि-भव उभयसम्भवश्च।
आद्यः कायभवो वीणादिसम्भवस्तु [3]द्वितीयः॥

तृतीयोऽपि च वंशादि-भव इत्थं त्रिधा मतः।
यदुक्तं ब्रह्मणः स्थानं, ब्रह्मग्रन्थिश्च यो मतः॥

तन्मध्ये संस्थितः प्राण, प्राणाद्वह्निसमुद्भवः।
वह्निमारुतसंयोगान्नादः समुपजायते॥

न नादेन विना गीतं, न नादेन विना स्वरः।
न नादेन विना ज्ञानं, न नादेन विना शिवः॥"

---

१. 'ऽभिव्यक्ति' (रा० पु० द० ले०)। २. 'स ईरितः (मु० पु०)।

विशेष—मुद्रित पुस्तकक पाठक अनुसार ('यः स नादः स ईरितः') दू ठाम 'सः' आबि जाइत छैक, जे अनुचित थिक। तेँ प्रकृत पाठ (समीरितः) राखब उचित बुझाएल।

३. 'द्वितीयकः' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतादृशनादमयस्वरमूर्च्छनाधीना च रागोत्पत्तिः। तदुक्तम् :—
"स्वरः संमूर्च्छते यत्र रागतां प्रतिपद्यते।" इति।
मूर्च्छना च गीयमानगीते क्वचिज्जायत इति गीतं निरूप्यते।

तत्राभियुक्ता :—

"धातुमातुसमायुक्तं गीतमित्युच्यते बुधैः।
तत्र नादात्मको धातुर्मातुरक्षरसंचयः[1] ॥"

अतएव केवलाक्षरसंचये गीतव्यवहारस्तु भाक्त इति मन्तव्यम्।

तच्च गीतं द्विविधम्।

गीतं तु द्विविधं प्रोक्तं, यंत्र–गात्रविभेदतः।
यन्त्रं स्याद्वेणुवीणादि; गात्रं तु मुखमुच्यते ॥' इत्युक्तेः।

प्रत्येकमेतदपि द्विविधम्।

निबद्धमनिबद्धं च, गीतं द्विविधमुच्यते।
अनिबद्धं भवेद्गीतं, वर्णादिनियमैर्विना ॥

यद्वा गमकधात्वङ्ग–वर्णादिनियमैर्विना।
निबद्धं च भवेद्गीतं, तालमानरसाश्रितम् ॥

छन्दोगमकधात्वङ्गवर्णादिनियमैः कृतम्।
गमकाः कम्पितादयः, धातुर्नादः, अङ्गानि पदानि, तेन

१ संभवः (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विरुदादीनि; तालाश्च[1] च्चपुट–च्चपुटादयः, मानं तु प्रसिद्धं रसाः शृङ्गारादयः, छन्दांसि एला–झुम्बतालादीनि। एतेषां प्रपञ्चस्तु मत्कृतरागसङ्गीतसंग्रहेऽन्वेष्टव्यः। तादृशमपि गीतं द्विविधं–

"मार्गदेशीविभेदेन गीतं तु द्विविधं मतम्" इत्युक्तेः।

मार्गास्तु [2]गन्धर्वादिगीतगतयः। देश्यश्च [3]तत्तद्रागाश्रितास्तास्तास्तत्तद्देशगीतगतयः। इह तु मार्गाभावान्नोदाहृतास्ते, अग्रे तु क्वचिदुदाहर्त्तव्याः। देश्यामपि स्वदेशीयत्वात्प्रथमं मिथिलापभ्रंशभाषया श्रीविद्यापतिकविनिबद्धास्तास्ता मैथिलगीतगतयः प्रदर्श्यन्ते।

---

१. एहि ताल सभक नाममे रूपभेद 'सङ्गीत मकरन्द' आदि ग्रन्थक अनुसार बहुत अछि। यथा ओहि ग्रन्थमे नाम–निर्देशक कालमे लिखलैन्हि अछि :—

"चञ्चत्पुटश्चाचुपुटः" इत्यादि, (नृत्याध्याय पाद २ श्लोक ३) लक्षण कथनावसरमे–

"ताले चचत्पुटे ज्ञेयं गुरुद्वन्द्वं लघु प्लुतम्।
गुरुर्लघुर्गुरुश्चैव भवेच्चाचपुटाभिधे ॥"

(नृ० अ० पाद २ श्लोक १७–१८) उत्पत्तिवर्णनक अवसरमें

"तस्माच्चञ्चत्पुटो ज्ञेयः" (नृ० अ० पा० २ श्लोक ४१)
"तस्माचाञ्चुपुटाख्यो हि" (नृ० अ० पा० २ श्लोक ४२)

एहि तरहे एके ग्रन्थ में अनेक रूपक नाम देखैत छी, तेँ निर्णीत स्वरूप दुर्ज्ञेय।

२. 'गन्धर्वादयः' (रा० पु० द० ले०)। ३. 'तद्रागा°' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र प्रथमं तदुत्पत्तिवर्णनम् ।

विख्यातभूदेवसुवंशसूतिर्विद्याविभूतिर्भवभूतिरासीत् ।
स देवतायाः किल सिद्धियोगात्, [1]काव्यं पुराणप्रतिमं चकार ॥

अधीत्य तत्संसदि पार्थिवेभ्यः, कथास्तदीयाः कथयां बभूव ।
अतस्तदानीं सुमतिः कलावान्, कायस्थसूनुः कथको बभूव ॥

सुमति सुतोदयजन्मा, जयतः शिवसिंहदेवेन ।
पण्डितवर–कविशेखर–विद्यापतये तु स न्यस्तः ॥

एतैः सङ्गीतविद्भिः [2]स्वरनिकरसरित्क्रान्तमन्तर्विगाह्य,
प्रोन्मीलत्सुस्वरौघप्रविततगतिकाः कल्पिताः केऽपि रागाः ।
तद्गानार्थं तु विद्यापतिकविकृतिना कल्पितास्तु ध्रुवा याः,
तासामेकोऽग्रगाताऽभवदिह जयतः संसदि श्रीनृपस्य ॥

पितुरन्यूनगुणः किल, कलाभिरानन्ददः प्रथितः ।
जयतादजनि वितृष्णः, कृष्णो निजदेशिगायकः सदसि ॥

ततश्च

विमलमतिरतोशप्रायकायः कथायाः,
सदसि कथनकारी गीतगानैर्गरिष्ठः ।

---

१. 'काव्यं पुराणं च मुदा चकार' (रा० पु० द० ले०)। २. 'सुर' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सफलजनिरनन्यज्ञानसामान्यविद्या–
निदितहरिहराख्यो मल्लिकः [1]प्रादुरास ॥

खड्गराम-घनश्याम-कल्लीरामास्त्रयः सुताः ।
एतस्य बत ! तेष्वेको, घनश्यामस्तु गायकः ॥

रामान्ता लछि–राघव–टीकाख्याः शीलसम्पन्नाः ।
[2]स्वदेशिगायकास्ते तु, घनश्यामसुतास्त्रयः ॥

श्रीमद्विद्यापतिकवयितुः काव्यवर्णानुबद्धाँ–
स्तत्तत्प्रायानथ तदनुगख्यातगीतैर्निबद्धान् ।
रागानेभ्यः कथमपि तथा वर्तुलीकृत्यधीमान् ,
प्रेम्णा श्रीमन्नरपतिरतो लोचनस्ताँल्लिलेख ॥

ते च,

भैरव्यथ वराडो च, कौशिकः कस्यचिन्मतः ।
देशाखः सुखदा राम–करी च ललिता तथा ॥

केदारश्चापि कामोदः श्रीरागोऽथ मधुस्तथा ।
मालवश्चासावरी च, मलारी मदिरेक्षणा ॥

भूपालो गुर्जरी चैव, षट्–त्रिंशद्रागमध्यगाः ।
तीरभुक्तौ विजातीयां, गतिमासाद्य संस्थिताः ॥

१. 'प्रादुरासीत्' (रा० पु० द० ले०) । २. 'सुदेशि' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीरभुक्त्यन्यदेशेभ्यस्तीरभुक्तौ विलक्षणाः ।
स्वरभेदात्, परं नाम्ना, तेन तेनैव विश्रुताः ॥

तत्र प्रथमा भैरवी ।

इयं तु भैरवभार्या । रूपमुक्तं प्राक् । एतस्यास्तु गीतोत्पत्तिकत्वात्तदुदाह्रियते । तत्र जयदेवः :—

रजनि–जनितगुरुजागर–रागकषायितमलसनिवेशम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ॥

(इत्यादि सुप्रसिद्धम्)

अथात्र द्रुत-लघु-गुरु-प्लुतघटितान् [1]चच्चपुट-च्चपुटादि-तालान् विहाय, तत्र-तत्राव्युत्पन्नानामलसानामपि झटिति तालगतिज्ञानार्थं सत्वर-मध्यम-विलम्बितत्वेन सकलसिद्धान्ता-नादाय तालगतयः प्रदर्श्यन्ते ।

(दोहा)

दोए सत्वर अरु मध्य दोए, एश्रामे चारिए ताल ।
एश्रातें वहि वहि जात सुर, तब रागिनि होवि बिहाल ॥

इति मिथिलानुसारेण भैरव्युदाहरणम् ।

---

१. एहि ताल सभक नामक सन्दिग्धताक विषयमे पूर्व लिखल गेल अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्वितीया भैरवरागिणी वराडो ।

इयं तु राघवी, पहड़िया, माधवी, भठियाली, देशी, नेपाली चेति मिथिलायां षड्भेदवती ।

भेदबुद्ध्यर्थमेतेषां, देशिगीतेषु कल्पितैः ।
छन्दोभिः क्रियते कोऽपि, नियमो यमनात्मकः ॥

छन्दसां तु लघुगुरुघटितत्वेन तद्व्यवस्था :—

दीर्घो दीर्घेण संयुक्तो, विन्दुभाक् सविसर्गकः ।
संयुक्तादिरिह प्रोक्तो, गुरुरन्यो लघुः स्मृतः ॥

एकारश्च तथौकारः, शुद्धो वर्णयुतस्तथा ।
रहयुक्पूर्वको लःस्यात्, [1]पदान्तो वा लघुर्मम ॥

अथात्र गणज्ञानार्थं प्रस्तारः ।

अधस्तादाद्यगस्याल्लघुः शेषं समं गलैः ।
पूर्वगैरुद्धरेन्मात्रा, गैस्तु वर्णान् प्रपूरयेत् ॥

सर्वत्रात्र त्रिवर्णप्रस्तारगणानेवादाय सदसत्फलादिकथनमिति ते प्रदर्श्यन्ते ।

त्रितयार्णप्रस्तारे :—

भूदक–शिखि–काल–ख–रवि–चन्द्राहि–सुराः ।
म-य-र-स-त-ज-भ-न-संज्ञाः, गणास्तु निजदेवतुल्यफलदानपराः ॥

---

१. 'पदान्त' पद पादान्त–अर्थमें प्रयुक्त थिक ? ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ रागसामान्यलक्षणम् । तत्राभियुक्ताः,

"यैस्तु चेतांसि रज्यन्ते, जगत्त्रितयवर्त्तिनाम् ।
ते रागा इति कथ्यन्ते, मुनिभिर्भरतादिभिः ॥" इति

तथा च, चित्तानुरञ्जकतालाद्यप्रच्युतस्वरसमूहत्वं रागत्वमित्यत्राभियुक्ततात्पर्यम् । चित्तं तु सचेतसां, नातः पामराद्यननुरञ्जकसद्रागेऽप्यव्याप्तिः । अत्र च चित्तानुरञ्जकत्वमात्रोक्तौ तादृङ्मनुष्यादावप्यतिव्याप्तिरिति विशेष्यदलम् । विशेष्यदलमात्रोक्तौ च चित्ता(न)नुरञ्जकरागाभासातिव्याप्तिरिति पूर्वदलम् । तालाद्यप्रच्युतत्वाप्रवेशे च [1]प्रच्युततत्कुराग एवातिव्याप्तिरिति । एतेन रागिणीष्वपि रागपदप्रयोगः साधुरत एव "मालाधरो मालवरागराज "इति जयदेवप्रयोगः, "देशाखरागः किल मल्लमूर्त्ति"रिति दामोदरप्रयोगोऽपि संगच्छते ॥

अथ वराडी प्रथमप्रभेदभूता राघवी ।

एतदादिप्रभेदरागरागिणीनां विशेषलक्षणं च तत्तच्छन्दोघटितगीतोत्पत्तिकत्वमिति । यदि चान्योऽपि रागस्तत्रोत्पद्यते तदा तदन्यत्वमपि तद्रागलक्षणे देयमिति ।

१. 'तत्प्रच्युतकुराग' ई पाठ युक्त होइत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राघव्यां च राघववराडीयं छन्दः । लक्षणम्:—

सप्तविंशतिमात्राभिः, पदस्य प्रथमार्धकम् ।
द्वितीयार्धे तु विन्यस्तास्त्रिंशन्मात्रास्तु यद्गताः ।
ध्रुवकं नवमात्राभिरर्धमर्धं तदन्तिमम् ।
चतुर्दशमिताभिस्तु, विरतौ बहुधा गुरुः ॥

अनेनामानकेनापि, नियमेन विभूषितम् ।
एकद्वित्रिकलाहीनमेकद्वित्रिकलाधिकम् ।
राघवीयवराडीयं, छन्दस्तामत्र सन्नयेत् ॥

उदाहरणम् :—

साँझक [1]वेराँ जमुनाक [2]तीराँ,
[3]कदँबेरि—[4]वन तरु—तराँ ।
अकमि कानरा कि कहब काला,
[5]सोझाँहि जुझल सखि कुसुम—सरा ॥

(ध्रु०) मोहि भेटल कान्हू, अनतए कहिनी कहह जनू ॥

उर—चिर [6]हरी करेँ कच [7]धरी,
अधर पिबए मुख हेरी ।
पुन पुन भोरा परस कुच मोरा,
निधने पाओल जनि कनय-[8]कचोरा ॥

१. 'वेरा' । २. 'तीरा' । ३. 'कदम्बेरि' (रा० पु० द० ले० एवं मित्र तथा मजुमदारक 'विद्यापति') । ४. 'वनतरा' (विद्यापति द्वि० सं० डा० सु० झा) । ५. सोँझहि (नगेन्द्र० गु० ५०९) । ६. 'हरि' । ७. 'धरि' (डा० सु० झा) । ८. 'कटोरा' (रा० पु० द० ले०, मजु०, गुप्त०, डा० सु० झा) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरे रे जुवती [1]बुझलि जुगती.
[2]दोसर मधुर मधु-पती ।
तोरे अनुमाने विद्यापति भाने,
राए शिवसिंह लखिमा देइ रमाने ॥

इति विद्यापतेः

मम तु,

आनन्दकन्दा पुनिमक चन्दा,
सुमुखिवदन-तह मन्दा ।
[3]अधरे मधुरी सामरि सुन्दरी,
विहुसि [4]जितए सितकुसुमसिरी ॥

(ध्रु०) पथ मिललि धनी, [5]दामिनिसनि व्रजराजजनी ॥

चिकुर चामरा मुदिर सामरा,
नलिननयन सुखकरा ।
काम रमनी [6]जँहिनि तँहिनी,
दसन चमक जनि हीरकनी ॥

उकुति वेकती बुझलि जुगुती,
कामिनि [7]मनवति पती ।

---

१. बुझसि (न० गु०)। २. 'दोसरे' (रा० पु० द० ले०, न० गु०) । ३. 'अधरै' (रा० पु० द० ले०)। ४. 'जिनए' (मु० पु०)। ५. 'दामिनी' (मु० पु०)। ६. 'जहिनि' (डा० ज० का० मिश्र मै० सा० इ०)। ७. 'मनावति' (डा० ज० मिश्र)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]हरि अभिमानी मने अनुमानी,
मिलए चललि रसे रासवनी ॥

विजुरि–उजरी [2]रजनि गुजरी,
[3]दूति दोसरि अगुसरी ।
'लोचन' वानी सुतनु सयानी,
कन्त भजलि [4]जनराज गनी ॥

अथ पहडिया ।

अत्र तु पर्वतीयवराडीयं छन्दः । लक्षणम् :—

गद्वयान्ताश्चतुर्मात्रा, यद्ध्रुवप्रथमार्धके ।
तद्द्वयान्तास्तदन्तार्धे, द्वादशप्रमिताः पुनः ॥

मात्राषोडशकैर्बद्धं, पदस्य द्वितयं भवेत् ।
चतुर्दशमिताभिर्वा, मात्राभिः कुत्रचिद्भवेत् ॥

त्रयोदश भवेयुर्वा, यत्र मात्राः पदार्धके ।
पर्वतीयवराडीयं, छन्दस्तत्र तु तां नयेत् ॥

---

१. "हरि..........रासवनी" ई पद डा० ज० मिश्रक उद्धृत गीतमे नहि भेटैछ। २. 'रयनि' (रा० पु० द० ले०)। ३. 'इति' (डा० ज० मिश्र)। ४. 'जल' (मु० पु०)।

विशेष :—लोचन कविक प्रकृत गीत प्रायः शुद्धे एहि ठाम प्राप्त अछि। एही आधार पर उद्धृत कएल डा० ज० मिश्रक पाठमे उपलब्ध भेद, कोन कारणे से ज्ञात नहि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम्

ससधरसहससार बदुराव,
तैंश्रश्रो न वदन पटन्तर पाव।
(ध्रु०) देख देख आई,
सरगक सरवस उरवसि जाई॥

विविध विलोकन अति अभिराम,
मनहु न अवतर नयन उपाम।
निक निक मानिक अरुनिम जोति,
सहजे धवल देखिय गजमोति॥

आतर रात मजलें अति सेत,
ऐसन दसन तुलना के देत।
काँचि करचि रोमावलि भास,
उपरँ तरल हरावली फास॥

कर कौसल मनमथ मन लाए,
कुच सिरिफल नहि होश्रए नवाए।
करिकर उरु-उपमा नहि पाव,
अपनहि लाजेँ [1]सङ्कोचि नुकाव॥

हरिहर [2]प्रनयिए "भीषम" भान,
प्रभावति पति जगनरायन जान।

---

१. 'सङ्कोच'। २. 'प्रणयिए' (मजु॰)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम तु

चामर चिकुर वदन सानन्द,
[1]सरवस–सनि जनि पुनिमक चन्द ।
चञ्चल विमल विलोचन मीन,
अञ्जन–परिचित खञ्जन जीन ॥

(ध्रु०) विधि निधि [2]सांइ,
तिला एक मिललि कहि नहि [3]जाइ ॥

दसन दालिम–दुति भौंह कमान,
कुटिल विलोकन तिषविष वान ।
नासा दसन वसन बहु मूल,
तिलफुल फुलल मधुरि फुल-तूल ॥

रुधिर कम्बुगिम मोतिम [4]पाँति,
बाहु लता कर पल्लव काँति ।
कुचयुग जमजकमल [5]सिरें माल,
निविल रोमावलि समुचित नाल ॥

[6]नाभि मण्डल करिकुम्भ [7]नितम्ब,
जङ्घ कदलि भेलि तसु अवलम्ब ।
उरजुग युगल करभ अनुमान,
पद पङ्कज नख केतु समान ॥

---

१. 'सारद घन जनि°' । २. 'सांई' । ३. 'जाई' (रा० पु० द० ले०) । ४. 'दाँति' (मु० पु०') । ५, 'सिर' । ६. "नाभि मँहन" (रा० पु० द० ले०) । ७. 'निलम्ब' (मु० पु०.) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुल गुन गौरव नियम विवेक,
बुझल विनोदिनि सबै अतिरेक।
सरस सुमति कवि "लोचन" भान,
[1]एहन रमनि रुकुमिनि पति [2]जान॥

अथ देशी।

अत्र देशीयवराडीयं छन्दः। लक्षणम् :—

मात्राद्वादशकैर्बद्धं, यद्ध्रुवप्रथमार्धकम्।
सप्तभिर्दशयुक्ताभिर्मात्राभिस्तु तदन्तिमम्॥

एतत्तुल्यपदार्धं वा, कुत्रचिद्यत्र दृश्यते।
अन्यत्तु पदनिर्माणं, पर्वतीयसमं भवेत्।
देशीयं तद्वराडीयं, छन्दस्तामत्र संनयेत्॥

उदाहरणम् :—

आनन लोनुअ वचने बोलए हँसि,
अमिअ वरिस जनि सरदपुनिम ससि।
(ध्रु०) अपरुबरूप रमनिआँ,
जाइते देखलि गजराज गमनिआँ॥

काजरें रञ्जित धवल नयन वर,
भमर मिलल जनि [3]अरुन कमल दल॥

1. 'एहनि'। 2. 'पान' (रा० पु० द० ले०)। 3. 'विमल' (न० गु० ३४)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भान भेल मोहि माँझ खीनि धनि,
कुचसिरिफलभरेँ भाँगि जाति जनि।
कविशेखर भन अपरुब रूप देखि,
राए नसरदसाह भजलि कमलमुखि॥[1]

इति विद्यापतेः।

मम तु :-

(ध्रु०) [2]सानँद वदन बिहुसिआ,
मधुवन जाइते मिलल तोर रसिया॥
कोटिमदनरुचिरुचिर कलानिधि,
अतनुसुतनुसनि [3]तोहँहुँ सबहि विधि।
चाँद-धवल ऋतुराज रजनिआ,
हरिनिधुवनमने चललि सजनिआ॥
कुसुमित वन घनसार समीरन,
विविध विहङ्ग निनाद मदन धन।
सुनसि न मधुर मधुर मुरलीरव,
सुकृत सफल कर सबे समुचित तब॥

---

१. पदकल्पतरुक पाठान्तर-१९७—
ननुत्ता-वदनि धनि वचन कहसि हसि, अमिया वरिखे जनु शरद पुणिम शशि॥
अपरुव रूप रमणिमणि, याइते पेखलुँ गजराजगमनि धनि।
सिंह-जिनि माँझा खिनि तनु अति कमलिनि, कुच छिरिफलभरे भाँगिया परए जोनि॥
काजरेँ रञ्जित बनि धरल नयन वर, भ्रमर भुलल जनु विमल कमल पर।
भणय "विद्यापति" सो वर नागर, राइरूप हेरि गर-गर अन्तर॥
२. 'सानन्द'। ३. 'तोहहुँ' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"लोचन" भन बुझ सरस विमलमति,
मधुपतिपति महिनाथ महीपति ॥

(दोहा)

एआमें परगट होत हुए,
ताल चलनिमें तीनि ।
ताते चुकि सुर चलत तब,
रागिनि होति विहीनि ॥

अथ माधवी ।

अत्र माधवीयवराडीयं छन्दः । लक्षणम् :—

त्रयोविंशतिमात्राभिर्द्वाविंशतिभिरेव वा ।
एकविंशतिभिर्वापि, किं वा विंशतिभिर्भवेत् ॥
पदार्धमवसानं च, द्वादशाक्षरके भवेत् ।
त्रयोदशेऽथ दशमे, क्वचिद्वैकादशाक्षरे ॥
ध्रुवापेक्षाबहिर्भूतमेतत्संदृश्यते बहु ।
माधवीयवराडीयं छत्रस्तामत्र संनयेत् ॥

उदाहरणम् :—

ससन[1]परसें खसु अम्ब रे, देखल धनि-देह ।
नवजलधर[2]तर चमकए रे, जनि बीजुरिरेह ॥

---

१. 'परस' (न० गु० ३२, एवं मित्र० मजु० ५) । २. 'तरें' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज देखल धनि [1]जाइतें रे, मोहि उपजल रंग ।
कनकलता जनि सञ्चर रे, महि निर-अवलम्ब ॥

ता पुन अपरुव देखल रे, कुचयुग अरविन्द ।
विगसित नहि किछु कारन रे, सोझाँ मुखचन्द ॥

'विद्यापति' कवि गाओल रे, [2]बूझए रसमन्त ।
देवसिंह नृप सागर रे, हाँसिनिदेविकन्त ॥

इति विद्यापतेः ।

मम तु :-

मलिन वसन विसमादलि रे, देखल धनि खीनि ।
नयननीरें परिपूरलि रे, चितचिन्ता लीनि ॥

पास बैसि कत पूछलि रे, सतभाँति बुझाए ।
तैअओ रहलि तेहि भाँतिहि रे, मरमसि सिर नाए ॥

सुमुखि न सुख न सँभाषन रे, मुख नहि परगास ।
अनुखने विखिनि सोहागिनि रे, तेज दीघि निसास ॥

कमलवदनि मनि मानिक रे, धनि धीर सयानि ।
तोरित गइए परिबोधिए रे, हरि अैसनि जानि ॥

"लोचन" भन मन [3]जानक रे, मधुमतिदेविकन्त ।
बुझ महिनाथ महीपति रे, विरहिनिमनतन्त ॥

१. 'जाइत' । २. 'बुझए' । ३. 'जानुक' (रा० पु० द० लं०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरोऽत्र त्रिसंख्यातस्तालस्तु गुणिनां मतः ।
तद्भ्रष्टस्वरता चेत्स्यात् रागिणी खण्डिता भवेत् ॥

अथ भठिआली

अत्र तु भठिआलवराडीयं छन्दः । लक्षणम् :—

रगणोऽथ विरामश्च, यगणो लादिको गुरुः ।
नगणौ सगणो लश्च, यत्पदार्धात्मकध्रुवे ॥

सप्तविंशतिमात्राभिः, षड्विंशतिभिरेव वा ।
पञ्चविंशतिभिर्वापि, पदानां दलनिर्मितिः ॥

दलोपान्त्ये गुरुर्गाने, क्वापि वर्णगतागतम् ।
भठिआलवराडीयं छन्दस्तामत्र संनयेत् ॥

उदाहरणम् :—

नन्दक नन्दन 'कदँबेरि तरुतरेँ,
धिरे धिरे मुरलि बोलाव ।
समय सँकेतनिकेतन बैसल,
बेरि बेरि बोलि पठाव ॥

(ध्रु०) सामरी तोरा लागि,
अनुखने विकल मुरारि ॥

१. 'कदम्बेरि' (रा० पु० द० ले०, एवं मिन्न-मजु० प० सं० २५८)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जमुना [1]तीरँ उपवन उदवेगल,
फिरि-फिरि ततहि निहारि।
गोरस बिकेनिके अबइतें जाइतें,
जनि-जनि पुछ [2]वरनारि ॥

तोहें मतिमान सुमति मधुसूदन,
वचन सुनह किछु मोरा।
भनहि "विद्यापति" सुन वरजौवति,
वन्दह नन्दकिशोरा ॥

मम तु,

[3]रितुपति रितु तहँ उनमति,
पुनमति तेज निज धाम।
विजुवन-घन-उपवन निधुवनमने,
[4]तोहँ जोह मोहें सब ठाम ॥

(ध्रु०) सामरा सुवदनि [5]कि
तोर धनि विषम विषाद।
जहिंनि देखलि हेंनि कहहि न पात्रिअ,
के जान जिउति परमाद ॥

चन्दन चन्द मन्दमलयानिल,
मुदिर मयूर-निनाद।

१. 'तीर'। २. 'बनमारि' (डा० झा०, न०, गु०)। ३. 'ऋतुपति ऋतु'। ४. 'तोहें'। ५. 'की' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसवे समनसम सुतनुतनु,
कत-कत कर अवसाद ॥

अवगुन कओंन अेंहन तसु जसु [1]वस,
[2]पिअ न वचन करि कान।
पिअतम तेहन तोहर सन,
से-ओ कर सहचरि परम निदान ॥

अवहु विसरि दोस, रोस निराकरि,
करिअ सुमुखि-समधान।
'लोचन' भन उर सखि-मनरञ्जक,
नृप नरपति रस जान ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव तालस्त्रितयसंख्यकः।
महिनाथमहोपालानुजेन तु निरूपितः ॥

षष्ठी तु नेपालवराडी।

अत्र नेपालवराडीयं छन्दः। लक्षणम् :—

यत्र विंशतिमात्राभिर्ध्रुवस्य प्रथमार्धकम्।
पञ्चविंशतिभिस्ताभिस्तदन्तार्द्धमुपान्त्यगम ॥

सप्तविंशतिभिस्ताभिर्यत्पदार्धसमं भवेत्।
तन्नेपालवराडीयं, छन्दस्तामत्र संनयेत् ॥

१. 'रस' (मु० पु०)। २. 'पिसुन वचन' (रा० पु० द० ले०) -ई पाठ उपयुक्त बुझना जाई'छ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

उपमिअ आनन नीरज पङ्कज,
ससधर दिवस मलीने ।
भौंह अनूपम अधर सोहाओन,
नवपल्लव रुचि जीने ॥

(ध्रु०) सुन [1]पेअसि की मोर,
परल गरुअ अपराधे ।
वनह मलयानिल जार कलेवर,
न कर मनोरथ–बाधे ॥

इत्यादि राज्ञः श्रीनिवासमल्लस्य ।
इति वराडीभेदाः कथिताः ॥

अथ कौशिकः ।

अत्र तु कौशिकमेव छन्दः । लक्षणम् :–

चतुष्कलगणानां तु, त्रयं शिष्टत्रिमात्रकम् ।
अवशिष्टद्विमात्रं वा, पदार्धे यत्र जायते ॥

सकलं यद्ध्रुवापेक्षाबहिर्भूतं तु दृश्यते ।
कौशिकाख्यं तु तच्छन्दः, कौशिकेनैव गीयते ॥

१. 'प्रेअसि' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

लता तरुअर मण्डप दीअ[1],
निरमल ससधर [2]भिति धवलीअ ।
पौँअनाल [3]अैपन भल भेल,
रात परीहन पल्लव देल ॥

[4]गावह माइ हे मङ्गल आए,
वसन्त-विआह बने पए जाए ।
[5]मधुकर-रमनी मङ्गल गाव,
दुजवर कोकिल मन्त्र पढ़ाव ॥

करु मकरन्द हथोदक नीर,
विधु वरिआती धीर समीर ।
[6]कनएकेआसुति तोरन तूल,
लावा विथरल वेलिक फूल ॥

[7]केसुकुसुम करु सिन्दुर-दान,
जौतुक पाओल मानिनि [8]मान ।
[9]केलि कुतूहल नव पँचवान,
"विद्यापति" कवि दिढ़ कए [10]भान ॥

---

१. 'जीति' (न० गु०, तालपत्र, तथा मित्र-मजु० २१९)। २. °धवलिए भीति' (मजु०)। ३. 'अरिपन' (डा० सु० झा०)। ४. "देखह माइ हे मन चित्त लाय, वसन्त विवाह कानन थलि आय" (मित्र-मजु०)। ५. 'मधुकरि'। ६. 'कनक किंसुक मुति तोरन तूल (मित्र-मजु०)। ७. 'केसर कुसुम'। ८. 'माँन' (मु० पु०)। ९. 'खेलए कौतुक' (मजु०)। १०. 'भाँन' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिनव नागर बुझए [1]रसवन्त,
मति महेश रेणुकादेविकन्त ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव, तालस्त्रितयसंख्यकः ।
श्रीमान्नरपतिस्तस्य, ज्ञाता सङ्गीतकोविदः ॥

अथ (हिन्दोलस्य) देशाखरागिणी ।

अत्र तु जयदेवदेशाखः, देशदेशाख इति भेदद्वयम् ।
जयदेवदेशाखे तु श्रीजयदेव :—

स्तनविनिहितमपि हारमुदारं, सा मनुते कृशतनुरतिभारम् ।
(ध्रु०) राधिका विरहे तव केशव—(इत्यादि सुप्रसिद्धम्)

देशदेशाखे तु तन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम् :—

चतुर्मात्रगणानां तु कलाहीनं चतुष्टयम् ।
चतुष्टयं कलाशेषं, तद्वा प्रतिपदार्धके ॥

सप्तमे सप्तमे वर्णे विरामो विगतध्रुवम् ।
देशदेशाख इत्याख्यं, छन्दस्तत्र तु तां नयेत् ॥

उदाहरणम् :—

मान परीहर हे, करु वचन मोरा ।
मार मनोभव हे, धरु सरन तोरा ॥

---

१. 'वसन्त' (मजु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न कर न कर हे,[1] मोहि विमुख आजे ।
अपरुब पेमे हे, पुनु मेल समाजे ॥

कमल वदनि हे, करु आकम दाने ।
विनजे के नहि हे, [2]जग तेजए माने ॥

[3]इति विद्यापतेः ।

मम तु,

नीरजनयनि हे, गिरिराज उरोजे ।
[4]सौँह न करह हे, किए मुख सरोजे ॥

अमिजे माखलि हे, करु मधुरी वानी ।
कीदहु परलि हे, मोहि विनयहानी ॥

हरखि हेरह हे, किछु विहसि [5]गरासे ।
करह, न कर हे, निअ मन उदासे ॥

अबुझ न बुझ हे, तोहें [6]तेहिनि नही ।
तोहरि [7]सरिसि हे, नहि देखिअ मही ॥

रोस विसरिए हे, निअ [8]पीअ सुजाने ।
भजलि पेअसि हे, कवि 'लोचन' भाने ॥

---

१. डा० सु० झाक संकलनमे 'मोहि' शब्द नहि अछि । २. जगते जय माने (न० गु० ३५३) । ३. रागतरङ्गिणी तथा डा० सु० झाक संकलनमे एहि गीतमे भनिता-पद नहि उपलब्ध होइ'छ; परन्तु न० गु० संग्रहमे भनिता-पद एहि प्रकारे अछि :—

"विद्यापति" कवि हे, भन कवि धीरे । राजा शिवसिंह हे, नरपति वीरे ।

४. 'तोँह' (मु० पु०) । ५. 'हासे' । ६. 'ते हनि' । ७. 'सरिस' । ८. पिअ सुजाने (रा० पु० द० ले०) पाअ सुजाने (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उरवसीवस हे, रस-[1]रागनिवेसे।
ई रसविन्दक हे, नरपति नरेसे॥

तालः प्रागिव। देशाखभेदावुक्तौ॥

अथ हिन्दोलस्यैव[2] रागिणी रामकरी। आकृतिरुक्ता प्राक्। इयं तु जयदेवी, शुद्धा, देशी प्रीतिकरी चेति भेद-चतुष्टयवती।

(तत्र) जयदेव्यां जयदेवः,

वदसि यदि किञ्चिदपीत्यादि सुप्रसिद्धम्।

अथ शुद्धा।

अत्र तु शुद्धारामकरीयं चन्दः। लक्षणम् :—

पञ्चविंशतिमात्राभिः षड्विंशतिभिरेव वा।
सप्तविंशतिभिस्ताभिरष्टाविंशतिभिर्भवेत्॥

यदीयचरणार्धं तच्छुद्धरामकरीयकम्।
शुद्धरामकरीयेण गायेदेतद् गतध्रुवम्॥

उदाहरणम् :-

सा जयति सुरसरिदमरदानवनागनर- वरदायिनी।
काशकुसुममृणालमुकुताधवलधार- प्रवाहिनी॥

---

१. 'रागिनि-वेसे' (मु० पु०)। २. 'एव' शब्दें पूर्वरागिणी सेहो हिन्दोलक बुझक थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिलतुलिततण्डुल–कुसुमचन्दन–विबुधपूज्यसुधाविनी ।
सुरनगरवीथी.................[1]ब्रह्महस्त–निवासिनी ॥

पुरमथनमस्तककलितशोभा, कृष्णचरणतरङ्गिणी ।
जगधम्मसरसिज–सोमभासा, सलिलरासि–सोहावुनी ॥

जह्नुकन्या भीष्मजननी, धरणिमध्यविभूषिनी ।
कविराज 'पूरनमल्ल' भाषित–पतित–पामर–पाविनी ॥

अथ देशी ।

अत्र तु देशरामकरीयं छन्दः लक्षणम् :–

एकविंशतिमात्राभिर्द्वाविंशतिभिरेव वा ।
त्रयोविंशतिभिः किं वा, चतुर्विंशतिभिर्भवेत् ॥

पञ्चविंशतिभिर्यद्वा, मात्राभिर्यत्पदार्धकम् ।
देशरामकरीयं तदध्रुवं तेन गोयते ॥

उदाहरणम् :–

कुसुमवानविलासकाननकेस–सिन्दुर रेह ।
निविलनीरद रुचिर दरसए अरुन जनि निज देह ॥

[2]आज देखु [3]गजराजगति वरजुआति त्रिभुवन सार ।
जनि कामदेवक विजयवल्ली विहलि विहि संसार ॥

---

१. राजपुस्तकालय दरभंगाक लेख'मे ई गीत उपलब्ध नहि, तेँ मुद्रित पुस्तकक अनुसारे एहि त्रुटिक अंशक पूर्ति नहि भए सकल । २. 'आजु' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'गजराजपति' (मित्र-मजु० पद० सं० ३०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]सरदससधरसरिससुन्दर वदन लोचन लोल ।
विमल कञ्चनकमल चढि जनि खेल खञ्जनजोर[2] ॥

अधर नवपल्लवमनोहर दसन दालिमजोति ।
जनि निविल विद्रुमदलें सुधारसें सीचि धरु गजमोति ॥

मत्तकोकिल–वेनु–वीना–नाद तिहुअन भास ।
जनि [3]मधुर[4]हास पसारि आनन करए वचन–विकास ॥

अमरभूधरसमपयोधर महघ मोतिमहार ।
हेमनिर्मितशम्भुशेखर–गङ्ग–निर्मलधार ॥

करभकोमलकरसुसोभन–जङ्घजुग–आरम्भ ।
जनि मदनमल्ल वेआमकारनें गढ़ल हाटकथम्भ ॥

सुकवि एहु 'कण्ठहारे' गाओल रूप सकल सरूप ।
देविलखिमाकन्त जानए [5]सिरि सिवए सिंह भूप ॥

अथ प्रीतिकरी ।

अत्र तु सुप्रियं नाम छन्दः । लक्षणम् :–

त्रयोविंशतिभिः किं वा, चतुर्विंशतिभिः पुनः ।
पञ्चविंशतिभिर्वापि, षड्विंशतिभिरेव वा ॥

---

१. शरद (मित्र–मजु०) । २. 'जोल' (डा० सु० झा वि० गी० सं० द्वि० सं०) ।
३. 'मधुकर' (डा० सु० झा) । ४. 'हाक' (डा० सु० झा तथा मु० पु०) ।
५. 'श्री शिबए' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तविंशतिभिर्वापि, मात्राभिर्यत्पदादूर्ध्वकम् ।
षट्कलद्वितयं यत्र, द्विमात्रं ध्रुवकार्द्धके ॥

ध्रुवेण ध्रुवकाभ्यां वा, ध्रुवैः किं वा विभूषितम् ।
सुप्रियं नाम तच्छन्दः, प्रीतिकर्यां तु गीयते ॥

उदाहरणम् :—

स्निग्धकुञ्चितकोमलं कचगण्डमण्डितकोमलम्,
अधर बिम्बसमानसुन्दर [1]सरदचन्द्रनिभाननम् ।
जय कम्बुकण्ठ विशाललोचनसारमुञ्ज[2]वलसौरभम्,
बाहुवल्लिमृणालपङ्कज–हार–शोभित ते शुभम् ॥

(ध्रु०) शोभय सुन्दरि मम हृदयं गद्गदहाससुदति निपुणम् ॥

उर पीन कठिन विशाल कोमल याति युग्म निरन्तरम्,
श्रीफला कमला विचित्र विधातु–[3]निर्मित कुचवरम् ।
श्यामा सुवेषा त्रिवलिरेखा जघनभारविलम्बिते,
मत्तगजकर[4]जघन युगवर गमनगतिवरटाजिते ॥

(ध्रु०) सुललित मन्द गमन करइ जनि पतिसङ्ग वरटा भमइ ॥

अतिरूप यौवन प्रथम सम्भव किं वृथा कथया प्रिये,
तेजह रूपविमोह परिहर शोक चिन्तित चिन्तये ।

---

१. 'शरद' । २. 'उत्पल' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'निर्मल' (मु० पु० ।
४. 'वर' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उप[1]यात मदनव्याधि दुःसह [2]दहए पावक सेवनम्,
पवन दिसें दिसें दहए पावकयुग्म[3]दारुजम[4]म्भरम् (?) ॥

श्यामा [5]सुवन्दिते अति समय[6]गीतसुशोभिते,
आत्मदानसमान सुन्दरि धार वर्षति सिञ्चये ॥

(ध्रु०) सिञ्चह सुन्दरि मम हृदयम् अधरसुधामधुपान[7]मयम् ॥

चन्द्र कवि जयदेव मुद्रित मान तेज तोहें राधिके,
वचन मम धर कृष्ण [8]अनुसर [9]किन्तु कामकला शुभे ॥
'चन्द्रकला' हे वचन करसी मानिनि माधव [10]अनुसरसी ॥

इति विद्यापतिपुत्रवध्वाः ।

सत्वरत्रय एवात्र, तालस्तु परिनिष्ठितः ।
तद्विहीनः स्वरश्चेत् स्यात्, रागिणी याति हीनताम् ॥

डेढ़ सए वर्षक पुरान एक तालपत्र डा० श्री जयकान्त मिश्रकें उपलब्ध छैन्हि ओहिमे ई रचना एहि रूपमे उपलब्ध अछि :—

स्निग्ध किञ्चित कोमलं कुचगण्डमण्डित कुन्तलम्,
अधर बिम्बसमान सुन्दरि शरदचन्द्रनिभाननम् ।
जय कम्बुकण्ठ विशाललोचन सरद्युति फलसौरभम्,
वाहुयुग्म मृडालपङ्कज–हार शोभयते शुभम् ॥

---

१. 'यातु' । २. 'दहह' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'दारज' (मु० पु०) । ४. 'सम्भवम्' । (रा० पु० द० ले०) । ५, सवन्दिने (मु० पु०) । ६. 'रीति' (रा० पु० द० ले०) । ७. 'मियम्' (मु० पु०) । ८. 'मनुसर' । ९. 'किन्तु' । १०. मनुसरसी (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शोभय सुन्दरि तव वदनं गद-गद-हास वदति विपुलम् ॥

उर पीन कठिन विशाल कोमल जात युग्मनिरन्तरम्,
श्रीफला कमला विचित्र विधातु निर्मित कुचवरम् ।
श्यामातिरेखा त्रिवलितरेखा जघनवार विलम्बिते,
मत्तगजवर जघनयुगवर गमनगति वरटाजिते ॥

सुललित गमन मन्द करइ जनि तेजि वरटा भमइ ॥

उपयाति मदनव्याधि दुःस्सहि भाविनि सेवनम्,
पवन दिशि दिशि बहति पावक सुखमदारु वयावरम् ।
जय सङ्गभसावन्दते या समयरूप सुशोभिते,
आत्मदान समान सुन्दरि धारवर्षा सिञ्चये ॥

सिञ्चय सुन्दरि मम हृदये अधरसुधा मधुदानदये ॥

अति रूपयौवन प्रभ्रमद्भुतं किं वृथा रसिक प्रिये,
तेजसि रोष विमोह परिहरि शोक मुञ्चहि ता प्रिये ।
चन्द्रकवि जयदेवनिर्मित मान तेजसि राधिके,
वचन मम धर कृष्ण अवसर चन्द्रकमल कलाजिते ॥

'चन्द्रकला' हे वचन सुनसी राधा माधव अनुसरसी ॥

मन्तव्य :—रागतरङ्गिणीक प्रकृतगीतक पाठमे तृतीय ध्रुवक स्थान अनुचित प्रतीत होइ'छ। ऊपर दूनू ध्रुव चारि पंक्तिक वाद जेना संनिविष्ट अछि ओहि क्रमे इहो रहब उचित। तेँ एगारहम तथा वारहम पंक्तिकेँ यदि १६'म तथा १७'म स्थान देल जाइक तँ उचित होइत। मुद्रित पुस्तकक पाठक अनुसार पाठ देल गेल। पाठकलोकनि ऊपर निर्दिष्ट प्रकारेँ पढ़थि-से नीक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ हिन्दोलरागिण्येव ललिता। रूपमुक्तं प्राक्।

अस्यास्तु भेदान्तरं नास्ति। ललितमत्र छन्दः।

लक्षणम् :—

चतुष्कलगणानां तु सप्तशिष्टत्रिमात्रकम्।
शिष्टद्विमात्रमथवा कचिच्छेषैक मात्रकम्॥

यत्पदार्धे पदार्धात्मा ध्रुवस्त्रिंशद्द्विमात्रकः।
यत्र तल्ललितं छन्दो ललितायां तु गीयते॥

उदाहरणम् :—

सपने देखल हरि, [1]गेलिहुँ पुलके पुरि,
जागल कुसुमशरासन [2]हे।
[3]ताहि अवसर गोरि निन्द भाँगल मोरि,
मनहि मलिन भेल वासन हे॥

आरे, की सखि पओलह सुतलि जगओलह—
[4]सपनहु सङ्ग छड़ओलह हे॥

सामर सुन्दर हरि रहल आँचर धरि,
फोअइतें किङ्किणि [5]डोरा हे।

---

१. 'गेलाहु'। २. 'रे' (रामभद्रपुर तालपत्र)। ३. 'ताहि.................वासन है' ई पद मुद्रित पुस्तकमे नहि अछि उक्त तालपत्रसँ लेल अछि। ४. 'सपनेहु। ५. 'माला रे' (रामभद्रपुर तालपत्र)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आओर कहव कत रस उपजल जत,
के बोल कान्ह [1]गोआरा हे ॥

ससरि शयनसिम हरि गहलिहुँ गिम,
मुखे मुखे भमर कमल मिलु हे ।
[2]पुरलि मनक सिधि, आनि देहलि विहिँ,
तोरे दोसे दैव अछोरि लेल हे[3] ॥

सत्वरत्रितयस्यैव, तालस्य गतिरीदृशी ।
यामवाप्य स्वरः शीघ्रं मोहमातनुते हृदि ॥

अथ दीपकदाराः केदारा ।

अस्या एव केदार इत्यपि नाम । एतस्यास्तु शुद्धकेदार-केदाराकेदार–विहागरकेदार–मलारोकेदार--पहडियाकेदार--कामोदकेदार–केदारमालवेति सप्त भेदाः ।

तत्र प्रथमं शुद्धा । लक्षणम् :–

अष्टाविंशतिपर्यन्तं, पञ्चविंशतितः कलाः ।

---

१. 'गोआला रे' । २. "पुरलि सकल सिद्धि सहजे आइलि निधि, तोरे दोख दइव अछोलिलिहुँ रे" । ३. एहिसँ आगू—

"भनहि विद्यापति अरेरे वरयुवति अनुसअ प्रेम पुराना रे ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन, लखिमा देवि रमाना रे ॥"

एतेक अधिक पाठ अछि । (रामभद्रपुर तालपत्र)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्युः पदादूर्ध्वं पदार्द्धात्मा, सैकः त्रिंशत्कलो ध्रुवः।
यत्र तच्छुद्धकेदारं, छन्दः सा चात्र गीयते ॥

उदाहरणम् :—

जनि [1]हुतवहँ हवि आनि मेराओल,
ता—सम मेल विकार।
दुओ नयन तोर विषम मदन सर,
सालए हृदय हमार ॥

(ध्रु०) हरि हरि काँ लागि सुमुखि विहुँसि [2]हसि हे[3]रलह,
जीवन परल सन्देह ॥

पीन पयोधर अपरुव सुन्दर,
[4]ऊपरँ मोतिम हार।
जनि कनकाचल—उपर विमल जल,
दुइ वह सुन्दर धार ॥

भनइ 'विद्यापति' सुनु वर नागर,
सबहुँ होएत [5]परकार।
राजा शिवसिंह गाओल एन,
लखिमा देवि उदार ॥

मध्यमः सत्वरश्चैव, तालत्रय उदीरितः।
एतस्मादपयातस्तु, स्वरोऽपस्वर ईरितः ॥

---

१. 'हुतवह' । २. 'हँसि' (मित्र तथा मजु०)। ३. 'हेरव' (न० गु०)। ४. उपरँ (रा० पु० द० ले०)। ५. 'परकास' (न० गु० ११९)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ केदाराकेदारः। एतच्छन्दोलक्षणम् :—

षट्कलद्विकमुद्धृत्य, द्विमात्रं यत्र जायते।
पदार्धे तत्तु केदाराकेदारं तत्र गीयते॥

उदाहरणम् :—

आँचरे वदन झँपाबह गोरि,
राज सुनै' छिअ चाँदक चोरि॥१॥

घरें-घरें पेहरि गेलछ जोहि,
एषने दूषन लागत तोहि॥२॥

बाहर सुतह हेरह जनु काहु,
चान-भरमे मुख गरसत राहु॥३॥

निरभि निहारि फाँस-गुन तोलि,
बान्हि हलत तोहि खञ्जन बोलि॥४॥

भनहि विद्यापति होहु निशङ्क,
चाँदहुकाँ किछु लागु कलङ्क॥५॥

ताल होति एहि रागिनी, सत्वर मध्यम तीनि।
जओं चुकिहए तेहि नेकु तब, रागिनि होइ हए खीनि॥

नेपाल तालपत्र फोलिओ ८५ (अ) क पाठान्तर—

अम्बरे वदन झपावह गोरि, राज सुनइछि चान्दक चोरि॥१॥
घरे घरे पहरी गेल अछ जोहि, अबही दूषण लागत तोहि॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ विहागरकेदारः ।

तन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम् :—

षट्कलानां चतुष्केण, यत्पदार्धव्यवस्थितिः ।
उद्वृत्त–द्वित्रिमात्रं वा, समुद्धृतैकमात्रकम् ॥

चतुष्कलचतुष्केण, यद्ध्रुवप्रथमार्धकम् ।
सप्तसंख्यचतुर्मात्रगणैरन्त्यध्रुवार्धकम् ॥

सुन सुन सुन्दरि हित उपदेश, सपनेहु जनु हो विपदक लेश ॥३॥
हास सुधारस नकर उजोर, धनिके वनिके धन बोलव मोर ॥४॥
अधर समीप दशन कर जोति, सिन्दुर सीम वैसाओल मोति ॥५॥
भनइ विद्यापति इत्यादि ।

मन्तव्य––ई गीत पदकल्पतरु, गुप्त, मित्र एवं मजुमदार आदिक संग्रहोमे उपलब्ध होइ'छ; किन्तु सभमे पाठ भिन्न भिन्न भेंटै'छ । रागत०क तेसर, चारिम पद अन्य संग्रहमे नहि भेटै'छ । नेपाल तालपत्रमे ई दूनू पद २२५ पृष्ठ पर आन गीतमे पाओल जाइ'छ । ऐहि हेतु कतेको गोटे नेपाल ताल-पत्राहिक (ऊपर निर्दिष्ट) पाठकें उचित कहैत छथि । अपन कथनमे युक्ति ई दैत छथि जे चारिम पदमे खञ्जनक चर्चा अछि जे नेत्रक उपमान थिक, किन्तु नेत्रक चर्चा तँ पूर्वमे नहि अछि; अतः ई दूनू पद एहि गीतक नहि । किन्तु विचारलासँ ई कथन असङ्गत बुझाइ'छ । कारण, "बाहर सुतह हेरह जनु काहु" एहि पदांशमे उपस्थित कप्ल विषयमे दोष आगू देखाओल गेल अछि "चान-भरमे मुख गरसत राहु" "वान्हि हलत तोहँ खञ्जन बोलि" एहि दूनू पदांशसँ । एहिमे नेत्रक व्यापार 'हेरह'क चर्चा यदि आबि गेल तँ उपमेय रूपसँ नेत्र उपस्थिते भेल । तेँ प्रकृत रागत० क पाठे उचित अछि । नेपाल तालपत्रक पाँचम पद नवीन अवश्य अछि, किन्तु ओकर अर्थ प्रकृत गीतसँ असम्बद्ध स्पष्ट बुझाइ'छ, ई सहृदय लोकनि विचारथि ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तद्विहागरकेदारं, छन्दस्तत्र तु गीयते ।
स रागो गीतितः सम्यगिति लोचनभाषितम् ॥

उदाहरणम् :—

उधसल केस कुसुम छिरिआएल,
खण्डित दसन अधरे ।
नयन देखिअ जनि अरुन कमल दल,
मधुलोभे बैसल भमरे ॥

(ध्रु०) कलावति कैतव न करह आज,
कओन नागर[1]सङ्ग रयनि गमओलह,
कह मोहि परिहरि लाज ॥

पीन पयोधर नखरेख सुन्दर,
करें बाँधह [2]काँ गोरि ।
मेरुशिखर नव उगि गेल ससधर,
गुपुति न रहलिए चोरि ॥

वेकतओ चोरि गुपुत [3]कर कतिखन,
'विद्यापति' कवि भान ।
मलहम जुगपति [4]चिरें जीवें जीवथु,
ग्यासदीन सुरतान ॥

---

१. 'सङ्गे' (न० गु० २६८) । २. 'का' । ३. 'करि' । ४. चिरजीवें (मित्र-मजु० पद सं २) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(दोहा)

दोए सत्वर अरु मध्य दोए,
एश्रामें चारिए ताल ।
एश्रातें चूकत सुर जबहिँ,
तब रागिनि होति वेहाल ॥

अथ मलारीकेदारः ।

अत्राप्येतन्नामकमेवछन्दः । लक्षणम् :-
पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे, ध्रुवाद्यर्धे, दशपञ्चात्मिकाः कलाः ।
तन्मलारीयकेदारं छन्दस्तामत्र संनयेत् ॥

उदाहरणम् :-

कीर कुटिल मुख न बुझ वेदन दुख,
बोल वचन परमाने ।
विरहवेदने दह को[1]क करुन सह,
सरुप कहत के आने ॥
(ध्रु०) हरि हरि मोरि उरवसि की भेली,
[2]जोहइत धावओं कतहु न पावओं,
मुरछि खसओं कतवेरी ॥
गिरि नरि तरुअर कोकिल भमरवर,
हरिन हाथि हिमधामा ।

१. कोकक (मु० पु०)। २, 'जोहइतें' (रा० पु० द० ले०, मित्र-मजु० पदसँ १९१)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सबक परञों पैञां सबे भेल निरदए,
केअञो न कहए तसु नामा ॥

मधुर–मधुर धुनि नेपुर रव सुनि,
भमञों तरङ्गिनि तीरे ।
मोरे करमें कलहंसनाद भेल,
नयन विमुञ्चञों नीरे ॥

[1]हरि हरिपअनरि जगत साखि धरि,
कवि "भीषम" एहो भाने ।
प्रभावति देइ पति मोरङ्ग महीपति,
नृप [2]जगनराएन जाने ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयञ्चैवात्र जायते ।
तालानां, तानवाप्येयं, रागिणी चित्तमोदिनी ॥

---

१. "हरि हरि कोन परि मिलति से परसनि, कवि विद्यापति भाने ।
लखिमादेविपति सकलसुजनगति, नृप शिवसिंह रस जाने ॥"
(न० गु० वसुमती सं० पद सँ० ३)

२. जगन्नारायणो मोरङ्गराजः, तत्सुतस्त्रिविक्रमराज :— मुरारिमिश्रेण शुभकर्मनिर्णये ग्रन्थे । (रा० पु० द० ले०) ।

मन्तव्य—सम्पादक लोकनि रागतरङ्गिणीमें ई गीत अछि एहि पर ध्यान नहि दए लोकमुखेँ सुनि एहि गीतकेँ अपना अपना संग्रहमे देने छथि, तेँ एकर भनिता पर ध्यान नहि दए विद्यापतिक भनितायुक्त पद रखलैन्हि । इतिहास प्रसिद्ध नन्दकुमारक गुरुदेव राधामोहन ठाकुर अष्टादश शताब्दीक मध्यभागमें पदामृत समुद्रमें एहि गीतकेँ विद्यापति रचित मानलैन्ह अछि, ताहि आधार पर मजुमदार महोदयो एहि गीतकेँ विद्यापतिक भनितामे रखलैन्ह । किन्तु हिनका लोकनिकेँ रागतरङ्गिणीक प्रामाणिक पाठ देखि तखन निर्णय करबाक चाहैत छलैन्हि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पहाड़िया केदारः ।

एतन्नामकमेवात्रापि छन्दः । लक्षणम् :—

आद्यार्धें पञ्चमे षष्ठे, वर्णें तु विरतिः पुनः ।
चतुर्थें पञ्चमे चैव, द्वितीयार्धें तु [1]तद्भवेत् ॥

दशाष्टकलिका—बद्धा, यत्पदार्धव्यवस्थितिः ।
पर्वतीयं तु केदारं, तदेतत्समुदाहृतम् ॥

उदाहरणम् :—

विसरल ओरे तैंसन सनेहा पिअ मोरे;
की परदेश भए रहल पिआ परवस ।
अवगए ओरे अनुभवि भल कए जानल,
की निरदय पुरुष जाति केर हिरदय ॥

पिअ सखि ओरे भलि कए विनति बुझाउवि;
की हम ओरे जीव लइए पिआ मोर जीवओ ।
गुनमय ओरे धीर कुमर सिरि गजसिंह,
की रस जाने गुनमय कवि [2]गदाधर भाने ॥

---

१. 'सा भवेत्' पाठ नीक होइत । २. मुद्रित पुस्तकमे भनितहुमे गजसिंहक नाम उल्लिखित अछि । राज पुस्तकालय दरभङ्गाक लेख पुस्तकमे 'गदाधर'क नाम अछि । कवि अपनहि सम्बोधित कए कविता करताह ई असङ्गत जानि लेखहिक पाठ उपयुक्त बुझाए पड़ल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तालत्रितयसम्पन्ना, गतिरेषा विराजते ।
राजते तैर्विना रागः, कदापि न महीतले ॥

अथ कामोदकेदारः ।

अत्रापि तन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम् :—

आचतुर्दशकात्सप्त—दशपर्यन्तकाः कलाः ।
नियमेनोज्झिता यत्र, पदानां दलयोः समाः ।
तं तु कामोदकेदारमाहुः, सद्गीतिसत्तमाः ॥

उदाहरणम् :—

अबला—अंशुक बालभु लेला,
पानि पलव धनि आँतर देला ।
हठ न [1]करह [2]कान्हु न [3]पुरत कामे,
प्रथमक रभस विचारक ठामे ॥

आबे नवयौवन समय निहारी,
अपनहि वेकत होएत परचारी ।
[4]मदन भण्डारक सुरत—सयानी,
[5]मोहर [6]मुनल अछ असमय जानी ॥

---

१. 'करिअ' । २. 'पहु' । ३. 'पूरत' । ४. 'मदनभण्डार सुरत रस आनी' । ५. 'मोहरे' (मित्र—मजु०) । ६. 'सुनल' (मु० पु०) प्रकृतपाठ न० गु० तालपत्र १६४'क थिक । मिथिलाक्षरमे स-मसँ भ्रमप्रयुक्त मुद्रित पुस्तकमे भ्रमक संभव ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुकुलित लोचन नहि परगासे,
काँप कलेवर हिरदय तरासे ।
भनइ विद्यापति नव अनुरागी,
सहिअ पराभव पिआ [1]हिआ लागी ॥

अथ केदारमालवः ।

[2]अयमेवात्र छन्दः । लक्षणम् :—

षट्‌त्रिंशतिकलाभिर्यत्पदान्तार्धव्यवस्थितिः ।
क्वचिदेककलाहीनाः, क्वचित्पूर्णास्तु यद्गताः ॥

षट्कलात्मगणानां तु, चत्वारः प्रथमार्धके ।
केदारमालवः सोऽयं, दलोपान्त्यगुरुर्मतः ॥

उदाहरणम् :—

गौर देह सुढार सुवदनि,
श्यामसुन्दर नाह ।
जनि जलद ऊपरँ तलित सञ्चर,
सरुप ऐसन आह ॥

पीठ परु घनश्याम वेनी,
देखि ऐसन भान ।

१. 'हित' (रा० पु० द० ले०, वै० पदावली द्वि०-खं० पृ० ५३; मजुमदार २८१) ।
२. 'इदमेवात्र छन्दः' एहेन पाठ उचित होइत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनि अजर हाटक पाट करें गहि,
[1]लिखनि लिखु पचवान ॥

सघन सञ्चर खन न थिर रह,
मनिक मेखल राव ।
जनि मदन राए दोहाए दए कए,
जघन तसु जस गाव ॥

रमनि नहि अवसाद मानए,
रयनि वरु अवसान ।
[2]ओजे, रमनि राधा रसिक यदुपति,
सिंह भूपति भान ॥

(दोहा)

चारि ताल की रागिनी, तामे सत्वर दोए ।
दोए मध्यम, तेहि चूकि चल, तव राग अपस्वर होए ।

केदारः सङ्करोत्पन्नो, विहागरमलारयोः ।
केचिदाहुर्न केदारः, परनामा मतस्तु सः ॥

अथ कामोदः ।

इयमपि दीपकभार्या रूपमुक्तं प्राक् । इयमपि कामोद-मङ्गल-देवकामोद इति भेदद्वयवती ।

---

१. 'विलखि लिखि पचवान' (रा० पु० द० ले०) । २. ई शब्द अन्यत्र नहि भेटैछ, तथा छन्दसँ बहिर्भूत एवं अनावश्यक बुझाइ'छ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कामोदमङ्गलेतु तन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम्ः—

द्वित्रिमात्राविशेषोऽपि क्वचित्प्रायः पदार्धयोः ।
सप्तविंशतिमात्राः स्यु-र्ध्रुवार्द्धद्वितये पुनः ॥

सप्तसप्तैव कलिकाः [1]ता(चा)न्तिमोपान्त्यवर्णयोः ।
गुरुत्वं प्रायशो यत्र तत्तु-कामोदमङ्गलम् ॥

उदाहरणम् :—

(ध्रु०) जयमङ्गला जयमङ्गला,
[2]होह परसनि देवि तोरितबला ॥

मधुकैटभ महिषासुर अतिबल,
धूम्रलोचन खयकारी ।
शुम्भ निशुम्भ देवकण्टक रन,
खनहि महाबल देल विदारी ॥

जैसे सुरगन देलह अभय[3]बल,
सकल असुरगन मारी ।
तैसे आस पुरह जगमाता,
रिपुगन हनलह सँभारी ॥

जे अभिमत कए जे नर चिन्तए,
से नर से फल पावे ।

---

१. 'तान्तिमो°' (मु० पु०) चान्तिमो° (रा० पु० द० ले०) । २. 'होहु' । ३. 'वर' (रा० पु०/द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वकाज सिधि करह भवानी,
कवि 'चतुरानन' गावे ॥

सत्वरत्रितयं त्वत्र, तालानां तु व्यवस्थितम् ।
तावद्भिः कृतसारथ्यो, रागोऽयमनुरञ्जकः ॥

अथ देवकामोदः ।

अत्राप्येतदेव छन्दः । लक्षणम् :—

अङ्कोत्तरमहादेवनेत्रतश्चरणार्धयोः ।
द्विरङ्कावधि यत्र स्युः, कलिका नियमोज्झिताः ।
वृत्तं तद्देवकामोद–नाम तत्रैव गीयते ॥

उदाहरणम् :–

देखहो गे माइ हे जोगि एतए कतए ।
फिरए गोरी–रँगे जतए ततए ॥

सिंगी भरि पुरलन्हि [1]मधुरिमि वानी ।
[2]भिषिओ न लेअ जोगी माँगइ भवानी ॥

जहाँ जहाँ सखि सङ्ग [3]गोरि खेलाए ।
तहाँ तहाँ नाचए जोगी डामरु बजाए ॥

---

१. 'मधुरिम' । २. 'भिखिओ' । ३. 'गौरि' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोगिश्रा रंगिश्रा नितें-नितें श्राब ।
परतह कह जोगि गोरि देखाब ॥

भन 'हरिदास' महादेव भेस ।
गौरी-भाग गङ्गाराम महेश ॥

अथ श्रीरागः ।

अयमुक्तः प्राक् । अत्रापि रागनामैव छन्दः । लक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं, पञ्चविंशतितः कलाः ।
पदार्धे वीतनियमा, ध्रुवसाधारणो स्थितिः ॥

पदार्धोपान्त्यः अन्त्यो वा, वर्णस्तु नियमाद् गुरुः ।
यत्र तद्रागनामैव, श्रीरागेणैव गीयते ॥

उदाहरणम् :—

कुन्द-भमर-[1]सङ्गम सम्भाषव,
[2]नअेने जगाश्रोव श्रनङ्ग ।
श्राशा दए अनुराग बढ़ाश्रोव,
[3]नङ्गिम अङ्ग विभङ्ग ॥

[4]सुन्दरि हे उपदेश धरिए धरि,
सुन-सुन सुललित वानी ।

१. 'सम्भ्रम सम्भार' (सम्भावन ?) । २. 'नयने जगाए' । ३. 'लङ्गिम' ।
४. 'कामिनि तोहे उपदेश धरब जे सुन-सुन'' (नेपाल तालपत्र फो० ८२ ब) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]नागरिपन किछु कहबा [2]चाहों,
[3]कहलहुँ बुझए सयानी ॥

कोकिलकूजित कण्ठ [4]बैसाओब,
अनुरञ्जब रितुराजे ।
मधुर [5]हास मुखमण्डल मण्डब,
[6]घड़ि एक तेजब लाजे ॥

कैतब कए कातरता[7] दरसब,
गाढ आलिङ्गन दाने ।
[8]कोप कए परबोधल मानब,
घड़ि एक न करब माने ॥

[9]सम पसेब निसह तनु दरसब,
मुकुलित लोचन हेरी ।
नखँ [10]हनि पिआ मनि [11]धाम छोड़ाओब,
सुरत बढाओब [12]केली ॥

जूझल मनमथ पुनुजे [13]जुझाबए,
बोलि वचन परचारी ।
गेल भाव जे पुनु पलटाबए,
सेहे कलावति नारी ॥

---

१. 'नागर'। २. 'चाहिअ'। ३. 'कहलेओ'। ४. 'बढाओब'। ५. 'हासे'। ६. तिला ७. नागर सब (मु० पु०)। ८. कोपकला पर रोष न मानब, अधिक न करबे माने (नेपाल तालपत्र फो० ८२ ब०)। ९. 'समय सेव निसह तनु चाँदन। (मु० पु०)। १०. 'हरि'। ११. 'ठाम'। १२. 'वेरी'। १३. 'जुझाओब'। (ने० ता०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]रस सिंगार सरस कवि गाओल,
बुझए सकल रसमन्ता ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन,
लखिमा देविक कन्ता ॥

सत्वरो मध्यमश्चैव, तालत्रय उदीरितः ।
रागस्यास्य तु तावद्भिः, सम्यग्गानं प्रजायते ॥

अथ वसन्तः ।

अत्राप्येतन्नामैव छन्दः । लक्षणम् :—

पञ्चविंशतितो यत्र, त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
चरणार्धे तु तद्वृत्तं, वसन्तरतत्र जायते ॥

उदाहरणम् :— (स्वरः पञ्चमः)

माघ मास सिरिपञ्चमि गँजाइलि,
नवए मास पञ्चम [2]हरुआइ ।
अतिघन पीड़ा दुख बड़ पाओल,
[3]वनसपती के वधाइ हे ॥

---

१. "सुख संभोग सरस कवि गावए, बुझ समय पचवाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराएण विद्यापति कवि भाने ॥" (नेपाल तालपत्र फो० ८२ ब०)। २. 'हरुआई' (मजु० पद० १३८)। ३. वनस्पति (ती)भेलि धार हे (न० गु०, रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुभ खन बेरा [1]सुकल पख हे,
दिनकर उदित समाइ ।
सोलह[2] सँ पुने बत्तिस लखने,
जनम लेल रितुराइ हे ॥

नाचए जुवतिगन हरखित,
जनमल बाल मधाइ हे ।
मधुर महारस मङ्गल गावए,
मानिनि मान उड़ाइ हे ॥

वह मनयानिल ओत उचित हे,
वन धन [3]भउ उजिआरा ।
माधविफूल भल गजमुकता तुल,
तें देल वन्दनेवारा ॥

पीअरि [4]पाँडरि महुअरि गावए,
काहर कार धुथूरा ।
नागेसर कलि शङ्ख-धूनि पुर,
तगर ताल समतूला ॥

मधु लए मधुकरें बालक दए हलु,
कमल पखुरिआ झुलाइ ।
पौअनाल तोरि करि सुत बाँधल,
केसु [5]कइलि [6]बघनाही ॥

१. 'सुकुल' (मजु०)। २. 'संप्पुने' (मजु०)। ३. 'भओ'। ४. 'पाँउरि'।
५. 'कएलि'। ६. 'वधना-'(मजु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नव नव पल्लव सेज ओछाओल,
सिर [१]दहु कदँबेरि माला।
बैसलि भमरी हरउद [२]गावए,
चक्का [३]चन्द निहारा ॥

[४]कनए केआ सुति-[५]पत्र लिखिए हलु,
रासि [६]नछत्र कए लोला।
कोकिल गणित गुणित भल जानए,
ऋतु वसन्त नाम [७]थोएला ॥

बाल वसन्त तरुण भए धाओल,
बेढए सकल संसारा।
दखिन पवन घन आँग उगारए,
कुवलए कुसुम-परागे ॥

सुललित हार मँजरि घन कज्जल,
आँखि तओ अञ्जन लागे ॥
नव वसन्त ऋतु अनुसर जौवति,
'विद्यापति' कवि गाया।

---

१. 'देल कदम्बक' (मजु०)। २. गारए (मु० पु०)। ३. चान्द (डा० सु० झा)। ४. 'कनए केसुआ सुति'। ५. 'पए'। ६. 'नछए' (मजु०)। ७. 'थोला' (रा० पु० द० ले० मजु०)।

मन्तव्य :—सम्पादकलोकनि रागतरङ्गिणीक पाठकेँ शुद्ध मानितहुँ अपना अपना संग्रहमे बहुत पाठभेद कएलैन्हि, तकर मूल चिन्तनीय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा शिवसिंह रूपनराएन,
सकल कला मन भाया ॥

(जयदेवादिपरिगृहीता देशीयाश्च एतद्भेदान्तरिता एवेति न लिख्यन्ते)

अथ मालवः ।

अत्र च विततमालव-देशमालव-श्रीमालव-छनछीमालव वियोगिमालव-बृहद्वियोगिमालव-पहडिआमालव-विजयपुरी-मालव-जोगिआ-मालव-सारङ्गीमालव-प्रियतमामालव इत्येकादश भेदाः ।

तत्रादौ वितताख्यः । विततमेवात्र छन्दः । लक्षणम् :—

आदिभूतं तृतीयं च, चरणं तु चतुष्कलैः ।
चतुर्भिः कलिकाहीनैः त्रिभिस्तैर्द्विचतुर्थकम् ॥

ध्रुवात्मचरणावेतद्वै परीत्येन यद्गतौ ।
[1](पदार्धोत्तरमेव स्याद् ध्रुवगानं पुनः पुनः ॥

उत्सर्गादतुकं यत्र सतुकं वापि कुत्रचित् ।)
विततारव्यं तु तद्वृत्तं विततेनैव गीयते ॥

उदाहरणम् :—

विकट जटाचय किछु भन[2] लोकय हे,
उर फनिपति दिगवास ।

१. (   ) कोष्ठमध्य देल पाठ रा० पु० द० ले० सँ उद्धृत अछि; मुद्रित पुस्तकमे नहि अछि । २. 'नहि' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ध्रु०) कओन [1]पथ मेटतीह हे,
आगे माइ [2]उमत हमार ॥

त्रिपुर दहन करु छारे छाल भरु हे,
वसह चढ़ल वर बूढ़ ।
तीनि नयन हर एक अनल वर हे,
सिर सुरसरि जलधार ॥

भनइ विद्यापति [3]गोरि त्रिकलमति हे,
ओहि उमताक उदेस ॥

सत्स्वरत्रितयं चात्र, तालत्रयमुदीरितम् ।

अथ देशमालवः ।

लक्षणम् :—

चतुष्कलगणानां च[4], चैकद्वित्रिकलाधिकाः ।
पदार्धे यत्र तद्देशी, देशमालवगा भवेत् ॥

उदाहरणम् :—

कुन्दन कन कन्हाइ, हमहु कसौटी [5]तूल ।
निअ हिअ कसल बालँभ, गुन बूझल बहुमूल ॥

---

१. 'पथे' (न० गु० ५१६)। २. 'जाइते'। ३. 'गौरि' (रा० पु० द० ले०; मजु० पद–सं० ५६५)। ४. एक चकार निरर्थक बुझाइ'छ। ५. 'तुल' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ए सखि सुपँहु समागम, सुख कहहि न जाए।
मन कर मनाओन छाड़िअ, राखिअ हिअ लाए॥

पुरब गौरि [1]हम पूजलि, पुनें परिनत नेह।
जीव एक कए मानल, कि जओ दुइ देह॥

लछमिनरायण नृप कह, तोहें गुनमति नारि।
जासओ नेह बढ़ावह, सेहे देव मुरारि॥

त्वरितत्रयतालोऽत्र, दातव्यो रागपारगैः॥

अथ श्रीमालवः।

श्रीरेवात्र छन्दः। लक्षणम् :—

चतुर्भिः सममेव स्याद्ध यत्पदार्धं चतुष्कलैः।
गणैः क्वचिन्न्यूनकलैः तच्छ्रीस्तत्रैव गीयते॥

उदाहरणम् :—

यदि तोरा नहि खन नहि अवकाश,
परके जतने कर्के देल विसवास।
विसवास दए कर्के सुतह निचीत,
चारि पहर राति [2]भमत सुचीत॥

करजोरि पैंआ परि कहवि विनती,
विसरि न हलवि ए पुरुव [3]पिरिती।

---

१. 'हमें' (रा० पु० द० ले०)। २. 'भमह' (मजु० ३२४)। ३. 'पिरिती' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम पहर राति रभसें बहला,
दोसर पहर परिजन निन्द गेला ॥

नींद निरुपइतें [1]भेलि अधराति,
तखने उगल [2]चाँदा परम कुजाति ।
भनइ 'विद्यापति' तखनुक भाव,
जेहे पुनमत सेहे जन [3]पए पाव ॥

(दोहा)

दोए सखर अरु मध्य दोए, एआमे चारिए ताल ।
एआतें चूकि सुर चलत तब, रागिनि होति बेहाल ॥

अथ धनछीमालवः ।

अत्राप्येतन्नामैव छन्दः । लक्षणम् :—

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे चतुष्कल चतुस्ककम् ।
छनछीमालवश्चैतद्धनछीमालवं नयेत् ॥

उदाहरणम् :—

[4]तोहँ हमँ पेम जतें दुरें उपजल,
[5]सुमरवि से परिपाटी ।

१. 'भेल' । २. 'चन्दा' । ३. 'पय' (मजु०) । ४. तोहें हमें (रा० पु० द० ले०) 'तोह हम' (न० गु० वसुमकी सं० पृ० १३०) । ५. 'सुमरि विसे' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आबे पररमनि रङ्गरस भुलला हे,
[1]कओंन कला हमें घाटी ॥

(ध्रु०) भमरवर मोरे बोले बोलब कन्हाई ।

विरह तन्त [2]यदि [3]जान मनोभव,
की फल अधिक [4]जनाइ ॥

[5]सुनिअ सुमेरु साधुजन तुलना,
सबकाँ [6]महिमा धने ।
[7]तन्हि निअ लोभे ठाम यदि [8]छाड़ब,
गरिमा [9]गहवि कओने ॥

पुरुष हृदय, जल, दुअओ सहजें चल,
अनुबधें बाधें थिराइ ।
[10]से यदि न थिर रह सहसें धारें वह,
उचेओ नीच पथ जाइ ॥

[11]भनइ यशोधर [12]नवकविशेखर,
पुहवी तेसर काँहाँ ।
साह हुसेन भृङ्ग सम नागर,
मालति से निक जाँहाँ ॥

---

१. कओन कला हम खाटी (न० गु० मित्र-मजु०) । २. 'जपि' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'बुझलि' । ४. 'बुझाइ' । ५. 'तुलए' । ६. 'धइरज' । ७. 'तोँहे' । ८. 'लोभे वचन आने चुकला (?) । ९. 'धरबि' । १०. 'से यदि फुटल रह सहस धारे वह । ११. भनइ विद्यापति नव कबिशेखर.......(न० गु०) । १२. नर (मु० पु०) ।

मन्तव्य :—एहि गीतमे 'यशोधर' तथा 'विद्यापति' दुनूक नाम भनितामे भिन्न-भिन्न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरद्वितयं मध्यद्वितयं तान्नता पुनः ।
चतुष्टयं तु तालानां जायते रागमध्यगम् ॥

अथ वियोगिमालवः ।

अत्राप्येतन्नामैव छन्दः । लक्षणम् :–

षट्कलद्वन्द्वमुद्वृत्त–कलाद्वन्द्वविभूषितम् ।
पदाद्यर्धे तदन्तार्धे रसमात्रगणद्विकम् ॥

कलासमधिकं तच्च तत्र स्याद् यत्र कुत्रचित् ।
वियोगिमालवे गेयं छन्दस्तन्नामकं भवेत् ॥

उदाहरणम् :–

जतनहुँ जतेओ न रे रे निरवह,
एकान्हु ततेओ अँगिरलह ।
दरसनदिन–सओं रे रे बोलितह,
नयन जुड़ाएत [1]तोंह तह ॥

संग्रहमे उपलब्ध होइ'छ । न० गुप्त, जे कि अपन संग्रहमे 'विद्यापति'क भनितायुक्त पद नेने छथि— स्वीकार कएने छथि जे तालपत्र तथा रागतरङ्गिणीमे भिन्न-भिन्न भनिता अछि । ताहिमे 'विद्यापति' नामक भनिते कोन कारणे ग्राह्य से निर्णय स्पष्ट नहि कए सकलाह । इतिहाससँ इहो ज्ञात होइ'छ जे यशोधरहुकेँ नव कविशेखरक उपाधि छलैन्ह । एक ग्रन्थकार तथा अन्वेषकक दृष्टियेँ रागतरङ्गिणीकारक गृहीत भनिता प्रामाणिक मानबाक थिक ।

१: 'तोहें' (रा० पु० द० ले०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1](कपट कइएक तओं रे रे कहु हित,
बड़ बोल छड़ बड़ अनुचित ।)
हमे अबला बलि रे रे दए [2]जिव,
तरवि दुसह [3]नरि शिव शिव ॥

से सबे बिसरु आबे रे रे की हेतु,
मरओो मधथ हे मकर केतु ।
कवि कुमुदी कह रे रे थिर रह,
सुपुरुष वचन पसान-रेह ॥

तालद्वितयमेवात्र सत्वरो मध्यमस्तथा ॥

अथ बृहद्वियोगिमालवः ।

लक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं यत्र विंशतितः कलाः ।
पदार्धं तद्बृहत्खेद-मालवस्तत्र नीयते ॥

उदाहरणम् :—

एत दिन हृदय [4]हरष छल,
आबे [5]सबे दुर गेल रे ।

---

१. ई कोष्ठान्तर्गत पद मुद्रित पुस्तकमे नहि छल, रा० पु० द० लेख प्रतिसँ उद्धृत अछि। २. 'जीव'। ३. 'नदि' (रा० पु० द० ले०)। ४. 'हरख'। ५. 'सब'। (न० गु० पद सं० ६३५)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राँक क रतन हेराएल,
जग तेउ सुन भेल रे ॥

विहि निरदए कोनें [2]दोसें दहु [3]हरलक,
कोरसञो [4]मोरि कमलमुखि रे।

मन कर गरल गरासिअ,
पाप आतम – वध रे।
जीवन लाग मरन – सन,
मरन सोहाओन रे ॥

[5]गजसिंह कह दुख छाड़त,
सुनह विरहि जन रे ।
नृप पुरुषोत्तम सहि रह,
[6]तेहि दयाञे मिलु रे ॥

(दोहा)

दोए सत्वर अरु मध्य दोए, एआमे चारिए ताल ।

---

१. 'हरायल'। २. 'दोषे'। ३. 'देल दुख मनमथ रे' (न० गु० पद सं० ६३५)।
४. 'मोर' (रा० पु० द० ले०)। ५. एहि सँ पूर्व "मोर दुख के पतिआओत सुनह विरहि जन रे" ई एक पद अधिक नगेन्द्र० गुप्तक संस्करणमे अछि। तथा "गजसिंह ....मिलु रे" ॥ एहि दूनू पदक स्थानमे "विद्यापति कह सुन्दरि मन धैरज धरु रे।
अचिरे मिलत तोर प्रियतम मन दुख परिहरु रे ॥" ई दू पद अछि।
६. ते हृदयाञे (रा० पु० द० ले०)।

मन्तव्य :—रागतरङ्गिणी तथा नगेन्द्र० गुप्तक संस्करणमे पाठक बहुत भेद अछि। जाहिमे अन्तिम ३ (तीन) पद विशेष विचारणीय थिक। भनिताक भेद भेने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पहड़िआमालवः ।

(एतत्-) छन्दो लक्षणम् :—

सप्तविंशतिपर्यन्तं द्वाविंशतितमात् कलाः ।
यत्पदार्धे ध्रुवो यत्र कलिकापञ्चकात्मकः ।
पर्वतीयस्तु विख्यातः स भवेदिह मालवः ॥

उदाहरणम् :—

धवल जामिनि धवल हर रे,
धवल चाँदन चीर ।
निफल जनक विहार मेल रे,
गिरि सँ विसरु पिअ थीर ॥

सम्पूर्ण गीते भिन्न रूपे बुझल जाएत। एहना स्थितिमे हमरालोकनि यद्यपि रा० त० क पाठकेँ प्रामाणिक मानब, जकर कारण स्पष्टे अछि जे एक उत्तरदायी स्थानीय विद्वान् क मान्यता अनका अपेक्षासँ अधिक होएब उचित। तथापि प्रकृत गीतमे एक पदक (चरणक) त्रुटि तँ अखरिते छैक। तृतीय चरणक मात्रा अट्ठाइसो सँ बहुत बढ़ि जाइत छैक। थोड़ेक ध्यान देला पर प्रतीत होइ'छ जे ई दू चरण टूटि एक चरण भेल हो। एहिमे 'विहि''''दोसें दहु-देल दुख मनमथ रे' ई तृतीय चरण मानला पर ''मनकर''''वध रे' ई चारिम चरणक मेल खाईत छैक। तखन-'हरलक''''मुखि रे' एतेक अंश फूटे बचैत अछि। जे किछु और रहला पर एक चरण बनि गीतकेँ आठ चरणक बना दैत। एहिमे अन्वेषणक स्थान छैक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ध्रु०) सजनिआ ।

नवक जौवन नवक अनु रे,
नवक नव अनुराग ।
सारि खेत समेत हेमत,
पिआ नहि, मोर अभाग ॥

[1]वारि सँ [2]वरिसए गगन जल रे,
परसें पँचसर सोस ।
गरजें चओकलि काहि आलिङ्गओ,
पाउस निअ नहि दोस ॥

धैरज धर धनि कन्त आओत,
कुमर 'भीषम' भान ।
[3]ई रस विन्दक नर नराएन पति,
धरमा देवि रमान ॥

[4]सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालगतिस्त्वियम् ।
तया तु हरते सेयं रागिणी महतां मनः ॥

---

१. 'वरिस' (रा० पु० द० ले०)। २. 'परिसए' (मजु० ६१७)। ३. 'ईस विन्दक' (मु० पु०)। ४. 'सत्वरं' (रा० पु० द० ले०)।

मन्तव्य :—मजुमदार महोदय रा० त० सँ ई गीत उद्धृत कएने छथि, तथापि किछु पाठ भेद भेल छैन्हि जे लेखकक प्रमाद वा अर्थक अपन कल्पनाक अनुरूप पाठक कल्पना–कोन कारणे से नहि जानि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ विजयपुरमालवः ।

(एतत्–)छन्दो लक्षणम् :—

क्वचित्तैर्मात्रया होनैर्बहुधा वेदषट्कलैः ।
यदर्धघटनं तादृक् पदेनोत्थायिसुस्वरम् ॥

चतुर्भिः कलिकाहीनैस्तैः कदाचिच्चतुष्कलैः ।
यदर्धघटनं तादृक् पदे विश्रान्तसुस्वरम् ॥

विजयाख्यपुरीपूर्वमालवीयमिदं भवेत् ।
वृत्तं तन्नामकं तत्र गीयते गीतिसत्तमैः ॥

उदाहरणम् :–

कुण्डल तिलकेँ विराज मुख,
शोभित सीँदुर विन्दु ।
हेमलतामे [1]समारु विधि,
कवि – रवि – तारा – इन्दु ॥

इन्दुवदनि धनि नयन विशाला ।
कमल कलित जनि मधुकर माला ॥

देखलि कलावति अपुरुव रमनी ।
[2]जिनए आइलि सुरपुर–गजगमनी ॥

---

१. 'समान' (वि० गी० सं० र'य सं० डा० सु० भा)। २. 'जनि' (न० गु० २५१)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेनी विमल विराज [१]तसु,
[२]वस कुसुमावलिहार ।
श्याम [३]भुग्रङ्गम देखि कहु,
[४]कियो काम परहार ॥

करु परहार मदन सर बाला ।
कुटिल कटाख वान [५]कनिग्रारा ॥

कम्बु कण्ठ मृणाल भुज,
वलित पयोधर [६]भार ।
कनककलस रसें पूरि रहु,
सञ्चित मदनभण्डार ॥

मदनभण्डार पयोधर गोरा ।
जनि उलटाग्रोल [७]कनयकचोरा ॥

श्यामा सुलोचनि सुरतिरति,
अपरुव भूषण [८]भार ।
'विद्यापति' कविराज कह,
सुफलें करथु अभिसार ॥

करु अभिसार मदनसर बाला ।
कुटिल कटाख वान कनिग्रारा ॥

तालगतिः पूर्ववत् ॥

---

१. 'तनु' (मित्र–मजु० पद सं० ३०८) 'विराज तसु वस' क स्थानमे 'विराजत ससु' (रा० पु० द० ले०)। २. 'रस' (मु० पु०) । ३. 'भुजङ्गम' (मजु०)। ४. 'कियो' (मजु०) 'करु' (डा० सु० झा) । ५. 'कनियारा' (मजु०) । ६. 'हार' (न० गु०)। ७. "°कटोरा' (डा० सु० झा) 'कनक कटोरा' (रा० पु० द० ले० न० गु० मजु०)। ८. 'सार' (न० गु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ जोगिआमालवः ।

एतन्नामकमेव छन्दः । लक्षणम् :—

आचतुर्दशकात्सप्तदशपर्यन्तकाः कलाः ।
यत्पदार्धे पदार्धात्मा ध्रुवोऽपि स्याच्चतुष्कलैः ॥

कलिकाद्वितयोपेतैस्त्रिभिरुत्सर्गतः किल ।
जोगिआमालवः सोऽयं गीतिभिः समुदाहृतः ॥

उदाहरणम् :—

कतन वेदन मोहि [1]देहे मदना,
हर नहि, बाला मोहे जुवति जना ।[2]
नहि [3]मोहि [4]जटाजूट चिकुरक बेनी;
[5]सिरँ सुरसरि नहि कुसुमक सेनी ॥

[6]चाँद तिलक मोहि नहि इन्दु छोटा;
ललाट पावक नहि सिन्दुरक फोटा ।
[7]कण्ठ गरल नहि, मृगमद चारु,
फनिपति मोरा नहि, मुकता हारु ।

---

१. 'देसि' (डा० सु० झा, तथा शि० न० ठाकुर)। २. एहि पदक पश्चात् "ठाकुर तथा न० गु० संग्रहमे एक पद एहिसँ अधिक अछि "विभूति भूषण नहि चाननक रेनू, बाघछाल नहि मोरा नेतक वसनू"। ३. 'मोरा'। ४. 'जटाभार'। ५. "सुरसरि नहि मोरा कुसुमक सेनी" (ठाकुर)। ६. चाँदनक विन्दु मोरा नहि इन्दु छोटा" (डा० उ० मिश्र)। ७. "नहि मोरा कालकूट मृगमद चारु" (डा० उ० मिश्र)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भनइ विद्यापति सुन देव कामा,
[1]एक दोस [2]अछ ओहि नामक—वामा ॥

सत्वरत्रिकतालस्य गतिरत्र व्यवस्थिता ॥

अथ सारङ्गीमालवः ।

एतन्नामैव छन्दः । लक्षणम् :—

ऊनविंशतिपर्यन्ताश्चतुर्दशतमात् कलाः ।
यत्पदार्धे समाख्याताः सारङ्गीमालवः स तु ॥

---

१. "एक पए दूखन नाम मोर वामा" (डा० उ० मिश्र) । २. 'अछि' (डा० सु० झा) ।

मन्तव्य :—एहि गीतमे निम्नलिखित प्राचीन पद्यक भाव अधिक अंशमे गृहीत भेल अछि । अपना दिशसँ विशेष भावक समावेश कए नवीनताक संग विशेष चमत्कार बढ़एबामे कवि पूर्ण सफल भेल छथि । ओ पद्य ई थिक :—

"जटा नेयं, वेणीकृतकचकलापो; न गरलं
गले, कस्तूरीयं; शिरसि शशिलेखा न, कुसुमम् ।
इयं भूतिर्नाङ्गे, प्रियविरहजन्मा धवलिमा;
पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर किं मां प्रहरसि ॥"

'गीतगोविन्द'हुमे एहि·आशयक पद्य अछि, किन्तु ओ विरही नायकक उक्ति थिक—

हृदि विसलताहारो, नायं भुजङ्गमनायकः,
कुवलयदलश्रेणी कण्ठे, न सा गरलद्युतिः ।
कुवलयरजो, नेदं भस्म प्रियारहिते मयि,
प्रहर न हरभ्रान्त्याऽनङ्ग क्रुधा किमु धावसि ॥

(मित्र तथा मजु० क विचारे एही पद्यक छाया एहि गीतमे अछि; किन्तु पूर्व पद्यसँ अधिक भाव साम्य प्रतीत होइ'छ ।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

गमनदिवस–सओ तिथि [1]लेखि लेखी,
परतह भीति भरिए गेलि रेखी।
सेहे रे मेटि मेटि ऊन पुरावे,
बदन सिचए लागि जललए श्रावे ॥

काहुकाँ [2]नलिनि काहुकाँ चाँदने,
केश्रो बोल श्राएल नन्दनन्दने।
मधुकर धुनि सुनि सबे मुँद काने,
करतल ताले कोकिल खेद श्राने ॥

की होइति अगे सखि कमलमुखी,
जतने जिश्रावह सबहु सखी।
अबुझ सखीजन न बुझए श्राधी,
आन श्रौषध कर आन वेश्राधी ॥

सितल पश्रोनरि हृदअ धरु थोइ,
चाँन किरन केश्रो करें धरु गोइ ॥[3]

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालगतिस्त्वियम् ॥

---

१. 'लिखि'। २. 'नलिनिदल' (रा० पु० द० ले०)। ३. गीतमे भनिता नहि अछि किन्तु रा० पु० द० ले० प्रति एहिमे गीतक नीचाँ "इति विद्यापतेः" लिखल अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ प्रियतमामालवः ।

करुणामालवनामकमत्र छन्दः । लक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धें तु स भवेत् करुणामालवाभिधः ॥

उदाहरणम् :—

युगल शैल सिम हिमकर देखल,
एक कमल दुइ जोति रे ।
[1]फूलल मधुरिफुल सिन्दुरे लोटाएल,
पाँति बैसलि गजमोति रे ॥

आज देखल जत के पतिआएत,
अपरुब विहि निरमान रे ।
विपरित [2]कनक कदलि[3]तरें शोभित,
थल पङ्कजके रूप रे ॥

[4]गजसिंह भन एहु पूरव पुनतह,
ऐसनि भजए रसमन्त रे ।

---

१. 'फुललि' । २. 'कमल' । ३. 'तरु' । ४. एहिसँ पूर्व "तथहुँ मनोहर बाजन बाजे, जनि जगे मनसिज भूप रे" ई एक पद अधिक अछि । तथा एहि दू पदक स्थानमे—
"भनइ विद्यापति एहु पुरब पुनतह, ऐसनि भजए रसमन्त रे ।
बुझए सकल रस नृप शिवसिंह, लखिमा देइ कर कन्त रे ।।"
एहि तरहे 'विद्यापति' नामक भनिता अछि । (न० गु० पदसँ १९)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बुझए सकल रस नृप पुरुपोत्तम,
असमति देइ कर कन्त रे ॥

अथासावरी ।

इयन्तु श्रीरागरागिणी । रूपमुक्तं प्राक् ।

इयमपि विततासावरी–देशासावरी–सिंघल्यसावरी–जोगिआसावरी–सिन्धुलासावरी–भोगिन्यसावरी – सम्भोगासावरी–दण्डकासावरी–सरसासावरी–द्राविण्यसावरी– अभिरामासावरी–मनोहरासावरीति द्वादशभेदवती ।

तत्र वितता यथा :–

वृत्तं तन्नामकमेव । लक्षणम् :–

पदाद्यर्धं भवेद्यत्र चतुष्कलगणैस्त्रिभिः ।
तदन्तार्धं च यत्रस्याच्चतुर्भिश्च चतुष्कलैः ॥

कदाचित्कलिकाहानिरर्धयोर्गणनिर्मितौ ।
वितताासावरीयं तद्वृत्तं तन्नामकं भवेत् ॥

मन्तव्य :—एहि गीतमे नगेन्द्र गुप्तक अनुसारेँ तथहुँ मनोहर इत्यादि पाँचम पंक्ति यदि मानि लेल जाए—जेकि–चारिम पंक्तिक तुकक पूर्तियो करैत अछि, तथापि तेसर पंक्तिक तुकक पूर्तिक हेतु एक पंक्ति मध्यमे और न्यून रहवे करत। ऊपरक दू पंक्ति तथा नीचाक दू पंक्तिक क्रमकेँ देखैत 'चारिम'–'छठम' ई दू पंक्तिक त्रुटि स्पष्ट प्रतीत होइ'छ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

कामिनि करए सनाने,
[1]हेरितहि [2]हृदए [3]हनए [4]पँचवाने ।
चिकुर [5]गरए जलधारा,
मुख[6]ससि [7]डरें जनि रोअ्रएअ[8]धारा ।

तितल वसन तनु लागू,
मनिहुक मानस मनमथ जागू ।
कुचयुग चारु चकेवा,
निअकुल मिलत [9]आनि कोन देवा ।
[10]तैँ [11]सङ्काजे भुज[12]पासे,
बाँधि धरिए उड़ि जाएत अकाशे ॥

[13]इति विद्यापतेः ।

---

१. 'हेरइतें'। २. 'हृदय'। ३. 'हरए'। ४. 'पचवाने'। ५. 'गलए'। ६. शशि (ने० तालपत्र)। ७. 'तरें' (मु० पु०)। ८. 'अँधारा'। ९. 'आनि कओने'। १०. 'ते'। ११. 'शङ्काए'। १२. 'पाशे'। १३. भनइ विद्यापतीत्यादि (ने० तालपत्र) "भनइ विद्यापति गावे, गुनमति धनि पुनमत पावे" (न० गु० ३७) "भनइ विद्यापति भाने, सुपुरुष कबहु न होएत नदाने" (ग्रियर्सन पद सं० १.५.४२) "कवि विद्यापति गाओये, गुनवति नारि रसिकजन पाओये" (पदकल्पतरु २०७)।

मन्तव्य :—ई गीत डा० ग्रियर्सन, न० गु०, मजुमदार, पदकल्पतरु आदि संग्रहोमे उपलब्ध अछि। रागतरङ्गिणी तथा नेपाल तालपत्रक पदक्रम समान अछि तथा पाठहुमे बहुत समानता अछि। अन्य संग्रह सबमे द्वितीय तृतीय चरणक व्यतिक्रम देखल जाइत अछि। पाठमे तँ बहुत भेद अछि तेँ ओहि सभक पाठ भेद नहि देल गेल। जिज्ञासु पाठक ओहि संग्रह सबसँ देखि सकैत छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ देशी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

चतुर्विंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
पदार्धे यत्र सा देशासावरी तद्गता भवेत् ।।

त्वरितं प्रथमोऽन्यश्च मध्यमस्तालजालकः ।
जायते द्विविधस्तेन रागिणी तु व्यवस्थिता ।।

उदाहरणम् :-

माँसे पखें उगए कलानिधि,
लैए सकल निअसाज ।
तुअ मुखसम नहि देखिअ,
तें खिनमनें गुनि लाज ।।

कह दहुँ कओन पुरुष धनि,
जाहि कर [1]रह अनुराग ।
के अछ एहि महितल जे,
अरजल एहेन भाग ।।

सामर चामर निन्दए,
कोमल केस कलाप ।

---

१. 'वह' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भौंह मनोहर कि कहव,
कामे तेजल सर चाप ॥

पवन चलित नव पल्लव,
कुचकोरक [१]तरें काप ।
धके धाओल नहिं पाओल,
आशो लुबुधल लोभ ।
जेहन रमनि नृपसिंह कह,
हरिहि निकट पए सोभ ॥

तालः पूर्ववत् ।

अथ सिंघली ।

एतच्छन्दो लक्षणम् :—

एकविंशतिमारभ्य षड्विंशतिकलावधि ।
पदार्धकलिकाः सिंघासावरी तद्गता भवेत् ।

उदाहरणम् :—

सबहुँ सखि परबोधि कामिनि,
आनि देलि पिअ पास ।
जनि बाँधि व्याधाजे विपिनसओ मृग,
तेजए तीख निसास ॥

१. 'डरें' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैसलि शयन समीप सुवदनि,
जतने सम्मुहि न होए।
भेल मानस बुलए दहोदिश,
देल मनमथ फोए॥

सकल गात दुकूल दृढ अति,
कतहु नहि अवकाश।
पानिपरसें परान परिहर,
पुरति की रति-आस॥

निबिल [1]निविबँध कठिन कञ्चुक,
अधरें अधिक निरोध।
कठिन काम कठोर कामिनि,
मान नहि परबोध॥

करब की परकार आवे हमे,
किछु न पर अवधारि।
कोपें कौसलें करए चाहिअ,
हठहि हल हिअ हारि॥

दिवस चारि गमाए माधव,
करति रतिसमधान।
बड़हिकाँ बड़ होए धैरज,
सिंह भूपति भान॥

तालः पूर्वतुल्यः॥

---

१. निबँध (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ जोगिआसावरी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :–

सप्तविंशतिपर्यन्तं त्रयोविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धेध्रुवाद्यर्धे दशसंख्यकलान्विताः ॥

आदित्यसंख्यका यत्र ध्रुवान्तार्धकलाः किल ।
[1]जोगिआसावरी सा तु जोगिआसावरीं नयेत् ॥

उदाहरणम् :---

कालि कहल पिआ सँभहि रे,
जाएब मोजे [2]मारुअ देश ।
मोजे [3]अभागलि नहि जानल रे,
संगहि [4]जैतहुँ सेहे देश ॥

(ध्रु०) हृदय बड़ दारुन रे,
पिआ बिनु [5]बिदरि न जाए ॥

एकहि सयन सखि सूतल रे,
अछल [6]बाँलम निसि मोर ।
न जानल कतिखन तेजि गेल रे,
बिछुरल चकेवा जोर ॥

---

१. मुद्रित पुस्तकमे 'जोगिआसावरीन्तान्तु' पाठ छल, किन्तु अर्थक दृष्टिसँ प्रकृत पाठ कल्पित कएल । २. 'माथुर' (न० गु० ६२६) । ३. 'अभागिनि' (न० गु०) । ४. 'जहतँओ जोगिनि वेश' (न० गु०) । ५. 'विहरि' (मु० पु०) । ६. 'वल्लभ' । (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सून सेज हिग्र सालए रे,
पिग्राजे विनु [1]मरव मोजे ग्राजि ।
विनती करग्रो [2]सहि लोलिनि रे,
मोहि देहे ग्रगिहर साजि ॥

'विद्यापति' कवि गाग्रोल रे,
ग्राए मिलत पिग्र तोर ।
लखिमा देइ वरनागर रे,
राए शिवसिंह नहि भोर ॥

मध्यमत्रिकतालेन गतिरेषा विराजते ॥

अथ सिन्धुलासावरो ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :--

पञ्चविंशतिमारभ्य त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे मात्राः पञ्चदशान्विताः ॥

अन्तार्धध्रुवके यत्र पदार्धान्तरवस्थितिः ।
सिन्धुलासावरी सा तु सिन्धुलासावरी[3]गता ॥

उदाहरणम् :--

आज पुनिमा तिथि जानि मोजे,
[4]ऐलिहुँ उचित [5]तोहर अभिसार ।

---

१. 'घर' । २. 'सहचरि' । ३. मुद्रित पुस्तकमे 'मता' पाठ छल । किन्तु रा० पु० द० ले० मे 'गता' पाठ देखि सएह राखल । ४. 'एलहुँ' (डा० सु० झा, मजु० पद सं० ३३५, न० गु० ३१०) । ५. 'तोर' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देहजोति ससिकिरन [1]समाइति,
के विभिनावए पार ॥

(ध्रु०) सुन्दरि अपनहुँ हृदय [2]विचार ॥

[3]तोहें [4]जनु तिमिर [5]हीत कए मानह,
आनन तोर तिमिरारि ।
सहज विरोध [6]दूरें [7]परिहर वनि,
चल उठि जतए मुरारि ॥

दूती वचन हीत कए मानल,
चालक भेल पँचवान ।
हरि अभिसार चललि वर कामिनि,
विद्यापति कवि भान ॥

(दोहा)

दोए सल्बर अरु मध्य दोए, चारि ताल एहि भाँति ।
गाएक गानमे होत हए, एआते उदीपित काँति ॥

अथ भोगिन्यसावरी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :---

१. 'समाइलि' (रा० पु० द० ले०)। २. 'विचारि'। ३. एहिसँ पूर्व 'आँखि पसारि जगत हम देखल, के जग तुअ सम नारि' ई एक चरण अधिक अछि (मजुमदार)। ४. 'जनि' (न० गु०)। ५. 'हित' (डा० सु० झा)। ६. 'दुर' (मित्र-मजु०)। ७. 'परिहरि' (मित्र-मजु०) परिहर धनि (रा० पु० द० ले०) परिहरब निचल (डा० सु० झा)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुष्कलचतुष्कान्ता रुद्रसंख्यकलादिकाः ।
कला अनियता यत्र पदार्धे सा तु भोगिनी ॥

उदाहरणम् :--

कनकलता अरविन्दा,
[1]मदनाँ माँजरि उगि गेल चन्दा ।
केओ बोल भमए भमरा,
केओ बोल नहि नहि चलए चकोरा ॥

[2]केओ बोल सैवालैं बेढला,
केओ बोल नहि नहि मेघ मिलला ।
[3]संशए परु जन मही,
बोल तोर मुखसम नहीं ॥

[4]कवि रतनाओ भाने,
सङ्क कलङ्क दुअओ असमाने ।
मिलु रति मदन समाजा,
देवल देवि लखनचन्द राजा ॥

---

१. 'दमना' (रा० पु० द० ले०, न० गु० १६) । २. 'केओ बोल शैवल छपला, केओ बोले नहि नहि मेघे झपला' (न० गु०) । ३. 'संशय पड़ल सबे देखि, केओ बोलए ताहि युगुति विशेखी' (न० गु०) । ४. भनइ 'विद्यापति' गावे बड़ पुने गुनमति पुनमत पावे' (न० गु०) ।

(नगेन्द्र० गुप्तक भनिता वला अंश पूर्ववत् विवादास्पद थिक)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(दोहा)

लघु मध्यम तिनि ताल एहि, रागिनि देत गुनीस ।
तातें वञ्चित होत हए गोरि सहित जशदीश ॥

अथ सम्भोगिनी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :---

चतुष्कलचतुष्केण प्रायस्समदलद्वयम् ।
कुत्रचित्कलया क्वापि कलाभ्यामूनतुर्यकैः ॥

चतुष्कलगणैर्नद्ध-दलयुग्मं भवेत्पदम् ।
सम्भोगासावरी सा तु सम्भोगसावरीगता ॥

उदाहरणम् :---

तनु सुकुमार पयोधर गोरा,
कनकलता जनि सिरिफल जोरा ।
देखलि कमलमुखि [1]वरनि न जाइ,
मन मोर हरलक मदन जगाइ ॥
[2]भोहाँ धनुष धएल तसु [3]आगू,
तीष कटाख मदन शर [4]लागू ।

---

१. 'वरणि' (मित्र-मजु० पद सं० ६) । २. भोंहा' । ३. 'आगु' । ४. 'लागु' । (मजु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सबतरु सुनिअ ऐसन व्यवहारा,
मारिअ नागर उवर गमारा।
कंस नरायण कौतुक गावै,
पुनफले [1]पुनमत गुनमति [2]पावै ॥

(दोहा)

मध्यम तीनओ ताल एहि, रागिनि होत प्रगास।
तातें चूकत सुर तबहिं, गुनी होत उपहास ॥

अथ दण्डकासावरी।

एतच्छन्दोलक्षणम् :–

पञ्चाशदूनपञ्चाशदथवा यत्पदार्धयोः।
कलाः सासावरी तान्तु दण्डकासावरीं नयेत् ॥

उदाहरणम् :—

[3]जय जय देवि दुर्गे दनुजदारिनि,
भक्तजनसन्तापहारिनि,
प्रबल [4]दनुमुण्डालिमालिनि,
चण्डदारिनि हे।
मत्तमहिषासुरगरासिनि,
शंखचक्रकृपाणपासिनि;

---

१. 'पुणमत' (मजु०)। २. 'पावें'। ३. एक 'जय' शब्द अधिक बुझाइ'छ।
४. 'दनुज' (रा० पु० द० ले०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चकितवृन्दारकविलासिनि,
समरहासिनि हे ॥

श्रीत्रिविक्रमनृपतिनागर–
ममलकीर्तिकदम्बसागर–
महितकैरववनविभाकर–
मिति समाचर हे।
रचित 'गङ्गाधर' सुगीते,
धरणिपालकर[1]त्निणी ते;
सकलसुरनरसिद्धिललिते,
वेदचरिते हे ॥

सत्वरद्वय एवात्र तालस्तु गुणिसम्मतः।
तद्विहीनः स्वरश्चेत्स्यात्तदापस्वरता भवेत् ॥

अथ सरसासावरी।

एतद्वृत्तलक्षणम् :–

चतुष्कलचतुष्कान्तं सैकतत्त्रितयावधि।
पदार्धकलिका यत्र सरसासावरी तु सा ॥

उदाहरणम् :–

चल चल सुन्दरि शुभ कर आज,
ततमत करइतें नहि होए काज।

१. 'रत्नणीते' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुजन परिजन डर [1]कर दूर,
विनु साहसें सिधि-आस न पूर ।
विनु जपलें सिधि [2]केओ नहि पाव,
विनु गेलें घर निधि नहि आव ।
ओ परवल्लभ तोहें परनारि,
हम [3]पए मध्य दुहू दिस गारि ।
[4]तोहँ हुन्हि दरसन ई हम लाग,
तत कए देखिअ जेहन तुअ भाग ।
भनइ 'विद्यापति' सुन वरनारि,
जे [5]अगिरिअ ताँ न गुनिअ गारि ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालचतुष्टयम् ।
एतद्रागगतं भाति गुणिभिः प्रकटीकृतम् ॥

---

१. 'करु' (रा० पु० द० ले०)। २. 'केओ' (ले०, डा० सु० झा, मजु०)। ३. 'पय' (मजु०)। ४. 'तोहें हुनि' (ले०)। ५. 'अगिरिअ' (डा० सु० झा)।

ग्रियर्सनक पाठान्तर

(Maithili chrestomathy P. 53.)

चल चल सुन्दरि शुभ करि आज, ततमत करैति नहिं होए काज ।
वनिअ वेआकुलि कोमल कन्त, कोन परबोधब सखि परजन्त ।
सखि परबोधि सेज सब देल, पिआ हरखि उठि बाँहि धरि लेल ।
नहि नहि कए नयन ढरु लोर, सूति रहलि धनि सजेआक ओर ।
भनहि विद्यापति हे जुवराज, सभसँ बड़ थिक आँखिक लाज ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ द्राविण्यसावरी ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

आचतुर्दशकात्सप्तदशपर्यन्तकाः कलाः ।
यत्पदार्धे समाख्यातासावरी द्राविणी तु सा ॥

उदाहरणम् :---

[1]जौवनरूप अछल दिन चारि,
[2]से देखि आदर कएल मुरारि ।
[3]अब भेल झाल कुसुम [4]सबे छूछ,
वारि बिहुन सर केओ नहि पूछ ॥

हमरि ओ विनति कहबि सखि [5]रोए,
सुपुरुख [6]वचन अफल नहि होए ।
[7]जावे रहए धन अपना हाथ,
तावे से आदर कर संग साथ ॥

धनिकक आदर [8]सबतहु होए,
निरधन [9]बापुर पुछ नहि कोए ।
[10]भनइ 'विद्यापति' राखब सील,
जओ जग जिविअ, नओ निधि मील ॥

मध्यमत्रिकमादाय तालानां गतिरत्र तु ।

---

१. 'रतन' । २. 'तावे से' । ३. 'आवे' । ४. 'रस' । ५. 'गोए' । ६. 'सिनेह अन्त । ७. ''जावे से धन रह अपना हाथ'' । ८. 'सबका' । ९. 'बापुल' । १० भनइ विद्यापतीत्यादि (नेपाल तालपत्र फो० ५० (ब)) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथाभिरामासावरी ।

छन्दोलक्षणमस्याः ।

चतुष्कलगणद्वन्द्वमेकद्विवत्रिकलाधिकम् ।
यत्पदार्धेऽभिरामा साऽसावरी द्विवकलध्रुवा ॥

उदाहरणम् :--

वारि वएस तजि गेह,
पिश्रा मन श्रोहे सन्देह (ध्र०) श्रोरे ॥

तन्हि मन अछ ओहे भाँन,
एतए [1]समए भेल आन ।
तोरित पठाओब सँदेस,
आबे नहि उचित विदेश ॥

जौवन रूप सिनेह,
सेहे सुमरि खिन देह ।
प्रीतिनाथ नृप भान,
अचिरे होएत समधान ॥

सत्वरद्विवतयेनैव तालस्य गतिरत्र च ॥

---

१. 'समय' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मनोहरा ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे ध्रुवा सा तु समाख्याता मनोहरा ॥

[1]उदाहरणम् :—

× × × ×

अथ मलारी । इयन्तु मलार (मेघराग ?)भार्या । रूपमुक्तं प्राक् ।

अस्यास्तु शुद्धा पहड़िया इति भेदद्वयम् ।

तत्र शुद्धा । एतच्छन्दो लक्षणम् :—

चतुष्कलचतुष्कान्तं यत्र तत्त्रितयावधि ।
कलाः पददलद्वन्द्वे सा तु शुद्धमलारिका ॥

उदाहरणम् :—

रोपलह पहु लहु-लतिका आनि,
परतह जतने पटवितह पानि ।
[2]तैँ अरथित उपचित [3]भेलि से,
तोहें विसरलि भल बोलत के ॥

---

१. मनोहराक उदाहरण मुद्रितो पुस्तकमे उपलब्ध नहि । २. 'तें' (डा० सु० झा) 'तँइ' (मित्र-मजु० पद सं० १५०) । ३. 'भेल' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माधव बुझल तोहर अनुरोध,
हेरितहु कएलह नयन [1]निरोध।
एकहु भवन वसि दरसन बाध,
किछु न बुझिअ पहु की अपराध॥

सुपुरुष वचन [2]सवहु विधि फूर,
अमरखे विमरख न करिअ दूर।
भनइ 'विद्यापति' एहु रस जान,
राए शिवसिंह लखिमा देइ रमान॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालचतुष्टयम्।
चतुष्टयेन तेनेयं रागिणी रसभाग्भवेत्॥

अथ पहड़िआ मलारी।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः।
यत्र तादृक् पदं प्राप्य, पदं तु प्राप्यते पुनः॥

यत्र सैक चतुर्मात्रत्रिगणार्धद्वयान्वितम्।
त्रिकलात्मध्रुवोपेतमेव स्यादुत्तरोत्तरम्।
पर्वतीयमलारीति गीयते गीतिसत्तमैः॥

---

१. 'विरोध' (डा० सु० झा)। २. सबहुँ (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

अनवरत दादुरसोर घन भुवि,
[1]तलित [2]दयदिगँ सोहई ।
जलदजालहिं गगन मण्डित,
मोर धुनि सुनि मोहई ॥

नीपचम्पककेतकी–मधु,
पीवि मधुकर मातही ।
असाढ़ निञ घर सुमरि सुमरि सु,
पथिक चौदिग धावहीं ॥

(ध्रु०) आरे ॥ निञ घर सुमरि पथिक धाव,
कतहु न बालम मोर आब ॥

तालः पूर्वतुल्यः ।

अथ भूपाली एतच्छन्दो लक्षणम् : —

सरसासावरीतुल्यपदार्धघटनान्विता ।
मिथिलाभूमिभूपाली गीयते गीतिसत्तमैः ॥

उदाहरणम् :—

चल चल सुन्दरि शुभ कर आज
ततमत करइते नहि होअ काज । इत्यादि ।

---

१. 'ललित'। २. 'चौदिग' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(दोहा)

ताल चलित (नि ?) दुइ ताल लए,
एआमें परगट होति ।

अथ गुर्जरी । आकृतिरुक्ता प्राक् ।

अत्र तु विततवृत्तादावुदाहरणीये जयदेव :--

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ।
सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ॥

हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव । (इत्यादि सुप्रसिद्धम्)

इति श्रीलोचनशर्मविरचितायां रागतरङ्गिण्यां मिथिलागत्यनुरुद्ध-
षट्त्रिंशदन्तर्गतरागविवरणं नाम
तृतीयस्तरङ्गः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ चतुर्थस्तरङ्गः ।

अथ सङ्कीर्णरागाः ।

तत्र प्रथमं मिथिलामात्रसुप्रसिद्धाः । ते च—

विभासो चाहिरानिश्च गोपीवल्लभ एव च ।
सारङ्गी चापि कोडारो धनछा गौडमालवौ ।
राजविजयनाटौ च नवैते तोरभुक्तिजाः ॥

तत्र प्रथमा विभासी ।

अतः परमपि लक्षणं पूर्ववदेव (?) । एतच्छन्दोलक्षणम् :—

सप्तविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
पदार्धे बहुधा वर्णा लघवस्त्वरितस्वरैः ॥

गानोत्थानं तत्समाप्तिर्विलम्बिततरैः स्वरैः ।
यत्र सा तु विभासी स्यात्कलिकापञ्चकध्रुवा ॥

उदाहरणम् :—

कुसुमरस—अति[1]मुदितमधुकर,
कोकिल पञ्चम गाव ।

---

१. 'मोदित' । (न० गु० वसुमती सं० प० सं० २)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऋतु वसन्त [1]दिगन्त [2]बालभ,
मानस दहोदिश धाव। (ध्रु०) सजनिआ॥

तेजल तेल तमोल तापन,
सपन निसि सुख रङ्ग।
हेमन्त विरह [3]अनन्त पाविअ,
सुमरि सुमरि पिआ--[4]सङ्ग॥
मोर दादुर सोर अहोनिसि,
बरिस बुन्द [5]सदन्द।
[6]विषम वारिस विना रघुवर,
विरहिनि जीवन अन्त॥

सुमुखि [7]धैरजें सकल सिधि [8]मिलि,
सुनह [9]कन्त सुवानि।
शिशिर शुभ दिन राम रघुवर,
आओव तुअ गुन जानि॥

इति विद्यापतेः।

मम तु,

जलदजाल – कराल वारिस–
दिवस उपगत भेल।

---

१. 'विदेश। २. वल्लभ, (न० गु० वसुमती सं० पद सं० २) 'वालभु' (मित्र-मजु० पद सं० ६०४)। ३. 'न अन्त'। ४. एहि सँ आगू 'सजनिया' शब्द (न० गु०)। ५. 'सबुन्द' (न० गु०)। ६. 'विसम' (मजु०)। ७. 'धैरज' (मजु०)। ८. मिलु (रा० पु० द० ले०)। ९. कतए सुवाणि (मजु०) कतसुवानि (न० गु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वधिक वालभु अवधि विसरल,
अजहु मिलि नहि गेल। (ध्रु०) सजनिआ॥

तिमिरतति विकरार जामिनि,
निअर कामिनि कन्त।
नाह निरदए विसरि बैसल,
[1]मोहि भेल जीवन अन्त॥

मधुर दूर मयूर कूजित,
समद दादुर नाद।
समन सन घन दहन बरिसए,
[2]कुलिस सरि विसमाद॥ १

नीर निधि-सुत-सुमुखि थिर कर,
न कर मानस खीन।
अचिरें चिर परवास परिहरि,
हरि बहुराओव दीन॥

सुमति 'लोचन' भन सुधीजन,
विषम विरह कलेश।

---

१. 'मोहि' शब्द एतए अधिक बुझाइ'छ। ओ नहिओ रहने हानि नहि। २. एहि ठाम किछु लेखकक प्रमाद बुझना जाइ'छ। 'कुलिस सरि विसमाद'क स्थानमे 'कुलिस सरिस विसाद' पाठक अनुमान होइ'छ। 'रि' क आगू 'स', 'वि' क आगू लिखा गेल, तथा 'वि'क आगूक 'सा', 'मा' पढा गेल जे मिथिलाक्षरमे संभव छैक। अतः ई विचारणीय थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानकी जनि भूमिभूपन,
बूझ महिनाथ नरेश ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालचतुष्टयम् ॥

अथ अहिरानी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

षड्विंशतिं समारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्धकलिकाः किंच ध्रुवाद्यर्द्धे त्रयोदश ।
सा तु भीमपलासी स्यादहिरानिरिति श्रुता ॥

उदाहरणम् :—

सुरत समापि सुतल वर नागर,
[1]पानि पयोधर आपी ।
कनक शम्भु जनि पूजि [2]पुजारें,
[3]धएल सरोरुहें झापी ॥

(ध्रु०) सखि हे मालति[4] केलिविलासे ।

मालति रमि अति [5]तालि अगोरलि,
पुनु रतिरङ्गक आसे ॥

---

१. 'पाणि' (ग्रियर्सन) 'पानि रहल कुच आपी' (पदकल्प तरु १५२५)। २. 'पुजावे' (ग्रियर्सन)। ३. 'धाएल नील-सरोरुहे झाँपी' (पदकल्पतरु)। ४. 'केशव' (प० द० त०) 'माधव' (ग्रियर्सन)। ५. 'अलि अगोरल' (प० क० त०) 'अलि नाइ अगोरसि' (न० गु०) अलि नाँन अगोरलि (रा० पु० द० ले०) 'नाइ अगोरथि' ग्रियर्सन)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]वदन मेराए धएलन्हि मुखमण्डल,
[2]कमले मिलल जनि चन्दा ।
भमर चकोर दुअओ अलसाएल,
पीवि अमिअ मकरन्दा ॥
[3]भनइ अमिअकर सुनु मधुरापति,
राधाचरित अपारे ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन,
लखिमा देइ कण्ठहारे ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालस्य जायते ।
यदि चास्य तदा सोऽयं रागः सम्यक् प्रजायते ॥

---

१. एतएसों चारि पद पदकल्प तरुमें एहि रूपे अछि : —

वदन मिलाइ रहल मुखमण्डल, कमले मिलए जइले ।
भमर चकोर दुहु रभसे मिलायइ, पिअइ अमिया ।
निसि अवशेषे जागि सब सखि गण, विच्छेदभये करु खेदे ।
भणये 'विद्यापति' इह रस आरति, दारुण विहि कएल भेदे ।

२. 'कमल विमल०' (ग्रियर्सन) 'कमल मिलल०' (रा० पु० द० ले०) । ३. 'सुकवि भनथि कण्ठहारः (मित्र-मजु०),

भनइ विद्यापति सुनह मधुरपति, राधा चरित अपारे ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन, प्राणवती कण्ठहारे ॥ (ग्रियर्सन)

विशेष—एहि रूपे एहि गीतक कविक विषयमें पूर्ण सन्देह उपस्थित अछि, किन्तु हम सब पूर्वोक्त कारणवश रागतरङ्गिणीक पाठहिक प्रामाण्य बुझैत छी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ रम्याभीमपलासी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् ।

कलिकाषोडशोपेत–ध्रुवकाद्यर्धभूषिता ।
पूर्वतुल्यपदा सापि रम्या भीमपलासिका ॥

उदाहरणम् :—

सुरुज सिन्दुर विन्दु चान्दने लिहए इन्दु,
तिथि कहि गेलि तिलके ।
विपरित अभिसार वरिस [1]अमिञ धार,
अङ्कुश [2]कए अलके ॥

(ध्रु०) हे माधव भेटलि [3]पसाहनि वेरी ।

आदर हरलक पुछिओ न पुछलक,
चतुर सखीजन हेरी ॥

केतकि दल लए चम्पक[4]फुल दए,
कवरी [5]थोएलक आनी ।
[6]मृगमद कुङ्कुमें अगरुचि तल(न?)ओलक,
समए निवेद सयाँनी ॥

---

१. 'अमिञ गलए धार'। २. कएलतिके (मु० पु०)। ३. 'पसाहन'। ४. 'दल दए'। ५. 'कोएलक' (मु० पु०)। ६. 'चन्दने कुङ्कुमे अंगरुचि कएलक, समय निवेद सयानी'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भनइ विद्यापति सुनु वरजौवति,
कुहू [१]निकट परमाने।
राजा शिवसिंह रूपनरातन,
लखिमा देवि रमाने॥

(अथ धन्या भीमपलासो)

(एतच्छन्दोलक्षणम् :—)

चतुष्कलत्रिकोपेत—ध्रुवकाद्यर्धभूषिता।
पूर्वतुल्यपदा सात्र धन्या भीमपलासिका॥

उदाहरणम् :—

(ध्रु०) [२]नवयौवन अभिरामा।
[३]जेत देखल तेत [४]कहए न [५]पारिआ,
[६]छओ अनुपम एक [७]ठामा॥

---

१. 'नीकट' (नेपाल तालपत्र)।

मित्र—मजु० पाठ भेद

'लिखए' 'हेरलक' 'कएलक' 'अभयमति' क्रमशः 'लिहए' 'हरलक' 'तलओलक' 'वरजौवति'क स्थानमे।

२. कि आरे नवयौवन अभिरामा (न० गु० वसुमती सं० पद सं० १४)। ३. जत (न० गु०, रा० पु० द० ले०, डा० सु० झा)। ४. 'कहहि'। ५. 'पारिअ' (रा० पु० द० ले०)। ६. छाओ (मु० पु०)। ७. 'वामा' (मु० पु०, डा० सु० झा, न० गु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिन, इन्दु, वरबिन्द, करिनि, हेम,
पिक, बूझल अनुमानी।
नयन, [1]वदन, परिमल, [2]गति, तनुरुचि,
अओो अति सुललित बानी॥

कुचयुग उपर चिकुर फुजि पसरल,
ता अरुझाएल हारा।
जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल,
चाँदे विहुनि सबे तारा॥

[3]भनइ 'विद्यापति' सुनु वरजौवति,
आन न पाअए कोइ।
कंसदलन नाराएन सुन्दर,
तासु रमनि पए होइ॥

सत्वरत्रिकमादाय गतिं तालस्य चात्र तु।

---

१. 'नयन' (रा० पु० द० ले०, न० गु०)। २. छवि (मुद्रित पुस्तक)। ३. एहिसँ पूर्व न० गु० मे दुइ चरण आओर उपलब्ध होइछ :—

"लोल कपोल ललित माल कुण्डल, अधर बिम्ब अधजाई।
भौंह भ्रमर नासापुट सुन्दर, से देखि कीर लजाई॥"

विशेषः— ३२१ ल० स० (१४४०-४१ ई०)मे लिखित 'सेतुदर्पणी'मे धीरसिंहकेँ 'रिपुराजकंसनारायण' कहल गेल अछि। विद्यापति स्वयं धीरसिंहकेँ 'दुर्गाभक्तितरङ्गिणी' उत्सर्ग कएने छथि। ओहि ग्रन्थक छठम श्लोकमे 'कंसदलन प्रत्यक्षनारायण' कहल गेलैन्ह अछि, तेँ एतए कंसदलन-नारायणसँ धीरसिंहे हुनक अभिलषित छथि ई बुझना जाइछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अथ वितता भीमपलासी)

(एतच्छन्दो लक्षणम् :—)

अष्टाविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे चोनत्रिंशतिसंख्यकाः ।
सापि भीमपलास्येव वितता गीतिसम्मता ॥

उदाहरणम् :—

[1]उपरे पयोधर नखरेख सुन्दर,
मृगमदपङ्के लेपला ।
जनि सुमेरु ससिखण्ड उदित भेल,
जलधर जालें [2]झँपला ॥

(ध्रु०) [3]अभिरानि हे कपट करह काँ लागी ।

कोन पुरुष–गुने लुबुध तोहर मन,
रयनि गमग्रोलह जागी ॥

कारने कग्रोने अधर भेल धूसर,
पुनु कोने आरत देला ।
दूधक परसें पवार धवल भेल,
अरुन मजिठ भए गेला ॥

---

१. 'गोर' (रा० पु० द० ले०) । २. 'झाँपला' (मु० पु०) । ३. 'अभिसारिनि हे' (रा० पु० द० ले०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवि पनारि गजें गंजि नडाउलि,
परसलि सूर किरने ।
ऐसन देखिय, कपट करह जनु,
बेकत नुकाओब कओने ॥

'दस-अवधान' भन पुरुवपेम गुनि,
प्रथम समागम मेला ।
आलमसाह प्रभु भामिनि भजि रहु,
कमलिनि भमर भुलेला ॥

अथ गोपीवल्लभः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

पञ्चविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
पदार्धे यद्ध्रुवान्तार्धे दशपञ्चात्मिकाः कलाः ॥

वहुधात्वध्रुवो यस्तु, गीतिभिर्गीयते सदा ।
मिथिलादेशविख्यातो गोपिकावल्लभः स तु ॥

उदाहरणम् :-

गमने गमाउलि गरिमा,
अगमने जिवन सन्देह ।
दिनें दिनें तनु अवसन भेल,
हिमकमलिनि - सन नेह ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अबहु न सुमरह मनुरिपु,
कि करति सुन्दरि नाम।
[1]विनुदोषेँ मोहि विसरलह,
कहिनि रहु ठाम ॥

एक दिस कान्ह [2]अओकाँ दिसँ,
सुवितत वंश विशाला ।
दुइ पथ चढ़लि नितम्बिनि,
संसञे पड़ु कुलबाला ॥

पाँचवान [3]अति आतए,
धैरजें [4]कर पगु थीरे ।
आँचर मुँह दए [5]काँदए,
झाँपए नयन वह नीरे ॥

इति विद्यापतेः।

परञ्च,

नयन निमेष जनि देखइतें,
चौजुग भौ मोहि भान ।

---

१. 'विनुदोषें' (मु० पु० मे नहि अछि) 'विनु दोष मोहि विसरलहुँ कहिनी रहति बहु ठामे' (न० गु० ३०४)। २. 'अओका दिस' (मित्र-मजु० पद सं० ४४८)। ३. 'अलि' (डा० सु० झा)। ४. 'करु मन पगु', (रा० पु० द० ले०)। ५. 'कोन पए' (रा० पु० द० ले०)।

विशेष '—चतुर्थ पंक्तिमे 'कहिनि रहति बहु ठाम' ई पाठ उचित प्रतीत होई'छ, जाहिसँ अन्य पंक्तिक अनुसार मात्राक पूर्ति सेहो होएत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पतिसङ्गे रतिरङ्गे गुनितहु,
कलप अलप परिमान ॥

[1]हरि हरि [1]से पिआ रसमय,
असमय परिहरि गेल।
ताओं हिआ कओन पराभव,
जओ दुइ आध न मेल ॥

नाह निकारन कि कहब,
दारुन पिक रव स्रनी।
कोने परि जीवन राखब,
कत झाँपब सिर धूनी ॥

गरल मृणालवलय बस,
मलयज [2]हम न सोहाब।
दिवस दोसें हिमधामा,
महिमा विसरि सँताब ॥

रसमय कवि 'जयकृष्णन' भन,
धैरज धर वरनारि।
अचिरहि मिलत मधुरपति,
गुन गौरव अवधारि ॥

यद्यप्येतद्वृत्तघटितलक्षणं करुणामालवेऽतिव्याप्तमति–
व्याप्तं च तल्लक्षणमेतस्मिन्निति, तथाप्युभयभेदयोरुभयत्र

१. 'साप आ' (मु० पु०)। २. 'हमें' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घटकत्वान्नातिव्याप्तिः । किञ्चैतयोः स्वरवैलक्षण्यस्यापि प्रकटत्वात्तदेव लक्षणमिति नातिव्याप्तिशङ्कापीति मन्तव्यम् । अनयैव दिशाऽन्यत्रापि–एतद्दूषणं निरसनीयमिति दिक् ।

अथ सारङ्गी ।

भठिआलरागसङ्कीर्णा ललिता यदि जायते ।
सारङ्गीति समाख्यातस्तदा रागो भवेदिह ॥

अस्यास्तु शुद्धा–देशी अभिरामा–शोभना–
अनूपा इति [1]पञ्च भेदाः ॥

तत्र शुद्धा सारङ्गी यथा ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :–

सप्तचत्वारिंशदादि सैकपञ्चाशदन्तिकाः ।
यत्पदार्धकलाः सा तु सारङ्गी शुद्धसंज्ञका ॥

उदाहरणम् :–

कमल आनन गण्डमण्डल,
[2]चन्द दिनकर स्रवन कुण्डल,
हृदय शोभित तारगन जटहार विमलवरे ।

---

१. 'चत्वारो' (मु० पु०) । २. 'चन्द्र' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दहिन वाम [1]पहन्ति कर [2]कसि,
चक्र फनि तिस्सूल [3]कुलससि,
चम्म धनुष परेत सारथि महिष चिकुरवरे ॥

चण्ड – मधुकैटभविनासिनि,
मुण्ड – महिषासुर गरासिनि,
धूम्रलोचन खण्डि रन भर मण्डि मुण्डवरा ।

विकट कट कट दसन भीषन,
रक्तबीज भयङ्करी रन,
निभरि खप्पर सघट घट घट रुधिरपानकरा ॥

परम तहु पर जोगजोगिनि,
सकल रस सम्भोग भोगिनि,
चण्डिपदराजीवकेसर प्रणवि विनय भनम् ॥

लखनचन्द नरेन्द्रके असि,
देह भगवति अभयवर हसि,
सकल वैरि दलम् ॥

(दोहा)

एहि चलन दुइ तोरित अरु, थोर सत्वर एक ।
तिनुहुँ तालतें होत हए, पुनि राग अम्मृतसेक ॥

---

१. 'गहन्ति' (रा० पु० द० ले०) । २. 'फसि' तथा । ३. 'कुलिसासि' एहि तरहें पाठ रहैत तँ नीक छल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ देशी ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
यत्पदार्धे तथैवादिपदार्द्धार्धात्मको ध्रुवः ॥

यत्र चादित्यसंख्यातकलिकः किल जायते ।
देशपूर्वां तु तामाहुः सारङ्गीं गीतिसत्तमाः ॥

उदाहरणम् :—

विदिता देवी विदिता हो,
अविरल केस सोहन्ती ।
एका एकसहसको धारिनि,
जनि [1]रंगा पुर नटी ॥

कज्जल रूप तुअ काली [2]कहिअ,
उज्जल रूप तुअ वानी ।
रविमण्डल परचण्डा कहिअए,
गङ्गा कहिए पानी ॥

ब्रह्माघर ब्रह्माणी कहिए,
हर घर कहिअए [3]गोरी ।
नारायण घर कमला कहिए,
के जान उत्पति तोरी ॥

१. 'रंका' (रा० पु० द० ले०) । २. 'कहिअए' (डा० सु० झा) । ३. 'गौरी' (न० गु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'विद्यापति' [1]कविवरें एहो गाम्रोल,
जाचकजनके गती ।
हाँसिनि देइपति गरुडनरायण,
देवसिंह नरपती ॥

(दोहा)

सत्वर मध्यम चारि एहि, रागिनि ताल [2]विवेक ।

अथाभिरामा ।

[3]एतद्वृत्तलक्षणम् :—

चतुष्कलचतुष्कं तु सैकमारभ्य यद्गताः ।
कलिकाः स चतुर्मात्र षट्कलत्रितयावधि ॥
तादृशार्धपदोपेता विरामचरणा तु या ।
अभिरामां तु तामाहुः सारङ्गीं गीतिसत्तमाः ॥

उदाहरणम् :—

नमित अलकें बेढला, मुखकमल सोभे;
राहुक बाहु पसरला, शशिमण्डललोभे ।
मदनसरें मुरुछली, चिरचेत न बाला;
देखलि से धनि हे, वासि मालतिमाला ॥

---

१. 'कविवर' (रा० पु० द० ले०) । २. 'निवेक' (मु० पु०) । ३. 'वृत्तलक्षणमस्याः (मु० पु०) । ४. 'षट्कलस्तृतयावधि' (मु० पु०) । नेपाल तालपत्रक पाठान्तर [फोलिओ ७९ (अ)] । —

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलसकुच लोटाइलि, घन सामरि वेनी;
कनय पवय सूतली, जनि कारि नागिनी ।
भने 'विद्यापति' भाविनी थिर थाक न मने;
राजाहुँ शिवसिंह रूपनराएन, लखिमा देइ रमने ॥

अथ शोभना ।

कलाभिः कलिकाभ्यां वा यत्राधिकगणाद्विकात् ।
षट्कलात्पदमधं स्यादुत्सर्गात्सा तु शोभना ॥

उदाहरणम् :—

पुरह पुरादित अभिमत पुरु,
दारिददुख दूरें परिहरु ।
तोहरा चरन शरन जे आव,
धन वित पूत परमपद पाव ॥

(इत्यादि)

कुचकलश लोटाइलि घनसामरि वेणी ॥१॥
कनय (शम्भु) पर सुतलि जनि कारि सापिनी ॥२॥
मदनसरे मुरुछलि चिरे चेतहि (न) बाला ॥३॥
लम्बित अलकें बेढला मुखकमल सोभे ॥४॥
राहु कि बाहु पसारला शशिमण्डललोभे ॥५॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथानूपावृत्तम् ।

अस्यास्तु लक्षणम् :–

आदावर्द्धद्वयोपेतं पदमस्मात्त्रिभिर्दलैः ।
ततोऽप्येवं क्रमेणैव बहुधा पदनिर्मितिः ।।

त्रयोदशकलान्ताः स्युर्यत्राङ्कावधयः कलाः ।
नियमेनोज्झिता ह्रस्वपदार्धे तु व्यवस्थिताः ।।

षट्कलाभ्यां सैकताभ्यामथवा सकलान्तरम् ।
अनूपामिति तामाहुः सारङ्गीं गीतिसत्तमाः ।।

उदाहरणम् :–

[1]तोरए मोञ [2]गेलिहुँ फूल,
मोती मानिके तूल ।।

साजनि [3]साजी अछोरसि मोरि,
गरुवि गरुवि आरति तोरि ।
डिठि देखइतें दिवस चोरि ।।

एत कन्हाइ परधनलोभ,
जे नहि लुबुध सेहे पए सोभ ।
निकुञ्जके समाज, इथि [4]नही मुखलाज ।।

---

१. 'तोड़ए' (न० गु० १२२) । २. 'गेलहुँ' (न० गु०, मजु० ४८) । ३. 'साजि' (न० गु०, मजु०) । ४. 'नहि' (न० गु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ढाँकिओ रे न अपजसरासि,
से करे कान्ह जे न लजासि।
जखने नागर नगर जासि ॥

पीन पयोधर भार, मदनराए भण्डार ॥

रतने जड़ि[1] लोता हरि [2]माथ,
मलिन होएत न देहे हाथ।
[3]बड़ से कठिन हमर नाथ ॥

कवि भन कण्ठहार, [4]रस एतए के पार ॥

सिरि शिवसिंह जानए तन्त,
रतन-सन लखिमाकन्त।
सबकलारसँ जे गुनमन्त ॥

इति सारङ्गीभेदाः कथिताः ॥

एतस्यास्तु पाश्चात्य–सूहोसमाख्यातरागमिलनेन 'सूहओ' (व) इत्यपि नाम। अतः परमेतद्भेदा उच्यन्ते[5]।

तत्र सूहवः। एतच्छन्दोलक्षणम् :—

सप्तविंशतिपर्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे दशपञ्चात्मिकाः पुनः।
मिथिलायामयं तावत्सूहवः समुदाहृतः ॥

---

१. जडिलो ता (मित्र तथा मजु० ४८)। २. 'नाथ' (रा० पु० द० ले०)। ३. 'बड़……नाथ' नहि अछि (मि० तथा मजु०)। ४. 'वस' (मि० तथा मजु०)। ५. अयं शुद्ध-देशाख्य-काम-करुणा-सुन्दर-विततेति पूर्वप्रतीकमादाय षड्भेदवान् इत्यग्रे वक्ष्यते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

पिआ परवास आस तुअ पासहिं,
ते कि बोलह [1]जदि आन।
जे पति पालक से भेल पावक,
[2]इथीं कि बोलत आन॥

(ध्रु०) साजनि अघट न घटावह मोहि।

पहिलहिं आनि पानि पिअतमे गहि,
करें धरि सोपलहुँ तोहि॥

कुलटा भए यदि पेम बढाइअ,
तें जीवने की काज।
तिला एक रंगरभस सुख पाओब,
रहत जनम भरि लाज॥

कुल कामिनि भए निजपति [3]विलसए,
अपथें कतहु नहि जाइ।
की मालति मधुकर उपभोगए,
किं वा लताँहि सुखाइ॥

'विद्यापति' कह कुल [4]रखलें रह,
दूति वचने नहि काज।

---

१. 'सखि' (न० गु० वंगीय सा० प० सं० २१५)। २. 'ई थिक' (रा० पु० द० ले०)। ३. 'विसरय' (रा० पु० द० ले०) 'विलसे' (न० गु०)। ४. 'रखने' (रा० पु० द० ले०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा शिवसिंह रूपनराएन,
लखिमादेवि - समाज ॥

मध्यमत्रिकमादाय तालस्य गतिरत्र तु ॥

अयं तु देशाख्यः ।

अथ शुद्धः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

सप्तविंशतिमात्राभिर्यत्पदार्धद्वयं समम् ।
ऊनविंशतिमात्राभिर्ध्रुवकाद्यर्धमुत्तरम् ।
षोडशात्मकमात्राभिर्यत्र शुद्धः स सूहवः ॥

उदाहरणम् :—

सरदक ससधर सम मुखमण्डल,
[1]काजे झँपावह वासे ।
अलपओ हास सुधारस वरिसओ,
छाड़ओ [2]अमिअ पिआसे ॥
(ध्रु०) कि आरे मानिनि अपनहुँ मने अनुमान ।
रूसै तें जानहुँ [3]बोलब अगेआन ॥

---

१. 'कांइ झपावसि' (मित्र-मजु० पद सं० १३२) । २. 'नयन' (मित्र-मजु०) ।
३. 'बोल' (मजु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाटक घटन-सिरीफल-सुन्दर-
[1]कुचयुग कोटि-करु-आधे ।
पानि परस रस अनुभव सुन्दरि,
न [2]कर मनोरथ बाधे ॥

[3]नागरि अङ्ग-विभङ्गक आगरि,
'विद्यापति' कवि भाने ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन,
लखिमा देवि रमाने ॥

अथ कामसूहवः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
पदार्धे यद्ध्रुवाद्यर्धश्चतुष्कलचतुष्ककः ।
मिथिलायामयं तावद्विख्यातः कामसूहवः ॥

उदाहरणम् :--

वदन चाँद तोर नयन चकोर मोर,
रूप अमिअरस [4]पीबे ।
अधर मधुरिफुल[5] पिअ मधुकर तुल,
मधु बिनु कतिखन जीवे ॥

१. 'कुचयुग कटि', (मजु०) 'कुचयुग कोटिक आधे' (रा० पु० द० ले०)। २. 'करु' (मित्र० मजु०)। ३. 'भनहि विद्यापति' सुनवरजौवति, विभव दया थिक सारा। माह छाह ककरो नहि भावए, ग्रीष्मम प्रान पियारा ॥ (मित्र-मजु०) 'नागरअङ्ग' (डा० सु० झा)। ४, 'पावे' (मु० पु०)। ५. 'पिअए', 'पिबए'।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ध्रु०) हे मानिनि मन तोर गढ़ल पसाने ।

[1]अपने रभसें हसि किछुओ उतर देसि,
सुखे जाओ निसि अवसाने ॥

निअमनें न गुनसि, परबोल न सुनसि,
न (बुझसि)[2]छैलरि वानी ।
अपन अपन कजा कहेतें परमलजा,
अरथित आदर हानी ॥

भनइ 'विद्यापति' सुनु वरजौवति,
सबे खन न करिअ माने ।
राजा शिवसिंह रूपनराएन,
लखिमा देवि रमाने ॥

अथ करुणासूहवः ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :---

१. 'काहे न रभसे०' (न० गु० वंगीय सा० प० सं० ३५५) ।
'कके न रभसे हसि किछु न उत्तर देसि, सुखे जाओ निसि अवसाने ।
परमुखे न सुनसि निअमने न गुनसि, न बुझसि लइलरी बानी ।
अपन अपन काज कहइत अधिक लाज, अरथित आदर हानी ॥
कवि भन विद्यापति अरे रे सुनु जुबति, नेह नूतन भेल माने ।
लखिमा देइपति शिवसिंह नरपति, रूपनराएन जाने ॥ (मित्र-मजु०)

२. एहि सँ पूर्व 'बुझसि' शब्द मुद्रित पुस्तकमे नहि अछि । तथा 'छैलविरानी' ई पाठ अछि । एहिमे 'र'-'व' मे व्यत्यय भए गेल अछि लेखकक प्रमादें, ई बूझि 'छैलरि वानी' ई पाठ बनाओल । 'छैल कि वानी' (डा० सु० झा) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कलया कलिकाभ्यां वा हीनैर्यत्र चतुष्कलैः ।
चतुर्भिः पदमद्धं तत्करुणासूहवाभिधम् ॥

उदाहरणम् :—

[1]कुल गुन गौरव शील सोभाश्रो,
[2]सबे लए चढ़लिहु तोहरहिं नाश्रो ।
हमे श्रवला कत कहब अनेक,
श्राइति पड़लाँ बुझिश्र विवेक ॥

[3]हठ तेज माधव कर मोहि पार,
सबतहँ बड़ थिक पर-उपकार ।
हमरा भेलि [4]श्राबे तोहर श्रास,
[5]से न करिश्र जे हो उपहास ॥

तोहें पर-[6]पुरुष [7]हमहु परनारि,
[8]हृदय काँप तुश्र रीति विचारि ।
भल मन्द जानि करिश्र [9]परिनाम,
जस श्रपयस [10]पए रह गए ठाम ॥
[11]भनहि 'विद्यापति' तोहें गुनमान,
हाथि महतें [12]नव के नहि जान ॥

---

१. 'तुश्र' । २. 'सेहे लए' । ३. 'हठ न करिश्र कान्हु कए मोहि पार' । ४. 'कान्हु तोहरे श्रास' । ५. 'जे श्रंगिरिश्र तो न होइश्र उदास' । ६. 'नागर' । ७. 'हमें' । ८. 'काँप हृदय तुश्र प्रकृति विचारि' । ९. 'परिणाम' । १०. 'दुइ' । ११. 'भनहि विद्यापति गाबे, राजा शिवसिंह रूपनरायन इ रस सकल से पाबे' (न० गु०, १२५, मित्र-मजु० ४९) । १२. 'नर' (मु० पु०) ।

विशेष—न० गुप्त स्वीकार कएने छथि जे ई गीत श्रो तालपत्र तथा रागतरङ्गिणी सँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्वरो मध्यमश्चैव तालद्वितयमत्र तु ।

अथ सुन्दरसूहवः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

त्रिदलं पदमत्रापि तृतीयं पञ्चषट्कलम् ।
द्वित्रियुग्भ्यां चतुर्मात्रगणाभ्यामथवा त्रिभिः ॥

चतुर्मात्रगणैरेव द्वितीयं द्विकलाधिकात् ।
षट्कलात्मैकतद्द्वन्द्वावधिभूतकलं दलम् ।
आदिभूतं तु यत्र स्यात् स तु सुन्दरसूहवः ॥

उदाहरणम् :—

नाव डोलाव अहीरे, जिवइतें न
पाओब तीरे; खरनीरे लो ।

खेव न लेअए मोले, हँसि हँसि
कीदहु बोले; जीव डोले लो ।

किए विके ऐलिहु आपे, बेढलिहु
मोहि बड़े सापे; मोरे पापे लो ।

लेलैन्हि अछि । परन्तु पाठमे एतेक भेद कोन कारणे से नहि जानि । रा० त० पाठ नीक प्रतीत होइछ । मजुमदार महोदय तँ न० गु० हिक पाठके मान्यता देने छथि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करितहुँ पर-उपहासे, परिलहु तन्हि
विधि फासे; नहि आसे लो ।
न बुझसि अबुझ गोआरी, भजि रहु
देव मुरारि; नहि गारी लो ।
[1]भवानीनाथ हेन माने; नृपदेव
जत रस जाने, नव कान्हे लो ॥

[2]अथ विततारव्यः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

सप्तविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः ।
यदीये तु पदार्धे स्युर्विततारव्यः स सूहवः ॥

उदाहरणम् :-

साए साए काँ लागि [3]कौतुकेँ,
देखल निमिष लोचन आधे ।
मोर मनमृग मरम वेधल,
विषमबान वेआधे ॥
गोरस विरस वासि विसेषल,
छिकेहुँ छाड़ल गेहा ।

---

१. रामवृक्ष वेनीपुरी एहि गीतकेँ विद्यापतिक भनितामे देने छथि, कारण स्पष्ट नहि कएने छथि। २. मुद्रित पुस्तकमे ई कोडारक भेद सभक अन्तमे देल अछि। सूहवक भेदकेँ ओकरे सङ्ग राखब उचित बूझि पड़ल। ३. 'कौतुक' (न० गु० १०-११)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुरलि धुनि सुनि मन मोहल,
विकेहुँ मेल सन्देहा ॥

तीर तरङ्गिनि कदँबकानन–
निकट जमुनाघाटे ।
उलटि हेरैतेँ उवटि परल,
चरन चीरल काँटे ॥

सुकृतसुफल सुनह सुन्दरि,
'गोविन्द' वचन सारे ।
सोरमरमन कंसनराएन,
मिलत नन्द कुमारे ॥

[1]अथ स्मरसन्दीपनकोडारः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

सप्तविंशतिपर्यन्तं यत्र विंशतितः कलाः ।
पदार्धे यद्ध्रुवाद्यर्धे षट्कलद्विकसंख्यकाः ।
स्मरसन्दीपनः सोऽयं कोडारः समुदाहृतः ॥

उदाहरणम् :—

(ध्रु०) सखि हे आज जायब मोहीं ।

---

१. "अथ कोडारः। स च स्मरसन्दीपन-वियोगि-मोरङ्गी-दण्डक-शुद्ध-भेदात पञ्चविधः" एतेक एहिठाम पूर्वमे लिखब उचित छल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घर गुरुजन डर न मानब,
वचन [1]चूकब नहीं ॥

[2]चाँदन आनि आनि अङ्ग लेपब,
भूषन कए गजमोती ।
अञ्जन विहुन लोचन युगल
धरत धवल जोती ॥

धवल वसने तनु झँपाओब,
गमन करब मन्दा ।
जैओओ सगर गगने उगत,
सहसें सहसें चन्दा ॥

न [3]हमें [4]काहुँक [5]डीठि निवारवि,
न हम करब ओते ।
अधिक चोरि परसओ करिअ,
इहे सिनेहक [6]लोते ॥

भने 'विद्यापति' सुनह जुवति,
साहसें सकल काजे ।
बुझ शिवसिंह रस रसमय,
सोरमदेवि - समाजे ॥

---

१. 'चुकब' (मित्र-मजु० पद सं० ६५)। २. 'चन्दन'। ३. 'हम' (मजु०)। ४. 'काहुक' (डा० सु० झा)। ५. 'दिठि' (डा० सु० झा)। ६. 'लोते'क स्थानमे 'नोते' पाठ संभावित अछि; ओहिसँ अर्थो किछु सुगम होइत। प्रकृत पाठमे 'लोत' शब्द सार अर्थ में बुझबाक थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ वियोगिकोडारः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

पञ्चविंशतिमारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्धे कलिकाः किञ्च ध्रुवाद्यर्धे तु ताः पुनः ॥

यत्राष्टादशपर्यन्ता वियोगिपदपूर्वकः ।
कोडारः स तु विख्यातो मिथिलाजनसंसदि ॥

उदाहरणम् :—

(ध्रु०) साए साए पिआ केँ कह विनती ।
[1]इहओ वसन्त रितु ओतहि गमावथु,
एत एक भलि नहि रीती ॥

घनमलयजरस-परसें लाग विस,
दुसह सुनिअ पिक नादे ।
अनल वरिस ससि निन्दओ न होए निसि,
एतए अओर परमादे ॥

जे सबे विपरित से सबे कहब कत,
के पतिआएत आने ।

---

१. एहि गीतमे कवि निम्नलिखित पद्यक छायाक आश्रयण कएने छथि । किन्तु अपन नवीन कल्पना बढाए नवीनता लएबामें सफल भेल छथि ।

"विज्ञापनीयं सखि जीवितेशे, तत्रैव नेया दिवसाः कियन्तः ।
सम्प्रत्ययोग्यस्थितिरेष देशः, करा हिमांशोरपि तापयन्ति ॥"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जखने आओब हरि हमहिं निवेदब,
जओं राखत पँचवाने ॥
सुमुखि समाद समादरें समदल,
नसिरासाह सुरताने ।
नसिरा भूपति सोरम देइ पति,
कंसनराएन भाने ॥

अपि च,

सिरिहिं मिलल देहा, न कुच चाँद रेहा,
घामे न पिउल सुगन्धा ।
अधर मधुरि-फुल देखिअ ताहेरितुल,
धएलहि अछ मकरन्दा ॥

(ध्रु०) रामा अइलि हे पिआ विसराइ !

पुरुष केसरि जनि, दमनलता धनि,
[1]छुअइते जा असिलाइ ॥
गेलहि कएल मान, की अवसर जान,
कि सिसु वालँभ तोरा ।
मुसए गेलि हे धन, जागल परिजन,
लगहि कलाओक चोरा ॥
भनइ 'विद्यापति' सुनु वरजौवति,
ई रस केओ केओ जाने ।

---

१. 'चुअइते' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा शिवसिंह रूपनराएन,
लखिमा देवि रमाने ॥

अथ दण्डककोडारः ।

दण्डकासावरीवृत्ते दण्डकासावरो यथा ।
तथा दण्डककोडारे स रागः किल जायते ॥

उदाहरणम् :-

श्रीमुरारिपदारविन्दसमुल्लसन्मकरन्दतुन्दिल-
पूरसुन्दर-लहरि-पूरित-सकलगगनतले ।
वज्रलेपसरूपपापपरम्पराविपिनावली-
फलमूलपल्लवदाहदर्शित-दाव-नीलजले ॥

(ध्रु०) जय देवि गङ्गे दुरितसंहतिमिन्दुमौलिजटातटाद्दति (हति ?)
भङ्गितुङ्गतरङ्गचङ्गिमतुलितचन्द्रकले ।

(इत्यादि सुप्रसिद्धम्)

किञ्च, जखने मधुरिपु भवन आओव इत्यादि सुप्रसिद्धम् ।
जयदेवि दुर्गे इत्याद्यपीति ।

अथ शुद्धकोडारः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

अष्टाविंशतिपर्यन्तं चतुर्विंशतितः कलाः ।
स्युः पदार्धे यदीये स शुद्धकोडारसंज्ञकः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :–

जय जय जय नत-सततशिवङ्करि,
परिहितनरसिरमाले।
लम्बितरसनि दसन अति भीषन,
वसन मिलल बघछाले॥
चौदिसँ मानुसमाँसुमुदित अति,
फेरु फुकर कतरासे।
मनिमय विविधविभूषने मण्डित–
वेदि विदित तुअ वासे॥
भूत–परेत–पिसाच–निसाचर,
अगनित जोगिनि जाले।
जखने न जगतजननि तुअ संगति,
तेहेन कहिअ कोन काले॥
विमलबालरविमण्डल-सन तुअ,
तीन नयन परगासे।
असुर–रुहिर–मदिरामद मातलि,
वदन अमिअ-समहासे॥
तुअ अनुरूप सरूप बुझिअ नहि,
तैअओ तोहर गुन गाऊ।
जेकेंहि तुअ पद बन्द करिअ देवि,
निअजनें 'लोचन' लाऊ॥
इति मम। अन्यदीयं तु बहुविततमत्र॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कामोदकोडारः)

अथ कामोदकेदारवृत्तेऽपि किल जायते ।
कोड़ाररागस्तद्वृत्तं पुरैव समुदाहृतम् ॥

[1]तदेवं शुद्धकोडार–वितत–दण्डक–मोरंगिश्रा–वियोगीति पूर्वप्रतीकमादाय कोडारस्य पञ्च, शुद्ध-देश-शुद्ध (?) काम-करुणा-सुन्दर-स्मरसंदीपन-इति पूर्वप्रतीकमादाय षट् सूह-वस्य । तस्मादेतयोरेकादश द्वादश वा भेदा भवन्तीति ॥

अथ धनछी ।

धनास्रीराजविजयावहिरानिविराजितौ ।
जायेते चेत्तदातु स्याद्धनछी नाम रागिणी ॥

[2]तत्र तु प्रथमा मङ्गली धन छी ।

एतद्वृत्तलक्षणम् ।

चतुर्विंशतिमारभ्य यत्रोनत्रिंशदन्तिकाः ।
पदार्धकलिकाः सा तु मङ्गली धनछी मता ॥

---

१. पूर्व प्रदर्शित क्रमकेँ देखि ई निगमन अस्तव्यस्त प्रतीत होइछ । उचित ई छल–'तँदेवं देशाख्य-शुद्ध-काम-करुणा-सुन्दर-विततेति-पूर्वप्रतीकमादाय षट्सूहवस्य, स्मर-सन्दीपन-वियोगि-मोरङ्गिश्रा-दण्डक-शुद्ध (-कामोद) इति पूर्वप्रतीकमादाय पञ्च (षड्वा) कोडारस्य । तस्मादेतयोरेकादश द्वादश वा भेदा भवन्तीति ॥'

२. "सा च मङ्गली-पहडिश्रा-पञ्चमस्वरा-श्रीविमिश्रा-योगिश्रा-शाम्भवी-शोभनेति पूर्व-प्रतीकमादाय सप्तभेदवती ।" ई एहिठाम देब आवश्यक छल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

अगर उगारि गारि मृगमद रस,
कए अनुलेपन देह ।
चललि तिमिर मिलि निमिखें अलख भेलि,
काचकसनि मसिरेह ॥

(ध्रु०) हे माधव ।

हेरह हरखि धनि चान उगल जनि,
महितलें मेटि कलङ्क ।
घर गुरुजन हेरि पलटति कतवेरि,
ससिमुखि परम ससङ्क ॥

तुअ गुन गन कहि आनलिअ साहिटारि,
दैए सुमुखि विसवास ।
तें परि पराइअ जें पुनु पाविअ,
पर धन विनु परयास ॥

जपल जनम सत मदन महामत,
विहि सुफलित करु आज ।
'दास गोविन्द' भन कंसनराएन,
सोरमदेवि समाज ॥

सत्वरत्रितयं त्वत्र तालस्य गुणिसम्मतम् ।
हीयते तैर्विना रागोऽतस्तान् सम्यक् प्रयोजयेत् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पहड़िआ ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

चतुर्भिः कलिकाहीनैश्चतुर्मात्रगणैः समम् ।
पदार्धद्वितयं यत्र धनछी सा तु पर्वती ॥

उदाहरणम् :—

की परवचने कन्ते देल कान,
की परकामिनि हरल गेआन ।
की तन्हि विसरल पुरुवक नेह,
की जीवन आवे पड़ल सँदेह ॥

की परिनत भेल पुरुवक पाप,
की अपराधे कएल विहि साप ।
की सखि कओन करब परकार,
की अविनय दहुँ परल हमार ॥

की हमे काम कला एक घाटि,
की दहुँ समयक इहे परिपाटि ।
'मधुसूदन' भन मने अवधारि,
की धैरजें नहि मिलत मुरारि ॥

ताल पूर्वतुल्यः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पञ्चमस्वरा ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

चतुर्मात्रत्रिकं सैकमारभ्यनियमोज्झिताः ।
पदार्धकलिका यत्र षोडशान्तास्तु सा मता ।
मिथिलागोतिगोष्ठीषु धनछी पञ्चसु(म) स्वरा ॥

उदाहरणम् :—

आकुल[1] चिकुरे बेढल मुख शोभ,
राहु कएल ससि मण्डल लोभ ।
उभरल [2]कुसुममाल [3]धर अङ्ग,
जनि जमुना मिलु [4]गङ्ग-तरङ्ग ॥

वदन सोहाओन श्रमजलविन्दु,
मदने मोति[5]लए पूजल इन्दु ।
पिअमुख सुमुखि चुम्ब तेजि ओज,
चाँद अधोमुख पिबए सरोज ॥

कुच विपरीत विलम्बित हार,
कनक कलश [6]वम दूधक धार ।
किंकिनि [7]सबद [8]नितम्बिनि छाज,
[9]मदन विजय रथ बाजन बाज ।

---

१. 'चिकुर' । २. 'चिकुर' । ३. 'कर' । ४. 'गाङ्ग' । ५. 'दए' । ६. 'जनि' । ७. 'रणित' । ८. 'नितम्बहि' । ९. 'मदन महासिधि बाजन बाज' (नेपाल तालपत्र फो० ३५-३६) तथा ओहीठाम 'उभरल.... गङ्गतरङ्ग'क बाद—'वड अपरुव दुहु चेतन मेलि, विपरित रति कामिनि कर केलि' ॥ ई एक चरण अधिक अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भनइ 'विद्यापति' मने अनुमानि,
कामिनि रम पिआ अनुमत जानि ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं चैवात्र जायते ।
तालानां तावता तालाश्चत्वारः परिकीर्तिताः ।

अथ श्रीविमिश्रा ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

गणैस्त्रिभिश्चतुर्भिश्च कलान्यूनैः कचित्तु तैः ।
चतुर्मात्रैः पदानां तु दलयोर्यत्र निर्मितिः ।
क्रमेण श्रीविमिश्रेयं धनछी गीतिसम्मता ॥

उदाहरणम् :—

मलिन कुसुम तनुचारे,
[1]कर पर वदन नयन ढरु नीरे ।
कि कहब माधव ताही,
तुअ [2]गुन लुबुधि मुगुधि भेलि राही ॥

[3]उरँ लुर सामरि वेनी,
कमलकोष जनु कारि नागिनी ।
केअओ सखि ताकए [4]साँसे,
केअओ नलिनीदलें करए बतासे ॥

१. करतल कमल नयन ढर नीरे (मित्र-मजु० पद सं० ५४८)। २. 'गुने'।
३. 'उर पर'। ४. 'निसासे' (मजु०, गुप्त० नेपाल तालपत्र)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कैअओ बोल आएल हरी,
[1]उससि उठलि सुनि नाम तोहरी।
[2]सुकवि 'विद्यापति' गावे,
विरहिनि-वेदन सखि समुझावे॥

(दोहा)

लघु सत्वर तिनि ताल एहि, चलनि होत परगास।
तातें चुकि सुर चलत तब, गुनी होत उपहास॥

अथ योगिआ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :-

पञ्चविंशतिपर्यन्तं द्वाविंशतिकलावधि।
ध्रुवान्तार्धसमा यत्र पदार्धकलिका: किल॥

त्रयोदशकलोपेत - ध्रुवाद्यर्धव्यवस्थितिः।
योगिआ धनछी सा तु मिथिलागीतिसम्मता॥

---

१. "समरि उठलि चिर नाम सुमरी" (मजु० एवं गुप्त)। २. "विद्यापत्ति कवि गावे, विरहवेदन निअ सखि समुझावे" (मजु० एवं न० गु०)।

पदकल्पतरुक पाठान्तर (१६४३)

मलिन चिकुर तनु चीरे, करतल वचन नयन झरु नीरे।
सुन माधव कि बोलय तोए, तुअ गुने लुबुधि मुगुधि भेलि सोय।
उरे दोले सामर वेनी, कमलिनी मोरे जनु काल सापिनी।
कोइ कमलदले करइ वतास, कोइ चतुर धनि हेरइ निसास।
कोइ कहे आएल हरी, सुनिया चेतन भेल नाम तोहारि॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

[1]लाखहुँ लता कोटि तरुअ,
जुवति कत न लेख।
सबहि [2]फूलाँ मधु [3]मधुमय,
[4]मधुहुँ मधु विशेष ॥

(ध्रु०) [5]साजनि [6]हमर वचन [7]सूँन।

सबे परिहरि तोहि इछ हरि,
[8]अओकि सराहसि पून।
[[9]जे मधु भमर निन्दहु सुमर,
वासि विसरए न पार।
एलि मधुकर जाहि उड़ि पल,
सेहे संसारक सार ॥]

[10]तोरिए चिन्ता तोरि वरता,
सेजहु तोरिए ठाम।
[11]सपनहुँ हरि तोहि न विसर,
लए उठ तोरिए नाम ॥

नेपाल तालपत्रक पाठान्तर फोलिओ ६ (अ)

१. लाखे तरुअर कोटीहि लता, जूवति, कतन लेख। २. 'फूला'। ३. 'मधुकर'। ४. 'मधुहु'। ५. 'सुन्दरि'। ६. 'अग्रहु'। ७. 'सून'। ८. 'आपु'। ९. ( ) कोष्ठान्तर्गत पद राग त० मे नहि छल नेपाल तालपत्रसँ उद्धृत भेल अछि। १०. 'तोरि सराहनि तोरिए चिन्ता, सेजहु तोरिए ठाम'। ११. "सपनहुँ नहि हरि तोहि विसरल, लए उठ तोरिए नाम"।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आलिङ्गन[1] वेराँ पाछु निहारए,
[2]तोह विनु सुन कोर ।
[3]हृदयकथा गुपुति व्यथा,
लाजे न छाडए नोर ॥
[4]सरस कवि 'विद्यापति' गाओल,
निज मने अवधारि ।
जकर पेमे पराधिन वालभु,
सेहे कलावति नारि ॥

अथ शाम्भवी ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

षोडशान्ताः कला यत्र चतुर्दशकलावधि ।
पदार्धे वीतनियमा धनछी सातु शाम्भवी ॥

उदाहरणम् :—

जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारि,
जय अधपूरुष जय अध नारि ।

नेपाल तालपत्रक पाठान्तर, फोलिओ ६ (ख)

१. 'दए' २. 'तोहि' ३. "पाछिलि कथा अकथ कथा, लाजे न तेजए नोर" ४. भनइ विद्यापतीत्यादि....।

विशेष—मित्र तथा मजु० क संस्करणहुमे पाठभेद बहुत अछि, सेहो अवलोकनीय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आध धवल तनु आध तनु गोरा,
[1] आध पटोर आध भुज डोरा।

आध जोग आध भोग विलासा,
आध पिनाक आध नगवासा।

[2]आध सिन्दुर विन्दु आध विभूती,
आध हाड़माल आध गजमोती।

[3]भने कवि 'रतन' विधाता जाने,
दुइ कए बाँटल एक पराने।

त्वरितत्रितयं त्वत्र तालस्य परिदृश्यते
तद्‌बहिर्भूतरागस्तु कुरागो गुणिनां मतः ॥

अथ शोभना। एतच्छन्दोलक्षणम् :—

आचतुर्दशकात्सप्तदशपर्यन्तकाः कलाः।
पदार्धे यत्र सा प्रोक्ता, धनछो तु सुशोभना ॥

नेपालतालपत्रक पठान्तर, फोलिओ ४७ (अ)

१. 'आध सहज कुच आध कठोरा'

२. आध चन्दन शोभे आध विभूतो, अध हड़माला आधा मोती।

३. "आधचेतनमति आधा भोरा, आध पटोर आध भुजडोरा। आध चान्द आध सिन्दुर शोभा, आध विरूप आध जगलोभा"। ई दू पद अधिक ओहिमे उपलब्ध अछि। भनिताक पद ओहिमे नहि अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

सपने आएल सखि मझु [1]पिअ पासे,
तखनुक की कहब हृदय [2]हुलासे ।
(ध्रु०) न देखिअ धनुगुन न देखिअ सन्धाने,
चौदिस परए कुसुमसर - वाने ।
वंक विलोचन [3]विगसित थोरा,
चाँद उगलजनि समुद्र हिलोरा ।
उठलि चेहाए आलिङ्गन वेरी,
रहलि लजाए [4]सूनि सेज हेरी ।
भनइ विद्यापति सुनह [5]सपने,
जत देखलह तत [6]पुरतौह मने ॥

तदेवं मङ्गली-पहडिआ-पञ्चमसू (स्त्र) रा-श्रीविमिश्रा-योगिआ-शाम्भवी-शोभना-इति पूर्वप्रतोक्तयोगात्सप्तधा छनछो ।

अथ गौड़मालवः ।

एतस्य तु गौडं मिथिलाञ्चादाय भेदद्वयम् ।

---

१. 'पिआ' २. 'उलासे' (न० गु० वसुमती सं० २१०) ३. 'विकसित' (मजु० पद० ५६४) ४. 'शुन शेष' ५. 'स्वप्ने' (न० गु०) ६. पूरतौह' (मजु, न० गु०) 'पुरतहु' (डा० सु० झा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्र प्रथमो गौडीयः ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

त्रिंशदारभ्य षट्त्रिंशत्पर्यन्ताः कलिकाः किल ।
दशकात्षोडशान्ताश्च, मात्रा यत्र पदार्धयोः ।
क्रमादिह तु स प्रोक्तो गौडीयो गौडमालवः ॥

उदाहरणम् :—

बाँधए विकट जटा, तथिहुँ [1]चाँदन फोटा ।
कत युग सहस वयस[2] वहि गेला, उमत महादेव समत न भेला ।
मौलि मेलए छार, सहज न तेजए पार ।
सुकवि 'विद्यापति' गाऊ, जिवश्रो शिवसिंह राऊ ॥

सत्वरत्रिकमादाय तालस्यात्र गतिर्मता ।

अथ मैथिलः ।

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

सप्तोत्तरदशान्तास्तु द्वादशावधयः कलाः ।
यत्पदार्धे स तु प्रोक्तो मिथिलागौडमालवः ॥

---

१. 'चदिन' (मु० पु०) २. 'वएस' ३. 'विति' (न० गु० (हर) ३५)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

गेलहुँ पुरव पेमे उतरो न देई,
दाहिन वचन वाम कए लेइ।
[1]ए हरि रस दए रूसलि रमनी,
हमतह न आउति कुंजरगमनी।
गैए मनावह रहओ समाजे,
सबतह बड़ थिक आँखिक लाजे।
जे किछु कहलक से अछि लेले,
भल[2] कहि बुझव अपनहि गेले।
भनइ 'विद्यापति' नारि सोभावे,
रूसलि रमनि पुनु पुनमत पावे॥

अथ राजविजयः।

[3]तत्र प्रथमं देवपूर्वः। एतद्वृत्तलक्षणम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तमेकविंशतितः कलाः।
यत्पदार्धे ध्रुवाद्यर्धे यत्रोनत्रिंशदात्मिकाः।
स चोत्सर्गाद्देवराजविजयः परिकीर्त्तितः॥

---

१ 'हे' (डा० सु० झा०) २ 'करि' (न० गु० वसुमती सं १०८)
३ "अयंच देवराज–आलानराज–देशराज–कानरराज–मङ्गलराज–मनमोदराज–भठियालराज–इत्येवं सप्तविधः" ई एहिठाम पूर्व देव उचित छल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

कतहु श्मश्रुधर कतहु पयोधर,
भल वर मिलल सुशोभे ।

अधङ्ग धइलि नारि गुनल निज गारि,
गरुअ - गौरिगुन - लोभे ॥

(ध्रु०) आलो० सिवशम्भू तुमि शिव शम्भू,
तुमी[1]जो [2]वधलो पचवाने ॥

गाँगलागि गिरिजाकँ मनौलि हे,
कके देवि बोलह मन्दा ।

चरन नमित फनिमनिमयभूषन,
घर खिखिआएल चन्दा ॥

भनइ विद्यापति सुनह तिलोचन,
पय पङ्कज मोरि सेवा ।

चन्दलदेइ - पति वैद्यनाथ गति,
नीलकण्ठ हर देवा ॥

सत्वरद्वितयं चैव मध्यमद्वितयं तथा ।
एवं रागानुगास्तालाश्चत्वारो गुणिसम्मता: ॥

१. 'जे' (न० गु० १९) २. 'बधिलो' (मजु० ५९६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथालानविमिश्रः

एतद्वृत्तलक्षणम् :—

[1]यत्राष्टादशपर्यन्तं स्युस्त्रयोदशतः कलाः ।
पदार्धे सो[2]लानराजविजयः परिकीर्तितः ॥

उदाहरणम् :—

जय जय भगवति भीमा [3]भयानी,
चारिवेदे अवतरु ब्रह्मवादिनी ।
हरिहर ब्रह्मा पुछइत [4]भमें,
एकओ न जान तुअ आदि मरमें ।
भनइ 'विद्यापति' राए मुकुटमणि,
जिवओ रूपनरायण नृपति धरणि ॥

(दोहा)

लघु सत्वर अरु मध्य एहि, तीन ताल शुभ होत ।
तीनि लिजे जओ गाइअए, तओ होत रसन के सोत ॥

अथ देशराजविजयः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

द्वादशावधि यत्र स्युः कलिकाश्चाचतुर्दश ।
यत्पदार्धे स विज्ञेयो देशराजस्तु गायकैः ॥

---

१. 'यत्रादश०' (मु०पु०) २. 'सोडानाराज०' (मु०पु०) 'षोडशाना सतुराज०' (रा०पु०-द०ले०) ३. 'भवानी' ४. 'भरमे' (डा० सु० झा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

जाति पदुमिनि सहति कता,
गजें दमसलि दमनलता ।
लोभे अधिक मूल न मार,
जे मूल राखए से वनिजार ।
अछुल जोर सिरीफल भाँति,
कएलह छोलङ्ग नारङ्ग काँति ।
भनइ 'विद्यापति' न[5]कर लाथ,
भूखल न खाह दूहू हाथ ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं तालचतुष्टयम् ।
एतद्विहीनोऽयं रागः कुराग इति निश्चितम् ॥

अथ कानरामिश्रः ।

चतुष्कलचतुष्कात्तु कलान्यूनात्कलाः किल ।
ऊनविंशतिपर्यन्ताः स्युःपदार्धे तु यत्र वै ।
स राग: कानराराजविजयः परिकीर्तितः ॥

उदाहरणम् :–

नमओ नमओ चण्डी चरन युगल तोर,
त्वरित दुरित हर, देहे अभयवर ।

५. 'करह' (न० गु० १८०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कट-कट दसन रसन लह-लह कर,
खड्गे खण्डिए चण्डी रुहिर खपर-भर।

हेर जोह खोह करि धरए तुरए सरि,
मूहमे लए रुहिर घट-घट घोट करि।

'लखनचन्द राए' करए तुअ भगवति (भगति ?)
देहे अभयवर निजपदजुगरति ॥

जायते गुणिभिर्दत्त एक एवात्र मध्यमः।
तालस्तेनामुना हीनो रागोऽयं कुत्सितो मतः ॥

अथ मङ्गलराजविजयः।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

चतुष्कलत्रिकं सैकमारभ्य नियमोज्झिताः।
चतुष्कलचतुष्कान्ता यत्पदार्धकलाः किल।
मङ्गलोत्तरनामायं राजपूर्वो भवेदिह ॥

उदाहरणम् :—

साँझक अतिथि भागें विहि आन।
बिमुखें पाप बड़ अछए गेआन ॥

हमरेओ कन्त वसए परदेश।
अथिक पथिक देखि मोहि कलेस ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पथिक वास भमि अनतए लेह ।
हमरा दोसर तेसर नहि गेह ॥
चतुर चतुर्भुज ई रस जानि ।
कौसलें अभिमत करए सआनि ॥

तालत्रितयमत्रास्ति गुणिनां गणसम्मतम् ।
तावद्भिः कृतसारथ्यो रागोऽयमनुरञ्जकः ॥

अथ मनमोदः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

पञ्चविंशतितो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
पदार्धे मनमोदाख्यः स भवेद्राजपूर्वकः ॥

उदाहरणम् :—

सखि मधुरिपुसन के कतए सोहाओन,
जे दिअ तन्हिक उपाम हे ।
तसु मन नेओछन सरदसुधानिधि,
पङ्कज के लेत नाम हे ॥
(ध्रु०) सखि आज मधुरिपु देखल मोजे हटिआ,
लोचन जुगल जुडएला ॥
अधरवाँहि [1]लोचने [2]जखने निहारलन्हि,
बाँक कइए भोंह भङ्गा ।

१. 'लोचन' २. 'जखन' (म जु० तृ० ५.९०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तखनुक अवसर जागल पञ्चसर,
थाने - थाने गेल अङ्गा ।
दरसन लोभे पसार देल हमें,
सखिमुखें सुनि बड़ रसी ।
तसने उपजु रस भेलिहुँ परवस,
विसरलि दूधहुँ कलसी ॥
दान कलपतरु मेदिनि अवतरु,
नृप हिन्दू सुलताने ।
'६' मेधादेह पति रूपनराएन,
अणवि 'जीवनाथ' माने (हे) ॥

(दोहा)

सत्वर मध्यम तीनि करि, चल-चलनिमे ताल ।
एआमे मिलि सुर होत तब, रस उपजत सुविशाल ॥

'३' न० गु० वसुमतो सं० पृ० १० पद०८ क पाठ

सखि आज मधुरिपु भेटल हटियाँ । लोचन युगल जुड़ायल बटियाँ ॥
दरसनलोभे पसार देल हमें । सखिमुखे सुनि बड़ रसी ॥
तखने उपजु रस भेलिहु मोञे परवस, विसरलि दूधहु कलसी ॥
मधुरिपुसन नहि देखिय सोहाओन, जे दिअ तनिक उपाम रे ॥
शरद सुधानिधि जसु मुख नेओछन, पङ्कज की लेव नाम रे ॥
अधरञे लोचने यखने निहारलन्हि, वाँक कइए भँओहभङ्गा रे ।
तखनुक अवसर जागल पञ्चसर, थाने थाने गेल अङ्गा रे ॥
दानकलपतरु मेदिनी अवतरु, नृपति हिन्दूसुरतान रे ।
मेधादेवीपति रूपनरायण, सुकवि भनथि 'कण्ठहार' रे ॥

मन्तव्य—न० गु० ई पद रागत० तथा तालपत्रसँ लेने छथि से स्वीकार करितहुँ, एतेक भेद तथा भनितामे नामक परिवर्तन कोना कएलन्हि—से विचारणीय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ भठिआलपूर्वः । एतद्वृत्तम् :—

अष्टाविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः :
यत्पदार्द्धे तु स भवेद्भठिआली राजपूर्वकः ॥

उदाहरणम् :—

जय जय दुर्गे दुर्गतिहारिनि,
सबसिधिकारिनि देवी ।
भुगुति मुकुति दुहू दुखें बिनु,
पाबिअ पदपङ्कज सेवी ॥

विष्णु–विरञ्चि - विभावसु - वासव–
शिव तुअ धरए धिआने ।
आदि सकति भगवति भय-भाविनि,
केओ न अन्त तुअ जाने ॥

तनु अतिसुन्दर मरकतमनि-जनि,
तीनि नयन भुज चारी ।
शङ्ख-चक्र-शर - कर, धनुधारिनि,
शशिशेखर अनुसारी ॥

मनिमय कुण्डल हार मनोहर,
नेपुर घन - हन बाजे ।
किङ्किनि रन-रन सुललित कङ्कन,
भूषन विविध विराजे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चानन - वाहिन दाहिनि होइ,
सुमरि महेश विमोही।
'सदानन्द' कह चरन - जुगल तुअ,
सरन कएल जगजोही॥
सत्वर मध्यम तीनि ताल, तेँ विनु रागिनि होत वेहाल॥

तदत्र देवराज-आलानराज-देशराज-कानरराज-मनमोदराज-भठिआलराज-इत्येवं सप्तविधराजविजय उक्तः॥

अथ नाटः।

(एतद्वृत्तम्)

मलारीस्वरमादाय किञ्चित्कामोदवादने।
नाटरागसमुत्पत्तिं वदन्ति किल गायकाः॥

अथातः परमेतद्भेदाः।

[1]तत्र प्रथमं शुद्धः। एतद्वृत्तलक्षणम्:–

षट्कलद्विकपर्यन्ता द्विकलोनास्ततः कलाः।
यत्पदार्धे भवेदत्र शुद्धनाटः स एव हि॥

१. एहिसँ पूर्व "अयं शुद्ध - मलारी - शङ्कुक-कामोद उत्तमभेदात्पञ्चविध":– ई लिखब उचित छल॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

मृगमद – पङ्क अलका,
मुख जनु करह तिलका ॥
[2]सँपुन पुनिमके चन्दा,
[3]कलँकेँ होएत गए मन्दा ॥
[4]सहजें सुन्दरि बड़ि राही,
कि करति अधिक पसाही ॥
उजर नयन नलिना,
काजरेँ न करु मलिना ॥
दूधक धोएल भमरा,
मसि बुड़ि जाएत [5]समरा ॥
पीन पयोधर गोरा,
उलटल [6]कनए कचोरा ॥
चान्दने धवल न करु,
हिमे झाँपि जएत सुमेरु ॥
[7]विद्यापति हेन (म ?) कवी,
कतए तिमिर जहाँ रवी ॥
[8]रूपनरायन पहू,
तौलि हलत गुरु–लहू ॥

---

२. 'निपुन पुनिम', ३. 'तिलकेँ' (न० गु०, तालपत्र २४६, मित्र तथा मजु० पद सं० ६७) ४. सहजहि (मित्र तथा मजु०) ५. 'सामरा' (मि० मजु०) ६. 'कनय-कटोरा' (डा० सु० झा) ७. भनइ विद्यापति कवी (मित्र तथा मजु०) ८. ई पंक्ति मित्र तथा मजु० एवं न० गु० क संस्करणमे नहि अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तालद्वितयमेवात्र विद्यते गुणिसम्मतम् ।
[1]तदादाय यदा गानं क्रियते सुस्वरस्तदा ॥

अथ मलारीनाटः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

चतुष्कलचतुष्केण यद्ध्रुवाद्यर्धनिर्मितिः ।
ध्रुवान्तार्द्धे तु यत्र स्यात्पदार्धान्तरवस्थितिः ॥
पञ्चविंशतितः किञ्च त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे तु स भवेन्मलारीनाटसंज्ञकः ॥

उदाहरणम् :—

गगन गरज [2]मेघा उठय धरणि [3]थेघा,
पच[4]सर हिअ गेल [5]साली ।
सुमुखि-देह खिन जिउति आजुक दिन,
के जान कि[6]होइति काली ॥
(ध्रु०) [7]माधव मन दए सुनु तसु वानी ।
[8]कुजन निरूपि सुजन सखि संगति,
जे किछु कहए सयानी ॥

१. 'तमादाय' (मु०पु०)
[नेपालतालपत्र फोलिओ ३० (अ) (प) क पाठान्तर]
२. 'मेघ' ३. 'थेघे' ४. 'पचसरे' ५. 'साली' ६. 'की होइति काली' ७. "कन्हाइ अवहु विसर सब रोस" ।
८. "पुरुष लाख एक लखबा पारिअ नारिक चारिम दोस"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की हमे साँझक एकसरि तारा,
भादव चौठिक चन्दा।
[1]ऐसन कए पिआजे [2]मोर मुख मानल,
मो पति जीवन मन्दा॥
[3]वामहु गति जत समदि पठाओलन्हि,
से सबे कहि कहि गेली।
[4]तेरसि तिथि शशि सामर-पख निशि,
दसमि दशा मोरि भेली॥
भनइ 'विद्यापति' सुनु वरजौवति,
मने जनु मानह आने
राजा शिवसिंह रूपनरायन,
लखिमादेवि रमने[5]॥

परञ्च,

[6]रयनि काजर वम, भीम भुअङ्गम,
[7]कुलिश परए दुरवार।
[8]गरजेँ तरस मन, रोसेँ वरिस घन,
[9]संसजे परु अभिसोर॥

---

१. 'अइसन' २. 'मोर' ई नहि अछि।
३. "कोपे कुगुति सबे समदि पठावथि, दूती कहि से गेली"।
४. "तेँ असित तिथि सामर पख निसि, तइसन दस मोरि भेली"।
५. 'रमाने'।
विशेष—डा० श्री सुभद्र झाक अनुसारे २ मे "कोपहु गति जत समदि पठाओल००" एव ३ मे प्रस्तुने पाठ देलासँ अर्थं सुन्दर एवं स्पष्ट होइ'अ।
[नेपालताल पत्र फोलिओ ९४ (ब) ९५ (अ) क पाठ भेद]
६. 'रअनि' ७. 'कुलिस' ८. 'गरज' ९. 'संसय पलु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ध्रु०) सजनी वचन[1] छड़ैतेँ मोहि लाज
[2] जे होएअ से होअओ वरु, सबे हमे अँगिकरु,
साहसँ मन दए आज ॥

ठामहि रहिअ घूमि, परसें [3] चिन्हिअ भूमि,
दिग [4] मगँ उपजु [5] सन्देह।
हरि हरि शिव शिव, तावे जाइह [6] जिव,
जावे न उपजु [7] सिनेह ॥

[8] चरण बेढले फनि, हित कए मानल धनि,
नूपुर न करत रोर।
सुमुखि पुछओ तोहि, सरुप कहसि मोहि,
पेमक कत एक ओर ॥

अपन सुहित मित, देखिअ से पर,
तखन पाइअ पेमक ओर।
चाँद हरिन वह, राहु कवल सह,
पेम - पराभव थोर ॥

भनइ 'विद्यापति' सुनह सचेतनि,
गमन न करह विलम्बे।
राजा सिवसिंह रूपनराए,
सकलकला - अवलम्बे ॥

सत्वरद्वितयं मध्य–द्वितयं तावता पुनः।
चतुष्टयं तु तालानां जायते रागमध्यगम् ॥

---

१. 'बोलइते' २. "से जनि जे होउ, सवे वरु अगिरु, साहस मनदेल आज"
३. 'चिन्हअ' ४. 'मग' ५. 'सन्देहा' ६. 'जीव' ७. 'सिनेहा'। (ने० ता० फो० ६५ अ)
८ एहिसँ आगू चारिपंक्ति ने० ता० मे नहिं अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ शङ्कुकनामा ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

द्वादशावधयो यत्र त्रिंशदन्ताः कलाः किल ।
यत्पदार्धे स शङ्कूक–नाटस्तु समुदाहृतः ॥

उदाहरणम् :—

दूरहि ऊरु रहल गहि ठाम,
चरने पाओल थलकमल - उपाम ॥
सेदविन्दु परिपूरल देह,
मोतिम फरलि सौदामिनि - रेह ॥
संकेत - निकेत मुरारि निहारि,
अपने अधिनि नहि रहलि ए नारि ॥
पुलकित भेल पयोधर गोर,
दगध मदन पुनु आकुर तोर ॥
बजइतेँ वचन भेल सर - भङ्ग,
कदलीदल - जकेँ काँपए अङ्ग ।
रसमय 'श्यामसुन्दर' कवि गाव,
सकल - अधिक भेल मनमथ भाव ॥
कृष्णनराएन ई रस जान,
कमलावति - पति गुनक निधान ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परञ्च,

करतल कमल - नयन ढर नीर,
[1]न चेतए कुन्तल सँभर न चीर ॥
तुअ पथ हेरि हेरि चित नहि थीर,
सुमरि पुरुब-नेहा[2] दगध शरीर ॥
कते परि माधव साधव मान,
[3]विरहि - जुवति माँग दरसन-दान ॥
जल - मधे कमल गगन - मधे सूर,
[4]आतर [5]चाँदहुकुमुद कत दूर ॥
गगन गरज [6]मेघा [7]सिखर मयूर,
कत जन जान सिनेह कत दूर ॥
भनइ 'विद्यापति' विपरित - मान,
[8]राधावचने लजाएल कान्ह ॥

परञ्च,

गगन गरज [9]घन जामिनि घोर,
रतनहु लागि न संचर चोर ॥
ऐहना, तजि अएलाहु निज गेह,
अपनहुँ न देखिअ अपनुक देह ॥

---

१. 'न चेतय सभरए कुन्तल चीर' (न० गु० ५०६) २. 'नेह' (डा० सु० झा) ३. 'विरही-जुवती' (न० गु०) ४. 'आँतर' (न० गु०) ५. 'चाँद' (न० गु०) ६. 'मेघ' (डा० सु० झा) ७. 'शिखर' (न० गु०) ८. 'वचन' (न० गु०) ९. 'मेघ' (न०गु० ४००)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिला एक माधव परिहर मान,
तुश्र लागि संसजे परल परान ॥
दुसह जमुना नरि [1]ऐलिहु भाँगि,
कुचयुग तरल तरनि तँ लागि ॥
देह [2]अनुमत हे जुझश्रो [3]पचवान,
तोहे-सन नगर नागर नहि श्रान ॥
भनइ 'विद्यापति' नारि - सोभाव,
श्रपनुक श्रभिमत उक्कुति [4]बुझाव ॥
राजा रूपनराएन जान,
राए सिवसिंह लखिमादेइ-रमान ॥

ताल-त्रितय-सम्पन्ना गतिरेषा विराजते ।
राजते तैर्विना रागः सोऽयं नैवात्र कुत्रचित् ॥

अथ कामोदनाटः । एतच्छन्दोलक्षणम् :—

चतुष्कलत्रिकात्सैकादारभ्य नियमोज्झिताः ।
चतुष्कलचतुष्कान्ताः क्वचित्सैकाधिकास्ततः ॥
[5]यत्पदार्धद्वयोरन्याः स्युरुत्तमसमाः किल ।
कलिकाः स तु कामोदनाट इत्यभिधीयते ॥

---

१. 'एलिहुँ' (मित्र तथा मजु०) अएलिहुँ (न० गु०) २. 'अनुमति' (न० गु० एवं मित्र तथा मजु०) ३. 'पंचवान' (मित्र तथा मजु०) ४. 'जनाव' (न० गु०)
५. मुद्रित पुस्तकमे "यत्पदार्धद्वयोरन्ये स्यूरुत्समाः किल" एहि रूपक पाठ अछि। अर्थक दृष्टिसँ प्रकृत पाठ बनाश्रोल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

जय जय भगवति जय महामाया,
त्रिपुरसुन्दरि देवि करु दाया ॥
(ध्रु०) आहे माता, दालिमकुसुमसम तुअ तनु छवी,
तखने उदित भेल जनु रवी ॥
धनु–सर–पास–अङ्कुश हाथ,
तेंतिसकोटि देव नाव माथ ॥
चन्द्रिम [1]उपमा न केओ पाव,
काम–रमनि दासि–पद पाव ॥

सत्वरद्वितयं मध्यद्वयं च परिदृश्यते ।
तालानां तावता तालाश्चत्वारः परिकीर्तिताः ॥

अथोत्तमः ।

एतच्छन्दोलक्षणम् :—

ह्रस्वमर्धं ततो दीर्घमेष एव क्रमः पदे ।
ह्रस्वार्धे त्रिंशदन्ताश्च कला यत्र दशाधिकाः ॥
दीर्घार्धे चाष्टविंशान्ताः पञ्चविंशतितः कलाः ।
नियमाद्विगतास्तु स्युर्नाटोऽयमिह तूत्तमः ॥

---

१. 'उपमा' (मित्र तथा मजु० पद० ५६६) न० गु० 'चन्दिम उपम न पाव' एहिरूपे पाठक संशोधन कएने छथि किन्तु ओहिसँ उपयुक्त प्रकृत पाठ बुझाइ'छ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

[1]सखि हे वाँलभ जितव विदेसे ।
[2]हमे कुलकामिनि [3]कहइते [4]अनुचित,
तोहहुँ देहुन्हि उपदेशे ॥
ई न विदेशक [5]वेली ।
[6]दुरजने हमर न दुख [7]अनुमापव,
तेँ तोहे [8]पिआ [9]गेल-एली ॥
किछु दिन करथु निवासे ।
हम पूजल जे सेहे पए भुंजव,
राखथु पर उपहासे ॥
होएता हे किए वध-भागी ।
जहि [10]खने हुन्हि मने माधव चिन्तव,
हमहुँ मरब धसि आगी ॥
'विद्यापति' कवि भाने ॥
राजा सिवसिंह रूपनराएन,
लखिमादेवि रमने ॥

तदेवम्—शुद्ध-मलारी-शङ्कुक-कामोद-उत्तम-एतत्पूर्वप्रतीक-मादाय नाटः पञ्चधा ।

---

१. "सखि हे वल्लभ पायव विदेशे" (न० गु० ६१७) २. 'हम' (मि० तथा मजु० ४५६) ३. 'कहइत' (मि० तथा मजु०) ४. 'अनुचित' (न० गु०, एवं मि० तथा मजु०) ५. 'वेलि' ६. 'दुरजन' (मि० तथा मजु०) ७. 'अनुमापव' (न० गु०) ७. 'पिया' (मि० तथा मजु०) ६. 'एलि' १०. 'खन' (मि० तथा मजु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इदं तु बोध्यम्--अवान्तरबहुभेदवतामल्पभेदवतां च रागाणां तत्तदुत्पत्तिसाधनीभूततत्तद्गीतमादाय तावदन्यान्यतमगीतोत्पत्तिकत्वं, तत्तच्छन्दोघटितगीतोत्पत्तिकस्वरान्तरभेदभूततत्तद्रागानेव वाऽऽदाय तावदन्यान्यतमत्वं वा लक्षणमस्तु। एकतश्चैतत्। वस्तुतस्तु-विजातीयविजातीय-सुखजनकतावच्छेदकतया सिद्धास्तास्ताः तत्तद्रागगता जातय एव तत्तद्रागलक्षणमिति। अवान्तरभेदानां च तदुक्तमेवेति दिक्।

अथ सङ्कीर्णासङ्कीर्णमैथिलरागाणामेकीकृत्य गणना॥

[1]ललिता विभासी तदनु भैरव्यहिरानि वराडी च।
गोपीवल्लभगुर्जरी रामकली कापि सारङ्गी॥
कौशिककोडाराख्यौ वसन्तो धनछी तथा।
आसावरी च श्रीगोरा गौडमालव–मालवौ॥
भूपालीराजविजयनाटाः कामोददेशारवौ।
केदारोऽथ मलारी इत्येते मैथिलाः कथिताः॥

तदेतानेतावदवान्तरभेदाँश्चादाय [2]ऋतुराजमन्तरा तीरभुक्तिदेशीयाःसप्तनवतिसंख्याका रागाः वेदितव्याः। वेदितव्यानि च तावत्संख्याकानि तीरभुक्तिदेशिगीतान्यपि इति

१. एहि श्लोक सबमे छन्दक तथा व्याकरणक नियमक ध्यान नहि राखि केवल नामगणनामात्र पर ध्यान देल गेल अछि, यद्यपि छन्दक अनुरोधहि पूर्वोक्त क्रमक उल्लङ्घनकएल प्रतीत होइ'छ। २. 'रितु' (मु० पु०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतिश्रीत्रिलोचनशर्मविरचितायां रागतरङ्गिण्यां
तीरभुक्तिदेशीयसङ्कीर्णरागविवरणं नाम चतुर्थस्तरङ्गः ॥

देशान्तरदेश्यश्च कियत्यो लेख्या इत्युधुना न लिख्यन्ते ताः ॥

(पृ० १६८ पं० २. सँ आगू छूटल पाठ)

अथ मोरङ्गिआ कोडारः।

एतच्छन्दोलक्षणम् :-

दीर्घं पदमतो ह्रस्वे पदे दीर्घन्ततश्च ते।
ततोऽप्येवं क्रमेणैव पदानां निर्मितिर्भवेत् ॥

सप्तविंशतिपर्यन्तं पञ्चविंशतितः कलाः
दीर्घार्थं (र्धे?)कलिकान्यूनैश्चतुर्भिस्तैः कलाधिकैः ॥

तैर्वा यत्र चतुर्मात्रगणैर्ह्रस्वार्द्धं निर्मितिः ।
मोरङ्गदेशकोडारः कथ्यते गीतिभिस्तु सः ॥

विशेषः—लक्षित तथा उदाहृत राग सभक सङ्कलनसँ रागसंख्या एकशय अथवा एकशय एक होइ'छ। तखन ग्रन्थकारक निर्दिष्ट ९७ संख्याक कोना सङ्गति से विचारणीय थिक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उदाहरणम् :—

रितुराज आज विराज हे सखि,
नागरीगन – वन्दिते ।
नवरङ्ग नवदल देखि उपवन,
सहज सोभित कुसुमिते ॥

आरे, कुसुमित कानन कोकिल साद,
सुनिहुक मानस उपजु विषाद ।
साजनि हम पति निरदय वसन्त,
दारुन मदन निकारुन कन्त ॥

अतिमत्त मधुकर मधुर रव कर,
मालती – मधु – सञ्चिते ।
समजे कन्त उदन्त नहि किछु,
हमहि विधिवस वञ्चिते ॥

वञ्चित नागरि सेहे संसार,
एहि रितु पहुसओ न करु विहार ।

अति हाव भाव मनोज मारए,
चन्द रवि शशि भानए ।
पुरुव पाप संताप जत होअ,
मन मनोभव जानए ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]जारए मनसिज मार सर साधि,
[2]चाँदने देह चौगुन होअ धाधि ।

सबे धाधि आधि वेआधि जाइति,
करिअ धैरज कामिनी ।
सुपहु मन्दिर तोरित जाएत,
सुफले जाइत जामिनी ॥
जामिनि सुफले जाइति अवसान,
धैरज कर 'धरणीधर' भान ॥

(दोहा)

दुइ सत्वर अरु मध्य दोए, चारि ताल के राग ।
कूर सुनत नहि कबहु पुनि, सोइ सुनत जेहि भाग ॥

१. दुनूठाम एके पद रहब उचित थिक–से एहि छन्दक पारंपाटीसँ अबैत अछि । अतः दुनू ठाम 'जारए' वा 'जानए' एके होएबाक चाही । अर्थमे कोनो वैषम्य नहि होएत । २. मुद्रित पुस्तकमे 'चाँदमे' पाठ छल, अर्थक सांनिध्य देखि 'चाँदने' राखल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ पञ्चमस्तरङ्गः

अथ यन्त्रजादिराग सामान्योत्पत्त्युपयुक्त-संस्थिति-साधनोभूत स्वरसंज्ञा–प्रकरणम् ।

स्वस्वशेषश्रुतिं त्यक्त्वा यदा रिषभधैवतौ ।
[1]गीयेते गुणिभिः सर्वैः तदा तौ कोमलौ मतौ ॥

गृह्णाति [2]मध्यमस्यापि गान्धारः प्रथमां श्रुतिम् ।
यदा, तदा जनैरेष तीव्र इत्यभिधीयते ॥

द्वितीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतरः स्मृतः ।
([3]तृतीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतमः स्मृतः ॥)

चतुर्थीमपि चेदेवमतितीव्रतमः स्मृतः ।
अतितीव्रतमो गस्तु सारङ्गे परिगीयते ॥

षड्जस्य च निषादश्चेद् [4]गृह्णाति प्रथमां श्रुतिम् ।
तदा सङ्गीतिभिः सोऽपि तीव्र इत्यभिधीयते ॥

द्वितीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतरः स्मृतः ।
तृतीयामपि चेदेवं तदा तीव्रतमः स्मृतः ॥

---

१. 'गीयते' (मु० पु०) । २. 'मधुमस्यापि' (मु० पु०) । ३. ई पाँती मु० पु० मे छूटल । 'भात खण्डे' कृत 'लक्ष्यसंगीत संग्रह'मे उद्धृत 'रागतरङ्गिणी'क पाठसँ प्राप्त । ४. 'गन्धारः' (मु० पु०) उक्त भा० ख० क संग्रहमे राग त० क उद्धृत अंशमे 'गृह्णाति' पाठ देखल, अर्थ–दृष्टिए उपयुक्त बूझि राखल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड्जस्य द्वे श्रुती गृह्णन् निषादः काकली स्मृतः ।
तीव्रतरे[1] निषादे च ज्ञेया सैव विचक्षणैः ॥

× × × ×

[2]सपयोरधयोश्चैव तथैव गनिषादयोः ।
संवादः कथितो विज्ञैर्मसयोः स्वरयोर्मिथः ॥

× × × ×

[3]हृदि मन्द्रो गले मध्यो मूर्ध्नि तार इति क्रमात् ।
द्विगुणः पूर्वपूर्वस्मात् स्वरः स्यादुत्तरोत्तरः ॥

इति स्वरसंज्ञा ।

अथ स्वरश्रुतिविभागः ।

द्वाविंशतिस्तु श्रुतयः स्वराणां भागशः स्मृताः ।
तद्यथा श्रूयतां तावत् संगीताद् बुद्धिपारगैः ॥

तीव्रा कुमुद्वती मन्दा छन्दोवत्यस्तु षड्जगाः ।
[4]दयावती तु रेर्ज्ञेया रञ्जिनी रक्तिकेत्यमू[5] ॥

रौद्री क्रोधा[6] च गान्धारे वज्रिकाथ प्रसारिणी ।
प्रीतिश्च मार्जनीत्येताः श्रुतयो मध्यमाश्रिताः ॥

---

१. मु० पु० मे 'तीव्रतमे' पाठ अछि । उक्त भा० ख० उद्धृत पाठमे तीव्रतरे अछि अर्थक दृष्टिएँ सैह उचित बूझि ग्रहण कएल । २. संवादिस्वर कथनम्' । ३. 'मन्द्रादि संज्ञा' एहि तरहे शीर्षक देब उचित छल । ४. 'दयावती रञ्जिनी च रक्तिका चर्षमे स्थिता' (संगीत दर्पण १ अ० ५३ श्लोक) । ५. 'त्यसू' (मु० पु०) । ६. 'क्रोधी च' (सं० द०) 'क्रोधेति' (सं० पारिजात ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षिती रक्ताऽथ संदीपिन्यालापिन्यथ पञ्चमे।
मदन्ती रोहिणी रम्येत्येता धैवतसंश्रयाः ॥

उग्रा च क्षोभिणी च द्वे निषादे [1]वसतः श्रुती।
इत्युक्ताः सप्तसु प्रोक्ताः स्वरेषु श्रुतयो बुधैः ॥

× × × ×

वीणायां सर्वरागाणां स्वराणां संस्थितु या।
तस्या वादन मात्रेण स्वरव्यक्तिः प्रजायते ॥

तास्तु संस्थितयः प्राच्यो रागाणां द्वादश स्मृताः।
याभी रागाः प्रगीयन्ते प्राचीना रागपारगैः ॥

तास्तु,

भैरवी टोडिका तद्वद् गौरी कर्णाट एव च।
केदार ईमनस्तद्वत् सारङ्गो[2] मेघरागकः ॥

धनास्त्री पुरवी किं च मुखारी दीपकस्तथा।
एतेषामेव संस्थाने सर्वे रागा व्यवस्थिताः[3] ॥

अथ भैरवीसंस्थानम्।

यथा यद्रागसंस्थानं तत्तथैव वदाम्यहम्।
शुद्धाः सप्तस्वरा रम्या वादनीयाः प्रयत्नतः।
तेन वादनमात्रेण भैरवी जायते शुभा ॥

---

१ वसतां (मु० पु०)। २. °स्तद्वच्छारङ्गो° (मु० पु०)। ३. एहि तरहे रागजनकसंस्थिति १२ ई भेल–भैरवी, टोडी, (तोडी) गौरी, कर्णाट (कानरा), केदार, ईमन, सारङ्ग, मेघराग, धनास्त्री (धनाश्री) पुरवी (पूर्वी), मुखारी तथा दीपक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्ये तु भैरवीरागे धैवतं कोमलं विदुः ।
तदशुद्धं यतस्तादृक् नायं रागोऽनुरञ्जकः ॥

इति भैरवीसंस्थानम् ।

([1]अथ टोडीसंस्थानम्)

शुद्धाः सप्तस्वराः कार्या रिधौ तेषु च कोमलौ ।
टोडी सुरागिणी गेया ततो गायकनायकैः ॥२॥

इति टोड्याः ।

(अथ गौरीसंस्थानम्)

एवं सति च गान्धारो द्वे श्रुती मध्यमस्य चेत् ।
गृह्णाति काकली निः स्यात् तदा गौरी प्रवर्त्तते ॥

इति गौरीसंस्थानम् ।

(अथ कार्णाटसंस्थानम्)

[2]× × × × ।
× × × × ॥

अस्यार्थः—ऋषभधैवतौ कोमलौ भवतः, गान्धारश्च मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति तदा कानराख्यातकार्णाट-संस्थानं भवतीत्यर्थः ॥४॥

इति कार्णाटसंस्थानम् ।

---

१. (   ) कोष्ठक मध्य देल पाठ सब मुद्रित पुस्तकमे नहिं अछि ।
२. × × × × एहि तरहेँ निर्दिष्ट स्थान पर मूलश्लोक छल, किन्तु लेखकक प्रमादसँ छूटल अछि ई ओकर व्याख्यासँ बुझाए पड़ैछ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अथ केदारसंस्थानम्)

× × × × ।
× × × × ॥

गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादश्च षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, तदा केदार-संस्थानं भवतीत्यर्थः ॥५॥

(इति केदारसंस्थानम्

(अथ ईमनसंस्थानम्)

एवं च सति संस्थाने मध्यमः पञ्चमस्य चेत् ।
गृह्णाति द्वे श्रुती राग ईमनो जायते तदा ॥६॥

इति ईमनसंस्थानम् ।

(अत्र सारङ्गसंस्थानोल्लेखो नावलोक्यते) ॥७॥

(अथ मेघसंस्थानम्)

[1] × × × × ।
× × × × ॥

गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमश्च पञ्चमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति निषादश्च षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमः शुद्धो (?) भवति तदा मेघरागसंस्थानं भवतीत्यर्थः ।

इति मेघरागसंस्थानम् ।

---

१. एहि ठाम कारिका छूटल प्रतीत होइ'छ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अथ धनास्त्रीसंस्थानम्)

ऋषभः कोमलो गस्तु द्वे श्रुती मध्यमस्य चेत् ।
गृह्णाति द्वे श्रुती[1]मश्च पञ्चमस्य विशेषतः ॥

धैवतः कोमलो निश्च षड्जस्य द्वे श्रुती तथा ।
गृह्णाति रागिणी रम्या धनास्त्रीर्जायते तदा ॥

[2]ऋषभः कोमलो भवति निषादः षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति तदा धनास्त्रीसंस्थानं भवतीत्यर्थः ॥९॥

इति धनास्त्रीसंस्थानम् ।

[3]औडवः पञ्चभिः प्रोक्तः स्वरैः षड्भिस्तु षाडवः ।
[4](सम्पूर्णः सप्तभिर्ज्ञेय एवं रागस्त्रिधा मतः ॥)

(अथ पूर्वासंस्थानम्)

ईमनस्वरसंस्थाने निषादप्रथमां श्रुतिम् ।
गृह्णाति धैवतश्चैषा पूर्वायाः स्वरसंस्थितिः ॥

गान्धारो मध्यमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, मध्यमः पञ्चमस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, निषादः षड्जस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति, धैवतश्च निषादस्य श्रुतिद्वयं गृह्णाति तदा पूर्वासंस्थानं भवतीत्यर्थः ॥१०॥

इति पूर्वासंस्थानम् ।

---

१. 'मश्च' (मु० पु०)। २. कारिका तथा अर्थकथनमे भेद अछि ?। ३ एहि श्लोकक उल्लेख आगू स्वर-जाति कथनप्रसङ्गमे उचित छल । ४. ( ) कोष्टक मध्य देल पाठ मु० पु० मे नहि छल, सं० द० द्वि० अ ६ श्लोकसँ गृहीत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ मुखारीसंस्थानम् ।

शुद्धाः सप्त स्वरास्तेषु धैवतः कोमलो भवेत् ।
वीणायां जायते शुद्धा मुखारी संस्थितिस्तदा ॥

शुद्धसप्तस्वरेषु चेद् धैवतः कोमलो भवति तदा मुखारीसंस्थितिर्भवतीत्यर्थः ॥११॥

इति मुखारीसंस्थितिः ।

(अथ दीपकसंस्थानम्)

सर्वैर्मिलित्वा दीपकोऽपि लेख्यः ॥१२॥

(इति दीपकसंस्थानम्)

अथ स्वरजातयः ।

[1]सम्पूर्णा ब्राह्मणाः प्रोक्ताः क्षत्रियाः षाडवा मताः ।
औडवाः कथिताः वैश्याः शुद्रास्तदितरे क्वचित् ॥

(अथ तत्तद्रागसंस्थितौ गेयानां रागान्तराणां व्यवस्था)

(तत्र भैरवी-संस्थितौ)

नीलाम्बरी सदा ज्ञे-(गे ?) या भैरवीरागिणीस्थितौ ।

(अथ टोडीसंस्थितौ)

टोडी सुरागिणी कापि [2]स्वस्थितौ सैव गीयते ।

---

१. पूर्वोक्त 'औडवः पञ्चभिः प्रोक्तः' ई कारिका एहिसं पूर्व पढ़क थिक । २. सुस्थितौ (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ गौरीसंस्थितौ ।

मालवः स्याद्गुणमयः श्री गौरी च विशेषतः ।
चैती गौरी तथा प्रोक्ता [1]पहारी गौरिका पुनः ॥

देशी टोडी देश[2]कारो गौरो रागेषु सत्तमः ।
त्रिव[3]णः स्यान्मुलतानी धनाश्रीश्च वसन्तकः ॥

रामकरी तथा गेया गूर्जरी बहुली ततः ।
रेवा च भठि[4]आलश्च पड्रागस्तथोत्तमः ॥

मालवः श्रीपञ्चमः किं च [5]जयंतश्रीश्च रागिणी ।
आसावरी तथा गेया देवगान्धार एव च ॥

[6]सिन्धी आसावरी गेया गेया गुणकरी तथा ।
गौरीसंस्थानमध्ये तु एते रागा व्यवस्थिताः ॥

अथ कार्णाट–संस्थितौ

षाडवः कानरो रागो देशीविख्यातिमागतः ।
[7]बागेश्वरी कानरश्च [8]खम्भाइची तु रागिणी ॥

---

१. 'पहाड़ी' (भात खण्डे)। २. 'देशिकारः' (भा० ख०)। ३. 'त्रिरणः' (मु० पु०) । ४. 'भठियार' (भा० ख०)। ५. 'जयतश्रीः' (मु० पु०)। ६. 'सैन्धव्यासावरी' (भा० ख०)। ७. 'वागीश्वरी' (भा० ख०)। ८. खंबावती (भा० ख०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]सोरठः परजो मारुः जैजयन्ती तथापरा ।
कुकुभापि च कामोदः कामोदी लोकमोदिनी ॥

[2]केदारी रागिणी रम्या गौरः स्यान्मालकौशिकः ।
हिन्दोलः [3]सुघराइ स्याद[4]डानो रागसत्तमः ॥

[5]गोराकानरनामा च श्रीरागश्च सुखावहः ।
कार्णाटसंस्थितावेते रागाः सन्तीति निश्चितम् ॥

(अथ केदारसंस्थितौ)

केदारस्वरसंस्थाने श्रुतः केदारनाटकः ।
आभीरनाटनामा च गेयो रागस्तथापरः ॥

[6]खम्भावती ततो गेया शङ्कराभरणस्तथा ।
त्रिहागरा च हम्बीरः श्यामः श्रुति मनोहरः ॥

छायानाटश्च भूपाली गेया भीमपलासिका ।
कौशिकस्तु तथा गेयो मारुरागो विचक्षणैः ॥

(अथ ईमनसंस्थितौ)

ईमनस्वरसंस्थाने शुद्धकल्याण ईरितः ।
पुरिया विदिता लोके जयत्कल्याण एव च ॥

---

१. 'सोरट (भा० ख०) । २. रागतरङ्गिणी मतानुसार तत्तत्संस्थितिगेय-राग सभक प्रदर्शनक अवसरमे एहि संस्थितिमे 'केदारी'कें भातखण्डे नहि लिखने छथि । ४. 'अडाण' (भा० ख०) । ५. 'गौरकानरः' (भा० ख०) । ६. 'खंबावती' (भा० ख०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अथ सारङ्गसंस्थितौ)

सारङ्गस्वरसंस्थाने प्रथमा पटमञ्जरी।
वृन्दावनी तथा गेया सामन्तो वडहंसकः ॥

(अथ मेघसंस्थितौ)

मेघरागस्य संस्थाने मेघो मल्लार एव च।
गौडसारङ्गनाटौ (च) रागौ वेलावली तथा ॥

[1]अलहिआ तथा गेया शुद्धसूहव[2] एव च।
देशीसूहव[3]-देशाखौ शुद्धनाटस्तथैव च ॥

(अथ धनाश्रीसंस्थितौ)

धनाश्रीस्वरसंस्थाने धनाश्रीर्ललिता तथा।

(अथ पूर्वासंस्थितौ)

पूर्वायाः स्वरसंस्थाने पूर्वैव परिगीयते ॥

सर्वेषामथ रागाणां ये ये तु क्रमतः स्वराः।
तेषु सर्वस्वरेष्वाद्यः षड्ज एवाभिधीयते ॥

तथाहि—

सरिगा मपधा निः स सनिधाः पमगा रिसौ।
रोहावरोह-योगेन सम्पूर्णा भैरवी मता ॥

---

१. 'अलैया। २. 'सुहुः'। ३ 'देशीसुहु-देशाख्यौ, (भा० ख०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एवं तत्तद्रागस्वरारोहावरोहास्त्वन्यत्र द्रष्टव्या इह तु विस्तरभयात् न लिखिताः ।

अथ सकलदेशसाधारणगुणिगणप्रसिद्धरागसङ्कराः ॥

[1]तत्र × × ×
× × × धाहेति ।

[2]पाओस में रस पाएवहु,
क्या सरिता के सोत ॥

[3]प्रथम कामोद सो शुद्ध-जुत,
राग - रमन सामन्त ।
तिलक कल्याण कामोद पुनि,
मुनिवर भरत भनन्त ॥

---

१. 'तत्र' एहि तरहे प्रक्रान्त कए प्रायः तत्तद्रागक स्वर-सङ्करक स्वरूप निरूपण प्रारम्भ भेल छल दिग्दर्शनक हेतु, से अंश नष्ट भेल अछि। २. एहि पंक्तिक सम्बन्ध आगूक ग्रन्थसँ नहि प्रतीत होइछ। प्रायः पूर्व प्रदर्शित (सम्प्रति नष्ट) अंशसँ एकर सम्बन्ध छल। ३. एहि ठामसँ 'रागसङ्कर'-नामनिर्देश तथाकथित मध्य देशक भाषामे प्रारम्भ कएल गेल।

विशेष—तत्तत्स्वरसंस्थानमे गेय राग सभक निर्देश एहि प्रकरणमे कएल गेल। क्रमवश मुखारी तथा दीपक रागक स्वरसंस्थानमे गेय रागक निर्देश होएब उचित छल से नहि देखल जाइत अछि। भातखण्डे महोदय अपन 'लक्ष्य-संगीत संग्रह' ग्रन्थक परिशिष्टमे रागतरङ्गिणीक अनुसारे जन्यजनकरागक प्रदर्शनक अवसरमे मुखारी तथा दीपकक स्वरसंस्थानमे क्रमशः मुखारी तथा दीपककेँ गेय लिखने छथि। तदनुसार प्रकृत ग्रन्थमे तादृश पाठ होएबाक अनुमान होइ'छ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध मिलाए जो गाइअइ,
अइसोइ शुद्ध कामोद ।
कामोद-मारजा यदि मिलए,
साओन (तासओ ?) करे प्रमोद ॥

तिलक आदि षड्राग यदि,
शुद्ध मिलें कामोदहि होए ।
तासओ तिलक मोद भर,
सुखद कहए सब कोए ॥

ईमनगुण्ड दुहू मिलें,
बजए जओ वीना माह ।
होत कल्याण-कामोद सों,
रागनि में नर नाह ॥

गौरी श्यामा गुर्जरी,
आसावरी गँधार ।
मिलें वराडी जगत में,
ए षट् राग विचार ॥

आसावरी अओ गुर्जरी,
मिले गुनकरी होत ।
सिवराष्ट्र मिलि कए धनासिरि,
कुम्भारी के गोत ॥

मालसिरि मल्लार अरु,
शुद्ध सकल सुर होए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेही–सञो मधुमाधवञो,
जग कहत संगीती लोए ॥

नटनारायण–ते जरहि (जवहि ?),
हरभूषन जग होइ ।
तामे शुद्ध – संयोगहू,
राग सरस्वती सोइ ॥

मालव अचल धनासिरी
दुर्गा चैती चारु ।
इन्हके सब संजोग-तें,
हए बडहंस विचारु ॥

कानर धवल दुइ मिले,
होत जो पुरिया राग ।
एञो... ... ... ॥[1]

[2]श्रीमद्वेलावलाद् गुण्डयोगात् कामोदपञ्चकम् ।
तत्राद्यः शुद्धयोगात्तु द्वितीयोऽपि च वक्ष्यते ॥

कामोदभार्यामिलनात् सामन्ताख्यो भवेत् स तु ।
तिलकादिक–षड्राग–योगात्तु तिलकादिकः ॥

कल्याणाद्यो भवेद्गुण्ड–श्रीमदीमनयोगतः ।
बरारी गुर्जरी गौरी श्यामा चासावरीति च ।

---

१. प्रारब्ध 'रागसङ्कर'क वर्णनो असमाप्ते उपलब्ध अछि–ई ज्ञातव्य थिक ।
२. एहिसँ पूर्व तथोक्त 'मध्यदेशीय' भाषामे जे 'रागसङ्कर'क वर्णन प्रक्रान्त कए असमाप्ते रहल; तकरे संस्कृतमे विस्तृत–रूपसँ कहैत छथि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गान्धार-संयुता एताः स्युः षड्रागा इतीरिताः ।
गुर्जर्यासावरी योगाच्छ्रीमद्गुणकरी मता ॥

शिवराष्ट्रमिलनाद्धन्या धनास्री कुम्भरीति च ।
धनास्री - शुद्धमल्लारै-र्मधुमाधविनिर्मितिः ॥

हरभूषणशुद्धाभ्यां नटनारायणेन च ।
सरस्वत्याः समुत्पत्ति-र्धनास्रीमालवाचलैः ॥

गौर्या च वडहंसः स्यात् कानराद्धवलादपि ।
पुरिआ रागिणी सैव मङ्गलाष्टकशब्दिता ॥

केदाराचलगौरीभिर्लङ्कादहननामकः ॥

गान्धारो गुर्जरी श्यामा रामकर्यथ चेद्भवेत् ।
पुरवी गुणकरी-योगाद् वल्लभः शक्तिमान् भवेत् ॥

वेलाओल-केदारा-योगतो हरभूषणः ।
वेलाओल-केदारा-कल्याणैरीमनः स्मृतः ॥

गौर्यासावरीदेव-गिरिभिर्भैरवादपि ।
सिन्धुसंयोगतः प्रोक्तो गान्धारः पृथिवीतले ॥

धनास्रीकानरायोगाद् वागे(गी)श्वर्याख्यरागिणी ।
फिरोदस्तस्तु पुरवी-गौरी-श्यामाभिरेव च ॥

वराडीवङ्गपालाभ्यां विभासमिलनादपि ।
आडाना रागिणी प्रोक्ता फिरोदस्ताद् धनेन च ।
कानरायोगतः प्रोक्ता 'सहाँना' कापि रागिणी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मारुधवलकुम्भारी–धनास्त्रीमिलनाद्भवेत् ।
पटमञ्जरी ततः शुद्धाच्छङ्कराभरणादपि ॥

मल्लारकानराभ्यां च देशाखः समुदीरितिः ।
गौड़सारङ्गमिलनाद् भवेद्वेलावली भुवि ॥

तत्र सोरठकौरव्या मिलनात्कौमुदी मता ।
मारूधवलकेदारा– जयत्स्त्रीमिलनाद्भवेत् ॥

घण्टोलनामको रागः सङ्गीतिभिरुरीकृतः ।
पुरवीशैलजादेव–गिरिभिर्गुण्डयोगतः ॥

हारवत्याख्यसङ्कीर्णरागिणीलोकदुर्लभा ।
धनास्त्रीपुरियाभ्यां च भवेद्भीमपलासिका ॥

मालस्त्रीशुद्धसंयोगान्मलारमिलनादपि ।
खम्भावत्याः समुत्पत्तिं वदन्ति किल गायकाः ॥

शैलजादेशकाराभ्यां टोडीतोऽपि वराडिका ।
षड्रागासावरीदेश्यो (?) हेतुर्गन्धावरीभवेत् ॥

सरस्वत्यथ मारू च केदारापि मनोहरा ।
विहागरा–समुत्पत्ति–निदानं त्रितयं मतम् ॥

---

१. 'जयच्छ्री' 'जयत्स्त्री' ई दूनू प्रकारक पाठ मुद्रित पुस्तकमे भेटैत अछि । 'धनास्त्री' 'मालस्त्री' इत्यादि नाममे दन्त्य सकारहिक अधिक प्रयोग देखि 'जयत्स्त्री' इहो राखल । वास्तविक तालव्ये शकार थिक से 'जयच्छ्री' क प्रयोगसँ ज्ञात होइ'छ । एही विचारक प्रकाशनार्थ दुनू तरहक पाठ राखल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जयच्छ्रीदेशकाराभ्यां ललिताच्च लि(ली ?)[1]लावती ।
मालवाचलगौडीमिश्रिवणामिलनान्मतः ॥

गुणिगोष्ठीषु विख्यातः कोऽपि रागो मनोहरः ।
हंबीर ईमनाच्छुद्धकेदारायोगतः स्मृतः ॥

पूर्णश्रीरागयुक्ता चेत् कानरा किंश्चिदंशतः ।
भैरवात्किञ्चिदादाय तदा टङ्कः प्रवर्तते ॥

मलारमिलनात्किञ्च केदारानामकध्वनिः ।
गुर्जर्या देशकारश्चेत् कल्याणोऽपि युतो भवेत् ।
अहीरी रागिणी रम्या तदैव भुवि जायते ॥
शङ्कराभरणं नाटः सोरठी-सङ्गतो यदि ।
तदा तु रभसादिः स्यान्मङ्गला कापि रागिणी ॥

गान्धारी गुर्जरी तद्वद्वाङ्गालीपञ्चमस्तथा ।
भैरवी-संयुतैरेतैर्भवेत् [2]सौराष्ट्रनामकः ॥

खम्भारी-पुरिया-टोडी-योगान्नारायणो मतः ।
मनोहरयुतस्तद्वन्मालवो राजहंसकः ॥

[3]मालस्रीशुद्धटङ्कैस्तु भवेद्धीमपलासिका ।
श्रीमन्मालव-गान्धार-वडहंसैर्युतो हरः ।
षड्राग-धवल-हंसैर्देशीटो[4]डीयुतैर्भवेत् ॥

---

१. लीलावतीक स्थानमें छन्दक अनुरोधेँ लिलावती राखल गेल ई बुझाइ'छ।
२. 'च्छौराष्ट्र' (मु० पु०)। ३. मालश्री (मु० पु०) (यद्यपि 'मालस्री'क अपेक्षया 'मालश्री' पाठ शुद्ध बुझल जाएत, तथापि आधिक्येन 'मालस्री' एही तरहे पाठ देखि एकरूपताक हेतु प्रकृत पाठ राखल)। ४. टोरी (मु० पु०) (अधिक ठाम 'टोड़ी' ई पाठ देखि एतहु सैह राखल)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरवीशुद्धसारङ्गैर्देवगिर्यपि रागिणी ।
कानरायुतकल्याणसंयुता चेद्विहागरा ।
तदा तु गीतिविख्यातो रागः कोलाहलो मतः ॥

शङ्कराभरणोपेत-मालस्रीसंयुतो यदि ।
[1]धीरागः सुखदः कोऽपि भवेच्छ्रीरमणस्तदा ॥

केदारा-पुरवी-वेलावलीभिः ककुभा मता ।
सरस्वत्या तु कुम्भारी मालस्रीयोगतोऽपि च ॥

देवकारी भवेत्कापि कदाचिच्छ्रूयते तु सा ।
श्यामारामकरीभ्यां च श्रीमद्गान्धार-योगतः ॥

बहलोपेतगुर्जर्या मङ्गलोपेतगू[2]जरी ।
वराडोगौडिकाचैत्यः श्रीपूर्व-रमणोऽपि च ।
एतेषां सङ्करात्कापि विचित्रा-नाम-रागिणी ॥

गौरीललितयोर्देशकारसंयोगतः किल ।
त्रिमल्लनामको रागः सङ्गीतिगीतिसम्मतः ॥

आडानाकानरावेलावलीभिर्नटपूर्वकात् ।
नारायणात्समाख्याता कलाई-नाम-रागिणी ॥

पुरिया-मधुमाधवी-राग-योगाद्रागे(गी)श्वरीमता ।
बडहंस-टङ्क-गौर्याश्च श्रीरागो रागसत्तमः ॥

पुरिया-वेलावली तद्वत्ककुभापि केदारिका ।
एषां परस्परं योगाद्दिनादोऽपि सम्मतः ॥

---

१. प्रायः 'श्रीरागः' क स्थान पर ई भ्रमवश पाठ अछि । २. प्रायः गुर्जरी शब्दहिक अपभ्रंश ई थिक ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शङ्कराभरणं गौरी मधुपूर्वा च माधवी ।
वेलावली परस्तद्वद्दहनो लङ्क[१] - पूर्वकः ॥

परस्परममीषां च संयोगान्नटपूर्वकः ।
नारायणो भवेद्रागः सुरलोकेऽपि दुर्लभः ॥

[२]ललितपञ्चमपूर्वाभिर्लीलावति[३] - मनोहरौ ।
युतौ चेत्तत्र हिन्दोलस्तदैव किल जायते ।
श्रीमत्कल्याणकामोद–सामन्तैर्मेघरागकः ॥

मलारनट[४]सारङ्गयस्तद्वद्वेलावली किल ।
देवगिर्या तु संयोगादेतेषां पञ्चमः स्मृतः ॥

हिन्दोलादर्द्धमर्द्धार्द्धं कानरारागतोऽपि च ।
पुरियातोऽपि तावत्स्यात्समादाय तु भैरवः ॥

शङ्काराभरणं तद्वत्कानरा मधुमाधवी ।
एतावद्योगतः प्रोक्ता कानरा सत्सुखावहा ॥

केदाराहीरनाटौ च शुद्धो धवल एव च ।
वागे(गी)श्वरी कानरश्च योगात्स्यान्मधुमाधवी ॥

लङ्कादहन–सोरठी–सङ्करात्किल जायते ।
शक्रसंक्रमणी नाम रागिणी तु सुखावहा ॥

इति सकलसङ्गीतसिद्धा रागसङ्कराः ॥

---

१. पूर्वमें 'लङ्कादहन' नामक रागक उल्लेख अछि, तदनुसार 'लङ्कापूर्वकः' ई पाठ होएब उचित, किन्तु छन्दक दृष्टिसँ 'लङ्कपूर्वकः' पढ़ल गेल ई बुझाइ'छ। २. 'ललित'कें छन्दक अनुरोधे 'ललित्' पढ़ल गेल अछि। ३. 'लीलावती' होएब उचित छल, छन्दक अनुरोधहि इहो पाठ थिक। ४. 'शारङ्गा' (सु० पु०) अधिक ठाम दन्त्ये सकार उपलब्ध होइ'छ, अतः सैह राखल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ रागाणां गानकालाः ।

तुम्बुरुनाटके ।

श्रीपञ्चमीं समारभ्य यावत्स्याच्छयनं हरेः ।
तावद्वसन्तरागस्य गानमुक्तं मनीषिभिः ॥

इन्द्रोत्थानं समारभ्य यावद्दुर्गामहोत्सवम् ।
गेया तावद्बुधैर्नित्यं मालश्री सा मनोहरा ॥

प्रातर्गेयस्तु देशाखो ललितः पटमञ्जरी ।
विभासो भैरवी चैव कामोदो गण्डकर्यपि ॥

एका वराडी मध्याह्ने सायं कार्णाटमालवौ ।
नाटश्चैव विशेषेण शेष[1]गेयस्तु सर्वदा ॥

हिन्दोलश्च वसन्तश्च वसन्ते रक्तिदायकः ।
नाटो गौडो वराडी च गुर्जरी देशिरेव च ॥

पूर्वाह्णे गानमेतेषां निषिद्धमिति तद्विदः ।
नैवापराह्णे गातव्यौ भैरवीललितौ क्वचित् ॥
रङ्गभूमौ नृपाज्ञायां कालदोषो न विद्यते ।

[2]शुद्ध–सालङ्ग–सङ्कीर्ण–धातु–मातुविभेदतः ।
देशभाषाविभेदाच्च रागसंख्या न विद्यते ॥

---

१. 'शेषे दिनान्ते गेयः' ई अर्थ इष्ट बुझा पड़ैछ । २. एहिमे सँ तीन पङ्क्ति 'राग-सङ्कर' वर्णनक समाप्तिमें उल्लेख उचित बुझा पड़ैछ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न रागाणां न तालानामन्तः कुत्रापि विद्यते ।
यथाकाले समारब्धं गीतं भवति रञ्जकम् ।
अतः स्वरस्य नियमाद्रागेऽपि नियमः कृतः ॥

अर्वाचीनास्तु—

ब्राह्मे मुहूर्त्ते गातव्यो भैरवो रागसत्तमः ।
अरुणोदयवेलायां गेया रामकरी पुनः ॥

प्रातर्वेलावली गेया पूर्वाह्णे सुभगोऽपि च ।
पूर्वाह्णे याति गायेत टोडीमतिमनोरमाम् ॥

[1]संगवादौ वराडी च गेया गायकनायकैः ।
दिवा तृतीयप्रहरे गातव्यासावरी जनैः ॥

काफी मध्याह्नमध्ये तु [2]सारङ्गोऽपि च गीयते ।
अपराह्णे नटो गेयस्तद्वद्गायेत मालवम् ॥

अपराह्णावसाने च सायाह्ने सति याति वा ।
सायंकालस्तु कालो वै गौरीरागस्य भूतले ॥

निशामुखे तु कल्याणः केदारस्तु महानिशि ।
तृतीयप्रहरे रात्रौ कार्णाटः सर्वसम्मतः ॥

---

१. 'संगरादौ' (मु० पु०) कालक प्रकरणमें कालवाचके शब्द उपयुक्त थिक । संगर शब्द संग्रामवाचक थिक । तकर एहि ठाम औचित्य नहि । 'र' तथा 'व' मे भ्रम मिथिलाक्षरमे संभावित अछि, तेँ 'संगवादौ' ई पाठ राखल गेल । दिनके १५ मुहूर्त्तमें बाँटल गेल अछि, ओहीमे छठम मुहूर्त्त 'संगव' कहबै'छ । २. 'शारङ्गो' (मु० पु०) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपराह्णेऽपि सौराष्ट्रं प्रभाते [1]संगवेऽपि च ।
पञ्चमो मेघसंचारे मल्लारः परिगीयते ॥

स्वस्वोत्पत्तिनिदानसंस्थितिमहामुख्यैकरागोचितः,
कालः सज्जनगीतिगोष्ठिषु चिदानन्दाय राजव्रजे ।
[2]× × × ×
× × × × ॥

अथैषामुत्पत्तिसाधनीभूतगीत-प्रतिपादिताः कुत्र के नायकाः, कुत्र का नायिका इति बुभुत्सावतामतिसुकुमारमतीनामीश्वराणां झटिति तज्ज्ञानार्थं ते ताश्च लिख्यन्ते ।

तत्र दामोदरः—[3]

शृङ्गारेषु भवन्त्येते चतुर्धा नायकाः पुनः ।
अनुकूलः शठो धृष्टो दक्षिणश्चेति संज्ञया ॥

एकस्यामेव रमते सदात्यक्तपराङ्गनः ।
सीतायां रामवत् सोऽयमनुकूलः स्मृतो यथा ॥

तनोति पुरतः प्रीतिं पश्चाच्चरति विप्रियम् ।
कृतदोषोऽपि निःशङ्को शठः स परिकीर्तितः ॥

असत्यभाषी दुश्चेष्टस्तर्जितोऽपि न सीदति ।
व्यक्तापराधचेष्टो यः स धृष्ट इति कीर्त्तितः ॥

---

१. 'संगरेऽपि' (मु० पु०) । २. तृतीय तथा चतुर्थ चरण नष्ट अछि । ३. ई दामोदर 'सङ्गीत दर्पण' –कार दामोदर सँ भिन्न थिकाह, कारण, 'संगीत दर्पण'मे नायक-नायिकाक विचार नहि उपलब्ध अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सद्भावं गौरवं प्रेम भयं प्रथमयोषिति ।
अन्यत्रासक्तचित्तोऽपि न मुञ्चति स दक्षिणः ॥

अथ नायिकाः ।

मुग्धा मध्या प्रगल्भा च नायिकास्त्रिविधा मताः ।
किञ्चित्प्रोद्भूततारुण्या मुग्धा वामा रतौ भवेत् ॥

तत्र [1]मध्यात्वसम्पूर्णा वयसा कौशलेन या ।
वयः कौशलसम्पूर्णा प्रगल्भा परिकीर्त्तिता ॥

चतुर्दशसमा यावद्बालेति परिगीयते ।
ततस्तु विंशतिं यावन्मुग्धा प्रथम यौवना ॥

ततः षड्विंशतिं यावन्मध्या प्रोक्ता द्वियौवना ।
स्यात्पञ्चत्रिंशतं[2] यावत्प्रगल्भा तु त्रियौवना ॥

चतुर्थयौवनां केचिदत ऊर्ध्वं वदन्ति च ।
पञ्चचत्वारिंशदब्दं यावद् वृद्धा[3]ततो मता ॥

तत्र मुग्धा पञ्चधा–प्रथमावतीर्णयौवना, प्रथममदनविकारा, रतिरामा, मृदुरामा, समधिकलज्जावती चेति ।

---

१. मुग्धा (मु० पु०) मुग्धाक लक्षण पूर्वमें देले अछि अतः एहिठाम 'मध्या' होएब उचित । २. विंशतिं (मु० पु०) 'षड्त्रिशति' तक मध्याक अवधि कहि पश्चात् प्रगल्भाक 'पञ्चविंशति' कहब उचित नहि अतः 'पञ्चभिंशतं' पाठ अनुमित भेल । ३. एहि तरहे स्वमतेँ ५ प्रकारक नायिका सिद्ध भेल यथा बाला, मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा तथा वृद्धा । 'केचित्' कहि निर्दिष्ट कएल आचार्यक मतेँ एक अतिप्रगल्भा- (३५ सँ ४५ वर्ष पर्यन्त) अधिक प्रकार भेल, एवं ओहि मतेँ ६ प्रकारक नायिका भेलीह ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

या न तथा द्रुतगमना दरहसितानि च रसोदये धत्ते ।
सेयं मुकुलकुचश्रीः प्रथमावतीर्णयौवनपद–वाच्या ॥

आली–सुरतकथादौ यद्धृदि सहसा विकारसंमोदौ ।
सुरभिदि (?) तरलितहारा सा स्यात् प्रथममदन-विकारा ॥

सन्तोषयति या कान्तमतीव रमणोत्सवे ।
स्निग्धा तदुपरोधेन रतिरामेति सा मता ॥

अल्पेन रमणेनापि या स्यादामर्दिता भृशम् ।
मालती भ्रमरेणेव मृदुरामेति सा मता ॥

वासः कर्षति कान्ते कृतबाहु–[1]स्वस्तिका स्तनोपान्ते ।
नमयति वदनमधो या समधिकलज्जावती सेयम् ॥

मध्याऽपि चतुर्विधा–विचित्रसुरता, प्ररूढस्मरयौवना
ईषत्प्रगल्भवचना [2]मध्यमव्रीडिता चेति ।

शृङ्गाररससंसिक्त–कान्ता नानाकलान्विता ।
नानाबन्धविधानज्ञा विचित्रसुरता मता ॥

निधाय हृदि या कान्तं बाहुभ्यां गाढयन्त्रितम् ।
रमेत जघनान्दोलैः प्ररूढस्मरयौवना ॥

कान्ते कुचाञ्चलचलत्करपल्लवान्ते,
किञ्चित्तिरोञ्चितमुखी करमुत्क्षिपन्ती ।

---

१. 'सुस्तिका' (मु० पु०) । २. 'समधिकलज्जावती' मुद्रित पुस्तकमे पाठ अछि किन्तु से लेखक अथवा मुद्रकक प्रमादक कारणे भेल अछि ई प्रकरणक विचार कएला पर स्पष्ट भए जाएत ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[1]मामाङ्गकं स्पृश विटेति चलेति कोपा-
दीषत्प्रगल्भवचना वचनं व्यनक्ति ॥

नीवीबन्धोच्छ्वासनेच्छो रतीच्छो-
र्दीपे तल्पान्तेऽथ सख्याः समीपे ।
मन्दं मन्दं पाणिमध्यारुणद्धि,
या सा मध्या मध्यमव्रीडितेयम् ॥

प्रगल्भा सप्तधा—स्मरान्धा, गाढतारुण्या, समस्तरतकोविदा, भावोन्नता, ईषद्व्रीडा, प्रचण्डा, आक्रान्तनायका चेति ।

स्मारोद्वेगं वहन्ती स्तनकनकगिरि—प्रान्तमुन्मीलयन्ती,
वक्षो विस्फारयन्ती घनजघनतट[2]द्वन्द्वमुद्घाटयन्ती ।
नेत्रान्तं पातयन्ती दिशि—दिशि, रभसामोदम[3]त्यावहन्ती,
कृष्णं सान्वेषयन्ती व्रजति पथि मदान्धा 'स्मरान्धा' भ्रमन्ती ॥

दृढश्रृङ्गारतो यस्या भवेदिच्छा निरन्तरम् ।
नारतिर्गाढतारुण्या सेयं भोग्या मधुद्विषः ॥

समस्तव्यस्तबाह्येषु रतेष्वपि विचक्षणा ।
कान्ता प्राणहरा (?) सेयं समस्तरत[4]कोविदा ॥

उत्साह—रोष[5] [6]दरहास—विषाद—लज्जा—
चापल्य—मोह—रमणोत्सुकता—विलासैः ।
भावैः परैरपि तथा तरुणस्य चेतो
भावोन्नता हरति केलिकला—विदग्धा ॥

१. 'मामङ्गकं' (मु० पु०)। २. 'द्वन्द'। ३. 'मत्ता'। ४ 'रस'। ५. दोष। ६. 'दव' (मु० पु०)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान्तस्य वासः क्षिपति किन्तु नारोहति स्वयम् ।
पि[1]वत्यधरमुल्लासादीषद्व्रीडेयमीरिता ॥

अन्यनारीकृतं चिह्नं दृष्ट्वा कान्ततनौ रुषा ।
बन्धनादितिरस्कारं प्रचण्डा कुरुते परम् ॥

धनुर्वल्ली-समं कान्तं कृत्वा दष्टनिजाधरा ।
विपरीतरतिं धत्ते रागोदाक्रान्तना[2]यका ॥

एताभिः सर्वाभिर्मिलित्वा षोडश नायिका भवन्तीति ॥१६॥

एता एव षोडश नायिकाः प्रत्येकं खण्डिताद्यष्ट-प्रकारभेदेनाष्टाविंशत्यधिकशतसंख्यया लिखिता भवन्तीति ॥१२८॥

तथा च-

खण्डिता विप्रलब्धा च वासकसज्जाभिसारिका ।
कलहान्तरिता चैव तथैवोत्कण्ठिता परा ॥

स्वाधीनभर्तृका चान्या तथा प्रोषित[3]भर्तृका ।
सम्भोगे विप्रलम्भे च इत्यष्टौ नायिका मताः ॥

तत्र

उन्निद्रताजनितरागविलोहिताक्षः,
कान्तानखक्षत-विशेषविचित्रिताङ्गः ।

---

१. 'विरत्य' । २. 'नायिका' (मु० पु०) पूर्व मुद्रित ई पाठ सभ अर्थहीन वा अनुचित जानि प्रकृत पाठान्तर सब अनुमित भेल अछि । ३. 'चोषित०' ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यस्याः कुतोऽपि पतिरेति गृहं प्रभाते,
सा नायिका निगदिता खलु खण्डितेति ॥

अहरहमतिदूराद् दूतिकां प्रेष्य पूर्वं,
सरभसम[1]भियाता क्वापि सङ्केतदेशे ।
न मिलति खलु यस्या वल्लभो दैवयोगात्,
कथयति भरतस्तां नायिकां विप्रलब्धाम् ॥

या वासवेश्मनि स्वकल्पिततल्पमध्ये,
ताम्बूल–पुष्प–वसनैश्च समं सुसज्जा ।
कान्तस्य सङ्गसमयं [2]समवेक्षमाणा,
सा कथ्यते कविवरैरिह वाससज्जा ॥

उद्दाममन्मथमहाज्वर–वेपमाना,
रोमाञ्चकण्टकितमङ्गतलं वहन्ती ।
निःशङ्किनी व्रजति या प्रियसङ्गमोत्का
सा कामिनी किल भवेदभिसारिकेति ॥

चाटुकारमपि जीवितनाथं
कोपतः [3]स्मरतिरी(?)ष्यमतिर्या ।
तप्यतेऽनुशयमन्मथभावैः
कथ्यते तु कलहान्तरिता सा ॥

---

१. 'मतियाता' । २. 'समवेदय' (मु० पु०) ई सब पाठ अर्थक औचित्य पर विचारि प्रकृत रूपमे परिवर्तित भेल । ३. ई पाठ अशुद्ध तथा अनुचित प्रतीत होइ'छ । 'त्यजति चेर्ष्य' ई अथवा एतदर्थक पाठान्तरे होइत तँ उपयुक्त छल ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नैवागतः समुचितेष्वपि वासरेषु,
प्राणेश्वरोऽतिगुरुकार्यवशेन यस्याः ।
दुर्वारमन्मथमहाज्वर-वेपिताङ्गी-
मुत्कण्ठितां वदति तां भरतः कवीन्द्रः ॥

आश्लेषचुम्बनशतैः कुसुमादिदानैः
प्रेमोत्तर-प्रणय-कोमल चाटुवाग्भिः ।
संस्तूयते प्रियतमेन च यानुरागात्
स्वाधीनभर्तृकपदप्रकटीकृता सा ॥

चिन्ताकुलं मलिनमंशुकमावहन्तीं,
डिण्डीरपिण्डपरिपाण्डुर-गण्डभित्तिम् ।
निर्भूषणां प्रियवियोगजदुःखतप्तां
तां प्रोषितप्रियतमां प्रवदन्ति सन्तः ॥

अत्रापि स्वकीया-परकीया-सामान्यवनिता चेति प्रत्येकमेतासां भेदेन ता अष्टाविंशत्यधिकशतनायिका, इदानीं चतुर(शीत्य)धिकशतत्रय-नायिका भवन्तीति ॥३८४॥

तत्र

कुलजा(न्या[1])ङ्गना वेश्या त्रिधा स्यादभिसारिका ।
कुलजा संवृता त्रस्ता सव्रीडा तद्गृहं व्रजेत् ॥

सलीला स्वेषु भावेषु त्रस्ता विक्षोभितानना ।
मन्दस्खलितसंलापा विभ्रमोत्फुल्ललोचना ॥

१. कोष्ठमध्य देल पाठ अर्थवश कल्पित थिक । मुद्रित पुस्तकमे नहि अछि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आविद्धगतिसञ्चारा शनैर्गमनकारिणी ।
नायकं परनारी तु व्रजेन्नान्येन वीक्षिता ॥

सखीयुक्ता मदाविष्टा स्फारिताक्षी त्वशङ्किता ।
सनूपुरा यथाकामं वेश्या सरति नायकम् ॥

शुक्लपक्षे कृष्णपक्षे द्विधा स्यादभिसारिका ॥

मल्लिकामालधारिण्यः सर्वाङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।
क्षौमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥

कालागुरुविलिप्ताङ्गी नीलरागवदम्बरा ।
चन्द्रोदय-परित्रस्ता कृष्ण(?)कृष्णाभिसारिका ॥

इति
श्रीलोचनशर्मविरचितायां रागतरङ्गिण्यां
रागसंस्थानादिकथनं नाम पञ्चमस्तरङ्गः समाप्तः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट (क)

उदाहृत गीत सभक भावार्थ

राघवीय बराडी १. साँझक बेराँ जमुनाक तीराँ —(पृ० ६२)

(अभिसारक कथाक अभिसारिका द्वारा कएल वर्णन)

संध्याक समय, यमुनाक कात कदम्बवनक गाछक तर, हे सखि ! की कहू ओहि कालक ! कन्हैया अङ्गमे लए वा आक्रमण कए, प्रत्यक्षे कामक सङ्ग युद्ध वा कामयुद्धमे प्रवृत्त भेलाह ॥ हमरा कन्हैयासँ भेट भेल—ई बात अनतए नहि बाजी ॥ ओ छाती परक वस्त्र हटाए, हाथेँ केश पकड़ि मुँह तकैत अधर पिबए लगलाह। मुग्ध ओ, बेरि बेरि हमर कुचक स्पर्श करए लगलाह, जेना निर्धन व्यक्ति सोनाक कटोरा प्राप्त कएने हो। कवि विद्यापति कहैत छथि—हे युवती ! अहाँक युक्ति बुझल, अहाँक कहबाक अनुसार राजा शिवसिंह दोसर मधुर-माधव छथि, जे कि उक्त प्रकारे लखिमा देवीक सङ्ग रमण करैत छथि।

२. आनन्दकन्दा-पुनिमक चन्दा—(पृ० ६३)

(अभिसारक हेतु उद्यत नायिकाक वर्णन)

आनन्दक मूल पूर्णिमाक चन्द्रमा, सुमुखीक मुखक अपेक्षासँ मलिन छथि। ई श्यामा (षोडशवार्षिकी) सुन्दरी अधरसँ मधुरीक फूलकेँ तथा हँसीसँ श्वेतपुष्पक शोभाकेँ जितइत छथि। वाटमे विद्युत्-सदृश ओ धन्या व्रजराजक दासी भेटलीहि। हुनक केश चामरक समान मोद-प्रद, वा मेघक समान कारी वर्णक अछि, तथा नेत्ररूप नीलकमल सुखकारी अछि। जेना कामदेवक रमणी (रति) ओही तरहक ओहि धन्याक दाँत हीराक कनी जेकाँ चमकैत छल। हुनक उक्ति तथा व्यङ्ग्यार्थसँ बुझाए पड़ल जे—ओ युक्तिसँ पतिकेँ मनबए चलल छथि। ओ अपना मनमे हरिकेँ अभिमानी जानि, रासवनमे हुनकासँ मिलए जाइत छलीह। ओ गोपी, रातिमे विद्युत् समान उज्ज्वलवेषा छलीहि; दोसर एक दूती आगू जाइत छलैन्ह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'लोचन' कविक ई वाणी थिक जे, ई शुभाङ्गी सज्ञाना छथि जे अपना कान्तकेँ लोकक राजा (स्वामी) जानि भजलैन्ह ॥

पहड़िआ (बराड़ी) १. ससधर–सहस–सार बटुराव...(पृ० ६५)

(नायिकाक वर्णन)

सहस्र चन्द्रमाक सार बटोरल जाए तथापि ओहि सुमुखीक मुखक सादृश्य नहि पाओत। देखू देखू, आइ स्वर्ग वा सृष्टिक सर्वस्व ई उर्वशी (स्वर्गक प्रसिद्ध अप्सराक प्रतिमूर्ति) जाए रहल छथि। नाना प्रकारक हिनक दृष्टिभङ्ग अत्यन्त मनोहर अछि, हिनक नेत्रक उपमा (की हो से) मनहुँ नहि अबैत अछि। अरुण कान्तिक नीक नीक माणिक्य (हिनक भूषणमे) अछि, तथा स्वभावतः स्वच्छ गजमुक्ता देखबामे अबैत अछि। बीच बीचमे रक्तवर्ण, मँजलासँ अति श्वेत, एहि तरहक दाँतक उपमा के दए सकत। काँच कड़चीक समान रोमावलि प्रतीत होइ'छ, जाहि पर चञ्चल हारावली ओझराएल अछि। कामदेव (कामी नायक) मन लगाए अपन चतुरता कएलैन्हि, किन्तु कुचश्रीफल (स्तनरूप बेलक फड़) नहि नवाए सकलाह। हाथीक सूँढ़ ऊरुक उपमा नहि पाबि, लाजे संकुचित भए स्वयं नुकाएल। हरिहरक प्रणयी (भक्त वा स्नेही) 'भीष्म' कवि कहैत छथि जे, ई सब प्रभावतीक पति राजा जगन्नारायण जनैत छथि ॥

२. चामर चिकुर वदन सानन्द...पृ० ६६

(नायिकाक वर्णन)

चामरक समान केशसँ युक्त आनन्दपूर्ण मुख जेना पूर्णिमाक चन्द्रमाक सर्वस्व हो। आँजनसँ युक्त, मीन–समान चञ्चल, विमल नेत्र, खञ्जनकेँ जितै'छ। ब्रह्माक निधिक स्वरूप ओ नायिका क्षण भरिक हेतु भेटलि, ओकर वर्णन नहि कए सकैत छी। (ओहि रमणीक) दाँत दाड़िमक (बीआक) समान कान्तिवला, भौंह धनुषक सदृश, कुटिल दृष्टि तीक्ष्ण-विष–युक्त वाण छल। हुनक नाक तिलक फूलक समान, बहुमूल्य छल। सुन्दर शंखक समान ग्रीवामे मोतीक पाँती (माला)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छलैन्हि, बाहु लताक समान,—हाथ पल्लवक समान कान्तिवला छल। दूनू कुच, जोड़ा कमलक (एके सङ्ग उत्पन्न दू कमलक) समान अछि जकरा ऊपर माला छैक तथा घन रोमावली ओहि कमलक नाल समान उचित रूपे छल। नाभि मण्डलाकार छल, नितम्ब (डाँरक नीचाँक पछिला भाग) हाथीक मस्तकक समान छल, केराक थम्भक सदृश जङ्घा ओकर अवलम्ब छल। दूनू ऊरू दू करभक (मणिबन्धसँ कनिष्ठा पर्यन्त भागक) समान अनुमित भेल। पैर कमलक समान, नख ध्वजाक समान। कुलगुणक गौरव, नियम तथा विवेक, सबकेँ ओ विनोदिनी अतिरिक्त (व्यर्थ) वस्तु बुझलैन्हि। सरस तथा सुबुद्धि लोचन कवि कहैत छथि—एहि तरहक रमणीकेँ रुक्मिणी-पति जनैत छथि ॥

देशी बराडी   १. आनन लोनुअ वचने बोलए हँसि... (पृ० ६८)

(तटस्थ प्रेक्षक द्वारा नायिकाक वर्णन)

लावण्य-युक्त मुखेँ हँसि कए बजैत छथि, जेना शरद-पूर्णिमाक चन्द्रमा अमृतक वर्षा करैत होथि। अपूर्व रूपवती गजगमनी तरुणी जाइति देखलि। स्वच्छ, नीक नेत्र, काजरेँ रङ्गल छल जेना अरुण (लाल) कमल-पत्र पर भ्रमर बैसल हो (एहि ठाम 'अरुण' क स्थानमे कतहु 'विमल' पाठ अछि से नीक होइत) मध्य-भागेँ क्षीण ओ धन्या कुच-श्रीफलक भारेँ जेना टूटि जाइति तेना हमरा बुझाए पड़ल। कविशेखर कहैत छथि—एहेन अपूर्व रूप देखि ओहि कमलमुखीकेँ राजा नसरदशाह स्वीकार कएल।

२. सानन्द वदन विहुसिआ... (पृ० ६८)

(दूतीक द्वारा—अभिसारक हेतु नायिकाक प्रोत्साहन)

सानन्द विहुँसैत मुखवला, मधुवन जाइत अहाँक रसिक भेटलाह। ओ, कलानिधि तथा कोटि मदनक समान सुन्दर, अहूँ सब प्रकारेँ कामदेवक प्रिया (रति)क समान छी। चन्द्रमासँ धवलित एहि वसन्तक रातिमे हरिक सङ्ग काम-क्रीडाक विचारेँ सजनी सब चललीह। वन, फूल सबसँ युक्त अछि, कपूरक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुगन्धिवला अथवा शीतल, वायु वहि रहल अछि। नाना प्रकारक पक्षी सब शब्द कए रहल अछि– जे सब कामदेवक सर्वस्व थिक। की अहाँ मधुर-मधुर मुरलीक शब्द नहि सुनि रहल छी ? ई अहाँक पुण्यकेँ समुचित रूपेँ सफल करत; वा अपन पुण्यकेँ सार्थक करू तखनहि सबटा समुचित होएत। 'लोचन' कवि कहैत छथि— सरस तथा विमल बुद्धिवला मधुमती देवीक पति राजा महीनाथ सब बुझैत छथि ॥

माधवी वराडी १. ससनपरसेँ खसु अम्बर रे...(पृ० ६९)

(तटस्थ रूपेँ नायिकाक सौन्दर्यक वर्णन)

वायुक स्पर्शसँ वस्त्र खसला पर ओहि धन्याक शरीर देखल, जेना नवीन मेघक नीचाँ विजलीक रेखा चमकैत हो। आइ ओहि धन्याकेँ जाइत देखला पर हमरा ई भाव उत्पन्न भेल जेना निरवलम्ब सोनाक लत्ती पृथ्वी पर चलैत हो। ततः पर, पुनः आश्चर्य रूप वा अपूर्व कुच युग-रूप कमल देखबा मे आएल जे विकसित नहि भेल अछि; तकर किछु कारण छैक, से ई—सोझाँ मे मुखरूप चन्द्रमा छथिन्ह। विद्यापति कवि गाबि, कहैत छथि जे, रसिक नागर हासिनी देवीक प्रिय देवसिंह राजा ई विषय जनैत छथि ॥

२. मलिन वसन विसमादलि रे...(पृ० ७०)

(दूतीक (द्वारा) नायिकाक सान्त्वनाक हेतु नायकसँ प्रार्थना)

मलिन वस्त्र धारण कएने, विषसँ मातलि, क्षीण शरीरा ओहि धन्याकेँ देखल; जे नेत्र-जलसँ पूर्ण तथा मानसिक चिन्तामे लीन छलीह। समीपमे बैसि कतेक पुछलिऐन्हि तथापि ओही तरहें मर्माहत भेलि माथ झुकओने रहलीह। ओहि सुमुखीकेँ कोनो सुख नहि (नीक लगैन) छलैन्ह, किछु बजितहुँ नहिं छलीह; मुख श्रीहत छलैन्ह। अनुक्षण ओ सौभाग्यवती विखिन्ने भए दीर्घनिःश्वास छोड़ैत रहलीह। ओ कमलवदनी-सबमे मणि वा माणिक्य रूप, धन्या, एवं सज्ञाना छथि—से जानि हे हरि ! शीघ्र जाए हुनका बुझाउ। 'लोचन' कहैत छथि- मनोविज्ञ ! मधुमती देवीक प्रिय राजा महीनाथ सब बुझैत छथि ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भठियाली वराडी १. नन्दक नन्दन कदँबेरि तरुतरेँ...(पृ० ७१)

(नायिकाक प्रतिबोधन)

नन्दक पुत्र कदम्ब वृक्षक नीचाँ (बैसि) धीरे धीरे मुरली बजाए रहल छथि। नियत समय पर आबि संकेतस्थानमे बैसल ओ बारं-बार अहाँकेँ बजावए पठाए रहल छथि। हे श्यामा अहाँक हेतु मुरारि अनुक्षण विकल रहैत छथि॥ जमुनाक तीरक उपवनमे उद्विग्न भेल ओ-घूमि-घूमि ओही दिश (अहाँक बाट) तकैत गोरस बेचि अबइत जाइत प्रत्येक जनीकेँ वनमाली (अहाँक विषयमे) पुछैत छथिन्ह। अहाँ सुमति छी, मधुसूदनो मतिमान छथि, तेँ अहाँ हमर वचन सुनू। विद्यापति कहैत छथि—हे वरयुवती ! नन्दकिशोरक आराधना करू॥

२. रितुपति रितु, रतिपति तहँ उनमति...(पृ० ७२)

(नायकक प्रतिबोधन)

वसन्त ऋतुमे कामदेवसँ उन्मत्त भेलि पुण्यवती अपन घर छोड़लैन्हि, रतिक्रीड़ाक अभिलाषेँ बिजुवनक (व्रजवनक) निविड उद्यानमे मोहवस अहाँकेँ सबठाम तकैत छलीहि। श्यामा (षोड़शवार्षिकी) सुवदना, अहाँक अधीना ओ, विषम विषादेँ ओहि समय जेहनि देखाए पड़लीह से कहि नहि सकैत छी, के जाने, प्रमाद-वश ओ जिउतीहि वा नहि ? चानन, चन्द्रमा, मन्द मलय—(दक्षिण) वायु मेघ ओ मयूरक शब्द, ई सब ओहि शुभाङ्गीक शरीरमे कतेक कतेक दुःख दैत छैन्हि। एहेन हुनक कोन दोष छैन्हि जकरा कारणेँ प्रिय (अहाँ) हुनक वचन कानमे नहि दैत छिऐन्हि ? अहाँक समान प्रियतम सेहो ओहि सहचरीकेँ परम निदान (अन्तिम-स्थिति) कए रहल छिऐन्हि। आबहुँ दोषकेँ विसरि, क्रोधकेँ हँटाए, ओहि सुमुखीक समाधान करू। 'लोचन' कवि कहैत छथि जे—उर्वशी देवीक मनोरञ्जक राजा नरपति, रसकेँ जनैत छथि॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नेपाल वराडी—उपमित्र आनन नीरज...(पृ० ७४)

(नायिकाक अनुनयन)

अहाँक मुखकेँ यदि कमलक उपमा देल जाए तँ से उचित नहि कारण ओ पङ्क (मलिन वस्तु) सँ उत्पन्न अछि; यदि चन्द्रमासँ उपमा देल जाए तँ सेहो अनुचित, कारण, ओ दिनमे मलिन होइत छथि (अहाँक मुख दिन राति सतत उज्ज्वल रहैछ) भौँह अहाँक अनुपमे अछि, सुन्दर अधर नवीन पल्लवक रुचिकेँ जितैत अछि। हे प्रेयसी ! सुनू, हमर कोन भारी अपराध भेल ? मलयानिल वहि रहल अछि जे शरीरकेँ जराए रहल अछि, तेँ मनोरथमे बाधा नहि करू ॥

कौशिक—लता तरुअर मण्डप दीअ...(पृ० ७५)

(वसन्तक विवाहक रूपक)

लता वेष्टित वृक्षमण्डपमे निर्मल चन्द्ररूपी दीपसँ ओकर (मण्डपक) भीतो ढेउरल अछि। पद्मनाल (विसाँढ)सँ सुन्दर अरिपन भेल अछि, पल्लव रूप लाल पहिरन (परिधान) देल गेल अछि। हे माता (वनदेवी) सब आबि, मङ्गलगान करू, (जाहि सँ) वसन्तक विवाह बनि जाए। (ततः पर) मधुकरी सब मङ्गल गान करैछ। द्विज श्रेष्ठ (पक्षी सबमे उत्तम एवं श्रेष्ठब्राह्मणस्थानीय) कोकिल (विवाहक) मन्त्र पढ़ाए रहल छथि। (एहिमे) मकरन्द (पुष्प–मधु) हस्तोदक, दानक जलक स्थानमे अछि। चन्द्रमा तथा मन्द वायु वरियाती छथि। कनक कदली (सोनाक रङ्गक केरा)क पातसँ वन्दनवार (द्वारमाला) बनाओल अछि, वेली फूल रूप लावा छीँटल अछि, पलासक फूलसँ सिन्दुरदान कएल गेल। मानिनी सभक मान विदाइमे भेटल। नवीन कामदेवक क्रीडा (कामक्रीडा)क औत्सुक्य अछि—ई 'विद्यापति' कवि दृढ़ रूपेँ कहैत छथि। नवीन नागर रसिक, रेणुका देवीक प्रिय, मन्त्री महेश एहि विषयकेँ जनैत छथि।

(एहि विवाहक रूपकमे कन्याक निरूपण नहि होएब त्रुटि बुझाइछ)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देश देशाख १. मान परीहर हे करु वचन मोरा...(पृ० ७६)

(मानिनीक मनाओन)

हे (मानिनी !) मानक त्याग कए हमर वचन करु, हमरा मनोभव मारि रहल अछि (तेँ) अहाँक शरण धएने छी। आइ हमरा विमुख नहि करू, नहि करू; अपूर्व प्रेमसँ आइ फेरि (दुनू गोटएक) सम्मेलन भेल अछि। हे कमलमुखि ! हमरा आलिङ्गन-दान दिअ, विनय कएला पर संसारमे के मानक त्याग नहि करैछ ?

२. नीरज-नयनि हे गिरिराज उरोजे...(पृ० ७७)

हे कमलनयने, पर्वतसमान-स्तन युक्त, अहाँ अपन मुखकमल (हमरा) सम्मुख किएक ने करैत छी ? अमृतमिश्रित मधुर वाणी बाजू; हमरासँ की विनयक हानि भेल अछि। हर्षित भए ताकू; हँसि कए किछु ग्रास करू (अनशन त्यागू); अपन मन उदास नहि करू। जे अबूझ होइत अछि से नहि बुझैत अछि, अहाँ तेहनि नहि छी, अहाँक समान बुझनुक लोक पृथ्वी पर नहि देखल अछि। 'लोचन' कवि कहैत छथि—अपन प्रिय जानि रोष विसरि दिअ, प्रेयसी जानि अहाँक भजन कएने छथि। उर्वशी देवीक वशीभूत, रस तथा रागमे निविष्ट नरपति राजा एहि रसकेँ प्राप्त कएने छथि ॥

शुद्धारामकरी—सा जयति सुरसरिदमर...(पृ० ७८)

(गङ्गाक स्तुति)

देव, दानव, नाग तथा मनुष्य, सबकेँ अभीष्ट फल देनिहारि, काशक फूल, मृणाल, मोती एहि सभक समान स्वच्छ धारासँ वहनिहारि, तिल-युक्त अक्षत, पुष्प, चन्दन एहि सभ सामग्रीसँ देवलोकनिसँ पूजित, सुधासँ युक्त........................ ब्रह्माक हाथमे रहनिहारि, शिवक मस्तककेँ शोभित करैत, कृष्णक चरणसँ तरङ्गित, संसारक (द्रवीभूत) धर्मस्वरूप, कमल तथा चन्द्रमाक सदृश कान्तिसँ युक्त-जलक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रवाहसँ शोभित, जह्नुमुनिक कन्या, भीष्मपितामहक माता, पृथ्वी पर शोभित, कविराज पूरनमल्लसँ— पतित तथा पामरक उद्धार कएनिहारि-रूपे वर्णित-ओ देवनदी गङ्गा विजयिनी-सबसँ उत्कृष्ट छथि, अर्थात् हुनका हम प्रणाम करैत छिऐन्हि ॥

देशी रामकरी—कुसुमवानविलासकानन...(पृ० ७६)

(नायिकाक स्वरूप-वर्णन)

कामदेवक क्रीड़ाक उपवन समान केशमध्य, सिन्दूरक रेखा, निबिड मेघमध्य सुन्दर अरुण (सूर्यक सारथि, जे रक्तवर्णक छथि) अपन शरीर देखाए रहल होथि—एहि तरहक प्रतीत होइ'छ। आइ देखू—गजराज सदृश गमन कएनिहारि, तीनू लोकक सारभूता एहि श्रेष्ठ युवतीकेँ, जेना विधाता संसारमे कामदेवक विजयपताका बनओने होथि (तेहने ई प्रतीत होइत छथि)। शरद् ऋतुक चन्द्रमाक समान सुन्दर मुँहमे चञ्चल नेत्र, निर्मल सोनाक (स्वर्ण वर्णक) कमल पर चढ़ि, एक जोड़ा खञ्जन जेना खेलाइत हो, तेहन अछि। हिनक अधरोष्ठ पल्लवक सदृश मनोहर अछि, ताहि मध्य दाड़िमक (बीआक) कान्तिवला दाँत अछि, ओ, सघन मूँगाक पात पर, सुधासँ सिक्त कए राखल गजमुक्ताक समान अछि। मधुर हाससँ प्रसाधित मुखेँ जहिना ई बजैत छथि, (तखन) तीनूलोकमे मत्त कोकिल, वंशी तथा वीणाक शब्द शोभित होइ'छ (एहन बुझाए पड़ै'छ) देवपर्वत-(सुमेरु)क समान स्तन पर महार्घ मोतीक हार, स्वर्णनिर्मित शिवक मस्तक पर गङ्गाक निर्मल धारा जकाँ प्रतीत होइ'छ। हाथीक बचाक कोमल सूँढ़क समान सुन्दर दुनू जङ्घाक आरोह अछि, जे मदन पहलवानक व्यायामक हेतु गढ़ल, सोनाक खाम्हक समान अछि। सुकवि (विद्यापतिक उपाधि) ई सत्य रूपक गान (वर्णन) कएने छथि जे कि, लखिमा देवीक प्रिय राजा शिवसिंह जनैत छथि ॥

प्रीतिकरी—स्निग्धकुञ्चितकोमलं...(पृ० ८१)

(नायिकाक वर्णन, तथा नायकक अनुकूलाचरणक हेतु अनुरोध)

चिक्कन घोंघराएल कोमल केशसँ जनिक कोमल कपोल शोभित अछि। अधरोष्ठ जनिक बिम्ब फलक समान सुन्दर, मुख शरद् ऋतुक चन्द्रमाक समान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अछि, विजयशङ्खक समान कण्ठ, विशाल नेत्र विचित्र अछि; मुखक सौरभ उत्तम अछि, बाहुलता मृणालक समान, कमलक मालासँ अहाँक सुन्दर शोभा अछि ॥ गद्गद हाससँ अहाँक दाँत सुन्दर अछि, हे सुन्दरि अहाँ हमरा हृदयकेँ शोभित करू ॥ छाती पर स्थूल, कठोर विशाल तथा मृदु, बेलक फड़ सदृश शोभासँ विधाताक द्वारा विचित्र बनाओल, जोड़ा स्तन निरन्तरता (परस्पर-सामीप्यकेँ) प्राप्त कए रहल अछि। हे श्यामा! (षोडशवार्षिकी) अहाँक त्रिवलिक रेखा सुन्दर अछि, अहाँ जङ्घाक भारसँ मन्दगति भेल छी; मातल हाथीक सूँढ़क समान अहाँक जङ्घा अछि, अहाँ चलबाक रीतिसँ हँसीकेँ जीतने छी ॥ ई सुन्दर तथा मन्द गमन करैत छथि जेना हँसी अपना पतिक सङ्ग चलैत हो ॥ अहाँ अत्यन्त रूपवती छी, यौवनक प्रथमे प्रथम उत्पत्ति अछि, निरर्थक कथासँ कोन फल अपन रूपक मोहकेँ त्यागू; शोक, चिन्तित वस्तुक चिन्ता छोड़ू। दुःसह कामज्वर प्राप्त भेल अछि, आगिक तापबाक समान जरा रहल अछि। दिशा दिशामे वायु.................... ? दग्ध कए रहल अछि। हे श्यामा! सुवन्दिते! समयक गीतसँ अहाँ अत्यन्त शोभित छी, आत्मसमर्पण-रूप (वचनक) धाराक वर्षासँ, हे सुन्दरि हमरा सिक्त करू। हे सुन्दरि अधरक सुधा रूप मधुपान कराए हमरा हृदयकेँ सिक्त करू ॥ 'चन्द्र' कवि रूप जे जयदेव कवि हुनक मुद्रा कएल (मोहर देल) ई वचन थिक जे-हे राधा अहाँ मानक त्याग करू। हमर वचन धारण कए कृष्णक अनुसरण करू। हे शुभे! दोसर कामकला की थिक ? चन्द्रकला (कवयित्रीक नाम) कहैत छथि— हे मानिनि! अहाँ एहि वचनकेँ करब, माधवक अनुसरण करब ॥

ललिता—सपने देखल हरि...(पृ० ८४)

(स्वप्न-समागमक वर्णन)

स्वप्नमे हरिकेँ देखल, शरीर रोमाञ्च-पूर्ण भेल, कामदेव जागि उठलाह। हे गौरी! ओही अवसरमे हमर निद्रा भग्न भेल, मनक वासना मलिन भेल। हे सखि! सूतल हमरा जगाए अहाँ की पाओल, स्वप्नहुक संग छोड़ाए देल। (स्वप्नमे) श्याम सुन्दर हरि आँचर पकड़ि नीवीक डोरी खोलि रहल छलाह। आओर जतेक रस उत्पन्न भेल से कतेक कहू, कृष्ण गोआर (अनागर) छथि से के कहैत अछि ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरि शय्याक सिरहम दिश ससरि कए, हमर ग्रीवा पकड़ि लेलैन्ह, मुखसँ मुख एहि तरहेँ मिलओलैन्हि जेना कमलसँ भ्रमर मिलत हो। मनक सिद्धि पूर्ण भेल, ई (अवसर) भाग्य आनि देलक, अहाँक दोष लगाए फेर भाग्य ओहि सिद्धिकेँ छीनि लेलक ॥

केदारा—जनि हुतवह हवि आनि मेराओल...(पृ० ८६)

(नायिकाक अनुचिन्तन नायक द्वारा)

जेना अग्निमे घृत देल गेल हो, ओहेन विकार भेल। अहाँक दुनू नेत्र कामक विषम (कठोर) बाण जेकाँ हमरा हृदयकेँ वेधि रहल अछि। हरि! हरि!! (पश्चात्ताप-सूचक) हे सुमुखि! कथी लेल विहुँसि हँसिकँ हमरा तकलहुँ, जाहिसँ हमर जीवन सन्देहमे पड़ि गेल। अहाँक अपूर्व सुन्दर विशाल स्तन पर मोतीक हार, कनकाचल पर निर्मल जलक दू धारा बहैत समान लगैत छल। 'विद्यापति' कहैत छथि, हे वर नागर! सुनू, सब तरहक प्रकार (उपाय) भए जाएत। राजा शिवसिंह एहि तरहेँ गओलैन्हि; लखिमा देवी उदार छथि ॥

केदाराकेदार—आँचरे वदन झँपावह गोरि...(पृ० ८७)

(उपदेशक ब्याजेँ नायिकाक स्वरूपमे व्यतिरेक–आधिक्यक निरूपण)

हे गौराङ्गि! आँचरसँ मुँह झाँपि (झँपबाए) लिअ, एहि राज्यमे चन्द्रमाक चोरी भेल छैक से सुनैत छिऐक। प्रति घर आबि पहरुआ ताकि गेल छैक (यदि अहाँ मुँह नहि झाँपब तँ) एखनहि चन्द्रमा चोरएबाक दोष अहाँकेँ लागि जाएत। अहाँ ने बाहर सुतू, ने ककरो दिश तकिऔक। (यदि बाहर सुतब तँ) चन्द्रमाक भ्रमेँ अहाँक मुँहकेँ राहु ग्रसि लेत। (यदि ककरो दिस तकबैक तँ) निर्भीक (स्थिर भेल) देखि, फँसरीक डोरी अजमाए अहाँकैँ (अहाँक आँखिकेँ) खञ्जन कहि बान्हि देत। विद्यापति कहैत छथि—शङ्का नहि करू, चन्द्रमाकेँ कलङ्क लागल छैन्हि। अर्थात् अहाँक मुख निष्कलङ्क अछि तेँ चन्द्रमाक भ्रम नहि होएतैक ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विहागरा केदार, उधसल केस कुसुम छिरिआएल...(पृ० ८६)

(कृत नायकसङ्गमक सखीक द्वारा प्रकाशन)

केश अस्तव्यस्त अछि ओहिमे गूँथल फूल सब छिड़िआएल अछि, दाँतसँ अधरोष्ठ कटल अछि। नेत्र एहन बुझाए पड़ैछ जे रक्तकमलक पात पर मधुक लोभे भ्रमर बैसल हो। हे कलावती आइ छल नहि करू, लाज त्यागि, कोन नागरक संग राति बिताओल अछि से हमरा कहू। स्थूल स्तन पर जे सुन्दर नखक चिह्न अछि, तकरा हाथसँ कथी लेल दबाए रहल छी। सुमेरुक शिखर पर चन्द्रमाक उदय जखन भए गेल तखन चोरी छिपल कोना रहल। 'विद्यापति' कवि कहैत छथि—'महलम (?) युगक पति' ग्यासउद्दीन सुरतान (सुल्तान) कतेक बेरि व्यक्तो चोरिकेँ गुप्त करैत छथि; ओ चिरजीवी होथु।

विशेष—'मित्र' तथा 'मजुमदार' अपना 'विद्यापति'मे 'मलहम' पदक अर्थ लिखैत छथि जे-जकरा भगवानक कोनो विशेष वाणी प्राप्त रहैत छैक, फारसी भाषामे ओहि व्यक्ति विशेषकेँ 'मलहम' कहल जाइत छैक। तें एतए 'मलहम' तथा 'युग-पति' (युग-प्रवर्तक कोनो विशिष्ट परम्पराक स्थापक) ई दूनू विशेषण ग्यासुद्दीनक हेतु प्रयुक्त अछि।

मलारी केदार, कीर कुटिलमुख न बुझ वेदन-दुख...(पृ० ६०)

(विरहीक प्रलाप)

"कीर (शुक) कुटिलमुख (टेढ़ तथा परद्रोही-मुखवला) अछि, ई वेदनाक (विरहकष्टक) दुःख नहि बुझैछ, अनके अनुसार बजैत अछि—जे केओ कहैछ सैह बजैत अछि। अथवा ई जे कहैत छथि (शुकक विषयमे) से प्रामाणिके थिक। चक्रवाक स्वयं विरह-वेदनासँ दग्ध अछि, दुःख सहि रहल अछि (एहि स्थितिमे) आन के सत्य कहत? हरि! हरि!! (दुःख-सूचक) हमर उर्वशी (हमरा हेतु स्वर्गक उर्वशीक समान हमर प्रिया) की भेलीहि। (हुनका) तकैत दौड़ैत फिरैत छी; कतेक बेरि मूर्छित भए खसैत छी। पर्वत, नदी, पैघ पैघ वृक्ष, कोकिल, श्रेष्ठ भ्रमर, हरिण, हाथी तथा चन्द्रमा, (हिनका) सभक पैर पर खसैत छिऐन्हि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(सविनय पुछैत छिऐन्हि, किन्तु) सब निर्दय भेलाह केओ हुनक नाम नहि कहैत छथि । मधुरसँ मधुर ध्वनिवला नूपुरक शब्द (जकाँ) सुनि, नदीक तीरमे हुनका भेटबाक प्रत्याशासँ घुमैत छी । हमरा कर्में (दुर्भाग्ये) (जकरा हम नूपुरक शब्द बुझल से) कलहंसक (हंस पक्षीक) शब्द भए गेल, हम आँखिसँ नोर खसाए रहल छी । हरि-विष्णु, तथा विष्णुक पदक नदी (गङ्गा) तथा संपूर्ण संसारेकेँ साक्षी राखि 'भीष्म' कवि कहैत छथि जे "प्रभावती देवीक पति मोरङ्ग प्रान्तक शासक जगन्नारायण राजा ई जनैत छथि" ॥

पहडिया केदार, विसरल ओरे तैसन सनेहा पिअ मोरे...(पृ० ९२)

(विरहिणीक दूतीसम्प्रेषण)

हमर प्रिय ओहि तरहक स्नेहकेँ बिसरि गेलाह, अथवा ओ परदेशमे पर-वश भए रहि गेल छथि । अवगति तथा अनुभवसँ ई नीक जकाँ बुझल जे पुरुष-जातिक हृदय निर्दय होईत छैन्ह । हे प्रियसखी ! नीक जकाँ हमर विनती बुझाए देबैन्ह— हमर कोन चिन्ता, हमर जीवन लए, हमर प्रिय जीवथु । गुणमय गदाधर कवि कहैत छथि—गुणमय, धीर, कुमर श्रीगजसिंह, रस जनैत छथि ।

कामोद केदार, अबला अंशुक वालभु लेला...(पृ० ९३)

(प्रथम समागमक वर्णन)

वल्लभ, अबला (अपन वल्लभा)क वस्त्र हटओलैन्हि, धनी (धन्या प्रिया) पाणि-पल्लवसँ (अङ्गकेँ) अन्तर्हित कएलैन्हि, झँपलैन्हि (तथा बजलीहि)—हे कान्ह ! हठ नहि करू, अहाँक अभिलाष पूर्ण नहि होएत, पहिल दिनक रभस विचारक स्थान थिकैक । आब नवयौवन, समय देखि स्पष्ट रूपे जनाए, व्यक्त होएत । मदन भण्डारक सुरत चातुर्य असमय जानि मोहर दए बन्द कएल अछि । "मदन भंडार सुरत रस आनी" एहि तरहक पाठान्तरमे (जे कि प्रकृत पाठसँ किछु नीक अछि) एहेन अर्थ होएत—मदनक भंडारसँ सुरतक रस आनि असमय जानि (एहि शरीरमे) मोहर दए बन्द कएल अछि । नेत्र मुकुलिते अछि (लज्जा वा भय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वश ओ) खुजि नहि रहल अछि। हृदयक डरेँ शरीर काँपि रहल अछि। 'विद्यापति' कहैत छथि नवोन, अनुरागी प्रियक हृदयमे लागि पराभवक सहन कए लिअ। "पिअ हित लागी" एहेन पाठ रहला पर "नवीन, अनुरागी प्रियक हितक हेतु पराभवो सहि लिअ" ई अर्थ होएत। (पूर्व अर्थसँ ई अर्थ किछु नीक प्रतीत होइ'छ)।

केदारमालव, गौर देह सुढार सुवदनि...(पृ० ९५)

(विपरीतरतिक वर्णन)

गोर सुगठित वा सुन्दर उतारसँ युक्त, शरीर वाली, सुवदना छथि, हुनक स्वामी श्याम तथा सुन्दर छथिन्ह। जेना मेघक ऊपर बिजुरी चलैत हो-सत्ये एही तरहेँ लागि रहल अछि। पीठ पर सघन कारी केशक जुट्टी देखि एहेन लगैत अछि जे निर्जर, खूब जराए शुद्ध कएल, सोनाक पाटी हाथमे लए कामदेव लेख लिखि रहल होथि। मणिक मेखला (डएकस)क शब्द अति चञ्चल अछि, क्षणो भरिक हेतु स्थिर नहि होइ'छ। ओ, एहि तरहक प्रतीत होइ'छ जे, जाँघ, मदन राजक दोहाइ दए दए, हुनक यशक गान कए रहल हो। रमणी अपन थाकनि नहि मानि रहल छथि, रातिए क अवसान (समाप्ति) संभावित अछि। 'सिंह भूपति' कहैत छथि—ओ रमणी राधा थिकीह, रसिक यदुपति थिकाह॥

कामोदमङ्गल, जय मङ्गला जय मङ्गला...(पृ० ९६)

(भगवतीक प्रार्थना)

जय तथा मङ्गलसँ युक्त, शीघ्र अपन बलकेँ प्रकट कएनिहारि हे 'जयमङ्गला' देवी ! अहाँ प्रसन्न होउ। अति बलवान्, क्षय कएनिहार, मधुकैटभ, महिषासुर, धूम्रलोचन, शुम्भ तथा निशुम्भ एहि देवकण्टक-देवता लोकनिकेँ कष्टप्रद (राक्षस) सबकेँ संग्राममे क्षणभरिमे अपन विशाल बलसँ अहाँ विदारि देने छी। जाहि रूपे सब असुरगणकेँ मारि देवगणकेँ अभय वर देने छलिऐन्हि ओही तरहेँ हे जगन्मातः ! हमर आशा पूर्ण करु, सम्हारि कए हमर शत्रुगणकेँ मारू। जे मनुष्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाहि अभिलाषसँ अहाँक ध्यान करैत अछि ओ ओहि फलकेँ पबैत अछि। कवि 'चतुरानन' गाबि कहैत छथि—हे भवानी हमर सब काजकेँ सिद्ध करू।

देवकामोद, देखहो गे माइ हे जोगि एतए कतए...(पृ० ६७)

(महेशवानी)

हे माइ! देखू ई जोगी एहिठाम की करए आएल छथि; ई गौरीक स्नेहेँ जहाँ तहाँ घुमैत रहैत छथि। शृङ्गीकेँ (वायुसँ) भरि मधुरवाणीसँ पूरने छथि। ई जोगी भीखो नहि लैत छथि, भवानीक याचना करैत छथि। जतए जतए सखीक संग गौरी खेलाए जाईत छथि, ततए ततए जोगी डमरू बजाए नाच करैत छथि। स्नेही जोगी नित्य अबैत छथि, प्रतिदिन कहैत छथि जे, गौरीकेँ देखाए दिअ। 'हरिदास' कहैत छथि, गङ्गाक संग क्रीडा कएनिहार महेश महादेव, एहि वेशमे छथि, ई गौरीक भाग्य स्वरूप थिकाह॥

श्रीराग, कुन्दभमरसङ्गम सम्भापव...(पृ० ६८)

(नायकसमागमरीतिक नायिकाकेँ उपदेश)

कुन्दपुष्प पर जे भ्रमर संगम, तकर चर्चा करब; तथा नेत्रक चेष्टासँ कामदेवकेँ जगाएब। अनावृत अङ्गक भङ्गीसँ आशा दए (नायकक) अनुरागकेँ बढाएब। हे सुन्दरी उपदेश धारण करू और नीक-नीक वचन जे हम कहैत छी से सुनू। नागरीक चरित हम किछु कहए चाहैत छी, चतुरा नायिका कहलो सँ (बिनु प्रत्यक्ष देखनहुँ) बुझैत छथि॥ कोकिलक (समान) शब्द अपना कण्ठमे स्थिर कए, ओहिसँ ऋतुराज (वसन्त तथा नायक)केँ अनुरञ्जित करब। मधुर हाससँ अपन मुखमण्डलकेँ शोभित करब। एक घड़ीक हेतु लज्जाक त्याग कए देब। गाढ़ आलिङ्गनक समयमे छल कए अपन कातरता (प्रतिरोधा क्षमता) देखाएब। कोप अवश्य करब, किन्तु अनुनयकेँ मानि लेब। एक घड़ीक हेतु मान छोड़ि देब। आधा मूनल नेत्रेँ तकैत श्रमक पसेनाक कारणे अपन शरीरकेँ शिथिल देखाएब। (यदि प्रिय अहाँक कबजा-पहुँची पकड़थि तँ) नखसँ आघात करैत ओ छोड़ाए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेब, जाहिसँ सुरतक केलि बढ़ाए सकी। जे (नायिका) स्पष्ट वाणीसँ प्रोत्साहित कए युद्धसँ विरत कामकेँ पुनः युद्धमे प्रवृत्त करए, समाप्त भेल रतिभावकेँ पुनः प्रदीप्त करए, सैह कलावती नारी थिक। 'सरस कवि' एहि तरहेँ शृङ्गार रसक गान कएल, ई सब विषय; रसिक, लखिमा देवीक प्रिय, रूपनारायण-राजा शिवसिंह जनैत छथि॥

(१) विशेष—दरभंगा मुद्रित पुस्तकमें "समय सेव निसह तनु चाँदन........। एहि पाठक अनुसार "समयक प्रतीक्षामे असमर्थ शरीरक चन्दनकेँ अर्ध-मुदित नेत्रेँ देखब" ई अर्थ होइत अछि— इहो संगते अर्थ थिक। किन्तु ऊपरक क्रम देखैत तथा अन्य आदर्श सबमे उपलब्ध होएबाक कारणे प्रकृत पाठ राखल अछि। प्रकृत पाठ नगेन्द्रनाथ गुप्तक संस्करणसँ (पद संख्या ५४२ जे कि ओ रागतरङ्गिणीए सँ उद्धृत कएल लिखने छथि) उद्धृत भेल अछि। तकर कारण अर्थक औचित्ये थिक। सम्प्रति राष्ट्रभाषा परिषद्सँ जे विद्यापति पदावलीक एक भाग प्रकाशित भेल अछि ओहिमे ई गीत पद सं० २०६ मे देल गेल अछि। ओकर पाठ भेद तथा 'नखेँ हनि पिंआ मनिधाम छोड़ाएब' एहि अंशक अर्थ अश्लील तथा साहित्य शास्त्रक मर्यादाक प्रतिकूल बूझि ओकर अनुसरण नहि कएल गेल।

वसन्त, माघमास सिरपञ्चमि गँजाइलि...(पृ० १००)

(वसन्त ऋतुक जन्मोत्सवक रूपक)

माघ मासक श्रीपञ्चमी वा सीरपञ्चमी (वसन्तक जननी) पूर्णगर्भा भेलीह। कारण आइ नवम मासक पाँचम दिन छैन्हि (कारण, फाल्गुन चैत्र वसन्त ऋतु थिक एहि मतेँ मुख्य चान्द्रमासक हिसाबेँ बैशाख शुक्ल प्रतिपदसँ गर्भक प्रारम्भ दिन मानि माघशुक्ल पञ्चमी केँ ९ मास ५ दिन होइत छैक) एहि दिनमे गर्भक अत्यन्त पीड़ाक कारणेँ (गर्भवती) बड़ दुःख पौलैन्हि—किन्तु वनस्पति पिता (जिनका वसन्त रूप-पुत्रजन्मक उत्सव छैन्हि)केँ वधाई (शुभाभिनन्दन) भेंटि रहल छैन्हि। शुभ क्षणक समय शुक्लपक्ष थिक, सूर्यक उदयक समय अछि। सोड़ह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(कला)सँ पूर्ण वत्तीस (महापुरुषक) लक्षणसँ युक्त ऋतुराज जन्म लेलैन्ह। युवतीजन हर्षित भए नचैत छथि जे बाल मधु (वसन्त) जन्म लेलैन्ह। मधुर महारस (शृङ्गार)सँ युक्त मङ्गल गान करैत छथि। मानिनी सभक मान उड़ि गेल। ओहिठाम उचितरूपे (मन्द सुगन्धि) मलयानिल वहि रहल अछि, घनमे बड़ प्रकाश भेल। माधवी लताक फूल गजमोतीक समान अछि ओहिसँ वन्दनवार (द्वारमाला) देल गेल॥ पीयर पाड़रिक फूल पर बैसि भ्रमरी सब गान कए रहल अछि। कारी धुथूरक फूल काहल (धुतहू बाजा) भेल अछि। नागकेसरक कली शङ्खध्वनिकेँ पूर्ण करैत अछि। तगरक फूल ताल (मजीरा)क काज करैत अछि। भ्रमर (फूल सबसँ) मधु लए, बालक (वसन्त)केँ देलक अछि। कमलक पँखुरी पर (बालककेँ) झुलाओल जाइत अछि। पद्मनाल तोड़ि, ओकर सूत (बालकक गर्दनिने) बान्हल गेल। जाहिमे किंशुक (पलाश)क फूल बघनखाक स्थानमे कएल गेल॥ नवीन नवीन पल्लवसँ हुनक सेज ओछाओल गेल। कदम्ब फूलक माला सिरहनामे देल गेल। बैसल भ्रमरी हरउद (बच्चाक खेलएबाक गीत) गबैत अछि, बच्चाकेँ चन्द्रमण्डल देखाए रहल अछि। कनककदली (सोनहुल केराक पात) पर जन्मक राशि तथा नक्षत्रकेँ एकत्र कए जन्म-पत्र लिखल जाइ'छ। कोकिल गुण-गणित नीक जकाँ जनैत छथि, ओ बालकक 'वसन्त' नाम रखलैन्ह। बच्चा वसन्त शीघ्र तरुण भए दौड़ए लगलाह, सम्पूर्ण संसारकेँ घेरि लेलैन्ह॥ दक्षिण वायु नील-कमलक परागसँ हिनक अङ्ग उँगारि रहल अछि। सुन्दर हारमञ्जरी (कोनो पुष्प विशेष जे कारी रङ्गक होएत) गाढ़ काजर थिक, ओहिसँ आँखिमे अञ्जन लागल छैन्हि। हे जुवती! विद्यापति कवि गबैत छथि—वसन्त ऋतुक अनुसरण—अनुकूल आचरण करू। रूपनारायण राजा शिवसिंहकेँ सब कला मनोनुकूल छैन्ह॥

विततमालव, विकटजटाचय किछु न लोकभय हे...(पृ० १०३)

(शिवस्वरूप-वर्णन)

विकट (भयंकर) जटाक समूह छैन्हि, समाजक कोनो भय नहि, छाती पर साप, दिगम्बर (नग्न) रूप। हे माइ! एहि तरहक हमर उन्मत्त (शिव) कोन बाटे जाइत भेटताह॥ ओ त्रिपुर (त्रिपुरासुरक तीन नगर)क दाह कएलैन्हि, ओकर छाउरसँ अपन बघछाला भरलैन्हि, ओ बूढ़ वर बसहा पर चढ़ल छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरकेँ तीन नेत्र छैन्हि जाहि मध्य, एकमे आगि पजरैत छैन्हि, मस्तक पर गङ्गाक जलक धारा छैन्हि। 'विद्यापति' कहैत छथि—गौरी ओहि उन्मत्तक हेतु विकलमति भेल छथि।

देशमालव, कुन्दन कन कन्हाइ हमहुँ कसौटी तूल...(पृ० १०४)

(नायिकाक अपन सौभाग्यक वर्णन)

कन्हैया सोनाक कण समान छथि, हमहुँ (हुनक परीक्षाक हेतु) कसौटीक समान छी। अपना हृदय पर ओहि वल्लभकेँ कसल, (परीक्षाक हेतु नीक जकाँ लगाओल) जाहिसँ हुनक गुण बहुमूल्य बूझल। हे सखि! सुन्दर स्वामीक समागमक सुखक वर्णन नहि भए सकैछ। विचार होइत अछि—मनाओन (मानापनयन)क प्रतीक्षा छोड़ि दी, हुनका हृदयमे लगाए राखी। पूर्वजन्ममे हम गौरीक पूजा कएल, ओही पुण्ये (कृष्णक सङ्ग) स्नेह भेल, तथा शरीर भिन्न रहितहुँ प्राण एके मानल। लक्ष्मीनारायण राजा कहैत छथि—हे गुणवति नारि! अहाँ जिनका सङ्ग स्नेह बढ़ावी ओएह कृष्ण भए जाथि।

श्रीमालव, यदि तारा नहि खन नहि अवकाश...(पृ० १०५)

(विप्रलब्धा नायिकाक द्वारा दूतीक शिक्षण)

"यदि अहाँकेँ समय तथा अवकाश नहि छल तँ अनका भरोसे विश्वास किएक देल। विश्वास दए निश्चिन्त भए कोना सुति रहैत छी, अथवा चारू पहर राति स्वस्थ चित्तेँ घुमैत रहैत छी।" हाथ जोड़ि पैर पर खसि हमर विनती कहबैन्ह जे पूर्वक प्रीति विसरि नहि देथि। (हमर तँ) रातिक प्रथम प्रहर सहसा बीति गेल। दोसर पहरमे घरक लोक निद्रित भेल। ओकरा सभक निद्राक निश्चय बुझबामे मध्यरात्रि भए गेल, तावत् परम दुष्ट स्वभावक चन्द्रमा उदित भेलाह। (ततः पर अभिसारक अवसरे नहि रहल) 'विद्यापति' कहैत छथि—ओहि कालक जे नायिकाक भाव भेलैक—से ओएह व्यक्ति प्राप्त कए सकैत अछि जे पुण्यात्मा अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनछीमालव, तोहँ हमँ पेम जतेँ दुरेँ उपजल...(पृ० १०६)

(नायिकाक उपालम्भ नायकक प्रति)

अहाँ–हमरा मध्य जतेक दूर तक प्रेम उत्पन्न भेल छल, ओहि परिपाटीक स्मरण करब। आब अन्य नायिकाक क्रीड़ाक रसमे (हमरा) विसरि देल, हम कोन कलामे ओहि रमणीसँ न्यून छी ? हे भ्रमर हमरा वचनेँ कन्हैयाकेँ कहबैन्हि–कामसम्बन्धी विरहक रहस्य यदि ओ जनैत होथि तँ अधिक जनएबासँ कोन फल (यदि नहि जनैत होथि तथापि जनाएब व्यर्थे) साधुजनक उपमामे सुमेरुपर्वतक नाम सुनल जाइत अछि; सबकेँ धनहिसँ महत्त्व छैक। ओ (साधुजन वा सुमेरु) जँ लोभवश अपन स्थान छोड़थि तँ, गौरव ककरा प्राप्त होएतैक ? पुरुषक हृदय तथा जल, स्वभावतः चञ्चल होइत अछि, प्रयत्नपूर्वक वन्हला पर स्थिर होइत अछि। ओ जँ स्थिर नहि राखल जाए सकल, तँ सहस्र धार भए बहैत अछि— ऊँच नीच सब दिश जाइत अछि। नवीन कविशेखरक उपाधि धारण कएने 'यशोधर' कहैत छथि—पृथ्वी पर तृतीय व्यक्ति कहाँ अछि, जाहि पृथ्वी पर भृङ्ग समान (रसिक) नागर, साह हुसेन; तथा मालतीक समान नीक (नायिका) छथि ॥

वियोगिमालव जतनहुँ जतेओ न रे रे निरवह...(पृ० १०८)

(नायिकाक द्वारा नायकक उपालम्भ)

यत्नो कएला पर जतेक नहि निवहि सकैत छैक ततेक अहाँ स्वीकार कएने छलहुँ। अहाँक नेत्र ओतहि (अन्य नायिकाक देखलासँ) शीतल होएत, से तँ प्रथमदर्शनहिक दिनसँ बाजब उचित छल। अहाँ कपट कइएकँ हमर हित (अनुकूल वचन) बजलहुँ, पैघ लोक अपन वचनक त्याग करए से बड़ अनुचित। (अहाँ बाजल रही)—हम अबलाक बलि दए जीब ! ई दुःसह नदीक पार करब थिक, शिव ! शिव !! (अर्थात् हम एहेन कार्य नहि करब जाहिसँ एक अबलाक जीवन सन्दिग्ध भए जाइन्ह) ई सब वात आब कोन कारणेँ विसरि गेल। (अहाँ–हमरा बीचमे) मध्यस्थ भेनिहार कामदेव मरि जाथु। (कारण ओ अपन मध्यस्थताक निर्वाह नहि कए सकलाह) 'कुमुदी' कवि कहैत छथि—अहाँ स्थिर रहू, सुपुरुषक वचन पाथर परक रेखा थिक। (ओकर मेटाएब–अन्यथा होएब संभव नहिं)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बृहद्वियोगिमालव, एत दिन हृदय हरप छल...(पृ० १०६)

(वियोगीक अनुताप)

एतेक दिन तक (यावत् दुनू गोटएक संयोग छल) हृदयमे हर्ष छल, आब सब हर्ष दूर भए गेल। (कारण), दरिद्रक रत्न हेड़ाए गेल, संसार हुनकासँ शून्य भए गेल। निर्दय दैव कोन दन दोषेँ, कोरासँ हमर कमलमुखीक हरण कएलक। विचार होइछ, विष खाए ली, किन्तु आत्मवध पाप थिकैक। जीउब, मरबाक समान लगै'छ (एहिसँ) मरबे नीक। 'गजसिंह' कहैत छथि—हे विरहिजन ! सुनू, दुःख छूटत, 'पुरुषोत्तम' राजा जकाँ (किछु दिन एहि दुःखकेँ) सहि कए रहू, ओ दयाक कारणे अपनहि भेटि जइतीहि। (मूल पुस्तकमे एहि गीतक टिप्पणी देखबाक थिक)

पहड़िया मालव, धवल जामिनि धवल हर रे...(पृ० १११)

(विरहिणीक विलाप)

प्रकाशमय राति, घरो सब स्वच्छ भए गेल, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र धारण कएल। तथापि (हमरा सन) लोकक विहार (अभिसार) व्यर्थ भेल, पर्वतक स्थिरता (प्रिय जे प्राप्त कएने रहथि से) विसरि देलैन्ह। (अपना वचन पर स्थिर नहि रहलाह) हे सजनी, नव लोकक नव यौवन, नवे अनुराग, धानक खेतसँ युक्त हेमन्त ऋतुओ आबि गेल; हमरा अभाग्येँ प्रिय नहि आएल छथि। (एहिसँ पूर्वहु) क्रमसँ (बेरावेरी) आकाश वर्षा करैत छल, कामदेव स्पर्शमात्रसँ ओहि जलकेँ शोषि लैत छल। मेघक गर्जबासँ चउँकलि हम, ककर आलिङ्गन करितहुँ, वर्षा ऋतु छलैक; हमर कोनो दोष नहि (देखाइत अछि) कुमर 'भीष्म' कहैत छथि—हे धनी धैर्य धरू, प्रिय अओताह। धर्मा देवीक प्रिय नरनारायण राजा एहि रसकेँ जनैत छथि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजयपुरमालव, कुण्डल तिलकेँ विराज मुख...(पृ० ११३)

(अभिसारिकाक स्वरूप वर्णन)

कुण्डल तथा तिलकसँ मुख सुशोभित अछि, सिन्दूरक विन्दु पृथके शोभा प्राप्त कए रहल अछि। बुझा' पड़ै'छ—स्वर्णलतामे ब्रह्मा शुक्र, सूर्य, तारा तथा चन्द्रमाकेँ सजओने छथि। (दू कुण्डल, एक तिलक एक सिन्दूरक विन्दु, क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र तथा ताराक रूपमे सुवर्णक लता सदृश एहि सुन्दरीक शरीरमे छथि) ई धन्या चन्द्रमुखी छथि, नेत्र दूनू विशाल छैन्हि, बुझा' पड़ै'छ जेना भ्रमर समूहसँ कमल युक्त हो। अपूर्व रमणी ओहि कलावतीकेँ एहि तरहेँ देखल जेना देवलोकक गजगामिनी (कामिनी)केँ जीतए आएल होथि। हुनक निर्मल वेणी, (केशक जुट्टी) जाहिमे कुसुम समूहक हार देल छलैक, शोभित छलैन्ह। बुझा पड़ैत छल—कारी सापकेँ देखि कामदेव (फूलक वाणक) प्रहार कएने होथि। बाला (सेहो) कामदेव पर बाणक प्रहार कएलैन्हि। से एहि रूपेँ—कुटिल कटाक्ष हुनक कोनियाएल (कोनीवला) बाण थिकैन्ह। शङ्खक समान कण्ठ छैन्हि, मृणालक समान वाहु छैन्हि, जाहिसँ पयोधरक भारकेँ घेरने छथि; जे एहि तरहेँ बुझाए पड़ै'छ,—कनक कलसक जलसँ (पूर्वसञ्चित) कामदेवक भण्डारकेँ सीचि रहल होथि। ई गोर पयोधर मदनक भण्डार थिक—जे कि औन्हल सोनाक कटोरा सन लगैत अछि। ई श्यामा, नीलनेत्रवाली संयोगक अभिलाषिणी भूषणभारसँ युक्त सुफलक हेतु अभिसार करथु—ई, कविराज 'विद्यापति' कहैत छथि।

जोगिआ मालव, कतन वेदन मोहि देहे मदना...(पृ० ११५)

(कामदेवक उपालम्भ, विरहिणीक उक्ति)

हे मदन! हमरा कतेक वेदना देब। (एहि वेदना देबाक कारण केवल हमरामे शिवक भ्रमे टा बुझा पड़ै'छ किन्तु से अनुचित; कारण,) हम शिव नहि छी, हम तँ एक बालासँ युवती भेल छी। हमरा माथ पर ई जटा नहि, ई तँ केशक जुट्टी बनाओल अछि। (ओहि पर जे उज्जर धारा जेकाँ देखैत छी से) गङ्गा नहि छथि, ओ तँ फूलक माला थिक। भाल पर ई चाननक ठोप थिक, चन्द्रमा नहि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ललाट पर सिन्दूरक ठोप थिक, अग्नि (नेत्र) नहि। कण्ठमे कस्तूरी थिक, विष नहि। गर्दनिमे लटकल ई शेष नाग नहि, किन्तु मोतीक हार थिक। 'विद्यापति' कहैत छथि—एहि तरहेँ ओ यद्यपि निर्दोष छथि, तथापि हे कामदेव (अहाँक प्रहारक औचित्यक हेतु) एकटा दोष छैन्ह जे कि हुनका (शिवक, वामदेव) नाम पर हिनको नाम 'वामा' छैन्ह ॥

सारङ्गीमालव, गमनदिवस सञो तिथि लेखि—लेखी...(पृ० ११७)

(वियोगिनीक दशाक वर्णन)

प्रियक जएबाक दिनसँ (हुनक अएबाक दिनक ज्ञानक हेतु) प्रति दिनक गणनाक रेखा लिखि-लिखि, रेखासँ (घरक) भीति भरि गेल। (एहिसँ आगूक दिनक गणनाक हेतु स्थान नहि रहबाक कारणेँ) ओही रेखा सबकेँ (एक-एक प्रति दिन) मेटाए-मेटाए न्यूनताक पूर्ति करैत अछि; मुँह सिक्त करबाक हेतु (वियोगिनीक मूर्छा हँटएबा लेल) केओ जल लए दौड़ैत अछि। ककरो हाथमे नलिनी (क पत्र) छैक, ककरो हाथमे चानन छैक; केओ बजैत अछि (आश्वासनक हेतु मिथ्ये कहैत अछि) नन्दनन्दन आबि गेलाह। भ्रमरक शब्द सुनि, सब ओकर कान मूँदि दैत छथिन्ह, यदि (आसपासमे कतहु) कोकिल देखैत छथिन्ह तँ थपड़ी बजाए ओकरा उड़ाए दैत छथिन्ह। (सखी सब बजैत अछि)—ई कमलमुखी की होइतीह ? (से नहि जानि) हे सखी ! सब मिलि हिनका (कोनो प्रकारेँ) जियावह। कवि कहैत छथि अनजान सखी सब (वास्तविक) आधि-मानसी व्यथा—नहि बुझैत छथि, व्याधि, कोनो दोसर छैक, औषध दोसरे करैत छथि। शीतल पद्मनाल हृदय पर थोपि दिऔन्हि, केओ चन्द्रमाक किरणकेँ हाथसँ रोकि दिऔन्हि ॥

प्रियतमा मालव, युगलशैल सिम हिमकर देखल...(पृ० ११८)

(नायिकाक वर्णन)

(स्तन रूप) दू पर्वतक सीमा पर (समीपमे) चन्द्रमा (मुख) देखलहुँ। एक कमल (मुख)मे दू टा प्रकाश (नेत्र) देखल। फुलाएल मधुरीक फूल सिन्दूरमे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोटाएल देखल। (ओष्ठ स्वतः रक्त छले ओकरा ताम्बूल आदिक उपयोगसँ अतिशय रक्त भेल देखल) ओही मध्य पाँतीसँ गजमुक्ता वैसाओल (दाँतक पाँती) देखल। आइ जतेक देखल (से यदि बाजी तँ) के पतिआएत। ओ अपूर्व विधिक निर्माण थिक। उनटा सोनहुल केराक थम्हक तरमे स्थलकमल (ऊरुक नीचा पैर) देखल। 'गजसिंह' कहैत छथि जे—पूर्व पुण्यसँ एहि तरहक रूप, रसिक प्राप्त करैत छथि। आसमती (आशावती ?) देवीक प्रिय राजा पुरुषोत्तम सकल रसक ज्ञाता छथि।

विततासावरी, कामिनि करए सनाने...(पृ० १२०)

(सद्यः स्नाताक वर्णन)

कामिनी स्नान कए रहल छथि जनिका देखितहि कामदेव (देखनिहारक) हृदय पर आघात करैत छथि। केशसँ जलक धारा वहि रहल अछि, जेना मुख-चन्द्रक डरे अन्धकार कानि रहल हो। भीजल वस्त्र शरीरमे सटि गेल अछि (जाहिसँ अङ्ग सब लक्षित भए रहल अछि, तेँ) मुनिओक मनमे मदनोदय होइत छैन्ह। कुचयुग सुन्दर चक्रवाक पक्षी (क जोड़ा) थिक से यदि अपना जातिमे मिझड़ा जाएत (उड़ि कए चल जाएत) तँ के आनि देत। एहि शङ्कासँ दूनू बाहुक पाससँ बान्हि कए पकड़ल अछि—अन्यथा उड़ि कए आकाश लागि जाएत।

देशी आसावरी, मासें पखें उगए कलानिधि...(पृ० १२१)

(नायिकाक प्रति चाटूक्ति)

मासमे एक पक्षक हेतु कलानिधि (चन्द्रमा) अपन सब साज जुटाए उगइत छथि, तथापि अहाँक मुँहक समान नहि देखल जाइत छथि, एहि हेतु लज्जा जानि खिन्न मन रहैत छथि॥ कतए कोन एहेन धन्य पुरुष अछि जकर (अहाँक विषयक) अनुराग स्थिर (सफल) भेलैक; एहि पृथ्वी पर के अछि जे एहेन भाग्यकेँ प्राप्त कएने होए। (अहाँक) कोमल केशक समूह श्यामतर चामरक निन्दा करैत अछि। भौंहक सौन्दर्यक कोना कथन कए सकब (जकरा देखि) काम अपन बाण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धनुष (व्यर्थ जानि) त्यागि देलैन्हि। नवीन पल्लव (?) वायुसँ चालित भए (एहेन बुझाइ'छ जे) कुचरूप कलीसँ (अपनाकेँ सौन्दर्य में) नीचा देखि कँपैत हो। (कतेक कामुक) वेगसँ दौड़िओ एकरा (अहाँक अनुरागकेँ) नहि प्राप्त कए सकलाह तथापि आशासँ लोभ बढ़ल छैन्हि। 'नृपसिंह' कहैत छथि एहि तरहक रमणी हरिहिक समीप शोभित होएतीह॥

सिंघली आसावरी, सबहुँ सखि परबोधि कामिनि...(पृ० १२२)

(प्रथम समागमक वर्णन)

सब सखी मिलि बुझा 'सुझा' कए कामिनीकेँ प्रियक समीप आनि देलथिन्ह। किन्तु, जेना व्याध वनसँ मृगकेँ बान्हि अनने होए ओही सदृश दीर्घ निःश्वास त्यागि रहल छथि। सुमुखी शय्याक समीपमे बैसल छथि, यत्न कैलहु पर सम्मुख नहिं भए रहल छथि, (संगमाभिलाषी) भेलो मन, दशो दिशामे घूमि रहल छैन्ह, मानू कामदेव ओकरा बन्धन मुक्त कए देने होथिन्ह। संपूर्ण शरीरक वस्त्र अत्यन्त दृढ़ कएने छथि, कोनो अङ्गक प्रत्यक्ष होएबाक अवकाश नहि रहए देने छथि। हाथक स्पर्शहिसँ प्राणत्याग करए चाहैत छथि—ई रतिक आशा की पूर्ण करतीह। नीवीक बन्धन सघन छैन्हि आँगी अत्यन्त कसल छैन्ह, अधर पर पूर्ण आवरण छैन्ह। यद्यपि काम कठिन छथि, तथापि ई कामिनी तेहन कठोर छथि जे (सखी सभक बुझाओल बातकेँ) नहि मानि रहल छथि। आब हम कोन प्रकार करब, किछु नहि निश्चय होइत अछि। कोप तथा कौशलसँ (कार्य) करए चाहलहुँ किन्तु, हृदयमे हारि कए हठे पर आबए पड़त। 'सिंह' भूपति कहैत छथि—चारि दिन एही तरहे बिताए, ई रतिक समाधान करबे करतीहि, पैघकेँ धैर्यो पैघ होइ'छ॥

जोगिआसावरी, कालि कलह पिआजे साँझहि रे...(पृ० १२४)

(वियोगिनीक विलाप)

कालिह सन्ध्यहि काल प्रिय कहलैन्हि जे हम मारुअ (माथुर ?) देश जाएब। अभागलि हम (ई देश एतेक दूर छैक; संध्याधरि नहि लौटि सकताह, से) नहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनलहुँ (अन्यथा) हमहूँ ओही देश जइतहुँ। हमर हृदय बड़ कठोर अछि प्रियक वियोगमे विदीर्णो नहि होइ'छ। एके शय्या पर राति हमर वल्लभ सूतल छलाह। किन्तु कखन ओ हमरा छोड़ि चल गेलाह से नहि जानल, चक्रवाक पक्षीक जोड़ा बिछुड़ि गेल। शून्य शय्या हृदय विदीर्ण करै'छ, प्रियक वियोगेँ हम आइए मरि जाएब, हे सखि प्रार्थना करैत छी, तखन हमर चिता पजारि देब। 'विद्यापति' कवि गाबि कहलैन्ह—प्रिय आबि अहाँकेँ भेटताह। लखिमा देवीक प्रिय नागर राजा शिव सिंह अज्ञानी नहि छथि।

सिन्धुलासावरी, आज पुनिमा तिथि जानि मोञे...(पृ० १२५)

(अभिसारप्रेरणा)

आइ पूर्णिमा तिथि अहाँक अभिसारक हेतु उचित अछि, ई जानि हम आएल छी। अहाँक शरीरक ज्योति चन्द्रमाक किरणमे समाविष्ट भए जाएत, दूनूकेँ के फूट जानि सकत। हे सुन्दरि! अपनहुँ एहि विषयकेँ हृदयमे विचारि लिअ। अहाँ अन्धकारकेँ (अभिसारमे) अपन हित नहि बुझू, कारण, अहाँक मुख अन्धकारक शत्रु (चन्द्रमाक समान, अन्धकारमे पृथक् स्पष्ट होबए बला) अछि। दूनूक जे स्वाभाविक विरोध अछि तकरा दूरहि छोड़ू। (अभिसारक हेतु) उद्यत भनि उठि चलू—जाहि ठाम मुरारि छथि।" एहि तरहक दूतीक वचन अपन हित बुझलैन्ह, कामदेव प्रेरक भेलथिन्ह। हरिक प्रति अभिसारक हेतु वरकामिनी चललीहि; ई विद्यापति कवि कहैत छथि।

भोगिनी असावरी, कनकलता अरविन्दा...(पृ० १२७)

(नायिकामुखक संशयित रूपक)

सोनाक लतामे ई कमल फुलाएल थिक, (किंवा) मदनपुष्पक मञ्जरी सभक (कारी केशक) मध्यमे चन्द्रमाक उदय भेल छैन्ह। (कमलक संशयवला) केओ कहैत छथि (ई केश नहि, किन्तु) भ्रमर सब घूमि रहल अछि। (चन्द्रमाक संशयवला) केओ कहैत छथि भ्रमर नहि ई चकोर सब चारूकात घुमैत अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(पूर्वपक्ष बला) केओ कहैत छथि (कमल) सेमारसँ घेरल अछि। (दोसर पक्षसँ) केओ कहैत छथि से नहि मेघ (चन्द्रमामे) मिलल अछि। पृथ्वी पर लोक संशयमे पड़ल अछि— ई बजैत अछि जे अहाँक मुखक समान नहि अछि। 'रतनाखी' कवि कहैत छथि— एहि विषयमे शङ्का करब कलङ्क (दोष) थिक, कारण दूनू, कमल वा चन्द्रमा (हिनक मुखक) असमाने छथि। (समाने वस्तुमे शंका होएब उचित) 'देवल देवी' तथा 'लखनचन्द्र' राजा ई दूनूक रूपमे रति तथा मदनक समागम भेल अछि॥

संभोगिनी (आसावरी) तनु सुकुमार पयोधर गोरा...(पृ० १२८)

(कामिनीक रूपवर्णन)

सुकुमार शरीरमे गोर पयोधर एहेन प्रतीत होइ'छ जेना स्वर्णलतामे एक जोड़ा बेलक फड़ हो। ओहि कमलमुखीकेँ देखलहुँ तँ, किन्तु वर्णन नहि कएल जाइत अछि। ओ कामकेँ जगाए, हमर मनक हरण कएलैन्हि। हुनका आगुएमे, भौँह रूप धनुष पर तीक्ष्ण कटाक्ष रूप कामवाण धएल छैन्हि, ओ हमरा लागि गेल। हिनक सर्वत्र ई व्यवहार सुनबामे अबैत अछि जे (हिनकासँ) नागर (कामकला-चतुर-सहृदय) लोक मारल जाइत अछि, गमार (कामकलानभिज्ञ) बाँचि जाइत अछि। कंसनारायण एहि कौतुकक गान करैत छथि—पुण्यवान पुण्यक फलेँ गुणवतीकेँ प्राप्त करैत छथि।

दण्डकासावरी, जय जय देवि दुर्गे दनुजदारिनि...(पृ० १२६)

(श्री दुर्गादेवीक प्रार्थना)

(शुद्ध संस्कृत)

सरसासावरी, चल चल सुन्दरि शुभ कर आज...(पृ० १३०)

(अभिसार-प्रेरणा)

हे सुन्दरि, चलू चलू, आई ई शुभ (कार्य) कए लिअ, तारतम्यमे पड़ल रहलासँ कार्य नहि होइत छैक। गुरुजन (माए बाप, वा सासु ससुर आदि)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिजन (अपन दासी वर्ग, वा सखी वर्ग) दूनूक डर हटाए दिअ, साहस कएला बिनु सिद्धिक आशा पूर्ण नहि होइ'छ। बिना जपेँ जेना ककरो सिद्धि नहि होईत छैक (ओही तरहेँ) विना गेने निधि (भण्डार) घर नहि अवैत छैक। ओ अन्य कामिनीक पति (प्रिय) थिकाह, तोँ अन्य पुरुषक स्त्री (अधीन) छह, केवल हमरा, बीचमे रहनिहारिकेँ, दूनू दिससँ, (हुनकर वल्लभा तथा तोहर पतिक दिशसँ) गारि मात्र भेटबाक आशा। तोरा हुनका भेँट कराए दिअह, एतवे हमर साध्य अछि, ओतेक कए, देखैत छी, आगू जेहन तोहर भाग्य। विद्यापति कहैत छथि—हे वरनारि, जे स्वीकार कए चुकलहुँ तकरा गारि (अनुचित) नहि बुझबाक थिक।

द्राविण्यसावरी, जौवन-रूप अछल दिन चारि...(पृ० १३२)

(उपालम्भसन्देश)

यौवन समयक रूप, चारि दिनक (किछु कालक) हेतु छल, ओ देखि (हमर) आदर मुरारि कएलैन्ह। आब (वृक्षक) पतझाड़ भए गेल वा सुखा गेल, फूलो झड़ि जेल; बिना जलक सरोवरकेँ केओ नहि पुछै'छ। हे सखि हमर ओ विनती (मुरारिकेँ) कानि कए कहवैन्ह— सुपुरुषक वाणी व्यर्थ नहि हो (मिथ्या नहि हो)। यावत् धन अपना हाथ रहैत छैक, तावत् ओकर आदर संगी साथी करैत छैक। धनिकक आदर तँ सर्वत्र होइत छैक, वेचारा निर्धनकेँ केओ नहि पुछै'छ। 'विद्यापति' कहैत छथि अपन शीलक रक्षा करब; संसारमे यदि जीवित रही तँ नवो निधि (सब मनोऽभिलषित) भेटै'छ।

अभिरामासावरी, बारि वयस तजि गेह...(पृ० १३३)

(प्रथमावतीर्णयौवना वियोगिनीक चिन्तन)

छोट वएसमे हमरा घरेमे छोड़ि (अपने विदेश गेलाह) प्रियक मनमे ओएह (एखन तक ओही अवस्थाक) सन्देह छैन्ह। हुनका मनमे ओएह भान अद्यावधि छैन्ह किन्तु एतए दोसर समय (युवावस्था) भए गेल। शीघ्रे (हुनका) सन्देश पठाए दैत छिऐन्ह जे—आब विदेशमे रहब उचित नहि। हमरा, युवावस्था, अपन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप तथा हुनक स्नेह ई सब स्मरण कए शरीर खिन्न भेल जाइ'छ। राजा प्रीतिनाथ कहैत छथि—शीघ्रे समाधान भए जाएत।

मलारी शुद्धा, रोपलह पहु लहु लतिका आनि...(पृ० १३४)

(उपेक्षिता नायिकाक उपालम्भ)

हे प्रभु ! एहि छोट लताकेँ (हमरा) आनि कए एतए (अपना घरमे) रोपलहुँ (स्थिर कएलहुँ) प्रतिदिन पानिसँ (पाणिसँ) एकरा पटबितहुँ (अपना हाथेँ एकरा बढ़वितहुँ) जाहिसँ ई लता उचित रूपेँ बढ़ैत, किन्तु एकरा अहाँ बिसरि देल ई के उचित कहत। अहाँक अनुरोध (हमर रुचिक अनुकूलता) तँ एहीसँ बुझल जे नेत्रहुक निरोध कएने छी। एको घरमे रहि दर्शनोमे बाधा होइत अछि; हे प्रभु हमर की अपराध से किछु बुझबामे नहि अबैत अछि। सुपुरुषक वचन तँ सर्वथा सत्य होइत अछि, क्रोधवश विचारकेँ दूर नहि करबाक चाही। 'विद्यापति' कहैत छथि— लखिमा देवीक रमण राजा शिवसिंह एकर रस बुझैत छथि।

पहड़िआ मलारी, अनवरत दादुरसोर घन भुवि...(पृ० १३६)

(वर्षा ऋतुमे प्रियवियोगक चिन्ता)

पृथ्वी पर सतत दादुरक कोलाहल बढ़ल अछि, दशो दिशामे विजुरी शोभित अछि। आकाश मेघसमूहसँ घेरल अछि, मयूरक शब्दक सुनला पर मोह होइ'छ। कदम्ब, चम्पा, केतकी एहि फूल सभक मकरन्द पीबि, भ्रमर मातल अछि। आषाढ़ मासमे अपन घरक बारंवार स्मरण कए ओ पथिक सब चारू दिशसँ दौड़ल आबि रहल अछि। अपना घरक स्मरण कए पथिक सब तँ दौड़ैत अछि, किन्तु हमर वल्लभ तँ कतहु ने अबैत छथि॥

भूपाली चल चल सुन्दरि...(पूर्व व्याख्यात)

गुर्जरी, मामियं चलिता विलोक्य...(संस्कृत)

तृतीय तरङ्ग समाप्त॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विभासी (१) कुसुमरस अतिमुदित मधुकर...(पृ० १३८)

(विरहिणीक वेदनाक वर्णन)

फूलक मकरन्दसँ अत्यन्त प्रसन्न भ्रमर तथा कोकिल, पञ्चम स्वरेँ गाबि रहल अछि। वसन्त ऋतुओमे वल्लभ दूर देशमे छथिन्ह, मन दशो दिशामे (हुनका हेतु) दौड़ि रहल छैन्ह। हे सजनी! तेल, ताम्बूल तथा उष्ण उपचार, रातिमे निद्रा, सुख तथा क्रीड़ा सब छोड़लैन्हि। हेमन्त ऋतुमे प्रियक सङ्गमक स्मरण कए-कए अनन्त दुःख प्राप्त कएने छथि। (ओहूसँ पूर्व) मयूर तथा दादुर (बेंग)क कोलाहल दिन राति होईत छलैक; लगातार बुन्दक वर्षा होईत छलैक। रघुवरक विना वर्षा विषम बुझाए पड़लैन्हि, विरहिणीक जीवन समाप्त प्राय भेलैन्हि। (कवि कहैत छथिन्ह) हे सुमुखि! धैर्यसँ सकल सिद्धि भेटैत छैक; ई मनोहर, नीक वाणी सुनू-शिशिर ऋतुक नीक दिनमे अहाँक गुणकेँ जानि, राम रघुवर अओताह ॥

(२) जलद जाल कराल वारिस दिवस...(पृ० १३९)

(विरहिणीक व्यथावर्णन तथा आश्वासन)

मेघक समूहक कारणे भयंकर वर्षाक दिन आबि गेल अछि; निर्दय प्रिय (अएबाक) अवधि जे कहने रहथि से विसरि गेलाह, आइओ भेट नहि कैलन्हि। हे सजनी! अन्धकारक अधिक भेने राति भयङ्कर होइ'छ (ओहि समयमे) प्रिय सब, कामिनीक समीपमे रहैत छथि। निर्दय हमर नाथ विसरिकँ बैसि रहलाह, हमरा जीवनक अन्त भए गेल। मधुर लगैत, दूरमे मयूरक शब्द होइ'छ, मातल दादुरक शब्द (सुना' पड़ै'छ) यमराजक समान मेघ (पानिक स्थानमे बुझा' पड़ै'छ जे) अग्निक वर्षा कए रहल अछि—जकर दुःख वज्रक समान अछि (?)। हे समुद्रक पुत्र (चन्द्रमा)क समान मुखवाली! मनकेँ स्थिर करू, खिन्न नहि करू; चिरप्रवासकेँ शीघ्रे छोड़ि, कृष्ण, दिन (सुखमय समय) पलटओताह। सुधी 'लोचन' कवि कहैत छथि, हे बुद्धिमान लोकनि, विरहक क्लेश कठोर होईत छैक, ई बात जानकीक जन्मभूमि (मिथिला)क भूषण रूप, 'महिनाथ' राजा बुझैत छथिन्ह ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिरानी, सुरत समापि सुतल वरनागर...(पृ० १४१)

(सुरतान्त निद्राक वर्णन)

रतिकेलि समाप्त कए श्रेष्ठ नायक, हाथ स्तन पर राखि सुतल छथि। जेना स्वर्णक शिवक पूजा कए पुजारी हुनका कमलसँ झाँपि देने होथि। हे सखि! (जेना) मालतीक क्रीड़ा विलासमे, मालतीसँ अति रमण कए (भ्रमर) ओकरासँ पुनः रतिक क्रीड़ाक आशासँ ओकरा आगू राखि, बैसल अछि। ('अति'क स्थानमे 'अलि' पाठ कतहु कतहु भेटैछ से नीक थिक) मुखमे मुख मिलओने छथि जेना कमल सङ्ग चन्द्रमा मिलल होथि। (कमलक प्रेमी) भ्रमर (चन्द्रमाक प्रेमी) चकोर दुनू, (चकोर) अमृत तथा (भ्रमर) मकरन्द पीबि अलसाएल अछि। 'अमृतकर' कहैत छथि जे हे मथुरापति! सुनू- राधाक चरित अपार छैन्हि। अथवा (हे श्रोतागण) सुनू-मथुरापति तथा राधाक चरित अपार छैन्हि। रूपनारायण राजा शिवसिंह लखिमा देवीक कण्ठहार (भूषण, वा सतत कण्ठमे लागल) छथि।

रम्या भीमपलासी, सुरुज सिन्दुर विन्दु चान्दने लिहए...(पृ० १४२)

(अभिसारिकाक सङ्केत)

सूर्यरूप सिन्दूरविन्दु चन्दन रूप चन्द्रमाक स्पर्श कए रहल छथि— अथवा सिन्दूर विन्दुसँ सूर्य, तथा चन्दनक विन्दुसँ चन्द्रमा लिखलन्हि एहि तरहें (तिलकक द्वारा) तिथि कहि देलन्हि (अर्थात जाहि तिथिमे सूर्य तथा चन्द्रमाक एक स्थानमे स्थिति हो से-अमावस्या-तिथि)। अलकमे अङ्कुश बनाए (आवाहन मुद्रासँ सूचित कएलैन्ह जे) विपरीत अभिसार (पुरुषक नायिकाक प्रति जाएब) अमृत धाराक वर्षा करैत छैक (अर्थात् हुनकहिँ आबए कहवैन्हि) हे माधव (ओ) पसाहनि करबाक समयमे भेटलीह। (तेँ ओही समयक क्रिया सबसँ अपन आशय देखौलैन्हि) चतुर (सब चेष्टाकेँ बुझनिहारि) सखीजनके (समीपमे देखि) हमर आदर नहि कएलक, प्रष्टव्यो विषय नहि पुछलक, अथवा जे पुछबाक छलैक से संकेतेँ पुछिओ कए, सखीजनक कारणे ओकर स्पष्ट कथन नहि कएलक। केतकीक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(केओड़ा फूलक) पात लए ओहि सङ्ग चम्पाक फूल मिलाय कबरीमे (केशपाशमे) बान्हलक, तथा कस्तूरी एवं कुङ्कुमसँ शरीरक कान्तिकेँ झाँपि सङ्काना ओ समयक निवेदन कएलक। (एहिसँ ओहि दुनू फूलक फुलएबाक समय, जखन कि सायंकालिक अरुणिमा पर अन्धकारक आक्रमण होइ'छ—से समय, सूचित कएलक) विद्यापति कहैत छथि— हे वरयुवती सुनू अमावास्या निकट अछि से प्रामाणिक अछि। रूपनारायण राजा शिवसिंह लखिमा देवीक रमण कएनिहार छथि।

धन्या भीमपलासी, नवजौवन अभिरामा...(पृ० १४४)

(नवयुवतिक सौन्दर्यवर्णन)

नवीन यौवनसँ मनोहारिणी। जतेक (हुनक सौन्दर्य) देखल ततेक तँ कहबाक सामर्थ्य नहि अछि— छओ गोट वस्तु एकठाम स्थित अछि— हरिण, चन्द्र, कमल, हथिनी, सुवर्ण तथा कोकिल। जाहि विषयमे क्रमशः ई अनुमान होइ'छ जे नेत्र, मुख, सुगन्धि, चलबाक रीति, शरीरक कान्ति तथा सुन्दर वाणी थिक। (हिनक नेत्र आदि देखि हरिण आदि वस्तुक आभास होइ'छ)। दूनू स्तनक ऊपर केश खुजि कए पसरल अछि ओहिमे हार (मोतीक माला) ओझराएल अछि। (जकरा देखि) ई प्रतीत होइ'छ जे सुमेरु पर्वतक ऊपर चन्द्रमासँ रहित सब तारा पसरल हो। विद्यापति कहैत छथि—सुनू (एहेन) श्रेष्ठ युवतीकेँ अन्य केओ नहि पाबि सकैत छथि। कंसदलन नारायण सुन्दर छथि, केवल हुनके रमणी एहन भए सकैत छथिन्ह।

वितता भीमसलासी, उपरे पयोधर नखरेख सुन्दर...(पृ० १४६)

(अभिसारप्रकाशन)

स्तनक ऊपर सुन्दर नखक रेखाकेँ कस्तूरीक पङ्कसँ लेपने छी, जेना सुमेरुक शिखर पर चन्द्रमाक खण्ड उगल हो तथा ओकरा मेंघक घटा झाँपि देने हो। हे अभिरानी (ई नाम थिक, अथवा पाठान्तरक अनुसारे-अभिसारिणी हे) अहाँक मन कोन पुरुषक गुणेँ लुब्ध अछि जे अहाँ (हुनका संग) जागि राति गमाओल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अछि। कोन कारणे अहाँक अधरोष्ठ मलिन भेल छल, ओकरा पुनः कोन कारणे आरतसँ रङ्गल अछि। बुझा पड़ैछ जेना दूधक स्पर्शसँ प्रबाल (नवीन पल्लव) स्वच्छ भेल हो, पाछू मजीठसँ ओ लाल भेल हो। नवीन पद्मिनी, हाथीसँ मर्दित कए नड़ाओल गेल, पुनः सूर्यकिरणसँ स्पृष्ट भेल (जेहेन बुझा' पड़ैछ) तेहने अहाँ देखबामे अबैत छी; कपट नहि करू; जे बात प्रकट भए गेल तकरा के नुकाओत ? 'दशावधान' कवि कहैत छथि पूर्वक प्रेम देखि ई प्रथम समागम भेल छल। हे भामिनि ! आलम साह प्रभुक सेवा करैत रहू, भ्रमर कमलिनीमे भुला जाईत अछि ॥

गोपीवल्लभ, (१) गमने गमाउलि गरिमा...(पृ० १४७)

(वियोगिनीक विलाप)

गेलासँ अपन गौरव नष्ट होएत; नहि गेलें जोवनक सन्देह अछि। प्रतिदिन शरीर क्षीण भेल, हेमन्त ऋतुक कमलिनीक सदृश स्नेह (नष्ट) भेल। हे मधुरिपु ! आबहु हमर स्मरण अहाँ नहि करैत छी, हमर 'सुन्दरी' ई नाम की करत (व्यर्थ अछि)। विना दोषहिँ हमरा विसरि देलहुँ, केवल ई कथा लोकमे स्थायी रहत। एक दिश कन्हैया (अहाँ छी) दोसर दिस सुविस्तृत हमर विशाल वंश अछि (दूनूमे एको छोड़बाक योग्य नहि) दू मार्गक मध्य पड़लि कुलीन प्रथम अवस्थाक नितम्बिनी हम, संशयमे पड़ल छी। (कवि कहैत छथि) पञ्चवाण (कामदेव) अत्यन्त आततायी छथि, धैर्य राखि अपन पैर स्थिर करू। किन्तु (ओ वियोगिनी) आँचरक भीतर मुँह झाँपि कनैत छथि, तथा अश्रु वहैत आँखिए तकैत छथि ॥

(२) नयन निमेष जनि देखइतें...(पृ० १४८)

(वियोगिनी-विलाप)

देखलासँ नेत्रक निमेष (एक पलक खसबाक समय) हमरा चतुर्युग समान प्रतीत भेल। पति सङ्ग रहि रति क्रीड़ामे एक कल्प समयहुकें अल्प बुझितहुँ। हे हरि हे हरि !! रसिक ओ प्रिय, अनुचित समयमे छोड़ि गेलाह। ओहि लोकक हृदयमे कोन दुःख होएतैक जे दूक आधा (एकाकी) नहि भेल अछि। नाथकें विना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारणहि की कहबैन्हि (कोन दोष देबैन्ह)। कठोर कोकिलक शब्द सुनि कोन प्रकारेँ अपन जीवन राखि सकब, माथ धुनैत (कपार पीटैत) कतेक झाँखब (पश्चात्ताप करब)। मृणालक वलयामे विषक वास (बुझा' पड़ै'छ) चन्दन हमरा नहि सोहाइत अछि। दिनक दोषेँ, चन्द्रमा अपन महत्त्वकेँ विसरि सन्तापित करैत छथि। रसिक कवि 'जयकृष्णन' कहैत छथि – हे श्रेष्ठ रमणी! धैर्य धरू, अहाँक गुणक गौरव जानि मथुराक पति, अथवा मधुर स्वभाव वाला अहाँक स्वामी शीघ्रे भेटताह॥

शुद्धा सारङ्गी, कमल आनन गण्डमण्डल...(पृ० १५०)

(दुर्गाक प्रार्थना)

कमल सदृश मुखक कपोल पर चन्द्र सूर्य समान कर्णकुण्डलसँ शोभित, हृदय पर शोभित तारा-गणक सदृश परस्पर जटासँ गूँथल मुण्डहारसँ अति विमल प्रतीत होइत, दक्षिण तथा वाम पार्श्वक हाथमे चक्र, फणि, (सर्प) त्रिशूल, कुलिश, (वज्र) खड्ग, चर्म (ढाल) धनुषकेँ तथा सारथिसँ हीन महिषासुरक केशकेँ कसने (पकड़ने) चण्ड, तथा मधुकैटभ दूनूक नाश कएनिहारि, मुण्ड तथा महिषासुरकेँ खएनिहारि, धूम्रलोचनकेँ कटनिहारि संपूर्ण संग्राम (भूमि) केँ मुण्डसँ भरनिहारि, भयङ्कर कट-कट शब्द करैत दाँतसँ भय देनिहारि, संग्राममे रक्तबीजकेँ डेरौनिहारि, खप्परकेँ भरि घट घट रुधिर पान कएनिहारि, सबसँ उत्तम (श्रेष्ठ) रहितहुँ योगसाधनामे लागल, सब रसक आनन्दक अनुभव कएनिहारि चण्डीक पाद पद्मक केसरकेँ विनय पूर्वक प्रणाम कए कहैत जी जे, हे भगवती! लखनचन्द्र राजाकेँ अभय वरदान करिऔन्हि तथा (हुनक) सकल शत्रुक दलकेँ मारिऔन्हि।

देशी सारङ्गी, विदिता देवी विदिता हो...(पृ० १५२)

(भगवतीक वैभव-वर्णन)

देवी सर्वविदित छथि, घनीभूत केशसँ शोभित छथि। ओ एक छथि तथापि एक हजार रूपकेँ धारण करैत छथि जेना नगरक नटी अनेक रङ्गकेँ धारण करैत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अछि। अहाँक काजर समान रूपकेँ काली कहल जाइ'छ, उज्जर रूपकेँ वाणी (सरस्वती) कहल जाइ'छ। सूर्य मण्डलमे अहाँकेँ प्रचण्डा कहल जाइ'छ, जल रूपमे अहाँ गङ्गा कहल जाइ'छी। ब्रह्माक घरमे अहाँकेँ ब्रह्माणी, शिवक घरमे गौरी, विष्णुक घरमे लक्ष्मी, कहैत अछि, अहाँक उत्पत्ति-के जनैत अछि, ई 'विद्यापति, कवि गाबि कहैत छथि। हासिनी देवीक पति गरुड़नारायण देवसिंह राजा, जा(या)चक लोकक गति छथि।

अभिरामा सारङ्गी, नमित अलकेँ बेढ़ला...(पृ० १५३)

(विरहिणीक रूपवर्णन)

नमरल अलकसँ वेष्टित मुखमण्डल शोभित अछि, (जे देखि ई भान होइ'छ जे) मुखरूप चन्द्रविम्बक लोभे राहुक बाहु पसरल हो। कामबाणसँ मूर्छित भेल बाला, बहुत काल तक चेतनामे नहि अबैत छथि, ताहिसँ ओ धनी वासि मालतीक मालाक सदृश देखल गेलीहि। कलस समान स्तन पर लोटाएल घन कारी जुट्टी सोनाक पर्वत पर सूतलि कारी नागिनीक समान प्रतीत भेल। विद्यापति कहैत छथि ओहि भावयुक्ता नायिकाक मनमे स्थिरता नहि छैन्ह। लखिमा देवीक पति रूपनारायण शिवसिंह राजहुक सैह स्थिति (मानसिक अस्थिरता) छैन्ह।

शोभना सारङ्गी, पुरह पुरादित अभिमत पुरु...(पृ० १५४)

(पुरादित्यक प्रार्थना, 'अपूर्ण')

हे पुरादित्य हमर पैघ मनोरथकेँ पूर्ण करू, दारिद्र्यक दुःख दूर हटाए दिअ। अहाँक चरणक शरणमे जे अबैत अछि, से धन-वित्त, पुत्र तथा परमपद (मोक्ष)केँ पबैत अछि। (इत्यादि)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनूपा सारङ्गी, तोरए मोञ गेलिहुँ फूल...(पृ० १५५)

(अभिसारिणीक विशृङ्खल मनः कथा)

हम फूल तोड़बाक व्याजे गेलहुँ—ओहि हेतु हमर प्रयास तेहन छल जेना मोती या माणिक्यक हेतु होइ'छ। (हमरा पर दोसर सन्देहे सखी, साजी ताकए लागल तखन हम कहलियैक) "सखी हमर साजी तकैत छह, तोरासँ गुरुओसँ गुरुतर विनय करैत छिअह, हम दिंनहिमे आँखि देखितहिँ ई चोरि कएने छी।" एतए कृष्णकेँ परधन (परकीया)क लोभ छैन्ह। जे लोभ नहि करै'छ सैह नीक होइत अछि। एहिं ठाम तँ निकुञ्जक समूह छैक (अन्धकारक कारणेँ) एहि ठाम मुखलज्जा--परस्पर अवलोकनक सन्देह— नहि छैक ॥ अपयशक समूहकेँ झापबाक काज नहि। हे कृष्ण ! तेना करब जाहिसँ हे नागर ! जखन नगरमे जाइ तँ लाज नहि हो ॥ ई हमर स्थूल स्तनक भार मदनराजक भण्डार थिक। एकरा मस्तककेँ (ऊपरक भागकेँ) कृष्ण रत्नसँ आच्छादित करताह, जाहिसँ हाथ देला पर मलिन (मर्दित) नहि होएत। किन्तु ओ हमर नाथ बड़ कठोर छथि (तेँ जे हम चाहैत छी से करबे करताह तकर निश्चय नहि)॥ कवि कण्ठहार (विद्यापति) कहैत छथि एतेक रसक पार के पाओत। श्री शिवसिंह एकर युक्ति जनैत छथि जे रत्न समान लखिमा देवीक कान्त, तथा सब कला तथा रसक गुणवान् छथि ॥

देशाख्य (ख) रूहव, पिआ परवास आस तुअ पासहि...(पृ० १५७)

(नायिकाक पतिप्रेमवर्णन)

प्रिय प्रवासमे छथि, अहाँक सामीप्यक भरोसे छी, सैह जानि की अहाँ अन्यथा (अनुचित) बाजि रहल छी। जएह प्रतिपालक हो सएह यदि पावक (अग्नि समान जरओनिहार) भए जाए तँ एहिमे आन की बाजि सकत। हे सखि हमरासँ अकर्तव्य नहि कराउ। पूर्वहि प्रियतम हमर हाथ पकड़ि, अहाँक हाथमे सोपलन्हि (तखन प्रवासमे गेलाह)॥ हम यदि कुलटा भए (अनका सङ्ग) प्रेम बढ़ावी तँ (हमर) जीवनक कोन काज। एक तिल भरि (थोड़ कालक हेतु) रंग-रभससँ सुख प्राप्त करब, किन्तु (ओहिसँ) जन्म भरिक हेतु लाज रहि जाएत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुलकामिनी (कुलीन स्त्री) भए, अपने पतिक संग विलास करे, कोनो कुमार्ग पर नहि जाए (ई मर्यादा थिकैक, जकर अचेतनो पालन करैत अछि जेना—) मालतीकेँ की भ्रमर (अपन प्रिय) उपभोग करैत छैक, किं वा ओ लतहिमे सुखाए जाईत अछि। 'विद्यापति' कवि कहैत छथि जे कुलक रक्षा कएनहि ओ रहैत छैक, दूतीक वचनेँ कोनो काज नहिं करी। कारण, ई रूपनारायण राजा शिवसिंह तथा लखिमा देवीक समाज थिक।

शुद्ध सूहव, सरदक ससधर सम मुखमण्डल...(पृ० १५८)

(मानिनीक चाटु, मनाओन)

शरद् ऋतुक चन्द्रमाक समान मुखमण्डलकेँ वस्त्रसँ किएक झँपैत छी? थोड़बो (अहाँक) हँसी अमृतरसक वर्षा करओ (देखनिहारक नेत्र) अमृत पीबाक इच्छाक त्याग करओ। हे मानिनि, अपनहुँ मनमे ई अनुमान करू—जे रूसलासँ आनो लोक (अहाँकेँ) अज्ञान कहत। सोनाक बनाओल सुन्दर बेलक समान दुनू स्तनक अग्रभागकेँ आधा उघाड़ि दिअ— ('करुआधे' यदि एके पद मानल जाए तँ इहो अर्थ संभव अछि उक्तरूप स्तनयुगक अग्रभाग कुड़िआइत होएत) ओ पाणि स्पर्शक रसक अनुभव करओ, ओकर मनोरथ-भङ्ग नहि करिऔक। 'विद्यापति' कवि कहैत छथि नागरी (चतुरा कामिनी) अङ्ग सभक अनुकूल सञ्चालनमे निपुण होइत छथि। रूपनारायण राजा शिवसिंहकेँ लखिमा देवी आनन्दित करैत छथि।

कामसूहव, वदन चाँद तोर नयन चकोर मोर ..(पृ० १५८)

(मानिनीक अनुनय)

अहाँक मुख, चन्द्रमा थिकाह, हमर आँखि, चकोर पक्षी थिक ओ (मुखक) रूप-रूपी अमृत रसक पान करओ। अहाँक अधरोष्ठ, मधुरीक फूल थिक (हम अहाँक) प्रिय, मधुकर-भ्रमर-क समान छी, ओ (ओहि फूलक) मकरन्द विना कतेक काल जीबि सकैत छी? हे मानिनी अहाँक मन पाथरक गढ़ल अछि (कनिओ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहि कोमल होइत अछि) अपने उमङ्गसँ हँसिक (हमरा बातक) किछुओ (हँ वा नहि) उत्तर दिअ, सुख पूर्वक राति बीतओ। अपना मनमे विचार नहि करैत छी, अनकर बात नहि सुनैत छी, विदग्धक वाणी नहि बुझैत छी। अपना मुहेँ अपन काज कहैत बड़ लाज होईत छैक, याचकक आदरक हानि होइत छैक। 'विद्यापति' कहैत छथि हे वरयुवती सुनू—सब क्षण मान नहि करी। राजा रूपनारायण शिवसिंह लखिमा देवीकेँ (मान छोड़ाए) प्रसन्न करैत छथि।

करुण रूहव, कुल गुन गौरव शील सोभाओ...(पृ० १६१)

(शीलरक्षाक प्रार्थना !!)

हम अपन कुल, गुणक गौरव, शील तथा स्वभाव सब (अपना हाथमे) लए, अहाँक नाओ पर चढ़लहुँ। हम अबला छी (अहाँकेँ) अनेक प्रकारेँ कतेक कहब ककरो अधीन भेला पर ओकर विवेक चिन्हल जाइत छैक। हे माधव (अपन अनुचित) हठक त्याग करू, हमरा पार कए दिअ, सबसँ ऊपर परोपकार थिक। हमरा आब (केवल) अहाँक आशा अछि ताहि तरहक काज नहि करू जाहिसँ उपहास हो। अहूँ परपुरुष छी, हमहुँ आनक स्त्री थिकहुँ (एहना स्थितिमे किछु अन्यथा व्यवहार संभव नहि, तथापि) अहाँक रीतिक विचार कए हृदय (हमर) कँपैत अछि। परिणामक नीक अधलाह बूझि किछु करू, केवल जस अपजस सैह स्थिर रहि जाएत। 'विद्यापति' कहैत छथि— (हे नायक) अहाँ गुणवान छी, हाथी महाउतक बुते नवि जाईत छैक, से के नहि जनैत अछि !!

सुन्दर रूहव, नाव डोलाव अहीरे, जिवइतें न पाओव तीरे...(पृ० १६२)

(गोपीक दुराशङ्का !)

ग्वार (नौकासंचालनानभिज्ञ कृष्ण) नौकाकेँ डोलाए रहल छथि, (जाहिसँ आशङ्का होइ'छ जे) जीवैत तीर (दोसर पार) नहि पाएब (कारण, नदीक) जल बड़ तीव्र छैक। खेवाक मूल्य नहि लैत छथि, हँसि हँसि किदन (अस्फुट) बाजि रहल छथि जाहिसँ हृदय कँपैत अछि। हम अपनहि किएक बेचवा लए ऐलहुँ, हमरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़का साप घेरि लेलक— ई हमर पापहिक फल थिक। (एहना स्थितिमे पड़ल) अन्य गोपीक उपहास (हम) करितहुँ (किन्तु) ओहि तरहक फन्दमे अपनहि पड़लहुँ, (आब एहिसँ उद्धारक) आशा नहि। एहि स्थितिमे 'भवानीनाथ' (कवि) कहैत छथि— हे अज्ञ गोआरि अहाँ नहि बुझैत छी, मुरारिदेवक भजन कए रहू, ई कोनो गारि नहि थिक। नवीन कृष्ण, राजा देवसिंह, (एहिमे) जतेक रस छैक (से) जनैत छथि।

वितत सूहव, साए साए काँ लागि कौतुकेँ...(पृ० १६३)

(गोपीक पश्चात्ताप !)

हे सखि, कोन कौतुकवश (हुनका दिश) एक पलक भरि आधा नेत्रेँ (कटाक्षेँ) देखना गेल। एतवहिमे पञ्चवाण रूप व्याध हमर मनरूपी मृगकेँ मर्ममे वेधि देलक। (हमर) गोरस (मक्खन आदि) विरस तथा बासि कहल गेल, (बुझा पड़ैछ) हम छीक भेला पर घर छोड़लहुँ। मुरलीक ध्वनि सुनि हमर मन मोहित भए गेल, (आब हमर गोरसक) विक्रीओमे सन्देह भए गेल। नदीक तीरमे कदम्बक वनमे जमुनाक घाटक समीप घूमि कए तकिते पैर उनटा पड़ला पर काँटसँ (शरीर ?) चिरा गेल। कवि कहैत छथि— हे सुन्दरि 'गोविन्द' (कवि)क सारभूत वचन सुनह पुण्यक शुभ फल स्वरूप सोरमा देवीक प्रिय कंसनारायण रूप नन्दकुमार (तोरा) भेटथुन्ह (वा भेटलथुन्ह ?)

स्मरसन्दीपन कोड़ार, सखि हे आज जायब मोहीं...(पृ० १६४)

(अभिसारनिश्चयनिवेदन)

हे सखि, आइ हम जाएब। घरक, गुरुजनक, डर नहि मानब, अपना वचनसँ (सङ्केत स्थान जएबाक प्रतिज्ञासँ) नहि चूकब॥ चानन लए प्रत्येक अङ्गमे लेपब, गजमुक्ताक भूषण बनाएब, अञ्जनहीन दूनू आँखिओ उज्जरे प्रकाशित होएत॥ स्वच्छ वस्त्रसँ शरीर झाँपि लेब, धीरे धीरे चलब, यदि संपूर्ण आकाशमे (एक नहि) हजार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हजार चन्द्रमा उगथि (तथापि एहि रूपे चललासँ हमरा कोनो बाधा नहि होएत) हम ककरो दृष्टिक (ककरोसँ देखल जएबाक) निवारण नहि करब और ने हम कोनो ओोढ़ करब। अधिक चोरि पर-पुरुषक विषयमे करबाक थिक, ई (प्रकृत नायक) तँ हमरा स्नेहक सार थिकाह। 'विद्यापति' (कवि) कहैत छथि—हे युवती सुनू साहसें सब काज (सिद्ध) होइ'छ-ई रस सोरमा देवीक समक्षमे रसमय शिवसिंह बुझतैन्ह।

(एहि गीतमे 'लोत' शब्दक अर्थ सन्दिग्ध अछि-प्राचीन समाजमे नेनुक पिण्डमे 'लोत' शब्दक व्यवहार देखि एहि ठाम सार अर्थ कएल गेल)

वियोगिकोडार, साए साए पिआकेँ कह विनती...(पृ० १६६)

(वसन्त ऋतुक असह्यताक वर्णन)

हे सखि हे सखि प्रियकेँ ई (हमर) विज्ञप्ति कहि देबैन्हि। एहि वसन्त ऋतुकेँ ओो ओतहि (जतए छथि ततहि) बिता लेथु (पश्चात् एतए अएबाक होन्हि तँ आबथि) कारण, एतए एक रीति (एखन) नीक नहि अछि। (से ई जे) गाढ़ चन्दनक रस स्पर्शमे विषक समान लगैत छैक, पिकक शब्द सुनबामे दुःसह छैक। चन्द्रमा अग्निक वर्षा करैत छथि, रातिमे निद्रो नहि होइत छैक, अन्यो प्रमाद सब एतए होइ'छ। जे विपरीत बात सब एहिठाम सम्प्रति होइत छैक से सब कतेक कहब, अन्य के एहि तरहक बात सभक विश्वास करत ? जखन हरि (प्रिय) अओो-ताह हम सबटा निवेदित करबैन्हि—यदि पञ्चबाण (काम) जीबैत रहए देताह ! नसिराक राजा सोरम देवीक पति कंसनारायण कहैत छथि जे--सुमुखी ई संवाद आदर पूर्वक नासिर साह सुलतानकेँ देने छलीह।

वियोगि कोडार, सिरिहिं मिलल देहा...(पृ० १६७)

(नायिकामे संभोगक चिह्न नहि देखि, सखीक सन्देह, नायिका द्वारा सन्देहक निवारण)

शिरीषक (फूल) सदृशे शरीर, स्तन पर चन्द्रमाक रेखा नहि, सुगन्धि (जे शरीरमे लिप्त छल से) घामसँ धोआएल नहि। अधरोष्ठ रूपी मधुरीक फूल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वावस्थहिमे अछि, ओकर मकरन्द (रस) धएले अछि। (एहि सबसँ बुझाइ'छ जे) हे रमणी तोँ अपना प्रियसँ विसरलि आएल छह? कारण, पुरुष सिंहक समान होइ'छ स्त्री दमनक लता सदृश, जे छुवितहि म्लान भए जाइ'छ। की जाइतहिँ तोँ मान कएलह, की कोनो अन्ये अवसर (जाहिमे स्पर्शक संभावना नहि से) उपस्थित भए गेलह, अथवा की तोहर वल्लभ शिशु छथुन्ह? (नायिका कहै'छ) हे सखि! धन चोरबए (चोरकँ देबए) गेलहुँ, तावत् परिजन जागि गेल; तखन तँ चोरकँ कलङ्क लगबाक संभव (एही कारणे हमर ई स्थिति) 'विद्यापति' कहैत छथि हे वर युवती सुनू ई रस केओ केओ जनैत अछि—(जाहिमे) लखिमा देवीक रमण रूपनारायण राजा शिवसिंह—(सेहो छथि)

मोरङ्गिआ कोडार, रितुराज आज विराज हे सखि...(पृ० २०१)

(विरहिणी-द्वारा वसन्तक उत्तापक वर्णन)

नगर-नायिकागणसँ संमानित हे सखि! आइ वसन्त ऋतु शोभित अछि। उद्यानमे जेकि स्वभावतः शोभित तथा पुष्पित अछि, नवीन पत्रक कारणे नवीन रङ्ग भेल छैक। हे सखि, फुलाएल वनमे कोकिल (सबकेँ) कष्ट पहुँचा रहल छैक, (अनकर कथा कोन) मुनिहुक मनमे दुःख उत्पन्न भए रहल होएतैन्ह। हे सजनी! हमर पति वसन्तहुमे निर्दय छथि, मदन भयङ्कर छथि, प्रिय निष्करुण छथि। अत्यन्त मातल भ्रमर, मधुर शब्द कए रहल अछि, मालतीपुष्पक मकरन्दसँ युक्त समयमे, प्रियक किछुओ समाचार नहि. एहन केवल हमहि भाग्यक दोषेँ वञ्चित छी। ओएह नागरी संसारमे वञ्चित कहबैत अछि जे एहि (वसन्त) ऋतुमे स्वामीक संग विहार नहि करैत अछि। कामदेव अत्यन्त हाव भावसँ मारि रहल छथि, चन्द्रमा सूर्य सदृश, सूर्य चन्द्रमाक सदृश बुझा, पड़ैत छथि, पूर्वक पापेँ जतेक संताप भए रहल अछि से हमर मन, वा कामदेव, जनैत छथि। कामदेव सन्धानि कए वाण मारैत जरा, रहल छथि। चन्दन लगओलासँ शरीरमे चतुर्गुण ज्वाला होइ'छ। 'धरणीधर' (कवि) कहैत छथि, सब, मानसिक दुःख, ज्वाला तथा व्याधि समाप्त होएत; हे कामिनी! धैर्य धरू। (अहाँक) नीक स्वामी शीघ्र घर जएताह नीक फलेँ राति बीतत। नीक फलेँ रातिक अन्त होएत, धैर्य धरू।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दण्डककोडार, श्रीमुरारि–पदारविन्द...(पृ० १६८)

(गङ्गास्तुति)

(संस्कृत)

शुद्धकोडार, जय जय जय नतसततशिवङ्करि...(पृ० १६९)

(भगवतीक स्तुति)

अहाँक वारंवार जय हो, अहाँ प्रणाम कएनिहारक सतत कल्याण करैत छिऐन्हि। अहाँ मनुष्यक मुण्डक माला पहिरने छी। अहाँक जिह्वा लटकल–नमरल–अछि। दाँत अत्यन्त भयङ्कर अछि, वस्त्रक स्थानमे अहाँके बाघम्बर भेटल अछि। अहाँक चारू दिशामे मनुष्यक माँससँ सन्तुष्ट कतेक रास शृगाल सब फुकरि रहल अछि। मणिमय अनेक प्रकारक भूषणसँ शोभित वेदी पर अहाँक निवास प्रसिद्ध अछि। भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षस अगणित योगिनीक समूह एहि सबसँ अहाँक संगति जाहि कालमे नहि हो एहेन कोन काल कहल जाए—अर्थात सब काल ई सब अहाँक संग रहितहि अछि। अहाँक तीनू नेत्रक प्रकाश निर्मल प्रातः कालक सूर्यक बिम्बक सदृश अछि। राक्षस सभक शोणित रूप मदिराक मदसँ मातलि अहाँक मुखमे अमृत समान हँसी अछि। अहाँक उचित स्वरूपक ज्ञान हमरा नहि अछि. तथापि अहाँक गुणक गान करैत छी। हे देवी केवल अहींक पदक वन्दना करैत छी; 'लोचन' कविकेँ अपना दासक गणनामे लए अबिऔन्हि—अथवा अपन दास पर नेत्रपात करू।

मङ्गली धनछी, अगर उगारि गारि मृगमदरस...(पृ० १७१)

(अभिसारमे आएल नायिकाक वर्णनपूर्वक अपन प्रयास, तथा नायकक कर्तव्यक निर्देश, दूती करैछ)

अगरसँ शरीरकेँ उगारि कस्तूरीक रसकेँ गारि अनुलेपन कए, अन्धकारमे मिलि क्षणहिमे अलक्ष्य भए चलली जेना नवीन कसौटी पर मोसिक रेखा हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे माधव, अहाँ हर्षित भए नवोदित कलङ्करहित चन्द्रमा जेना पृथ्वी पर होथि—एहि तरहक एहि धनीकेँ देखू। घरक गुरुजनक देखबाक अतिशय शङ्कासँ ई शशिमुखी कतेक बेर घुमैत छलीह। अहाँक गुणगणक कथन कए, सुमुखीकेँ विश्वास दए, साहि टारि कए आनल अछि। एहि हेतु लोक दौड़ल फिरैत अछि जे विना प्रयासेँ आनक धन पाबी (से अहाँकेँ अपनहि उपस्थित भेल छथि) सैकड़ो जन्ममे मदनक महामन्त्रक जप कएने छलहुँ, से आई भाग्य-वा विधाता सफल कएने छथि। ई (गीत) गोविन्द दास सोरमा देवीक समक्ष कंसनारायणकेँ कहलैन्ह।

पहडिआ (धनछी), की परवचने कन्ते देल कान...(पृ० १७२)

(विप्रलब्धा नायिकाक-नायकक नहि अएबाक कारण सभक उद्भावना)

की कान्त प्रतिपक्षीक वचन पर ध्यान देलैन्ह? की अन्य कामिनी हुनक ज्ञान केँ (हमरा विषयक स्मरणकेँ) हरि लेलकैन्ह? की ओ पहिलुका स्नेह विसरि देलैन्ह? की आब (हमर वा हुनक?) जीवन सन्दिग्ध भए गेल अछि? की पूर्व-कृत पाप आब फलोन्मुख भेल अछि? अथवा कोनो अपराधेँ विधाता एहि रूपक शाप देने छथि? हे सखि! हम कोन प्रकार (उपाय) करब? की हमर कोनो अविनय भए गेल अछि? की हम कोनो एक कामकलामे (अनकासँ) हीन छी? अथवा की समयक (आइ कालुक) इएह परिपाटी (व्यवहार) छैक (जे विश्वास दए पुनः पलटि जाइ)? 'मधुसूदन' कवि मनमे विचारि कहैत छथि जे—की धैर्य कएने मुरारि नहि भेटताह? (अवश्य भेटताह)

पञ्चमस्वरा (धनछी), आकुल चिकुरे बेढल मुख शोभ...(पृ० १७३)

(विपरीतरतिक वर्णन)

छिरिआएल केशसँ वेष्टित मुख (एहि रूपेँ) शोभित अछि (जेना) राहु चन्द्रमण्डल पर लोभ कएने हो। खुजल (केश) फूलक माला अपन अङ्गमे (बीच बीचमे) धारण कएने अछि जेना जमुनामे गङ्गाक तरङ्ग मिलल हो। परिश्रमक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जलविन्दु (पसीनाक विन्दु)सँ मुख एहि तरहेँ शोभित अछि जे कामदेव मोतीसँ चन्द्रमाक पूजा कएने होथि। सुमुखी कृपणता त्यागि प्रियमुखक चुम्बन (वारंवार) कए रहल छथि, (लगैत अछि जे) चन्द्रमा मुख नीचा कए कमलक पान कए रहल होथि। उनटाएल स्तन पर हार लटकि रहल अछि जेना सोनाक (दू) कलससँ दूधक (दू) धार वहि रहल हो। नितम्ब पर घुघरूक शब्द एहि तरहेँ सुन्दर लगैऽछ जेना कामदेवक विजय रथक बाजा बाजि रहल हो। 'विद्यापति' अपना मने अनुमान कए कहैत छथि जे कामिनी प्रियक सम्मति जानि कए (एहि तरहेँ विपरीत) रमण कए रहल छथि!

(टिप्पणीमे प्रदर्शित पाठान्तरक अनुसार 'कुसुम'क स्थानमे 'चिकुर' 'नितम्बिनि'क स्थानमे 'नितम्वहि' पाठ जे अछि सैह अर्थक अनुसार ठीक थिक ई ध्यानमे राखि तदनुसारे अर्थ कएल गेल अछि)

श्रीविभिश्रा (धनछी), मलिन कुसुम तनु चीरे...(पृ० १७४)

(विरहिणीक विषम अवस्थाक वर्णन दूती द्वारा)

फूल सदृश शरीर तथा वस्त्र, अथवा शरीर परक फूल तथा वस्त्र, मलिन भए गेल छैन्हि, हाथ पर मुँह छैन्हि, नेत्रसँ जल वहि रहल छैन्हि। हे माधव! हुनका विषयमे की कहव, राधा अहाँक गुणमे लुब्ध भए मुग्ध भेल छथि। छाती पर कारी केशक जुट्टी डोलैत छैन्ह—जेना कमलक कोंढ़ी पर कारी नागिनी (लोटाइत) हो। केओ सखी (जीवनक निश्चयक हेतु) श्वास तकैत छथिन्ह, केओ कमलिनीक पातसँ बसात कए रहल छथिन्ह। (चेष्टा बुझबाक हेतु) केओ (मिथ्ये) बजैत छथि जे हरि अएलाह; अहाँक नाम सुनि, ऊर्ध्वश्वास लए, उठि गेलीह। सुकवि 'विद्यापति' गावि कहैत छथि जे विरहिणीक वेदना सखी (नायककेँ) बुझबैत छथि।

योगिया धनछी, लाखहुँ लता कोटि तरुअ...(पृ० १७६)

(दूतीक द्वारा नायकक अनुनय)

लाखो लता अछि, कोटिओ वृक्ष अछि, युवती कतेक (संसारमे) छथि तकर गणना नहि। सब फूलक मकरन्द मधुमये होइऽछ, किन्तु मधुओमे कोनो विशेष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधु होइत अछि। हे सजनी! हमर वचन सुनू, (ओहि पर ध्यान दिअ) सबकेँ छोड़ि हरि अहाँकेँ चाहैत छथि, (अहाँ) अनकर पुण्यक सराहना (श्लाघा) करैत छी? जाहि मधुकर भ्रमर निद्रितावस्थहुमे स्मरण करैछ, वासिओ भेला पर जकरा नहि विसरैत अछि, उड़ि कए (अन्यत्र गेलो) भ्रमर पुनः जाहि पर उड़ि कए पड़े—ओएह संसारक सार थिक) अहींक चिन्तन, अहींक वार्त्ता, सेजहु पर अहींक हेतु स्थान (खाली)। स्वप्नहुमे हरि अहाँकेँ नहि विसरैत छथि, अहींक नाम लैत उठैत (जगैत) छथि। आलिङ्गनक समयमे पाछाँ तकैत छथि—अहाँक आगमनक आशासँ। अहाँक विनु हुनक कोर शून्ये रहैत छैन्हि। हृदयक कथासँ गुप्त रूपे व्यथाक अनुभव करैत छथि, लाजे नोर नहि खसवैत छथि। सरस कवि 'विद्यापति' अपना मनमे निश्चय कए, ई गबैत छथि—जकरा प्रेमे वल्लभ वशीभूत रहथि ओएह कलावती नारी थिकीह।

(एहि गीतमे नेपाल तालपत्र वा मित्र-मजु० क संस्करणमे "लाखे तरुअर कोटिहि लता" पाठसँ प्रारम्भ अछि। ओएह पाठ उपयुक्त थिक। नायिकाक संख्या अधिक देखौनहि नायकक दौर्लभ्यक व्यञ्जना, जे दूतीकेँ अभीष्ट छैक से सिद्ध होएत)

शांभवी धनछी, जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारि...(पृ० १७७)

(शिव-स्तुति)

हे शङ्कर हे त्रिपुरासुरक मारनिहार अहाँक जय हो, जय हो, अर्धाङ्गे पुरुष तथा अर्धाङ्गे स्त्री-रूपेँ अहाँक जय हो। आधा (पुरुष) शरीर श्वेत, आधा (स्त्री शरीर) गोरवर्ण, आधा (स्त्री शरीर)मे पटोर, आधा (पुरुष शरीर)मे मूँजक डोरी मात्र। आधा (पुरुष) योगाभ्यासमे, आधा (स्त्री) भोग विलासमे। आधा (पुरुष) पिनाक (धनुष) धारण कएने, आधा (स्त्री) नाकक भूषण पहिरने। आधा (स्त्री) भागमे सिन्दूरक विन्दु, आधा (पुरुष) भागमे विभूति (भस्म)। आधा (पुरुष)केँ हाड़क माला, आधा (स्त्री)केँ गजमुक्ताक माला। 'रत्न' कवि कहैत छथि—बुझाइत अछि ब्रह्मा एके प्राणकेँ दू भाग कए बाँटि देने छथिन्ह॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शोभना धनछी, सपने आएल सखि मझु पिअ पासे...(पृ० १७६)

(सखीक प्रति स्वप्न समागमक वर्णन)

हे सखि स्वप्नमे हमर प्रिय (हमरा) समीप अएलाह, ओहि समयक हृदयक उल्लासक वर्णन हम की करब ? धनुषक डोरी, (वा ओहि पर) वाणक सन्धान देखबामे नहि अबैत छल, किन्तु चारू दिशसँ कामदेवक वाण पड़ए लागल। थोड़ विकसित टेढ़ नेत्र (कटाक्ष) दूनूक भेल। (ओहि समयक स्थिति ओहने छल) जेना चन्द्रमाक उगला पर समुद्रमे हिलोर उठैत छैक। आलिङ्गनक समयमे चौंकि कए उठलहुँ (निद्रा भङ्ग भेल) तखन शून्य शय्या देखि लजाए गेलहुँ। 'विद्यापति' कहैत छथि—सुनू-स्वप्नमे जतेक देखने छी से मन (मनोरथ) पुरि जाएत।

गौडीय गौडमालव, बाँधए विकट जजा, तथिहुँ चाँदन फोटा...(पृ० १८०)

(शिवक स्वरूपक वर्णन)

भयङ्कर जटा बँधने छथि ओहि पर चानन्क (चन्द्रमाक ?) फोट (ठोप) छैन्हि। कतेक हजार युग बएस बीति गेलैन्ह (किन्तु) उन्मत महादेव संमत नहि भेलाह। माथ पर छाउर दैत छथि, जकरा सहजे नहि छोड़ि सकैत छथि। सुकवि 'विद्यापति' ई गौलन्हि, राजा शिवसिंह (चिर) जीवित रहथु।

मैथिल गौडमालव, गेलहुँ पुरुब पेमे उतरो न देइ...(पृ० १८१)

(दूतीक द्वारा नायिकाक मान अानहि जाए छोड़एबाक हेतु नायकक प्रेरणा)

पहिलुका स्नेहक भरोसे (अहाँक नायिकाकेँ मनबए) गेल छलहुँ किन्तु ओ उत्तरो नहि देलन्हि। हमर अनुकूल वचनकेँ प्रतिकूल बुझि लैत छथि। हे हरि (अपन) भाव समर्पित कए ओ रमणी रूसलि छथि, ओ हस्ति सदृश गति वाली हमरा बुतेँ नहि अउतीह। जाइए क हुनका (अपनहिं) मनाउ; (दुनू गोटेक) सामञ्जस्य बनल रहओ; सबसँ अधिक आँखिक लाज (बलवान) होइ'छ। (परस्पर दुनू गोटेक आँखि मिलला पर, हुनक मान टूटि जाए से आशा) ओ जे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किछु कहलन्हि से एखन धरि धएनहि छथि (अपना वचन पर दृढ़ छथि) नीक वचन, वा नीक जकाँ कहला पर, अपनहि गेने सब बात बूझि लेब (हमरा कहबाक कोन प्रयोजन) 'विद्यापति' कहैत छथि—ई स्त्रीक स्वभावे थिकैक। एहसलि रमणीकेँ पुण्यवाने व्यक्ति पबैत छथि।

देव राजविजय, कतहु श्मश्रुधर कतहु पयोधर...(पृ० १८२)

(शिवक अर्धनारीश्वर स्वरूपक वर्णन)

कोनहु भागमे मोँछ, कोनहु भागमे स्तन, श्रेष्ठ श्रेष्ठ दूनू मिलल छथि जाहिसँ नीक शोभा अछि। आधा अङ्गमे नारीकेँ धारण कएने छथि (बुझा पड़ैछ अन्यत्र रखवामे) अपन गारि (कलङ्क बुझलैन्हि) कारण गुरुतर गौरीक गुणक लोभ छैन्ह। हे शिव शम्भु! अहाँ शिव (कल्याण स्वरूप) तथा शम्भु (कल्याणक उत्पादक) थिकहुँ, अहाँ तँ पञ्चवाण (कामदेव)केँ मारने छी (तेँ कामवशीभूत भए अहाँक ई आचरण नहि थिक)। गङ्गाक हेतु गिरिजाकेँ अहाँ मनाओल—जे हे देवि कोन हेतु हिनका विषयमे अहाँ अनुचित (सौतिनक आरोप) बजैत छी। अहाँक पएर पर (हमर मस्तक परक) फणिक-मणिमय भूषण नमल अछि तथा (मस्तक नम्र भेला पर ओहि परसँ खसल) चन्द्रमा अहाँक घरमेँ खिखिआइत (खल खल हँसैत प्रकाश कए) रहल छथि। 'विद्यापति' कहैत छथि—हे त्रिलोचन अपना पदकमलमे हमर सेवा पर कान दिअ। चन्दल देवीक पति वैद्यनाथ राजाक गति (शरण) नीलकण्ठ शिव देव थिकाह। अथवा ओ राजा हमर गति, तथा नीलकण्ठ शिव हमर देवता थिकाह॥

आलान त्रिमिश्र (राजविजय) जय जय भगवति भीमा भयानी...(पृ०१८३)

(भगवतीक स्तुति)

हे, भीमा तथा भयदाली ('भवानी'-पाठमे भीम-भयङ्कर स्वरूपा भवानी) अहाँक जय हो अहाँ ब्रह्मवादिनी-वेदक उपदेश देनिहारि भए चारूवेदक स्वरूपेँ एहि पृथ्वी पर अवतार लेने छी। विष्णु, शिव तथा ब्रह्मा (अहाँक रहस्य) पुछइत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घुमैत छथि, केओ अहाँक आदिक रहस्य नहि जनैत छथि। 'विद्यापति' ई कहैत छथि—राजा सभक मुकुटक मणिक सदृश रूपनारायण राजा पृथ्वी पर जीबइत रहथु।

देश राजविजय, जाति पदुमिनि सहति कता...(पृ० १८४)

(नायकक प्रतिबोधन सखीक द्वारा)

'पद्मिनी' वर्गक (हमर सखी, अहाँक) नायिका कतेक (पीड़न) सहि सकत? (ओ तँ) गजसँ (हाथीसँ) मर्दित दमनलता (एक विशिष्टजातीयलता) सदृश भए गेल अछि। अधिक लोभे मूल (मूर) हुकेँ नहि समाप्त करू; जे मूरक रक्षा करैत (सूदमात्रक) उपभोग करैत अछि सएह (नीक) व्यापारी थिक। जे वस्तु, (स्तन) जोड़ा बेलक फड़क समान छल, (तकरा अहाँ) खोइँचा रहित नारङ्गीक समान कए देल। 'विद्यापति' कहैत छथि—हे नायक! एहि विषयमे लाथ (कोनो बहाना) नहि करू, भूखल व्यक्ति दूनू हाथे (अति आतुर जकाँ निर्विचार भए) नहि खाईत अछि।

कानरा राजविजय, नमओो नमओो चण्डी चरण युगल तोर...(पृ० १८४)

(भगवतीक स्तुति)

हे चण्डी! अहाँक दूनू चरणकेँ वार वार प्रणाम करैत छी, शीघ्र हमर पापक नाश कए हमरा अभय वर दिअ। हे चण्डी! अहाँक दाँत कट कट शब्द करैत अछि, जीह लह लह चमकैत अछि, खड्गसँ (शत्रुकेँ) मारि अहाँ ओकर रुधिरसँ अपन खप्पर भरैत छी। (शत्रुकेँ) ताकि, देखि, क्षोभ कए, शीघ्र जाए पकड़ैत छी, (ओकरा काटि ओकर) रुधिर मुँहमे लए घट-घट घोंटैत छी। हे भगवती लखनचन्द्र राजा अहाँक भक्ति करैत छथि अहाँ हुनका अभय वर तथा अपना दूनू चरणमे अनुराग दिऔन्हि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मङ्गल राजविजय साँझक अतिथि भागेँ विहि आन...(पृ० १८५)

(पथिकक प्रति नायिकाक गूढ़ उक्ति)

सन्ध्या कालक अतिथि विधाता भाग्यहिँ लबैत छथि, (ओहि अतिथिक) विमुख भेने बड़ पाप होईत छैक—(एहि विषयक) ज्ञान (हमरा) अछि। हमर पति परदेशमे रहैत छथि; पथिक सदृशकेँ देखि हमरा क्लेश होईत अछि। हे पथिक आन ठाम घूमि (किछु समय विताए) वास (एतहि ?) लिअ। हमरा दोसर तेसर घर नहिं। चतुर 'चतुर्भुज' (प्रायः कविक नाम) ई रस जनलैन्हि; सज्ञाना नायिका कौसलसँ (वाक् चातुर्यसँ) अपन अभीष्ट कार्य करैत छथि।

मनमोद रा० वि०, सखि मधिरिपुसन के कतए सोहाओन...(पृ० १८६)

(कोनो गोपीक, कृष्णक भेट भेला पर अपन स्थिति तथा हुनक सौन्दर्यक वर्णन सखीक प्रति)

हे सखि मधुरिपु (श्रीकृष्ण) सन के कतए शोभावान अछि, जे (ओहिसँ) हुनक (श्रीकृष्णक) उपमा दिअ। मानू हुनक (मुखक) नेओछन (उतारल अंश) शरद् ऋतुक चन्द्रमा थिकाह, कमलक तँ (हुनका मुखक सङ्ग) नासो के लेत। हे सखि आइ हम हाट पर मधुरिपुकेँ देखलिऐन्ह दूनू नेत्र शीतल भए गेल, ओ आधा नेत्रसँ टेढ़ भ्रूभङ्ग कए जखने हमरा दिश देखलैन्हि, ओही अवसरमे कामदेव जागि गेलाह स्थान स्थान पर आँगी (फाटि) गेल। सखीक मुहेँ ई सुनल छल जे ओ बड़ रसिक छथि तेँ दर्शनक लोभे हम पसार (परिचय बढ़क अवकाश) देलहुँ, ओही समयमे (रति) रस उत्पन्न भेल, हम पराधीन भए गेलहुँ दूधहुक कजसी (माथ पर अछि से) विसरि गेलहुँ। दानमे कल्पतरु रूप पृथ्वी पर अवतीर्ण भेल, हिन्दू जातिक सुलतान, मेधा देवीक पति, रूपनारायण राजाकेँ प्रणाम कए 'जीवनाथ' कवि ई कहैत छथि।

भठिआल राजविजय, जय जय दुर्गे दुर्गतिहारिनि...(पृ० १८८)

(श्रीदुर्गाक स्तुतिं)

दुर्गतिक नाश कएनिहारि सब सिद्धि देनिहारि हे दुर्गे! अहाँक वारंवार जय हो! अहाँक चरणकमलक सेवासँ भुक्ति तथा मुक्ति दुहू विना दुःखे प्राप्त होईछ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विष्णु, ब्रह्मा, अग्नि, इन्द्र तथा शिव अहाँक ध्यान करैत छथि। हे आदि शक्ति भयकेँ देनिहारि भगवती! अहाँक अन्त केओ नहि पबैत छथि। अहाँक शरीर मरकत मणिक समान अछि; तीन नेत्र तथा चारि बाहु (अहाँकेँ) अछि। हाथ सबमे शङ्ख, चक्र, बाण तथा धनुष धारण कएने छी, शिव अहाँक अनुसरण कएनिहार छथि। मणिमय अहाँक कुण्डल अछि, मनोहर हार (मोतीक माला) अछि, (पैरमे) नूपुर घन-हन शब्द करैत अछि। (डाणमे) घुघरू रन-रन बजैत अछि, सुन्दर कङ्कण (हाथमे) अछि, (एहि तरहेँ) अनेक प्रकारक भूषण शोभित अछि। सिंहवाहिनी अहाँ अनुकूल होउ, अहाँक स्मरण कए महेश्वर मोह रहित भेलाह। 'सदानन्द' कहैत छथि—संसारमे ताकि (खोजि) अहाँक दूनू चरणकेँ हम अपन शरण (आश्रय) बनाओल।

शुद्धनाट, मृगमद पङ्क अलका...(पृ० १६०)

(सखीक द्वारा नायिकाकेँ पसाहनिक निरर्थकता सूचनपूर्वक हुनक सौन्दर्यक वर्णन)

अलकमे कस्तूरीक लेप, मुखमे तिलक, नहि करू, सम्पूर्ण पूर्णिमाक चन्द्रमा कलङ्क लागि मन्द (प्रकाशहीन) भए जएताह। राधा स्वभावतः बड़ सुन्दरी छथि अधिक पसाहनि (प्रसाधन) की (कथी लए) करतीह। श्वेत कमल सन नेत्र (कोश-भाग) काजर लगाए मलिन नहि करू, कारण दूधक धोएल भ्रमर मोसिमे डूबि (अति) श्याम वर्णक भए जाएत। स्थूल गोर स्तन उनटाओल सोनाक कटोराक समान अछि, तकरा चन्दन लगाए श्वेत नहि बनाउ, कारण, हिमसँ (बर्फसँ) सुमेरु पर्वत झँपाए जाएत। एहि गीतक कवि 'विद्यापति' कहैत छथि, जतए सूर्य छथि ततए अन्धकार कतए? रूपनारायण प्रभु गुरुलघुक तुलना तारतम्य करताह।

मलारी नाट, गगन गरज मेघा उठए धरणि थेधा...(पृ० १६१)

(विरहिणीक दशाक वर्णन)

आकाशमे मेघ गरजैत (सुनि) भूमि पर हाथ रोपि उठैत छथि, कामदेव हृदयकेँ विद्ध कए चल गेलथिन्ह। सुमुखीक शरीर क्षीण भए गेलैन्ह आजुक दिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(प्रायः) जिउतीह; कालिह् की होइतीह से के कहि सकत ॥ हे माधव ! ध्यानपूर्वक हुनक वाणी सुनू। कुजनक ताकुत कए (केओ दुर्जन हमर बात तँ नहि सुनि रहल अछि—ई निश्चय कए) सुजना सखीक समक्ष सज्ञाना (ओ) जे किछु कहलैन्ह अछि ॥ की हम सन्ध्या समयक एकसरि तारा (जकरा देखब लोक अनिष्ट मानैत अछि) छी ? वा की हम भाद्रपद (शुक्ल पक्ष) चतुर्थीक छन्द्रमा छी ? प्रिय तँ एहने हमरा मुखकेँ मानलैन्हि, हे पति ! हमर जीवन मन्द अछि ॥ वक्रगतिए (सोझा सोझी नहि) जे संवाद पठौलैन्हि से (ओ लोकनि) कहि कहि गेलीहि। कृष्ण पक्षक त्रयेदशी तिथिक रात्रिक चन्द्रमाक समान हमर दशम दशा (मरणासन्नावस्था) भेल अछि ॥ 'विद्यापति' कहैत छथि हे वरयुवती ! सुनू अपना मनमे किछु अन्यथा भाव नहि मानू। रूपनारायण राजा शिवसिंह लखिमा देवीक अनुरञ्जक छथि ॥

परञ्च, रयनि काजर बम भीम भुअङ्गम...(पृ० १९२)

(अभिसारिणीक अपन अभिसारक निश्चय, तथा ओहिमे साहसक वर्णन)

राति अन्धकार रूप काजर उगिलि रहल अछि, भयङ्कर सर्प सब (जहाँ तहाँ) अछि। (मेघक) गर्जनसँ मन डेराइत अछि, मेघ क्रुद्ध भए वर्षा कए रहल अछि (एहना स्थितिमे) अभिसार संशयमे पड़ि गेल (नायकक संकेतित स्थान पर पहुचब वा नहि से सन्दिग्ध भए गेल)॥ हे सजनी (अपन) बचन छोड़ैत (अपन स्वीकृत अभिसारक त्याग करैत) हमरा लाज होइ'छ। जे होएबाक हो से वरु होअओ, हम सब (कष्ट) स्वीकार कएल—जखन कि आइ साहसमे मन देल। (अन्धकारक कारणे) जतए सँ चलैत छी घूमि कए पुनः ओतहि आबि जाइत छी; स्थानक परिचय स्पर्शेसँ (देखलासँ नहि) होइ'छ, दिशा तथा मार्गक विषयमे सन्देह उत्पन्न होइ'छ। हरि हरि ! शिव शिव !! यावत् (हमरा दूनू गोटेक) स्नेह उत्पन्नो नहि भेल अछि तावतहि जीवन चल जाएत। (मार्गमे) साप पैर छानि देलकैन्ह, ओ धन्या एकरा हित कए बुझलैन्ह—कारण, नूपुर शब्द नहि करतैन्ह। हे सुमुखि ! अहाँके पुछैत छी अहाँ हमरा सत्य कहब—प्रेमक एक ओर (अन्तिम सीमा) कतए छैक ? अपन हितेच्छु मित्र (जे किछु से) ओही पर-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपनायक-कें बुझी, अथवा अपन जे पहिला हितेच्छु मित्र होथि तिनका शत्रु बुझी (केवल ओहि नायकके अपन मित्र बुझी) तखन प्रेमक पराकाष्ठा (अन्तिम सीमा) पाबी। चन्द्रमा हरिणके धारण कएल (ओहि खातिर) राहुक कौरकें सहन कएलैन्हि—एहिसँ बुझैत छी प्रेममे पराभव कम बुझा पड़ैत छैक। 'विद्यापति' कहैत छथि—हे सचेतनि ! सुनू—अपना गमनमे-अभिसारमे विलम्ब नहि करू। रूपनारायण राजा शिवसिंह सब कलाक आश्रय छथि।

शङ्कुक नाट, दूरहि ऊरु रहल गहि ठाम...(पृ० १६४)

(प्रथम समागमक वर्णन)

दूरहिसँ ऊरु (जाँघ) ठाम पकड़ि (स्थिर) रहि गेल (आगू नहि बढ़ल) चरण, स्थल-कमलक उपमा पओलक। स्वेदबिन्दुसँ पूर्ण शरीर, मोतीरुप फलसँ युक्त बिजुलीक रेखाक सदृश भेल ॥ संकेत स्थानमे श्रीकृष्णकें देखि नायिका अपना अधीनमे नहि रहलीह। गौरवर्ण स्तन रोमाञ्चित भए गेलैन्ह (बुझाए पड़ल जे दग्ध भेल काम पुनः अङ्कुर दए बहार भेल होथि। वचन बाजबामे स्वर भङ्ग भए गेलैन्ह, शरीर केराक भालरि जकाँ काँपए लगलैन्ह। रसिक 'श्यामसुन्दर' कवि गबैत छथि, सब भावसँ अधिक कामोद्रेकें भेलैन्ह। कमलावतीक पति गुणक निधि, कृष्णनारायण ई रस जनैत छथि।

परज्ञ, करतल कमल-नयन ढर नीर...(पृ० १६५)

(कृष्णक अनुनय दूती द्वारा)

तरहत्थी पर नेत्र कमलसँ जल ढरकि रहल छैन्ह, केशक ध्यान, वस्त्रक संभार नहि रहलैन्ह—जे की कोन अवस्थामे अछि। अहाँक मार्ग तकैत तकैत चित्त स्थिर नहि रहलैन्ह, पूर्वक स्नेहक स्मरण कए शरीर दग्ध होइत' छैन्हि। हे माधव ! कतेक काल तक अहाँ मानक साधना करब, ओ विरहिणी युवती दर्शन दानक याचना करैत छथि। कमल जलमे रहैत अछि, सूर्य आकाशमे; चन्द्रमोकें (अपन प्रियासँ) व्यवधाने छैन्ह; कारण, कुमुदिनी (हुनकासँ) कतेक दूर पर अछि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेघ आकाशमे गरजैत अछि, (पर्वतक वा वृक्षक) शिखर पर मयूर रहैत अछि। कतेक लोक ई जनैत अछि जे स्नेह रहने दूरत्व कतए रहै'छ! 'विद्यापति' कहैत छथि—जे ई विपरीत (उनटे) मान थिक, (तेँ) राधाक वचन सुनि कृष्ण लजाए गेलाह॥

परज, गगन गरज घन जामिनि घोर...(पृ० १६५)

(अभिसारिका द्वारा नायकक प्रार्थना)

आकाशमे मेघ गरजि रहल अछि, रात्रि भयङ्कर अछि, (जाहिमे) रत्नहुक हेतु चोर नहि चलैत अछि। एहू तरहक स्थितिमे (हम) अपन घर छोड़ि (अहाँक समीप) आइलि छी, जखन कि अपनहुँ अपन शरीर नहि सुझैत छैक। एक क्षणक हेतु हे माधव मानक त्याग करू, अहाँक कारणे हमर प्राण संदेहमे पड़ि गेल अछि। दुःसह यमुना नदीकेँ पार कए आइलि छी, जेँ हेतु दूनू स्तन चञ्चल नावक काज कएलक तेँ। शरीरकेँ कामदेवसँ युद्ध करबाक हेतु आज्ञा दए देने छिऐक, एहि नगरमे अहाँक समान नागर—कामकला चतुर नायक—आन नहि अछि। 'विद्यापति' कवि कहैत छथि—ई नारीक स्वभाव थिकैक जे अपन अभीष्ट वस्तुकेँ युक्तिए द्वारा (स्पष्ट शब्देँ नहि) बुझबैत अछि। लखिमा देवीक रमण रूपनारायण राजा शिवसिंह (ई विषय) जनैत छथि॥

कामोद नाट, जय जय भगवति जय महामाया...(पृ० १६७)

(श्री त्रिपुर सुन्दरीक स्तुति)

हे भगवती! अहाँक वारंवार जय हो, हे महामाया! अहाँक जय हो। हे त्रिपुरसुन्दरी देवी! अहाँ दया करू। हे माता अहाँक शरीरक कान्ति दाड़िमक फूलक समान अछि जेना तत्काले सूर्यक उदय भेल हो। धनुष, शर, पाश तथा अङ्कुश अहाँक हाथमे अछि। तेँतीस कोटि देवता अहाँक प्रति मस्तक झुकबैत छथि। अहाँक सौन्दर्यक उपमा केओ नहि पबैत अछि, कामदेवक स्त्री—रति, अहाँक दासीक स्थान पओने छथि॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उत्तम नाट, सखि हे वाँलभ जितव विदेशे...(पृ० १६८)

हे सखि (हमर) वल्लभ विदेश जीतए जएताह। हम तँ कुब्जी थिकहुँ किछु हुनका कहबैन्हि से अनुचित होएत, अहूँ तँ (हुनका) उपदेश दिऔन्हि। ई विदेश जएबाक समय नहि थिकैक। दुर्जन हमर दुःखक अन्दाज हुनका नहि कराए सकतैन्हि, तेँ (ओहि तरहक लोककेँ नहि कहैत छिऐक) अहाँ तँ हमरा प्रियक समीप गेल आएल छी (अतः अहूँ हुनक स्वभाव जनैत छिऐन्ह ओहो अहाँकेँ जनैत छथि; अहाँ जाए, कहबैन्हि) किछु दिन एतए रहथु। हम जे पूर्व-जन्ममेँ कए आएल छी तकरे भोग करब, किन्तु अनकर उपहाससँ तँ (दूनू दिशक) रक्षा करथु। हे सखि (यदि जएताह तँ) वधक भागी होएताह कारण, जखनहि माधव अपना मनमे हुनक (परकामिनीक वा परदेशक) विचार करताह; तखनहि हमहुँ आगिमे कूदि मरि जाएब। 'विद्यापति' कवि कहैत छथि—रूपनारायण लखिमा देवीक रमण, राजा शिवसिंह छथि।

(उदाहृत गीत सभक भावार्थ पूर्ण भेल)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट (ख)

उदाहृत मैथिली गीत तथा कविक नामानुक्रमणी ।

गीत	कवि	पृ०
अगर उगारि गारि	गोविन्द दास	१७१
अनवरत दादुर सोर	गोविन्द दास	१३६
अबला अंशुक बालभु	विद्यापति	६३
आकुल चिकुरे बेढल	विद्यापति	१७३
आँचरे वदन झँपाअह	विद्यापति	८७
आज पुनिमा तिथि	विद्यापति	१२५
आनन लोनुअ वचने	कविशेखर	६७
आनन्द कन्दा पुनिमक	लोचन	६३
उधसल केस कुसुम	विद्यापति	८६
उपमिअ आनन नीरज	श्रीनिवास मल्ल	७४
उपरे पयोधर नखरेख	दशावधान	१७६
एत दिन हृदय हरष	गजसिंह	१०६
कतन वेदन मोहि	विद्यापति	११५
कतहु श्मश्रुधर कतहु पयोधर	विद्यापति	१८२
कनकलता अरबिन्दा	रतनावी (?)	१२७
करतल कमल नयन ढर नीर	विद्यापति	१२६
कामिनि करए सनाने	विद्यापति	१२०
कालि कहल पिआवे साँझहि रे	विद्यापति	१२४
की परवचने कन्ते देल कान	मधुसूदन	१७२
कीर कुटिल मुख न बुझ	भीषम	६०
कुण्डल तिलकेँ विराज मुख	विद्यापति	११३
कुन्दन कन कन्हाइ	लक्ष्मीनारायण	१०४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत	कवि	पृ०
कुन्द भमर सङ्गम सम्भाषव	सरस कबि (वि० प० ?)	६९
कुल गुन गौरव शील सोभाओ	विद्यापति	१६१
कुसुमरस अति मुदित मधुकर	विद्यापति	१३८
कुसुमवानविलासआनन केस सिन्दुर रेह	कविकण्ठहार (वि० प०)	७९
गगन गरज घन जामिनि घोर	विद्यापति	१६५
गगन गरज मेघा उठय धरणि थेघा	विद्यापति	१६१
गमन दिवस सखो तिथि लेखि लेखी	(?)	११७
गमने गमाउलि गरिमा	विद्यापति	१४७
गेलहुँ पुख पेमे उतरो न देई	विद्यापति	१८१
गौर देह सुठार सुवदनि	सिंहभूपति	९४
चल चल सुन्दरि शुभकर आज	विद्यापति	१३०
चामर चिकुर वदन सानन्द	लोचन	६६
जतनहुँ जतेओ न रे रे निरवह	कवि कुमुदी	१०८
जनि हुतवह हवि आनि मेराओल	विद्यापति	८६
जय जय जय नत सतत शिवङ्करि	लोचन	१६९
जय जय दुर्गे दुर्गतिहारिनि	सदानन्द	१८८
जय जय देवि दुर्गे दनुजदारिनि	गङ्गाधर	१२६
जय जय भगवति जय महामाया	?	१९७
जय चय भगवति भीमा भयानी	विद्यापति	१८३
जय जय शङ्कर जय त्रिपुरारि	कविरत्न	१७७
जय मङ्गला जय मङ्गला	चतुरानन	९६
जलदजाल कराल वारिस	लोचन	१३९
जाति पदुमिनि सहति कता	विद्यापति	१८४
जौवन रूप अछल दिन चारि	विद्यापति	१३२
तनु सुकुमार पयोधर गौरा	कंस नारायण	१२८
तोरए मोञ गेलिहुँ फूल	कवि कण्टहार (वि० प०)	१५५
तोहेँ हमें पेम जतेँ दूरें उपजल	यशोधर	१०६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत	कवि	पृ०
दूरहि ऊरु रहल गहि ठाम	श्यामसुन्दर	१६४
देखहो गे माइ हे जोगि एतए कतए	हरिदास	९७
धवल जामिनि धवल हर हे	भीषम	१११
नन्दक नन्दन कदँबेरि तरु तरेँ	विद्यापति	७१
नमञो नमञो चण्डी चरण युगल तोर	लखनचन्द	१८४
नमित अलके बेढला मुखकमल सोभे	विद्यापति	१५३
नयन निमेष जनि देखइतेँ	जयकृष्ण	१४८
नवजौवन अभिरामा	विद्यापति	१४४
नाव डोलाअ अहीरे जिवइतेँ	भवानी नाथ	१६२
नीरजनयनि हे गिरिराज उरोजे	लोचन	७७
पिया परवास आस तुअ पासहिँ	विद्यापति	१५७
बाँधए विकट जटा तथिहुँ चाँदन फोटा	विद्यापति	१८०
मलिन कुसुम तनु चोरे	विद्यापति	१७४
मलिन वसन विसमादलि रे	लोचन	७०
माघ मास सिरिपञ्चमि गँजाइलि	विद्यापति	१०२
मान परिहर हे करु वचन मोरा	विद्यापति	७६
मासेँ पखेँ उगए कलानिधि	नृपसिंह	१२१
मृगमदपङ्क अलका	विद्यापति	१९०
यदि तोरा नहि खन नहि अवकाश	विद्यापति	१०५
युगल शैल सिम हिमकर देखल	गजसिंह	११८
रयनि काजर वम भीम भुअङ्गम	विद्यापति	१९२
रितुपति रितु रतिपति सहँ उनमति	लोचन	७२
रितुराज आज विराज हे सखि	धरणीधर	२०१
रोपलह पहु लहु लतिका आनि	विद्यापति	१३४
लता तरुअर मण्डप दीअ	विद्यापति	७५
लाखहुँ लता कोटि तरुअ	विद्यापति	१७६
वदन चाँद तोर नयन चकोर मोर	विद्यापति	१५९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत	कवि	पृ०
वारि वएस तजि गेह	प्रीतिनाथ	१३३
विदिता देवी विदिता हो	विद्यापति	१५९
विसरल ओरे तैसन सनेहा पिअ, मोरे	गदाधर	६२
सखि मधुरिपुसन के कतए सोहाओन	जीवनाथ (?)	१८६
सखि हे आज जायब मोही	विद्यापति	१६४
सखि हे वालम जितब विदेशे	विद्यापति	१६८
सपने आएल सखि मझु पिअ पासे	विद्यापति	१७६
सपने देखल हरि गेलिहुँ पुलके पुरि	विद्यापति	८४
सबहुँ सखि परबोधि कामिनि	सिंह भूपति	१२२
सरदक ससधरसम मुखमण्डल	विद्यापति	१५८
ससधरसहससार बदुराव	भीषम	६५
ससन परसँ खसु अम्बर रे	विद्यापति	६६
साए साए काँ लागि कौतुके	गोविन्द	१६३
साए साए पिआकेँ कह विनती	विद्यापति (?)	१६६
साँझक अतिथि भागे विहि आनल	चतुर्भुज	१८५
साँझक बेराँ जमुनाक तीराँ	विद्यापति	६२
सानन्दवदन विहुसिया	लोचन	६८
सिरिहिं मिलल देहा न कुच चाँद रेहा	विद्यापति	१६७
सुरत समापि सुतल वर नागर	अमृतकर	१४१
सुरुज सिन्दुर विन्दु चान्दने	विद्यापति	१४३
स्निग्धकुञ्चितकुन्तलम्	चन्द्रकला	८१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

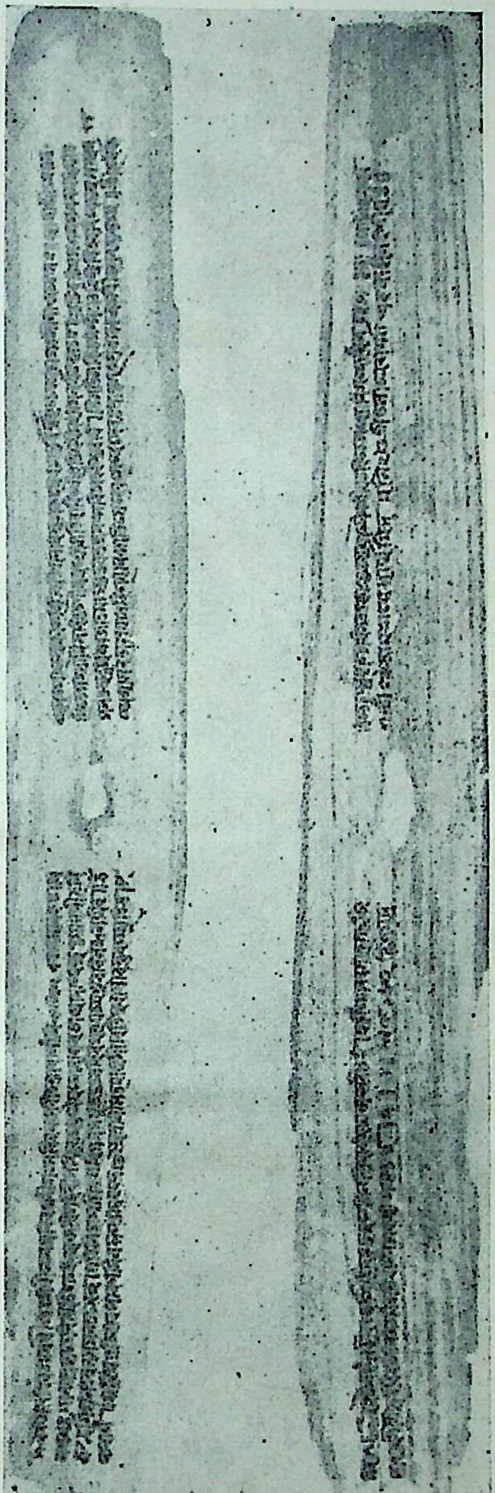

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi